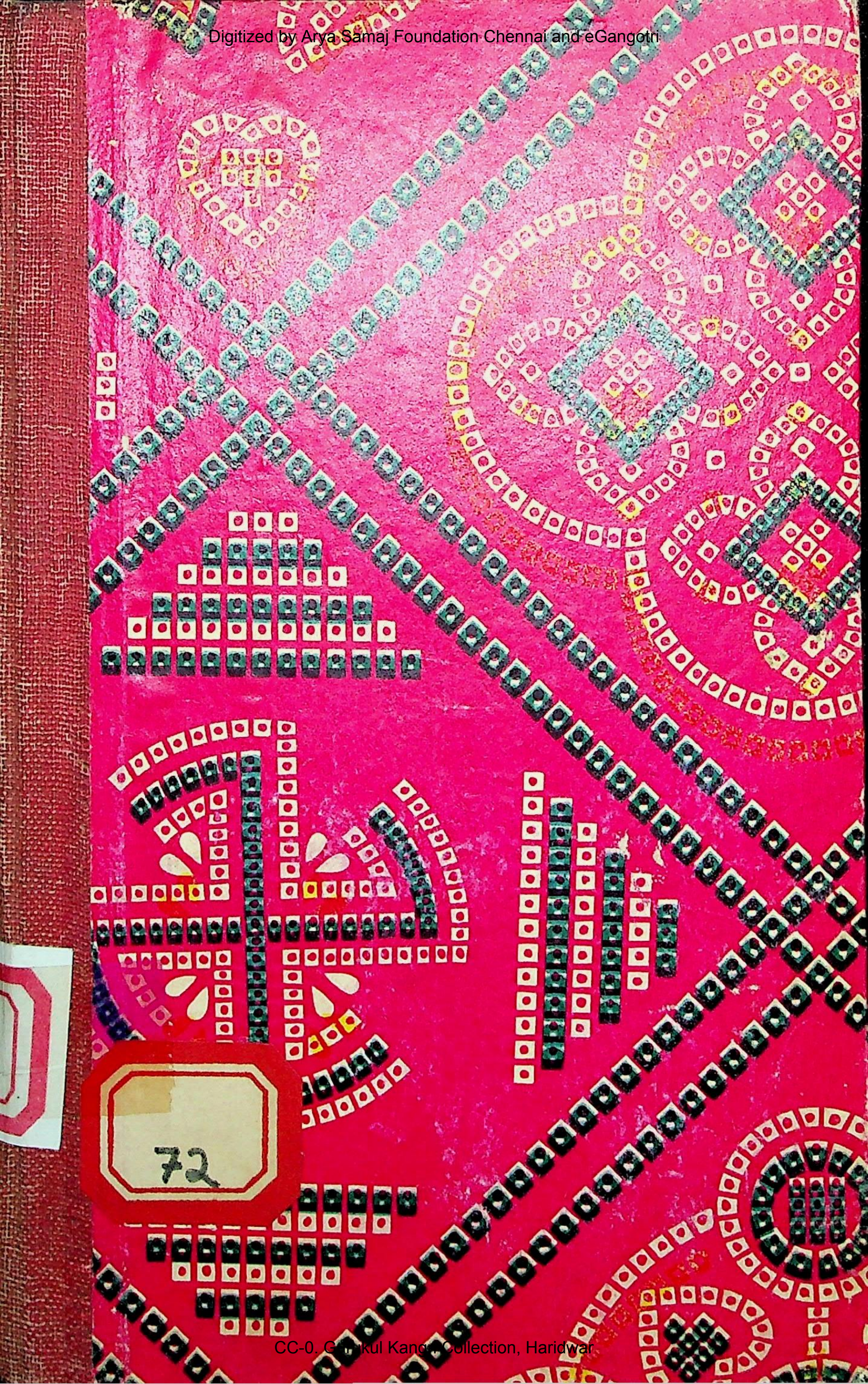

72

R
410
NAN-A

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या............ आगत संख्या............

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

8216H

पं० विश्वनाथ जी द्वारा प्रदत्त संग्रह

72

"केचन शब्दाः"

8216

अष्टाध्यायी महामुनि पाणिनि के मस्तिष्क की सर्वोत्तम रचना है। ऐसा सुसम्बद्ध व्याकरण संसार में अन्य किसी भाषा का नहीं है। इस ग्रन्थ की पाश्चात्य विद्वानों ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आर्ष प्रणाली के संरक्षक या आर्ष परम्परा के सर्व प्रथम गौरव गुरु होने का श्रेय प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द दण्डी को दिया जाता है उसके उपरान्त गुरु बिरजानन्द दण्डी के शिस्य आर्य समाज के संस्थापक सरस्वती को श्रेय जाता है, स्वामी जी ने पाणिनीय अष्टाध्यायी को मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपरान्त स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ने गुरुकुल के रूप में आर्ष प्रणाली को सजीव रखा। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार व स्वामी दर्शनानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सर्वप्रथम आचार्य पं० गंगादत्त शास्त्री जी जो कि स्वामी शुद्धबोध तीर्थ नाम से प्रख्यात हुए, इन्होंने भी इस आर्ष परम्परा को आजीवन अक्षुण्ण बनाये रखा। आर्य जगत् में आर्ष प्रणाली के रूप में दो धाराएँ प्रस्फुटित हुई जो कि आज भी जीवित हैं। प्रथम गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के आचार्य स्वामी शुद्धबोध तीर्थ से आर्ष प्रणाली के रूप में पं० राजेन्द्र नाथ शास्त्री ने शिक्षा ग्रहण की, पं० राजेन्द्र नाथ शास्त्री सन्यास आश्रम में स्वामी सच्चिदानन्द योगी नाम से विख्यात हुए, इन्होंने ही दिल्ली में वेद विद्यालय गौतम नगर की स्थापना की, इन्हीं से शिक्षा प्रेरणा प्राप्त करके आचार्य भगवान देव जी वर्तमान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्झर व आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली की स्थापना की। इस आर्ष परम्परा को जीवित रखने के लिए स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य प्रशिष्य आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक कालवा, आचार्य जगद्देव नैष्ठिक गुरुकुल होशंगाबाद स्वामी विवेकानन्द सरस्वती प्रभात आश्रम मेरठ. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) आचार्य हरिदेव व्याकरणाचार्य वेद विद्यालय गौतम नगर दिल्ली इत्यादि चार चाँद लगा रहें हैं।

द्वितीय आर्ष प्रणाली के रूप में पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु आर्य जगत् में उभर कर आये, इन्होंने काशी के पण्डितों में धूम मचा दी। ये चलते-फिरते ब्रह्मचारियों को आर्ष प्रणाली से शिक्षा दिया करते थे। इन्होंने काशी, अमृतसर, लाहौर (पाकिस्तान) में अपनी अमिट छाप छोड़ी। इन्हीं की देन पं० युधिष्ठर मीमाँसक हैं आप। गत वर्ष जुलाई में वाराणसी विश्वविद्यालय के कुलपति ने महामहोपाध्याय की उपाधि से मीमाँसक जी को सम्मानित किया।

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के शिष्य आचार्य विजयपाल शास्त्री बहालगढ़ आचार्य ज्योति स्वरूप यज्ञतीर्थ गुरुकुल एटा शिष्या के रूप में आचार्य प्रज्ञा देवी वाराणसी और आचार्या शान्ती देवी कन्या गुरुकुल लोवाँकला बहादुरगढ़ विद्यमान हैं। आर्ष प्रणाली की ये दो धाराएं आगे चलकर स्वर्ण अक्षरों में अंकित करने योग्य है। तीसरे व्याकरणाचार्य गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याध्यापक पं० शंकर देव पाठक हुए। इन्होंने आज से पचास वर्ष पूर्व अष्टाध्यायी सूत्र पाठ: वार्तिक गणपाठ सहित, गुरुकुल वृन्दावन में सम्पादन किया उस समय आर्य जगत ने इस पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्र पाठ: की बहुत प्रशंसा की थी, पं० शंकर देव पाठक काव्यतीर्थ ने महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश का संस्कृत में अनुवाद किया। मैंने गुरुकुल वृन्दावन के अष्टाध्यायी के विषय में दर्शन वाचस्पति आचार्य पं० विश्वबन्धु शास्त्री ज्वालापुर से खूब प्रशंसा सुनी आचार्य पं विश्वश्रवा व्यास ने अपने व्याख्यानो में इस ग्रन्थ की खब प्रशंसा की। १९८३ में आर्य समाज के इतिहास के सामग्री संकलन हेतु गुरुकुल होशंगाबाद के कार्य से मैं भोपाल गया, वहाँ पर महात्मा आत्मदेव जी उज्जैन वाले मिले, उन्होंने भी इस अष्टाध्यायी की बड़ी प्रशंसा की कि यह पुस्तक बिना गुरु की सहायता से विद्यार्थी कण्ठस्त कर सकता है, इन्होंने इसे छपवाने की प्रेरणा दी मैंने स्वामी जी से कहा कि आधे रुपये का इन्तजाम मैं करता हूं आधे का आप कर लीजिये, स्वामी आत्मदेव जी ने भोपाल के आर्य समाजों को प्रेरित किया, परन्तु उन लोगों ने ध्यान नहीं दिये स्वामी जी चुपकर बैठ गये। तीन चार वर्ष बाद वेद विद्यालय गौतम नगर दिल्ली में इस पुस्तक को छापने का स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में निर्णय लिया गया। मुझे भाई बिरजानन्द देवकरणि और पं० तेजपाल शास्त्री का सहयोग प्राप्त हुआ। मुझें स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने कहा कि अनीता आर्ष प्रकाशन का नाम रखे हो, 'आर्ष' की पुस्तक क्यों नहीं छापते हो। मैंने लाला आदित्य प्रकाश आर्य को यह बातें बतलाया। लाला जी ने कहा कि मुझे क्या पता आर्ष-अनार्ष क्या होता है, जो आर्ष है वह छापे, मैंने गुरुकुल वृन्दावन की अष्टाध्याया सूत्रपाठ छापने का सुझाव दिया वे मान, गये, इस पुस्तक के प्रकाशन में दौड़-धूप के कार्य में लाला जी के छोटे भाई श्रीं वीरेन्द्र आर्य को श्रेय दिया जाता है। अब यह पुस्तक पाठकों के हाथ में है, इस की गुणक्ता विद्वान् पाठक यह समझ सकेगें तो मेरा यह परिश्रम सफल होगा।

विदुषां वशंवदः
ब्र० नन्द किशोर एम० ए० विद्यावाचस्पति
ज्वालापुर हरिद्वार

पूज्य पण्डित विश्वनाथ जी वेदोपाध्या
विद्यामार्तण्ड के करकमलों में
सादर भेंट
डा. नन्दकिशोर
दि: २३/४/९०

अनीता आर्य महोदया:

येषां द्रव्य साहाय्येन संस्थापितेयं ग्रन्थमाला
अभिनवान् ग्रन्थान् प्रकाशयति

संस्करणम्-प्रथमम्
संवत् २०४६ वि., १९९० ई०

प्राप्तिस्थानम्
अनीता आर्ष प्रकाशन
५००/२, हलवाई हट्टा,
पानीपत (हरियाणा)
पिन-१३२१०३

मुद्रक : डायमण्ड प्रिन्टर्स
नारायणा, नई दिल्ली-२८

दो शब्द

१६-११-८८ को अनीता आर्ष धमार्थ औषधालय तथा अनीता आर्ष प्रकाशन का शुभारम्भ किया गया था। एक साल की अल्प अवधि में औषधालय में १८११ मरीजों का निशुल्क उपचार किया गया। चार महीने अच्छा वैद्य न मिलने के कारण औषधालय बन्द करना पड़ा। इस समय एक सुयोग्य वैद्य श्री छाजू राम जी शर्मा अच्छा कार्य कर रहें हैं। आशा है कि निकट भविष्य में औषधालय से मरीज पूरा लाभ उठायेगें।

अनीता आर्ष प्रकाशन के अन्तर्गत निम्न पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है।

१. भस्मान्तम् शरीरम् लेखक श्री स्वामी निगमानन्द जी एम.ए.
२. वैदिक महिमा लेखक श्री जगदीश चन्द्र 'वसु'
३. आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या-
   लेखक पं० विश्व बन्धु जी
४. त्यागवाद लेखक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती

पाचवीं पुस्तक जो अब छप गई हैं वह आपके हाथों में हैं। प्रकाशन में ऊपर लिखे सभी महानुभावों का मैं आभारी हूं तथा आगे भी इन महानुभावों से सहयोग की आशा करता हूं। सबको मेरा धन्यवाद।

आदित्य प्रकाश आर्य
५०० २, हलवाई हट्टा
पानीपत-१३२१०३

दिनांक १६-११-८९

विषयानुक्रमाणिका

अष्टाध्यायी सूत्र पाठः

प्रथमोऽध्यायः	५-२६
द्वितीयोऽध्यायः	२६-४८
तृतीयोऽध्यायः	४९-८७
चतुर्थोऽध्यायः	८८-१३८
पञ्चमोऽध्यायः	१३९-१७८
षष्ठोऽयाधयः	१७९-२२६
सप्तमोऽध्यायः	२२६-२५२
अष्टमोऽध्यायः	२५२-२७५

सविनयं निवेदयति

विदुषामाश्रवः शंकरदेव पाठकः

किञ्चित्प्रास्ताविकम्

व्याकरणं नाम वेदाङ्गेषु मुख्यमङ्गमिति न तिरोहितं विपश्चिताम्। तस्मिंश्च व्याकरणे सन्ति इन्द्रचन्द्रादिकृताः प्रस्थानभेदाः। तेषु सर्वेष्वपि पाणिनीयतन्त्रमेव लौकिकवैदिकप्रक्रियापरिपूर्णतया सर्वत्र लब्धप्रचारमधुनोपलभ्यते।

यद्यपि पाणिनीयतन्त्रस्य मूलं भगवत्पाणिनिनिर्मितः सूत्रपाठ एव, तथापि साम्प्रतं लक्ष्यक्रममाश्रित्य तत्तत्समानजातीयप्रक्रियाणामेकत्र संकलनेन शब्दान्वाख्यानप्रदर्शनसरणिमनुसृतवद्भिः श्री भट्टोजि दीक्षित प्रभृतिभि विरचितानां सिद्धान्तकौमुद्यादिग्रन्थानां बहुलप्रचारतया सूत्रपाठो विरलप्रचारः समजनि। अधुना च लक्षणक्रमेणैव तत्तल्लक्षणप्रवृत्तिप्रदर्शनपूर्वकं लक्ष्यान्वाख्यानसरणिरेव पाणिनेरभीष्टेति निश्चितमतिभिरनूचानैः पुनरपि सूत्रपाठक्रमेणैं व्याकरणाध्ययनाध्यापनाभ्यां यत्न आस्थीयते।

तत्र तत्र मुम्बई-काश्यादिषु बहुशो मुद्रितेऽपि सूत्रपाठे जागर्त्येव सर्वात्मना रुचिरस्यार्थनिर्वचनसौलभ्यसम्पादकस्यैकस्य संस्करणस्यावश्यकत्वम्। अतोऽष्टाध्यायी क्रमेण व्याकरणाध्ययनाध्यापनोत्कण्ठितचेतसां केषाञ्चित्सुहृद्वराणां निदेशेन प्रोत्साहनेन च प्रावर्तिषि पण्डितप्रकाण्डैकसाध्ये सुदुष्करेऽप्यस्मिन्कर्मणि।

सूत्रपाठस्यास्मिन्संस्करणेऽस्माभिः तत्तत्सूत्र विषयानुसारं प्रकरणानि परिकल्प्य प्रकरणविभागः सम्पादितः। सर्वथा लाघवं कामयमानेनातएवानुवृत्ति परायणेनाचार्येण नावहितं प्रकरणपूर्वकं सूत्रप्रणयनकर्मणि। क्वचिदतिदेशसूत्राणि संज्ञासूत्रान्तः पातयति। यथा 'दाधाघ्वदाप् (१।१।२०) 'बहुगणवतुडतिसंख्या' (१।१।२३) इति संज्ञा प्रकरणे 'आद्यन्तवदेकस्मिन्' इत्यतिदेशसूत्रमुपक्षिप्तम्। कुत्रचित्प्रत्ययविकारागमप्रकरणे प्रातिपदिकादेशं विदधाति। यथा 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' (७।१।५२) इत्याम आगमप्रकरणे 'त्रेस्त्रयः इति त्रयादेशमुपदिशति। अत्र 'आमि' इति पदानुवृत्तिरेवेदृशक्रमभङ्गे हेतुः। प्रायः सर्वत्रैवेदृशः क्रमभङ्गो, विशेषतस्तु विकारप्रकरणे (षष्ठ-सप्तमाष्टमाध्यायेषु) समुपलक्ष्यते। सुप्तिङ्प्रक्रिये तु सर्वथैव व्यामिश्र्योक्ते आचार्येण। अतः सूत्राणां प्रकरणेषु विभाजनमतीव दुष्करं यद्यपि, तथापि यावद्बुद्धिबलोदयं सम्पाद्य निर्दिष्टं, तत् संशोधयन्तु विद्वांसः।

किञ्च, सिद्धान्तकौमुद्यादीनामध्ययनाध्यापनयोः तत्तत्सूत्रस्थपदानुवृत्तेर्ज्ञानाभावाद् वृत्तिरटनश्रमेण महानुक्लेशोऽनुभूयते तदध्येतृभिः। अष्टाध्याय्याः

क्रमे त्वनुवृत्तिज्ञानसौकर्याद् अर्थनिर्वचनं सुबोधं नन्वतितराम्। अतोऽनुवृत्तिज्ञानायास्माभि र्वामपार्श्वे यत्सूत्रात् यस्य पदस्य यावदनुवृत्तिस्तत्पदं विलिख्य तदग्रे सूत्रसंख्या विन्यस्ता। दक्षिण पार्श्वे च यत्र सूत्रे पूर्वसूत्रेभ्यो यत्पदानुवृत्तिस्तत्पदं समुपन्यस्तम्। सूत्रस्थ पदानामनुवृत्तपदानाञ्च समन्वयेन सूत्रार्थो झटित्येव बुद्धिमारोहति सुकुमारधियामपि बालानाम्।

अत्रेत्थं संकेत विवरणं द्रष्टव्यम्—

वाम पार्श्वे	**मध्ये**	**दक्षिण पार्श्वे**
यस्मात् सूत्रात् यस्य पदस्यानुवृत्तिर्गच्छति तत्पदं, यावद् गच्छति तत्सूत्रसंख्या च.	सूत्रपाठः प्रकरणविभागश्च.	यस्य पदस्यानवृत्तिर्यस्मिन् सूत्र आयति तदग्रे तत्पदम्.

दक्षिणवामपार्श्वयोः, संक्षेपाय सर्वपदस्थाने तस्य संक्षिप्तं रूपं प्रादर्शि। यथा 'सार्वधातुके' इत्यस्य स्थाने 'सा-के' एवं निर्दिष्टम्। यत्र पदद्वयस्य अधिकानां वा पदानां समानोऽवधिस्तत्रान्तिमपदसंमुख एव प्रायोऽङ्कविन्यासो नेतरत्र। यथा **'अपरियाण—न तद्धितलुकि'** (४।१।२२) अत्र 'न' इति 'तद्धित लुकि' इति पदस्य च २४ तम सूत्रपर्यन्तमनुवृत्तिः। सूत्राङ्कोल्लेखस्तु 'तद्धितलुकि' इति पदसंमुख एव।

अत्र च एतत्प्रकटनसाहाय्यकर्तॄणां, अन्तरान्तरामातृकाप्रदानलेखावधान प्रकटनप्रख्यापनादिद्वारा भृशमुपकारिणाम् अनसूयूनाम् अनहंयूनाम् अनशुभंयूनाम्, अवदातधियाम् अनुवारम् अयुतशः प्रणामाः प्रतायन्ते प्रह्वशिरोवाङ्मनसेन मया।

तत्र सर्वथा प्राधान्यं वहन्ति वृन्दावन गुरुकुल विश्वविद्यालये आचार्य पदमधितिष्ठन्तः सारस्वत सारज्ञाः श्रीमन्तो **विश्वेश्वर** महाभागाः। येषां हि साहाय्येन मदीयमिदं सूत्रपाठमुद्रणं प्रचलतिस्मेति सतोषमभिधीयते। किञ्चात्र सम्पादनपथे यत्र-तत्र सम्मति प्रदानेन यथाशक्ति साहाय्यं कृतवतां कार्यसिद्धिञ्च प्रतीक्षितवतां वैयाकरणधुरीणानाम् आचार्य **विश्ववश्रवसाम्** अत्यन्तमध्यन्तरङ्गमनवरतमस्मि स्मरन्नधिकमुपकारम्। अन्ते च गुरुकुल मुख्याधिष्ठातृमहोदयानां श्री**चेतराम सिंह** महाभागानामप्युपकारो विस्मर्तुमनर्हः, येषां प्रेरणया सहानुभूत्या च शीघ्रमेव समाप्तिमगादिदं दुष्करं कार्यम्।

संस्करणस्यास्य सम्पादन इमान्यादर्श पुस्तकानि।

(१) अष्टाध्यायी सूत्र पाठः—

(१) भाष्य स्वीकृतः सूत्रपाठः।
(२) काशिकायां स्वीकृतः सूत्रपाठः।

(३) निर्णयसागर मुद्रितः सूत्रपाठः।
(४) पण्डित प्रवर श्री भीमसेन शर्म सम्पादितः सूत्रपाठः।
(५) राजकीय **प्राच्यग्रन्थश्रेण्यां पुण्यपत्तनात्** प्रकाशितः सूत्रपाठः।

सर्वत्र भाष्ये स्वीकृत एव पाठोऽस्माभिरङ्गीकृतः। यस्मिन् सूत्रे भाष्यं न विद्यते तस्य सूत्रस्य पाठः संशोध्य प्रदत्तः। अन्यत्रोपलभ्यमानाः पाठभेदा अधोभागे टिप्पण्यां निर्दिष्टाः।

(२) **वार्तिकपाठः**—अत्रापि महाभाष्य स्वीकृत एव पाठोऽस्माभिरुररीकृतः। पाणिनेरष्टाध्यायीसूत्रपाठः प्रायेण निश्चितः। यद्यपि तत्र पाठभेदा उपलभ्यन्ते तथापि नास्ति तेषामाधिक्यम्। परन्तु कात्यायनस्य कानि वार्तिकानि, कानि वा महाभाष्यप्रणेतुःपतञ्जले, स्तथैव कानि वा सौनाग-भारद्वाजादीनां वचनानि एतन्निर्णेतुं नाद्यापि अल्पांशेनापि तर्कमन्तरा निश्चयप्रदं साधनं दृश्यते। बहूनि च वार्तिकानि सूत्रकारश्रद्धातिशयवता भाष्यकृता प्रत्याख्यातानि। अतएव काशिकाकारादिभिः स्वस्वग्रन्थेषु सिद्धान्तवार्तिकान्येव सङ्गृहीतानि। अस्माभिरपि तत्संगृहीतान्येव प्रदत्तानि तानि, पाठस्तु तेषां भाष्यस्वीकृतः समुपन्यस्तः। यत्रापि तेषां काशिकादिषु पाठभेदः सूत्रभेदो वा लक्ष्यते सोऽधस्तात् टिप्पण्यामुद्धृतः।

(३) **गणपाठः**—अत्र राजकीय प्राच्यग्रन्थश्रेण्यां प्रकाशितो गणपाठपाठ आदर्शतां नीतः।

तदेवमेतान् कोशानादर्शीकृत्य भाष्य-कैयट-काशिकादि ग्रन्थानवष्टभ्य च परिष्कृत्य मुद्रितायामप्यस्यामष्टाध्याय्यां मुद्रणावसरसुलभसंभवान् मादृश जनमनीषानियतसंभूतिकांश्चापि संभावितान् कांश्चन दोषान् स्वयमेव परिहरन्तो मां बोधयन्तश्च नन्दन्तु निपुणधिषणाः, नन्दयन्तु चाखिलजगदन्तर्नियमयन्तं परमेश्वरमास्माकीनेनानेन सम्पादनकर्मणेति —

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

(वार्तिक-गणपाठ-सहितः)

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

अथ शब्दानुशासनम्

१ अइउण् २ ऋलृक्
३ एओङ् ४ ऐऔच्
५ हयवरट् ६ लण्
७ ञमङणनम् ८ झभञ्
९ घढधष् १० जबगडदश्
११ खफछठथचटतव् १२ कपय्
१३ शषसर् १४ हल्

॥ इति प्रत्याहारसूत्राणि ॥

(वृद्धिसंज्ञा—)

१ वृद्धिरादैच् । वृद्धिः १

(गुणसंज्ञा—)

२ अदेङ् गुणः । गुणः १

(गुणवृद्धिस्थानिनियम—)

३ इको गुणवृद्धी । इकः ६
गुणवृद्धी ६

	(गुणवृद्धिनिषेध—)	
गुणवृद्धी, इकः	४ न धातुलोप आर्धधातुके ।	न ६
न गुणवृद्धी, ,,	५ क्ङिति च ।	
,,, ,,	६ दीधीवेवीटाम्	
	(संयोगसंज्ञा—)	
	७ हलोऽनन्तराः संयोगः ।	
	(अनुनासिकसंज्ञा—)	
	८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।	
	(सवर्णसंज्ञा—)	
	९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् । (१)	सवर्णम् १०
सवर्णम्	१० नाज्झलौ ।	
	(प्रगृह्यसंज्ञा—)	
	११ ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्	ईदूत् १२ प्रगृह्यम् १८
प्रगृह्यम् ईदूत्	१२ अदसो मात् ।	
,,	१३ शे ।	
,,	१४ निपात एकाजनाङ् ।	निपातः १५
,,, निपातः	१५ ओत् ।	ओत् १६
,, ओत्	१६ सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ।	शाकल्यस्येता-०र्षे १७
,,, शा—र्षे	१७, १८ उञः ऊँ ।	
,,	१९ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ।	
	(घुसंज्ञा—)	
	२० दाधा घ्वदाप् ।	

१—(वार्तिकम्) ऋकारलृकारयोर्मिथः सवर्णसंज्ञा वक्तव्या ।

	(आद्यन्तवद्भाव—)	
	२१ आद्यन्तवदेकस्मिन् ।	
	(घसंज्ञा—)	
	२२ तरप्तमपौ घः ।	
	(संख्यासंज्ञा—)	
	२३ बहुगणवतुडति संख्या (१)	संख्या २५
	(षट्संज्ञा—)	
संख्या	२४ ष्णान्ता षट् ।	षट् २५
संख्या, षट्	२५ डति च ।	
	(निष्ठासंज्ञा—)	
	२६ क्तक्तवतू निष्ठा ।	
	(सर्वनामसंज्ञा—)	
	२७ सर्वादीनि सर्वनामानि (२)	सर्वादीनि ३२ सर्वनामानि ३६
सर्वादीनि, सर्व–नि	२८ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ।	बहुव्रीहौ २९
,, ,,	२९ न बहुव्रीहौ ।	न ३१
,, न, ,,	३० तृतीयासमासे ।	
,, , ,,	३१ द्वन्द्वे च ।	द्वन्द्वे ३२

१—(वा०) अर्धपूर्वपदश्च पूरणप्रत्ययान्तः संख्यासंज्ञो भवतीतिवक्तव्यम्।

२—(गणपाठः) सर्व विश्व उभ उभय डतर डतम अन्य अन्यतर इतर त्वत् त्व नेम सम सिम पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्। स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्। अन्तरं वहिर्योगोपसंव्यानयोः।

त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक।

द्वि युष्मद् अस्मद् भवतु (भवत्) किम्।

इति द्व्यादिः, त्यदादिः, सर्वादिश्च।

द्वन्द्वे, न स–नि, स–नि	३२ विभाषा जसि।	विभाषा ३६ जसि ३६
सर्वनामानि, विभाषा, जसि	३३ प्रथम-चरम-तयाल्पार्ध-कतिपय-नेमाश्च।	
,,	३४ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्।	
,,	३५ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्।	
,,	३६ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः। (१)	
	(अव्ययसंज्ञा—)	
	३७ स्वरादि-निपातमव्ययम्।	अव्ययम् ४१
अव्ययम्	३८ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः।	
,,	३९ कृन्मेजन्तः।	
,,	४० क्त्वा-तोसुन्-कसुनः।	
,,	४१ अव्ययीभावश्च।	
	(सर्वनामस्थानसंज्ञा—)	
	४२ शि सर्वनामस्थानम्	सर्व—नम् ४३
सर्व—नम्	४३ सुडनपुंसकस्य।	
	(विभाषासंज्ञा—)	
	४४ नवेति विभाषा।	
	(सम्प्रसारणसंज्ञा—)	
	४५ इग्यणः सम्प्रसारणम्।	
	(आगमादेशस्थाननिर्देश—)	
	४६ आद्यन्तौ टकितौ।	

१—(वार्ति०) (क) अपुरीति च वक्तव्यम्। (ख) विभाषाप्रकर
तीयस्य ङित्सूपसंख्यानम्।

	४७ मिदचोऽन्त्यात्परः । (१)	
	४८ एच इग्घ्रस्वादेशे ।	
	४९ षष्ठी स्थानेयोगा ।	
	५० स्थानेऽन्तरतमः ।	
	५१ उरण् रपरः ।	
	५२ अलोऽन्त्यस्य ।	अलः ५३, अन्त्यस्य ५३
अन्त्यस्य, अलः	५३ ङिच्च ।	
	५४ आदेः परस्य ।	
	५५ अनेकाल्शित्सर्वस्य ।	
	(स्थानिवद्भाव—)	
	५६ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।	स्थानिवत् ५९ आदेशः ५९
स्थानिवत् आदेशः	५७ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ।	अचः ५९, परस्मिन् ५९
परस्मिन् अचः आदेशः, स्थानिवत्	५८ न पदान्त-द्विर्वचन-वरे-यलोप-स्वर-सवर्णानुस्वार-दीर्घ-जश्च-रविधिषु ।	
स्थानिवत् अचः पर०, आ०	५९ द्विर्वचनेऽचि ।	
	(लोपसंज्ञा—)	
	६० अदर्शनं लोपः ।	
	६१ प्रत्ययस्य लुक्-श्लु-लुपः ।	
	(प्रत्ययलक्षण—)	
	६२ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ।	प्रत्य—म् ६३

१—(वा०) मस्जेरन्त्यात्पूर्वा मिदनुषङ्गसंयोगादिलोपार्थम् ।

प्रत्ययलक्षणम्   **६३ न लुमताङ्गस्य।**

(टिसंज्ञा—)

६४ अचोऽन्त्यादि टि।

(उपधासंज्ञा—)

६५ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा।

६६ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य।

६७ तस्मादित्युत्तरस्य।

(शब्दस्वरूपग्राहक—)

६८ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा। (१)   स्वम् ७२
रूपम् ७२

६९ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः।

७० तपरस्तत्कालस्य।

७१ आदिरन्त्येन सहेता।

७२ येन विधिस्तदन्तस्य। (२)

(वृद्धसंज्ञा—)

वृद्धम्   **७३ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्। (३)**

”   **७४ त्यदादीनि च।**

७५ एङ् प्राचां देशे।

इति प्रथमः पादः।

१—(वार्ति०) (क) सित्तद्विशेषाणां वृक्षाद्यर्थम् (ख) पित्पर्यायवचनस् च स्वाद्यर्थम् (ग) जित्पर्यायवचनस्यैव राजाद्यर्थम्। (घ) झित्तद्विशेषाणाञ् मत्स्याद्यर्थम्।

२—(वार्ति०) (क) समासप्रत्ययविधौ प्रतिषेधः। (ख) उगिद्वर्णग्रहणवर्जम्

३—(वार्ति०) (क)—वा नामधेयस्य। (ख)—गोत्रोत्तरपदस्य च (ग)—गोत्रान्ताद्वाऽसमस्तवत्। (घ)—जिह्वाकात्यहरितकात्यवर्जम्।

अथ द्वितीयः पादः

(ङित्वातिदेश—)

	१ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्।(१)	ङित् ४
ङित्	२ विज इट्।	इट् ३
इट्, ङित्	३ विभाषोर्णोः।	
ङित्	४ सार्वधातुकमपित्।	अपित् ५

(कित्वातिदेश—)

अपित्	५ असंयोगाल्लिट् कित्।	लिट् ६, कित् २६
लिट्, कित्	६ इन्धि-भवतिभ्यां च। (२)	
कित्	७ मृड-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वसः क्त्वा।	क्त्वा ८
क्त्वा, कित्	८ रुद-विद-मुष-ग्रहि-स्वपि-प्रच्छः संश्च।	सन् १०
सन्, कित्	९ इको झल्।	इकः ११, झल् १३
इकः, सन्, झल्, कित्	१० हलन्ताच्च।	हलन्तात् ११
हलन्तात्, इकः, झल्, कित्	११ लिङ्-सिचावात्मनेपदेषु।	लिङ् सिचौ १३, आत्मनेपदेषु १७
लिङ्सिचौ, आत्म०, झल्, कित्	१२ उश्च।	
,,	१३ वा गमः।	

१—(वा०) व्यचेः कुटादित्वमनसीति वक्तव्यम्। *

२—(वा०) ऋदुपधेभ्यो लिटः कित्वं गुणात्पूर्वविप्रतिषेधेन।

३—(वा०) श्रन्थिग्रन्थिदम्भिस्वञ्जीनामिति वक्तव्यम्।*

---

* इदं वार्तिकम् भाष्ये न दृश्यते।

आत्म०, कित्	१४ हनः सिच् ।	सिच् १७
सिच्, आत्म०, कित्	१५ यमो गन्धने ।	यमः १६
यमः, सिच्, आत्म०, कित्	१६ विभाषोपयमने ।	
सिच्, आत्म०, कित्	१७ स्थाघ्वोरिच्च ।	
कित्	१८ न क्त्वा सेट् ।	सेट् २६ न २५
कित्, न, सेट्	१९ निष्ठा शीङ्-स्विदि-मिदि-क्ष्विदि-धृषः ।	निष्ठा २२
न, सेट्, कित्, नि०	२० मृषस्तितिक्षायाम् ।	
न, सेट्, निष्ठा, कित्	२१ उदुपधाद् भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ।	
कित्, न	२२ पूङः क्त्वा च ।	क्त्वा २६
क्त्वा, सेट्, न, कित्	२३ नोपधात् थफान्ताद्वा ।	वा २६
क्त्वा, सेट्, न, कित् वा	२४ वञ्चि-लुञ्च्यृतश्च ।	
क्त्वा, सेट्, न, कित् वा	२५ तृषि-मृषि-कृशेः काश्यपस्य ।	
वा, सेट्, क्त्वा कित्	२६ रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च ।	
	(ह्रस्वादिसंज्ञा—)	
	२७ ऊकालोऽज्झ्रस्व-दीर्घ-प्लुतः ।	ह्रस्व-प्लुतः २८
	(ह्रस्वादिस्थाननिर्देश—)	
ह्रस्वदीर्घप्लुताः	२८ अचश्च ।	
	(स्वरविधि—)	
	२९ उच्चैरुदात्तः ।	
	३० नीचैरनुदात्तः ।	

३१ समाहारः स्वरितः ।

३२ तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ।

३३ एकश्रुति दूरात्संबुद्धौ । एकश्रुति ३९

एकश्रुति ३४ यज्ञकर्मण्यजप-न्यूङ्ख-सामसु । यज्ञकर्मणि ३५

यज्ञकर्मणि ३५ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ।

एकश्रुति ३६ विभाषा छन्दसि ।

एकश्रुति ३७ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः । स्वरितस्य ३८

स्वरितस्य ३८ देवब्रह्मणोरनुदात्तः

एकश्रुति ३९ स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् । अनुदात्तानाम् ४०

अनुदात्तस्य ४० उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ।

(अपृक्तसंज्ञा—)

४१ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः ।

(कर्मधारयसंज्ञा—)

४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ।

(उपसर्जनसंज्ञा—)

४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् । उपसर्जनम् ४४

उपसर्जनम् ४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते । (१)

१—(वा०) एकविभक्तावषष्ठ्यन्तवचनम् ।

	(प्रातिपदिकसंज्ञा—)	
	४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् । (१)	प्रातिपादिकम् ४६
प्रातिपदिकम्	**४६ कृत्तद्धित-समासाश्च ।**	
	(ह्रस्वविधि—)	
	४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ।	ह्रस्वः ४८, प्रातिपदिकस्य ४
प्रातिपदिकस्य, ह्रस्वः	**४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य । (२)**	स्त्रियाः ४९, उसर्जनस्य ४९
	(लुक्—)	
उपसर्जनस्य, स्त्रियाः	**४९ लुक् तद्धितलुकि ।**	तद्धितलुकि ५०
	(इद्ादेश—)	
तद्धितलुकि	**५० इद्गोण्याः ।**	
	(युक्तवद्भाव—)	
तद्धित (स्य)	**५१ लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने ।**	लुपि, युक्तवत्, व्य—ने ५१
तद्धितलुपि, व्यक्ति—ने, युक्तवत्	**५२ विशेषणानाञ्चाजातेः । (३)**	
	(अशिष्यत्व—)	
	५३ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् ।	अशिष्यम् ५७

१—(इष्टिः) अनर्थकस्यापि निपातस्य प्रातिपदिकसंज्ञेष्यते ।

२—(वा०) ईयसो बहुव्रीहौ पुंवद्वचनम् ।[1]

३—(वा०) (क) [2] हरीतक्यादिषु व्यक्तिः (ख) खलतिकादिषु वचनम् (ग) मनुष्यलुपि प्रतिषेधः ।

---

[1] काशिकादिषु 'ईयसो बहुव्रीहेः प्रतिषेधो वक्तव्यः' इति वार्तिक पाठो दृश्यते अस्माभिः भाष्यसम्मतः पाठ उपन्यस्तः । यथा पुंविषये ईकारः श्रूयते नतु ह्रस्वत्वं प्रतिपद्यते तथेयसोऽपि पर इत्यर्थः ।

[2] आद्यं वार्तिकद्वयं काशिकादिषु ५१ सूत्रे दृश्यते । भाष्ये त्वत्रैव ।

अशिष्यः	५४ लुब्योगाप्रख्यानात् ।	
	५५ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् ।	
अशिष्यम्	५६ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् ।	अर्थस्य; अन्य प्रमाणत्वात् ५७
अर्थ—त्	५७ कालोपसर्जने च तुल्यम् ।	

(वचनातिदेश—)

	५८ जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम्। (१)	बहुवचनम् ६०, अन्यतरस्याम् ६२
बहुवचनम् अन्य०	५९ अस्मदो द्वयोश्च। (२)	द्वयोः ६०
द्वयोः, बहुवचनम् अन्यतरस्याम्	६० फल्गुनी-प्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे।	
अन्यतरस्याम्	६१ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ।	छन्दसि ६२
छन्दसि, एकवचनम्, अन्य०	६२ विशाखयोश्च ।	
	६३ तिष्य-पुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्	

(एकशेष—)

	६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ।	शेषः ७३
शेषः (शिष्यते)	६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ।	वृद्धोयूना ६६, तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ६९

१—(वा०) संख्याप्रयोगे प्रतिषेधः।

२—(वा०) अस्मदः सविशेषणस्य प्रयोगे न।[1]

---

[1] इदं वार्तिकं भाष्ये पूर्वसूत्र उपन्यस्तम्।

वृद्धो–षः,शिष्यते	६६ स्त्री पुंवच्च ।	
तल्लक्ष-षः, शिष्यते	६७ पुमान् स्त्रिया ।	
शिष्येते	६८ भ्रातृ-पुत्रौ स्वसृ-दुहितृभ्याम् ।	
शिष्यते, त–षः	६९ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ।	अन्यतरस्याम्७
अन्यतरस्याम्, शिष्यते	७० पिता मात्रा ।	
अन्यतरस्याम्, शिष्यते	७१ श्वशुरः श्वश्वा ।	
शिष्यन्ते	७२ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् । (१)	
शिष्यते	७३ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री (२)	

इति द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः ।

(धातुसं—)

	१ भूवादयो धातवः ।	

(इत्संज्ञा—)

	२ उपदेशेऽजनुनासिक इत् ।	इत् ८, उपदेशे
उपदेशे, इत्	३ हलन्त्यम् ।	
इत्	४ न विभक्तौ तुस्माः ।	

१—(वा०) (क) त्यदादितः शेषे पुंनपुंसकतो लिङ्गवचनानि।[1] (ख) त्यदादीनां मिथो यद्यत्परं तत्तच्छिष्यते।[2]

२—(वा०) अनेकशफेष्विति वक्तव्यम्।

---

[1] इदं वार्तिकं काशिकादिष्वस्मिन् सूत्रे न दृश्यते।

[2] इदं वार्तिकं भाष्येऽस्मिन् सूत्रे नोपलभ्यते।

इतः	५ आदिर्ञिटुडवः ।	आदिः ८
आदिः, इत्	६ षः प्रत्ययस्य ।	प्रत्ययस्य ८
प्रत्ययस्य, आदिः, इत्	७ चुटू ।	
प्रत्ययस्य, आदिः, इत्	८ लशक्वतद्धिते ।	
	९ तस्य लोपः ।	
	(संख्यातानुदेश—)	
	१० यथासंख्यमनुदेशः समानाम् ।	
	(अधिकारस्वरूपनिर्देश—)	
	११ स्वरितेनाधिकारः ।	
	(आत्मनेपद—)	
	१२ अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ।	आत्मनेपदम् ७७
आत्मनेपदम्	१३ भावकर्मणोः ।	
आत्मनेपदम्	१४ कर्तरि कर्मव्यतिहारे ।	कर्तरि ७८, कर्मव्यतिहारे
कर्मव्य०, आत्म०	१५ न गतिहिंसार्थेभ्यः । (१)	१६ न १६
कर्मव्य०, आत्मने०*, न	१६ इतरेतराऽन्योन्योपपदाच्च (२)	
	१७ नेर्विशः ।	
	१८ परि-व्यवेभ्यः क्रियः ।	
	१९ वि-पराभ्यां जेः ।	

१—(वा०) (क) प्रतिषेधे हसादीनामुपसंख्यानम् । (ख) हरतेरप्रतिषेधः ।

२—(वा०) परस्परोपपदाच्च ।

* आत्मनेपदानुवृत्तेः प्रतियोगमुपस्थीयमानत्वादुत्तरत्र न दर्शिता तदनुवृत्तिः । एवं कर्तरि इति पदानुवृत्तिरपि न दर्शिता । उत्तरत्राप्यधिकारेष्वेवं बोध्यम् ।

	२० आङो दोऽनास्यविहरणे।	(१)	आङः २१
आङः	२१ क्रीडोऽनु-सं-परिभ्यश्च।	(२)	
	२२ समव-प्र-विभ्यः स्थः।	(३)	स्थः २६
स्थः	२३ प्रकाशन-स्थेयाख्ययोश्च।		
स्थः	२४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि	(४)	
स्थः	२५ उपान्मन्त्रकरणे	(५)	उपात् २६
उपात्, स्थः	२६ अकर्मकाच्च।		अकर्मकात् २
अकर्मकात्	२७ उद्विभ्यां तपः।	(६)	
अकर्मकात्	२८ आङो यम-हनः।		
"	२९ समो गम्यृच्छिभ्याम्।	(७)	
	३० नि-समुप-विभ्यो ह्वः।		ह्वः ३१
ह्वः	३१ स्पर्धायामाङः।		

१—(वा०) (क) आस्यविहरणसमानक्रियादपि प्रतिषेधो वक्तव्यः।[1] (ख) स्वाङ्गकर्मकाच्च।

२—(वा०) (क) समोऽकूजने। (ख) आगमेः क्षमायाम्। (ग) शिक्षेर्जिज्ञासायाम् (घ) आशिषि नाथः। (ङ) हरतेर्गतताच्छील्ये। (च) किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेष्विति वक्तव्यम्। (छ) आङि नुप्रच्छ्योः। (ज) शप उपलम्भने।

३—(वा०) आङः स्थः प्रतिज्ञाने।

४—(वा०) उद ईहायाम्।

५—(वा०) (क) उपाद्देवपूजासंगतकरणमित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम्।[2] (ख) वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्।

६—(वा०) स्वाङ्गकर्मकाच्च।

७—(वा०) (क) समो गमादिषु विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम् (ख) अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च। (ग) उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा वचनम्।

---

[1] काशिकादिषु पठ्यमानपि वार्तिकमिदं भाष्ये प्रत्याख्यातप्रायम्।

[2] 'संगतिकरणमित्रीकरण' इति काशिकादिसम्मतः पाठः।

	३२ गन्धनावक्षेपण-सेवन-साहसिक्य-प्रतियत्न-प्रकथनोपयोगेषु कृञः ।	कृञः ३५
कृञः	३३ अधेः प्रसहने ।	
कृञः	३४ वेः शब्दकर्मणः ।	वेः ३५
वेः, कृञः	३५ अकर्मकाच्च ।	
	३६ संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरण-ज्ञान-भृति-विगणन-व्ययेषु नियः ।	नियः ३७
नियः	३७ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि ।	
	३८ वृत्ति-सर्ग-तायनेषु क्रमः ।	क्रमः ४३, वृ—नेषु ३९
वृत्ति—नेषु, क्रमः	३९ उपपराभ्याम् ।	
क्रमः	४० आङ उद्गमने । (१)	
क्रमः	४१ वेः पादविहरणे ।	
क्रमः	४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ।	
,,	४३ अनुपसर्गाद्वा ।	
	४४ अपन्हवे ज्ञः ।	ज्ञः ४६
ज्ञः	४५ अकर्मकाच्च ।	
,,	४६ संप्रतिभ्यामनाध्याने ।	
	४७ भासनोपसंभाषा-ज्ञान-यत्न-विमत्युपमन्त्रणेषु वदः ।	वदः ५०
वदः	४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे ।	व्यक्तवाचां समुच्चारणे ५०
वदः, व्यक्त०, समु०	४९ अनोरकर्मकात् ।	

१—(वा०) ज्योतिषामुद्गमने ।

वदः, व्यक्त०, समु०	५० विभाषा विप्रलापे ।	
	५१ अवाद् ग्रः ।	ग्रः ५२
ग्रः	५२ समः प्रतिज्ञाने ।	
	५३ उदश्चरः सकर्मकात् ।	चरः ५४
चरः	५४ समस्तृतीयायुक्तात् ।	समःतृ-युक्तात् ५५
समःतृ-युक्तात्	५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ।(१)	
	५६ उपाद्यमः स्वकरणे ।	
	५७ ज्ञा-श्रु-स्मृ-दृशां सनः ।	सनः ५९
सनः	५८ नानोर्ज्ञः ।	न ५९
सनः	५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ।	
	६० शदेः शितः	शितः ६१
शितः	६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ।	
	६२ पूर्ववत्सनः	
	६३ आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य ।	
	६४ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ।(२)	
	६५ समः क्ष्णुवः ।	
	६६ भुजोऽनवने ।	
	६७ णेरणौ यत्कर्मणौ चेत्स कर्तानाध्याने ।	णेः ७१

१—(वा०) अशिष्टव्यवहारे तृतीया चतुर्थ्यर्थे भवतीति वक्तव्यम् ।*
२—(वा०) स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वक्तव्यम् ।

---

* भाष्येतु सूत्रगतं चेच्छब्दं चार्थे मत्वा, दाण आत्मनेपदं, सा (तृतीया) च चतुर्थ्यर्थे भवतीति व्याख्याय वार्तिकमिदं नोपन्यस्तम् ।

णेः	६८ भीस्म्योर्हेतुभये।	
,,	६९ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने।	प्रलम्भने ७०
णेः, प्रल—ने	७० लियः सम्मानन-शालीनीकरणयोश्च।	
,,	७१ मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे।	
	७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।	कर्मभिप्राये क्रियाफले ७७
कर्त्रभिप्राये क्रि०	७३ अपाद्वदः।	
,,	७४ णिचश्च।	
,,	७५ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे।	
,,	७६ अनुपसर्गाज्ज्ञः।	
,,	७७ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने।	
	(परस्मैपद——)	
	७८ शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्।	कर्तरि ६३
परस्मैपदम्	७९ अनुपराभ्यां कृञः।	
	८० अभि-प्रत्यतिभ्यः क्षिपः।	
	८१ प्राद्वहः।	वहः ८२
वहः	८२ परेर्मृषः।	
	८३ व्याङ्-परिभ्यो रमः।	रमः ८५
रमः	८४ उपाच्च।	उपात् ८५
उपात्, रमः	८५ विभाषाऽकर्मकात्।	
	८६ बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रु-भ्यो णेः।	णेः ८९
णेः	८७ निगरण-चलनार्थेभ्यश्च। (१)	

१—(वा०) अदेः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

णेः	८८ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्।	
णेः	८९ न पा-दम्याङ्यमाङ्यस-परिमुह-रुचि-नृति-वद-वसः। (१)	
	९० वा क्यषः।	वा ९३
वा	९१ द्युद्भ्यो लुङि।	
वा	९२ वृद्भ्यः स्यसनोः।	स्यसनोः ९३
स्यसनोः, वा	९३ लुटि च क्लृपः।	

इति तृतीयः पादः

अथ चतुर्थः पादः

	(एकसंज्ञाधिकार—)	
	१ आकडारादेका संज्ञा।	
	(विप्रतिषेधकार्यनिर्णय—)	
	२ विप्रतिषेधे परं कार्यम्।	
	(नदीसंज्ञा—)	
	३ यू स्त्र्याख्यौ नदी	यू—६ नदी
नदी	४ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री।	इयङुवङ्स्थानौ ६
इयङुवङ्स्थानौ, नदी	५ वामि।	वा ६
इयङु-नौ, वा, नदी	६ ङिति ह्रस्वश्च।	ह्रस्वः ७
	(घिसंज्ञा—)	
	७ शेषो घ्यसखि।	घि ९
घि	८ पतिः समास एव।	पतिः ९

१—(वा०) पादिषु धेट उपसंख्यानम्।

पतिः, घि	९ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ।	
	(लघुसंज्ञा—)	
	१० ह्रस्वं लघु ।	ह्रस्वम् ११
	(गुरुसंज्ञा—)	
ह्रस्वम्,	११ संयोगे गुरु ।	गुरु १२
गुरु	१२ दीर्घञ्च ।	
	(अङ्गसंज्ञा—)	
	१३ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ।	
	(पदसंज्ञा—)	
	१४ सुप्तिङन्तं पदम् ।	पदम् १७
पदम्	१५ नः क्ये ।	
,,	१६ सिति च	
,,	१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ।	स्वादिषु १८,असर्वनामस्थाने १८
	(भसंज्ञा—)	
स्वादिष्वसर्व०	१८ यचि भम् । (१)	भम् २०
भम्	१९ तसौ मत्वर्थे ।	
भम्	२० अयस्मयादीनि छन्दसि ।	
	(वचनविनियोग—)	
	२१ बहुषु बहुवचनम् ।	
	२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।	
	(कारक—)	
	२३ कारके ।	कारके ५५

१—(वा०) (क) नभोऽङ्गिरोमनुषां वत्युपसंख्यानम्। (ख) वृषण्वस्वश्वयोः।

(अपादानसंज्ञा—)

२४ ध्रुवमपायेऽपादानम् । (१) अपादानम् ३

अपादानम् २५ भी-त्रार्थानां भयहेतुः ।

” २६ पराजेरसोढः ।

” २७ वारणार्थानामीप्सितः ।

” २८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ।

” २९ आख्यातोपयोगे ।

” ३० जनिकर्तुः प्रकृतिः । कर्तुः ३२

”, कर्तुः ३१ भुवः प्रभवः ।

(सम्प्रदानसंज्ञा)—

३२ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् । (२) सम्प्रदानम् ४१

सम्प्रदानम् ३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ।

सम्प्रदानम् ३४ श्लाघ-ह्नुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्यमानः ।

” ३५ धारेरुत्तमर्णः ।

” ३६ स्पृहेरीप्सितः ।

” ३७ क्रुध-द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः । यं प्रति कोपः ३८

यं प्रति कोपः ३८ क्रुध-द्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ।

सम्प्रदानम् ३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ।

” ४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता । पूर्वस्य कर्ता ४१

१—(वा०) जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ।

२—(वा०) (क) क्रियाग्रहणमपि कर्तव्यम् । (ख) कर्मणः करणसंज्ञा संप्रदानस्य च कर्मसंज्ञा वक्तव्या ।

पं० विश्वनाथ स्मृति संग्रह

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

8216 H

पू--कर्ता, सम्प्र०,	४१ अनुप्रतिगृणश्च	
	(करणसंज्ञा—)	
	४२ साधकतमं करणम् ।	करणम् ४२, साधकतमम् ४३
साधकतमम्,	४३ दिवः कर्म च ।	
करणम् ”	४४ परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ।	
	(अधिकरणसंज्ञा—)	
	४५ आधारोऽधिकरणम् ।	आधारः ४८
	(कर्मसंज्ञा—)	
आधारः	४६ अधि-शीङ्-स्थासां कर्म ।	कर्म ४८
” कर्म	४७ अभि-नि-विशश्च ।	
” ”	४८ उपान्वध्याङ्वसः । (१)	
	४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म ।	कर्म ५३
कर्म	५० तथायुक्तं चानीप्सितम् ।	
”	५१ अकथितञ्च ।	
”	५२ गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ । (२)	अणि कर्ता स णौ ५३
अणि कत स णौ	५३ हृक्रोरन्यतरस्याम् । (३)	
	(कर्तृसंज्ञा—)	
	५४ स्वतन्त्रः कर्ता ।	कर्ता ५५

१—(वा०) वसेरश्यर्थस्य प्रतिषेधः ।

२—(वा०) (क) अक्खादिनीवहीनां प्रतिषेधः । (ख) वहेरनियन्तृकर्तृकस्य । (ग) भक्षेरहिंसार्थस्य (घ) दृशेश्च ।

३—(वा०) अभिवादिदृशोरात्मनेपद उपसंख्यानम् ।

कर्ता **५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च ।**

(निपातसंज्ञा—)

निपाताः **५६ प्राग्रीश्वरान्निपाताः ।** निपाताः ९७

५७ चादयोऽसत्त्वे । (१) असत्वे ५८

(उपसर्गसंज्ञा—)

निपाताः, **५८-५९ प्रादयः उपसर्गाः क्रिया योगे ।** (२) प्रादयः ६०, क्रियायोगे ७

१—(गणपा०) च, वा, ह, अह, एव, एवम्, नूनम्, शश्वत्, युगपत्, भूयस्
सूपत्, कूपत्, कुवित्, नेत्, चेत्, चण, कच्चित्, यत्र, तत्र, नह, हन्त, माकिम, माकीम्
माकिर, नकिम, नकीम, नकिर्, आकीम्, माङ् (मा), नञ् (न), तावत्, यावत्
त्वा, त्वे (त्वै, द्वै), रै, रे, श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वाहा, स्वधा, ओ३म, तथा, तथाहि
खलु, किल, अथ, सु, सुष्ठु, स्म, अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, दह, उञ्, उकञ्
वेलायाम्, मात्रायाम्, यथा, यत्, तत्, किम, पुरा, वधा (वध्वा), धिक्, हाह
हेहै, (हहे) पाट्, प्याट्, आहो, उताहो, हो, अहो, नो (नौ), अथो, ननु, मन्ये, मिथ्या
असि, ब्रूहि, तु, नु, इति, इव, वत्, वात्, वन, (चन, का०), सनुकम्, छम्वट्, (छंवट्
छंवट) शंके, शुकम्, खम्, सनात्, सनुतर्, नहिकम्, सत्यम्, ऋतम्, अद्धा, इद्धा
नोचेत्, नचेत्, नहि, जातु, कथम्, कुतः, कुत्र, अव, अनु, हा, हे, है (हे है, का०
आहोस्वित्, शम्, कम्, दिष्ट्या, पशु, वट, सह, अनुसट्, आनुषक्, अङ्ग, फट्, ताजक्
(माजक्) अये, अरे, चाटु (चटु, का०) कुम्, खुम्, घुम्, अम्, ईम्, (आईम्, अम्
ईम् का०,) सीम्, सिम्, सि, वै, उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च निपाताः
आकृतिगणोऽयम, इति चादयः। (तथा अस्मि, तक, यम, थाट्, तुम्, आम्, इ
अनुकम्, सुकम्, सुधा, हाहौ, हैहा, ईहा, ताजक्, बाट्, वाट्, हुम, शीम्, वाकि
आङ् (आ) अ, मा (माङ्), नो, ना प्रतिषेधे, उत, तुवै, न्वै, नुवै, अध, अधस्, सि
अच्छ, अदल्, हेहे, हैंहैं, म, आस, शस्, वव, डिकम्, हिनुक्, श्वकम्, नुकम्, अल
द्यौ, सुक्, अले, कीम्) कोष्ठान्तर्गताः तथा इत्यारभ्य वोर्थलिगसंगृहीते गणपा
दृश्यन्ते।

२—(गणपा०) प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्
(आ) नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप,। एते प्रादयः
(वा०) मरुच्छब्दस्योपसंख्यानम् । (वा०) श्रच्छब्दस्योपसंख्यानम् ।

(गतिसंज्ञा)—

प्रादयः, क्रिया०,	६० गतिश्च ।	(१)	गतिः ७९
गतिः, क्रिया०,	६१ ऊर्यादिच्विडाचश्च ।	(२)	
” ”	६२ अनुकरणं चानितिपरम् ।		
” ”	६३ आदरानादरयोः सदसती ।		
” ”	६४ भूषणेऽलम् ।		
” ”	६५ अन्तरपरिग्रहे ।	(३)	
” ”	६६ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ।		
” ”	६७ पुरोऽव्ययम् ।		अव्ययम् ६९
अव्ययम् गतिः	६८ अस्तं च ।		
” ”	६९ अच्छ गत्यर्थवदेषु ।		
”	७० अदोऽनुपदेशे ।		
”	७१ तिरोऽन्तर्धौ ।		तिरोऽन्तर्धौ ७२
तिरःअन्तर्धौ ”	७२ विभाषा कृञि ।		विभाषा ७६, कृञि ७९
विभाषा कृञि, गतिः	७३ उपाजेऽन्वाजे ।		

१—(बा०) (क) (क) कारिकाशब्दस्योपसंख्यानम् (ख) पुनश्चनसौ छन्दसि (ग) गत्युपसर्गसंज्ञकाः क्रियायोगे यत्क्रियायुक्तास्तं प्रतीतिवचनम् (घ) सुदुरोः प्रतिजेधो नुम्विधितत्त्वषत्वणत्वेषु

२—(गणपा०) ऊरी उररी, (अंगीकारे विस्तारे च का०) तन्थी, ताली, आताली, वेताली, धूली, धूसी, शकला, संशकला, ध्वंसकला, भ्रंसकला (भ्रंशकला का०) गुलगुधा, सजुष् (सजूः) फल (फलूका) फली, बिक्ली, आक्ली, आलोष्टी, केवाली, केवासी, सेवासी (पर्याली) शेवाली, वर्षाली, अत्यूमशा, वश्मसा, मस्मसा मसमसा, श्रौषट्, (श्रौषट्) वौषट्, वषट्, स्वाहा, स्वधा, वन्धा, प्रादुस्, श्रत् (श्रत्) आविस्, कराली, इत्यूर्यादयः।

३—(वा०) अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वं वाच्यम्।

विभाषा, कृञि, गतिः	७४ साक्षात्प्रभृतीनि च । (१)	
,, ,,	७५ अनत्याधान उरसिमनसी ।	
,, ,,	७६ मध्ये-पदे-निवचने च ।	
कृञि, गतिः	७७ नित्यं हस्ते-पाणावुपयमने ।	
,, ,,	७८ प्राध्वं बन्धने ।	
,, ,,	७९ जीविकोपनिषदावौपम्ये ।	

(गत्युपसर्गाणां स्थाननिर्देश––)

	८० ते प्राग्धातोः ।	ते, धातोः ८२
ते, धातोः	८१ छन्दसि परेऽपि (२)	छन्दसि ८२
,, ,, छ०	८२ व्यवहिताश्च ।	

(कर्मप्रवचनीयसंज्ञा––)

	८३ कर्मप्रवचनीयाः ।	कर्म–याः ९८
कर्म–नीयः	८४ अनुर्लक्षणे ।	अनुः ८६
अनुः, कर्म०	८५ तृतीयार्थे ।	
अनुः, कर्म०	८६ हीने ।	हीने ८७
अनुः, कर्म०	८७ उपोऽधिके च ।	
कर्म०	८८ अपपरी वर्जने ।	
,,	८९ आङ् मर्यादावचने ।	
,,	९० लक्षणेत्थंभूताख्यान-भाग-वीप्सासु प्रति-पर्यनवः ।	ल–सु ९१
,, ल–सु	९१ अभिरभागे ।	

१—(वा०) साक्षात्प्रभृतिषु च्व्यर्थवचनम्।

२—एतत्सूत्रद्वयं विकृतं वार्तिकम्। भाष्ये 'छन्दसि परव्यवहितवचनञ्च' इति वार्तिक पाठदर्शनात्। परमिदानीं सूत्रत्वेन दृश्यमानत्वादस्माभिः सूत्रत्वेन संगृहीतम्।

कर्म० ९२ प्रतिः प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः ।

,, ९३ अधिपरी अनर्थकौ ।

,, ९४ सुः पूजायाम् । पू—म् ९५

,, , पू० म् ९५ अतिरतिक्रमणे च ।

कर्म० ९६ अपिः पदार्थ-संभावनान्ववसर्ग-गर्हा-समुच्चयेषु ।

,, ९७ अधिरीश्वरे । अधिः ९८

,, , अधिः ९८ विभाषा कृञि ।

(परस्मैपदसंज्ञा––)

९९ लः परस्मैपदम् ।

(आत्मनेपदसंज्ञा––)

१०० तङानावात्मनेपदम् ।

(तिङ् विभाग––)

१०१ तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः । त्रीणि त्रीणि १०३

णि त्रीणि १०२ तान्येकवचन-द्विवचन-बहुवचनान्येकशः । एकव—कशः १०३

(सुब्विभाग––)

क—शः १०३ सुपः । सुपः १०४

पः, १०४ विभक्तिश्च ।

(पुरुषसंज्ञा––)

१०५ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः । उ—दे, स—णे, स्था-नि० १०८, मध्यमः १०६

—दे, स—णे, ा—मध्यमः १०६ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च ।

स-णे, स्था-पि **१०७ अस्मद्युत्तमः ।**

स-णे, स्था-पि **१०८ शेषे प्रथमः ।**

(संहितासंज्ञा—)

१०९ परः सन्निकर्षः संहिता ।

(अवसानसंज्ञा—)

११० विरामोऽवसानम् ।

इति प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ।

इति प्रथमोऽध्यायः ।

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(समर्थपरिभाषा—)

१ समर्थः पदविधिः ।

(पराङ्गवद्भावातिदेश--)

२ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे । (१) सुप् २।२।३८

(समासाधिकार—)

३ प्राक् कडारात्समासः । समासः २।२।

४ सह सुपा । (२) सह सुपा २।२।

---

[1] अधिकारसूत्राणां प्रायशोऽनुवृत्तिर्न दर्शिता सुज्ञेयत्वात्

१—(वा०) (क) आमन्त्रितस्य पराङ्गवद्भावे षष्ठ्यामन्त्रितकारकवचनम्
(ख) सुबन्तस्य पराङ्गवद्भावे समानाधिकरणस्योपसंख्यानमनन्तरत्वात् ।
(ग) परमपि छन्दसि । (घ) अव्ययप्रतिषेधश्च । (ङ) अनव्ययीभावस्य ।

२—(वा०) इवेन विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च ।

(अव्ययीभावसमाससंज्ञा—)

	५ अव्ययीभावः ।	अव्ययीभावः २१
सुपा सह, समस्यते	६ अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य-सादृश्य-संपत्ति-साकल्यान्तवचनेषु ।	अव्ययम् २१
”	७ यथाऽसादृश्ये ।	
”	८ यावदवधारणे ।	
”	९ सुप् प्रतिना मात्रार्थे ।	
समस्यन्ते	१० अक्ष-शलाका-संख्याः परिणा ।	
”	११-१२ विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ।	विभाषा २।२।३८ पंचम्या १३
पञ्चम्या	१३ आङ् मर्यादाभिविध्योः ।	
	१४ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ।	लक्षणेन १६
लक्षणेन	१५ अनुर्यत्समया ।	अनुः १६
अनुः, लक्षणेन,	१६ यस्य चायामः ।	
	१७ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च । (१)	
	१८ पारेमध्ये षष्ठ्या वा ।	

१—(गणपा०) तिष्ठद्गु, वहद्गु, आयतीगवम्, खलेयवम्, खलेबुसम् लूनयवम्, लूयमानयवम्, पूतयवम्, पूयमानयवम्, संहृतयवम्, संह्रियमाणयवम्, संहृतबुसम्, संह्रियमाणबुसम्, समभूमि, समपदाति, सुषमम्, विषमम्, दुःषमम्, निःषमम् अपसमम्, आयतीसमम्, (प्रोढम) पापसमम्, पुण्यसमम्, प्राह्णम्, प्ररथम्, प्रमृगम्, प्रदक्षिणम्, (अपरदक्षिणम्) संप्रति, असंप्रति, इच् प्रत्ययः, समासान्तः। (इच् कर्मव्यतिहारे) इति तिष्ठद्गुप्रभृतयः।

	१९ संख्या वंश्येन ।	संख्या २०
संख्या	२० नदीभिश्च । (१)	नदीभिः २१
नदीभिः	२१ अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ।	
	(तत्पुरुषसमास—)	
	२२ तत्पुरुषः ।	तत्पुरुषः २।२।२
तत्पुरुषः	२३ द्विगुश्च ।	
	२४ द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त-प्राप्तापन्नैः । (२)	द्वितीया २९
	२५ स्वयं क्तेन ।	क्तेन २८
द्वितीया, क्तेन	२६ खट्वा क्षेपे ।	
क्तेन	२७ सामि ।	
द्वितीया, क्तेन	२८ कालाः ।	कालाः २९
द्वितीया, कालाः	२९ अत्यन्तसंयोगे च ।	
	३० तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ।	तृतीया ३५
तृतीया	३१ पूर्वसदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः । (३)	
तृतीया, क-णे कर्तृकरणे	३२ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ।	कर्तृकरणे
,,	३३ कृत्यैरधिकार्थवचने । (४)	
,,	३४ अन्नेन व्यञ्जनम् ।	

१—(वा०) नदीभिः संख्यायाः समाहारेऽव्ययीभावो वक्तव्यः ।

२—(वा०) श्रितादिषु गमिगाम्यादीनामुपसंख्यानम् ।

३—(वा०) पूर्वादिष्ववरस्योपसंख्यानम् ।

४—(वा०) कृत्यग्रहणे यण्ण्यतोर्ग्रहणम् ।

तृतीया, क-णे　३५ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ।

३६ चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः । (१)

३७ पञ्चमी भयेन । (२)　पंचमी ३९

पञ्चमी　३८ अपेतापोढ-मुक्त-पतितापत्रस्तैरल्पशः ।

,,　३९ स्तोकान्तिक-दूरार्थ-कृच्छ्राणि क्तेन । (३)

४० सप्तमी शौण्डैः ।　सप्तमी ४८

सप्तमी　४१ सिद्ध-शुष्क-पक्व-बन्धैश्च ।

,,　४२ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे । (४)

,,　४३ कृत्यैर्ऋणे (५)

,,　४४ संज्ञायाम् ।

,,　४५ क्तेनाहोरात्रावयवाः ।　क्तेन ४७

,, क्तेन　४६ तत्र ।

,, ,,　४७ क्षेपे ।　क्षेपे ४८

१—(वा०) अर्थेन नित्यसमासो सर्वलिङ्गता च वक्तव्या।

२—(वा०) भयभीतभीतिभीभिरिति वक्तव्यम्।

३—(वा०) शतसहस्रौ परेणेति वक्तव्यम्।

४—(वा०) ध्वांक्षेणेत्यर्थग्रहणम्।

५—(वा०) कृत्यैर्नियोगे यद्ग्रहणम्।

सप्तमी, क्षेपे	४८ पात्रे*समितादयश्च । (१)	
	(तत्पुरुषान्तर्गतकर्मधारयसमास—)	
	४९ पूर्वकालैक-सर्व-जरत्पुराण-नव-केवलाः समानाधिकरणेन ।	समानाधि-करणेन ७२
समानाधिकरणेन,	५० दिक्संख्ये संज्ञायाम् ।	दिक्संख्ये ५१
,,	५१ तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ।	
,,	५२ संख्यापूर्वो द्विगुः ।	
,,	५३ कुत्सितानि कुत्सनैः ।	
,,	५४ पापाणके कुत्सितैः ।	
,,	५५ उपमानानि सामान्यवचनैः ।	
,,	५६ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे । (२)	
,,	५७ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।	
,,	५८ पूर्वापर-प्रथम-चरम-जघन्य-समान-मध्य-मध्यम-वीराश्च ।	

१—(गणपा०) पात्रेसमिताः, पात्रेबहुलाः, उदुम्बरमशकाः, उदुम्बरकृमि (उदरक्रिमिः का०) कूपकच्छपः, अवटकच्छपः, कूपमण्डूकः, कुम्भमण्डूक उदपानमण्डूकः, नगरकाकः, नगरवायसः, मातरिपुरुषः, पिण्डीशूरः, पितरिशूर गेहेशूरः, गेहेनर्दी, गेहेक्ष्वेडी, गेहेविजिती, गेहेव्याडः, गेहेमेही, (गेहेदाही) गेहेदृप्तः, (गेहेतृप्तः का०) गेहेधृष्टः, गर्भेतृप्तः, आखनिकवकः, गोष्ठेशूर गोष्ठेविजिती, गोष्ठेक्ष्वेडी, गोष्ठेपटुः, गोष्ठेपण्डितः, गोष्ठेप्रगल्भः, कर्णेटिरिटिरा (कर्णेटिट्टिभः का०) कर्णेचुरुचुरा, (कर्णेचुरचुरा का०) कूपचूर्णकः, आकृति गणोऽयम् । इति पात्रेसमितादिः ।

* 'सम्मितादयश्च' इति पाठान्तरम् ।

२—(गणपा०) व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, ऋषभ, चन्दन, वृक, (वृक्ष का०) वृष, वराह, हस्तिन, तरु, कुञ्जर, रुरु, पृषत्, (पृषत का०) पुण्डरीक, पलाश कितव, बलाहक, (का०), आकृतिगणोऽयम् । तेन मुखपद्मम्, मुखकमलम् करकिसलयं, पार्थिवचन्द्रः । इति व्याघ्रादिः ।

समानाधिकरणेन ५९ श्रेण्यादयः कृतादिभिः। (१)

,, ६० क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ्। (२)

,, ६१ सन्महत्-परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः।

,, ६२ वृन्दारक-नाग-कुञ्जरैः पूज्यमानम्।

,, ६३ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने।

,, ६४ किं क्षेपे।

,, ६५ पोटा-युवति-स्तोक-कतिपय-गृष्टि-धेनु-वशा-वेहद्बष्कयणी-प्रवक्तृ-श्रोत्रियाध्यापक-धूर्तैर्जातिः। जातिः ६६

जातिः ,, ६६ प्रशंसावचनैश्च।

,, ६७ युवा खलति-पलित-वलिन-जरतीभिः।

,, ६८ कृत्यतुल्याख्या अजात्या।

१—(गणपा०) श्रेणि, ऊक, (एक का०) पूग, कुन्दुम, (मुकुन्द, कुन्द का०) राशि, निचय, (विशेष) निधन, (निधान का०) पर, इन्द्र, देव, मुण्ड भूत, श्रवण, वदान्य, अध्यापक, अभिरूपक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, विशिष्ट (विशिख का०) पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, कृपण, इति श्रेण्यादिः।

(वा०) श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनम्।

(गणपा०) कृत, मित, मत, भूत, उक्त, युक्त, समाज्ञात, समाम्नात, समाख्यात, सम्भावित, संसेवित, अवधारित, अवकल्पित, निराकृत, उपकृत, उपाकृत, दृष्ट, कलित, दलित, उदाहृत, विश्रुत, उदित, आकृतिगणः। इति कृतादिः।

२—(वा०) कृतापकृतादीनामुपसंख्यानं कर्तव्यम्।

समानाधिकरणेन **६९ वर्णो वर्णेन । (१)**
,, **७० कुमारः श्रमणादिभिः । (२)**
,, **७१ चतुष्पादो गर्भिण्या । (३)**
,, **७२ मयूरव्यंसकादयश्च । (४)**

इति द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः

१—(वा०) समानाधिकरणाधिकारे शाकपार्थिवादीनामुपसंख्यानमुत्तरपदलो पश्च।

२—(गणपा०) **श्रमणा, प्रव्रजिता, कुलटा, गर्भिणी, तापसी, दासी, बन्धक अध्यापक, अभिरूपक, पटु, मृदु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण। इति श्रमणादि:**

३—(वा०) चतुष्पाज्जातिरिति वक्तव्यम्।

४—(गणपा०) **मयूरव्यंसक, छात्रव्यंसक, कम्बोजमुण्ड (काम्बोजमु का०) यवनमुण्ड, छन्दसि हस्तेगृह्य, (हस्तगृह्य), पादेगृह्य (पादगृह्य) लाङ्गू गृह्य (लाङ्गुलेगृह्य, लाङ्गलेगृह्य का०) पुनर्दाय, एहीडादयोऽन्यपदार्थे। एही वर्तते, एहीयवं वर्तते, एहिवाणिजा क्रिया, अपेहिवाणिजा, प्रेहिवाणिजा, एहिस्वा गता, अपेहिस्वागता, एहिद्वितीया, अपेहि द्वितीया, प्रेहिद्वितीया, एहिकटा अपेहिकटा (अपोहकटा का०) प्रेहिकटा (प्रोहकटा का०) आहरकरटा, प्रेहिकर्दम प्रोहकर्दमा, विधमचूडा, उद्धरचूडा (उद्धमचूडा), आहरचेला, आहरवासना, आह सेना, आहरविनता, (आहरवनिता), कृन्तविचक्षणा, उद्धरोत्सृजा, उद्धरावसृजा उद्धमविधमा, उत्पचनिपचा (उत्पचविपचा का०) उत्पतनिपता, उच्चावच उच्चनीचम्, आचोपचम्, आचपराचम्, नखप्रचम्, निश्चप्रचम्, अकिंच स्नात्वाकालक, पीत्वास्थिरक, भुक्त्वासुहित, प्रोष्यपापीयान्, उत्पत्यपाकल (उत्पत्यव्याकुला का०) निपत्य रोहिणी, निषण्णश्यामा, अपेहिप्रघसा, एहिविघस इहपंचमी, इहद्वितीया, जहि कर्मणा बहुलमाभीक्ष्ण्ये कर्तारं चाभिदधाति। (उज्ज जहिजोडम् (जहिजोडः का०) जहिस्तम्बम्, (जहिस्तम्बः का०) उज्जहिस्तम्ब स्तम्बः का०) आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये। अश्नीतपिबता, पचतभृज्जत खादतमोदता, खादताचमता (खादतवमता) आहरनिवपा, आवपनिष्क (आहरनिष्किरा), उत्पचविपचा, भिन्धिलवणा, कृन्धिविचक्षणा (छिन्धिवि० का पचलवणा, पचप्रकूटा, प्रेहिस्वागता, अपोहकर्दमा, अचितोपचितम्, अवचि पराचितम्, उज्जहिजोडः। आकृतिगणः। तेन—अकुतोभयः, कान्दिशी आहोपुरुषिका, अहमहमिका, यदृच्छा, एहिरेयाहिरा, उन्मृजावमृजा, अध्यान्त अवश्यकार्यम्, इति मयूरव्यंसकादि:।**

अथ द्वितीयः पादः

(तत्पुरुषसमास—)

	१ पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे।		एकदे-णे ३
एकदे-णे	२ अर्धं नपुंसकम्।		
एकदे-णे	३ द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-तुर्याण्यन्यतरस्याम्।		
	४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया।		
	५ कालाः परिमाणिना।		
सुपा ,	६ नञ्।	(१)	
,,	७ ईषदकृता	(२)	
,,	८ षष्ठी।	(३)	षष्ठी १७
षष्ठी	९ याजकादिभिश्च।		
षष्ठी	१० न निर्धारणे। (४)		न १६
षष्ठी, न	११ पूरण-गुण-सुहितार्थ-सदव्यय-तव्य-समानाधिकरणेन।		
षष्ठी, न	१२ क्तेन च पूजायाम्।		क्तेन १३
क्तेन, षष्ठी, न	१३ अधिकरणवाचिना च।		

१—(वा०) नञो नलोपस्तिङि क्षेपे।*

२—(वा०) ईषद्गुणवचनेनेति वक्तव्यम्।

३—(वा०) (क) कृद्योगा च षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम्। (ख) तत्स्थैश्च गुणैः षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम्। (ग) न तु तद्विशेषणैः। (घ) गुणात्तरेण तरलोपश्चेति वक्तव्यम्।*

४—(वा०) प्रतिपदविधाना च षष्ठी न समस्यत इति वक्तव्यम्।

---

* इदं वार्तिकमस्मिन् सूत्रे, भाष्ये न दृश्यते।

षष्ठी, न	१४ कर्मणि च ।	
" "	१५ तृजकाभ्यां कर्तरि ।	तृजकाभ्याम् १७
तृजकाभ्यां, षष्ठी, न	१६ कर्तरि च ।	
तृ-भ्याम, षष्ठी	१७ नित्यं क्रीडाजीविकयोः ।	नित्यम् १९
नित्यम्	१८ कु-गति-प्रादयः । (१)	
"	१९ उपपदमतिङ् ।	उपपदम् २१
उपपदम्	२० अमैवाव्ययेन ।	अमैव, अ-न २१
उपपदम्, अमैव अ-न	२१ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ।	तृतीया प्रभृतीनि २२
तृतीयाप्रभृतीनि,	२२ क्त्वा च ।	
	(बहुव्रीहिसमास—)	
	२३ शेषो बहुव्रीहिः ।	बहुव्रीहिः २८
बहुव्रीहिः	२४ अनेकमन्यपदार्थे । (२)	अनेकम् २६
"	२५ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये ।	
"	२६ दिङ्नामान्यन्तराले ।	
"	२७ तत्र तेनेदमिति सरूपे ।	
बहुव्रीहिः	२८ तेन सहेति तुल्ययोगे ।	

१—(वा०) (क) स्वती पूजायाम् (सौनाग)। (ख) दुर्निन्दायाम् (सौनाग)। (ग) आङीषदर्थे (सौनाग)। (घ) कुः पापार्थे (सौनाग)। (ङ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया। (च) अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया। (छ) अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। (ज) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या (झ), निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पंचम्या। (ञ) अव्ययं प्रवृद्धादिभिः।

२—(वा०) (क) बहुव्रीहिः समानाधिकरणानाम्। (ख) अव्ययानां च बहुव्रीहिर्वक्तव्यः। (ग) सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च। (घ) समुदायविकारषष्ठ्याश्च। (ङ) प्रादिभ्यो धातुजस्य वा। (च) नञोऽस्त्यर्थनाम्। (छ) सुबधिकारेऽस्तिक्षीरादीनाम्।

	(द्वन्द्वसमास—)		
अनेकम्	२९ चार्थे द्वन्द्वः ।		
	(पूर्वनिपात—)		
	३० उपसर्जनं पूर्वम् ।		पूर्वम् ३८ उपसर्जन ३१
उपसर्जनम्	३१ राजदन्तादिषु परम् ।	(१)	
पूर्वम्	३२ द्वन्द्वे घि ।		द्वन्द्वे ३४
द्वन्द्वे, पूर्वम्	३३ अजाद्यदन्तम् ।	(२)	
” ”	३४ अल्पाच्तरम् ।	(३)	
पूर्वम्	३५ सप्तमी-विशेषणे बहुव्रीहौ ।	(४)	बहुव्रीहौ ३७
बहुव्रीहौ, पूर्वम्	३६ निष्ठा ।	(५)	

१—(गणपा०) १ राजदन्तः, अग्रेवणम्, लिप्तवासितम्, नग्नमुषितम्, सिक्तसंमृष्टम्,। मृष्टलुञ्चितम्, अवक्लिन्नपक्वम्, अर्पितोप्तम्, (अर्पितोतम्) उप्तगाढम्, उलूखलमुसलम्, तण्डुलकिण्वम्, दृषदुपलम्, आरग्वायनबन्धकी, चित्ररथवाल्हीकम्, (चित्ररथबाह्लीकम् का०) अवन्त्यश्मकम् (आव० का०) शूद्रार्यम्, स्नातकराजानौ, विश्वक्सेनार्जुनौ, अक्षिभ्रुवम्, दारगवम्, शब्दार्थौ, कामार्थौ (धर्मार्थौ), अर्थशब्दौ, अर्थधर्मौ, अर्थकामौ, वैकारिमतम्, गोजवाजम्, (गाजवाजम्, गजवाजम् का०) गोपालधानीपूलासम्, पूलासककुरण्डम् (पूलासकारण्डम्, पूलासककरण्डम् का०) स्थूलासम् (स्थूलपूलासम्), उशीरबीजम्, जिज्ञास्थि, सिञ्जाश्वत्थम् (सिञ्जास्थम् का०) चित्रास्वाती, भार्यापती, दंपती, जायापती, पुत्रपती, पुत्रपशू (पुत्रपशु का०) केशश्मश्रु (श्मश्रुकेशौ) शिरोबीजम्, शिरोजानु, सर्पिर्मधुनी, मधुसर्पिषी, आद्यन्तौ, अन्तादी, गुणवृद्धी, वृद्धिगुणौ। इति राजदन्तादिः।

२—(वा०) (क) बहुष्वनियमः। (ख) द्वन्द्वे ध्यजाद्यदन्तं विप्रतिषेधेन।

३—(वा०) (क) अनेकप्राप्तावेकस्य नियमोऽनियमः शेषेषु। (ख) ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण समानाक्षराणाम्। (ग) अभ्यर्हितम्। (घ) लघ्वक्षरम्। (ङ) वर्णानामानुपूर्व्येण। (च) भ्रातुश्च ज्यायसः। (छ) संख्याया अल्पीयस्याः। (ज) धर्मादिषूभयम्।

४—(वा०) (क) बहुव्रीहौ सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम्। (ख) वा प्रियस्य। (ग) सप्तम्याः पूर्वनिपाते गड्वादिभ्यः परवचनम्।

५—(वा०) (क) निष्ठायाः पूर्वनिपाते जातिकालसुखादिभ्यः परवचनम्। (ख) प्रहरणार्थेभ्यश्च।

निष्ठा, पूर्वम्	३७ वाहिताग्न्यादिषु । (१)	वा ३८
वा, पूर्वम्	३८ कडाराः कर्मधारये । (२)	

इति द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः

(विभक्तिविधान--)

१ अनभिहिते ।

(द्वितीयाविभक्ति)—

	२ कर्मणि द्वितीया । (३)	द्वितीया ५ कर्मणि ३
द्वितीया	३ तृतीया च होश्छन्दसि ।	
”	४ अन्तरान्तरेण युक्ते ।	
”	५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।	कालाध्वनोः अत्यंत संयो
कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे	६ अपवर्गे तृतीया ।	
कालाध्वनोः	७ सप्तमी-पञ्चम्यौ कारकमध्ये ।	
	८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ।	कर्मप्रवचनी युक्ते ११
कर्म-युक्ते	९ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी ।	

१—(गणपा०) आहिताग्नि, जातपुत्र, जातदन्त, जातश्मश्रु, तैलपी घृतपीत, मद्यपीत, ऊढभार्य, गतार्थ। आकृतिगणोऽयम्। तेन गडुकण्ठ, अस्यु (अरमुद्यत, दण्डपाणिप्रभृतयोऽपि) इत्याहिताग्निः।

२—(गणपा०) कडार, गडुल, खञ्ज, (खञ्जर का०) खोड, काण, खलति, गौर, वृद्ध, भिक्षुक, पिंग, पिङ्गुल, (पिङ्गल) तनु, (तनुतड) जठर, ब मटर, कञ्ज, बर्बर, वटर, । इति कडारादिः।

३—(वा०) अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेषूपसंख्यानम् ।

कर्म-युक्ते	१० पञ्चम्यपाङ्परिभिः ।	पञ्चमी ११
क-क्ते पञ्चमी	११ प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात् ।	
	१२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि । (१)	
	(चतुर्थी—)	
	१३ चतुर्थी सम्प्रदाने । (२)	चतुर्थी १७
चतुर्थी	१४ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ।	
,,	१५ तुमर्थाच्च भाववचनात् ।	
,,	१६ नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधालं-वषड्योगाच्च । (३)	
,,	१७ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु । (४)	
	(तृतीयाविभक्ति—)	
	१८ कर्तृ-करणयोस्तृतीया । (५)	तृतीया २३
तृतीया	१९ सहयुक्तेऽप्रधाने ।	
,,	२० येनाङ्गविकारः ।	
,,	२१ इत्थम्भूतलक्षणे ।	
,,	२२ संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ।	हेतौ २७
,,	२३ हेतौ । (६)	

१—(वा०) (क) अध्वन्यर्थग्रहणम् । (ख) आस्थितप्रतिषेधश्च ।

२—(वा०) (क) चतुर्थीविधाने तादर्थ्य उपसंख्यानम् । (ख) क्लृपि-सम्पद्यमाने । (ग) उत्पातेन ज्ञाप्यमाने । (घ) हितयोगे चतुर्थी वक्तव्या ।

३—(वा०) अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणं कर्तव्यम् ।

४—(वा०) अनावादिष्विति वक्तव्यम् ।

५—(वा०) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।

६—(वा०) निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां प्रायदर्शनम् ।

हेतौ	२४ अकर्तर्यृणे पञ्चमी ।	पंचमी २५
पंचमी, हेतौ	२५ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् ।	
हेतौ	२६ षष्ठी हेतुप्रयोगे ।	षष्ठी, हेतुप्रयोगे २७
षष्ठी हेतुप्रयोगे हेतौ	२७ सर्वनाम्नस्तृतीया च ।	
	(पंचमीविभक्ति) —	
	२८ अपादाने पञ्चमी (१)	पंचमी ३५
पञ्चमी	२९ अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ।	
	३० षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ।	
	३१ एनपा द्वितीया ।	
पञ्चमी	३२ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् ।	तृतीया ३५ अन्यतरस्या ३३
तृतीया, पञ्चमी अन्यतरस्याम्	३३ करणे च स्तोकाल्प-कृच्छ्र-कतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ।	
पञ्चमी	३४ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ।	
तृतीया, पंचमी	३५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ।	दूरा-र्थेभ्यः
	(सप्तमीविभक्ति)—	
दूरान्तिकार्थेभ्यः	३६ सप्तम्यधिकरणे च । (२)	सप्तमी ४१

१—(वा०) (क) पंचमीविधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्। अधिकरणे च। (ग) प्रश्नाख्यानयोश्च। (घ) यतश्चाध्वकालनिर्माणम्। तद्युक्तात्काले सप्तमी (च) अध्वनः प्रथमा च।

२—(वा०) (क) सप्तमीविधाने क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यान (ख) साध्वसाधुप्रयोगे च। (ग) कारकार्हाणां च कारकत्वे। (घ) अका कार्हाणां चाकारकत्वे। (ङ) तद्विपर्यासे च। (च) निमित्तात्कर्मसंयोगे।

सप्तमी	**३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ।**	यस्य भावे-म् ३८
स-मी यस्य भा-म्	**३८ षष्ठी चानादरे ।**	षष्ठी ४१
षष्ठी-सप्तम्यौ	**३९ स्वामीश्वराधिपति-दायाद-साक्षि-प्रतिभू-प्रसूतैश्च ।**	
षष्ठीसप्तम्यौ	**४० आयुक्त-कुशलाभ्यां चासेवायाम् ।**	
षष्ठीसप्तम्यौ	**४१ यतश्च निर्धारणम् ।**	यतः, निर्धारणम् ४२
यतः, निर्धारणम्	**४२ पञ्चमी विभक्ते ।**	
	४३ साधु-निपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ।	सप्तमी ४५
सप्तमी	**४४ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ।**	तृतीया ४५
तृतीयासप्तम्यौ	**४५ नक्षत्रे च लुपि ।**	
	(प्रथमाविभक्ति—)	
	४६ प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा ।	प्रथमा ४७
प्रथमा	**४७ संबोधने च ।**	संबोधने ४८
	(आमन्त्रितसंज्ञा—)	
संबोधने	**४८ सामन्त्रितम् ।**	
	(संबुद्धिसंज्ञा--)	
संबोधनस्य	**४९ एकवचनं संबुद्धिः ।**	
	(षष्ठीविभक्ति—)	
	५० षष्ठी शेषे ।	षष्ठी, शेषे ७३
षष्ठी, शेषे	**५१ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ।**	
षष्ठी, शेषे	**५२ अधीगर्थ-दयेशां कर्मणि ।**	कर्मणि ६१
षष्ठी, कर्मणि	**५३ कृञः प्रतियत्ने ।**	

षष्ठी शेषे,	५४ रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः। (१)	
कर्मणि, षष्ठी	५५ आशिषि नाथः।	
कर्मणि, षष्ठी	५६ जासि-निप्रहण-नाट-क्राथ-पिषां हिंसायाम्।	
”, ”	५७ व्यवहृ-पणोः समर्थयोः।	
”, ”	५८ दिवस्तदर्थस्य।	दिवस्तदर्थस्य ६
कर्मणि दि-स्य, ष	५९ विभाषोपसर्गे।	
दिव-स्य, कर्मणि	६० द्वितीया ब्राह्मणे।	
कर्मणि षष्ठी	६१ प्रेष्य-ब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने। (२)	
षष्ठी	६२ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि। (३)	छन्दसि, बहुलम् ६३
बहुलं, छन्दसि, षष्ठी	६३ यजेश्च करणे।	
षष्ठी	६४ कृत्वोर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे।	
”	६५ कर्तृकर्मणोः कृति।	
”	६६ उभयप्राप्तौ कर्मणि। (४)	
”	६७ क्तस्य च वर्तमाने (५	क्तस्य ६८
क्तस्य, षष्ठी	६८ अधिकरणवाचिनश्च।	
षष्ठी	६९ न लोकाव्यय-निष्ठा-खलर्थ-तृनाम्। (६)	न ७०

१–(वा०) अज्वरिसन्ताप्योरिति वक्तव्यम्।

२–(वा०) हविषः प्रस्थितस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः।

३–(वा०) षष्ठ्यर्थे चतुर्थी वक्तव्या।

४–(वा०) (क) अकाकारयोः स्त्रीप्रत्यययोः प्रयोगे नेति वक्तव्यम्। (ख) शेषे विभाषा।

५–(वा०) (क) नपुंसके भाव उपसंख्यानम्। (ख) शेषविज्ञानात्सिद्धम्।

६–(वा०) (क) उकप्रतिषेधे कमेर्भाषायामप्रतिषेधः। (ख) अव्ययप्रतिषेधे तोसुन्कसुनोरप्रतिषेधः। (ख) द्विषः शतुर्वा वचनम्।

षष्ठी न ७० अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ।

" ७१ कृत्यानां कर्तरि वा । (१)

" ७२ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।

" ७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्य-मद्र-भद्र-कुशल-सुखार्थ-हितैः । (२)

इति द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः

अथ चतुर्थः पादः

(एकवद्भाव—)

१ द्विगुरेकवचनम् । एकवचनम् १६

एकवचनम् २ द्वन्द्वश्च प्राणि-तूर्य-सेनाङ्गानाम् । द्वन्द्वः १६

द्वन्द्वः, एक-म् ३ अनुवादे चरणानाम् ।

" " ४ अध्वर्यु-क्रतुरनपुंसकम् ।

" " ५ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ।

" " ६ जातिरप्राणिनाम् ।

" " ७ विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः । (३)

१—(वा०) उभयप्राप्तौ कृत्ये षष्ठ्याः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

२—(वा०) आयुष्यादीनाम् पर्यायग्रहणं कर्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) अग्रामा इत्यत्र नगराणां प्रतिषेधो वक्तव्यः (ख) उभयश्च ग्रामाणां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

द्वन्द्वः, एक०	८ क्षुद्रजन्तवः ।	
,, ,,	९ येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः ।	
,, ,,	१० शूद्राणामनिरवसितानाम् ।	
,, ,,	११ गवाश्वप्रभृतीनि च ।	
,, ,,	१२ विभाषा वृक्ष-मृग-तृण-धान्य-व्यञ्जन-पशु-शकुन्यश्ववडव-पूर्वापराधरोत्तराणाम् (१)	विभाषा १
,, ,, वा	१३ विप्रतिषिद्धञ्चानधिकरणवाचि।	
,, ,,	१४ न दधिपयआदीनि ।	न १६
,, ,,	१५ अधिकरणैतावत्त्वे च ।	अ-त्वे १६
,, ,,अ-त्वे	१६ विभाषा समीपे ।	

(समासलिङ्गप्र-, लिङ्गानुशासनप्रकरणंवा—)

	१७ स नपुंसकम् (२)	नपुंसकम्
नपुंसकम्	१८ अव्ययीभावश्च । (३)	
,,	१९ तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ।	तत्पुरुषः अन-रयः
अ-यः,त-षः,न०	२० संज्ञायां कन्थोशीनरेषु ।	
,, ,, ,,	२१ उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् ।	
,, ,, ,,	२२ छाया बाहुल्ये ।	

१—(वा०) बहुप्रकृतिः फलसेनावनस्पतिमृगशकुनिक्षुद्रजन्तुधान्यतृणानाम्।

२—(वा०) (क) अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियां भाष्यते। (ख) वाऽऽ स्त्रियामिष्टः (ग) अनो नलोपश्च वा द्विगुः स्त्रियाम् (घ) पात्रादिभ्यः प्रति वक्तव्यः।

३—(वा०) (क) पुण्यसुदिनाभ्यामन्हः क्लीवतेष्यते। (ख) संख्याव्ययादेः क्लीवतेष्यते। (ग) क्रियाविशेषणानाञ्च क्लीवतेष्यते।

अ-यः, त-षः, न० २३ सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा । सभा २४

" " " सभा २४ अशाला च ।

" " " २५ विभाषा सेना-सुरा-छाया-शाला-निशानाम् ।

२६ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः । (१)

२७ पूर्ववदश्ववडवौ । पूर्ववत् २८

ूर्ववत् २८ हेमन्त-शिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ।

२९ रात्रान्हाहाः पुंसि । (२)

३० अपथं नपुंसकम् ।

३१ अर्धर्चाः पुंसि च । (३)

१—(वा०) द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(वा०) अनुवाकादयः पुंसीति वक्तव्यम्।

३—(गणपा०) अर्धर्च, गोमय, कषाय, कार्षापण, कुतप, कुणप, कपाट, शङ्ख, थ, यूथ, ध्वज, कबन्ध, पद्म, गृह, सरक, कंस, दिवस, यूष, अन्धकार, दण्ड, कमण्डलु, ण्ड, भूत, द्वीप, द्यूत, चक्र, धर्म, कर्मन्, मोदक, शतमान, यान, नख, नखर, चरण, च्छ, दाडिम, हिम, रजत, सक्तु, पिधान, सार, पात्र, घृत, सैंधव, औषध, आढक, षक, द्रोण, खलीन, पात्रीव, षष्टिक, वारबाण (वार, बाण, का०) प्रोथ, कपित्थ, ष्क, शाल, शील, शुल्क, (शुल्ब, शुक्ल का०), सीधु (शीधु) कवच, रेणु, श्लक्ष्ण, पट, शीकर, (सीकर का०), मुसल, सुवर्ण, वर्ण, पूर्व, (यूप का०), चमस, क्षीर, र्ष, आकाश, अष्टापद, मंगल, निधन, निर्यास जृम्भ, वृत्त, पुस्त, बुस्त, क्ष्वेडित, ृङ्ग, निगड, खल, मधु, मूल, मूलक, स्थूल, शराव, नाल, (शाल का०) वप्र, मान, मुख, प्रग्रीव, शूल, वज्र, कटक, कण्टक, कर्पट, शिखर, कल्क (वल्कल), ाट, मस्तक (नटमक), वलय, कुसुम, तृण, पङ्क, कुण्डल, किरीट, कुमुद, अर्बुद, ङ्कुश, तिमिर, आश्रम, भूषण, इष्वास, (इल्कस, इक्कस का०), मुकुल, वसन्त, डाग (तटाक), पिटक, बिटङ्क, विडङ्ग, पिण्याक, माष, कोष, फलक, दिन, बत, पिनाक, समर, स्थाणु, अनीक, उपवास, शाक, कर्पास, विशाल, चषाल

	(अन्वादेशे आदेश—)	
	३२ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ।	इद-शे ३४ अश् ३३
अश्, अ-शे	३३ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ ।	एतदः ३४
इदमः,एतदः,अ-शे	३४ द्वितीयाटौस्स्वेनः । (१)	
	(आर्धधातुके धात्वादेश—)	
	३५ आर्धधातुके ।	आर्धधातुके
आर्धधातुके	३६ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ।	अदः ४०
अदः	३७ लुङ्सनोर्घस्लृ । (२)	घस्लृ ४०
अदः, घस्लृ	३८ घञपोश्च ।	
,, ,,	३९ बहुलं छन्दसि ।	
,, ,,	४० लिट्यन्यतरस्याम् ।	लिटि, अ-
लिटि, अ-म्	४१ वेञो वयिः ।	

(चखाल), खण्ड, दर, विटप, रण, बल, मक (मल का०), मृणाल, हस्त, हल, सूत्र, ताण्डव, गाण्डीव, मण्डप, पटह, सौध, योध, पार्श्व, शरीर, फल, पुर, राष्ट्र, बिम्ब, अम्बर, कुक्कुट, कुट्टिम, कुडप, ककुद, खण्डल, तोमर, मञ्चक, पञ्चक, पुंख, मध्य, वाल, छाल, वल्मीक (वाल्मीक का०), वर्ष, वसु, देह, उद्यान, उद्योग, स्नेह, स्तेन, स्तन, स्वर, संगम, निष्क, क्षेम, शूक, पवित्र, यौवन, कलह, पालक (मालक), मूषिक, मण्डल, वल्कल, कुञ्ज, लोहित, विषाण, भवन, अरण्य, पुलिन, दृढ, आसन, ऐरावत, शूर्प, तीर्थ, तमाल, लोह, दण्डक, शपथ, प्रतिसर, दारु, धनुस्, मान, वर्चस्क, कूर्च, मठ (मव का०), सहस्र, ओदन, प्रवाल, शकट, अपराह्ण, नीड, शकल, तङ्क, वितङ्क, विश्व, छत्र, पानक, शृंखल, मुण्ड, पूत, मरु, लोमन, लिङ्ग, क्षत, कडार, पूर्ण, पणव, पुस्तक, पल्लव, शार, नाल, प्रवर, पुराण, जाल, ललाट, कुङ्कुम, कुशल, कटक, उद्याम इति अर्धर्चादिः।

१—(वा०) एनदिति नपुंसकैकवचने वक्तव्यम्।

२—(वा०) घस्लृभावेऽच्युपसंख्यानम्।

	४२ हनो वध लिङि ।	हनः ४३-वध ४४
हनो बध	४३ लुङि च ।	लुङि ४४
हनो बध, लुङि	४४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ।	
	४५ इणो गा लुङि । (१)	इणः ४७
इणः	४६ णौ गमिरबोधने ।	गमिरबोधने ४७
इणः अ-ने, गमिः	४७ सनि च ।	सनि ४८
सनि, गमिः	४८ इङश्च ।	इङः ५१
इङः	४९ गाङ् लिटि ।	गाङ् लिटि ५१
इङो, गाङ्	५० विभाषा लुङ्लृङोः ।	विभाषा ५१
इङोगाङ् वि-षा	५१ णौ च संश्चङोः ।	
आर्धधातुके	५२ अस्तेर्भूः ।	
”	५३ ब्रुवो वचिः ।	
”	५४ चक्षिङः ख्याञ् । (२)	चक्षिङः ख्याञ् ५५
चक्षिङः ख्याञ्	५५ वा लिटि ।	
आर्धधातुके	५६ अजेर्व्यघञपोः । (३)	अजेर्वी ५७
अजेर्वी	५७ वा यौ ।	
	(लुक्प्र०)—	
	५८ ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः । (४)	यूनि ६१ लुक् ८३

१—(वा०) इण्वदिक इति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) (क) खशादिरप्ययमादेश इष्यते । (ख) वर्जने प्रतिषेधो वक्तव्यः । ग) असनयोश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः । (घ) बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) घञपोः प्रतिषेधे क्यप उपसंख्यानम् । वलादावार्धधातुके विकल्प इष्यते ।

४—(वा०) अब्राह्मणगोत्रमात्राद्युवप्रत्ययस्योपसंख्यानम् ।*

---

* अणिञोर्लुकि तद्राजाद्युवप्रत्ययस्योपसंख्यानम् इति भाष्यपाठः

५९ पैलादिभ्यश्च । (१)

६० इञः प्राचाम् ।

६१ न तौल्वलिभ्यः । (२)

६२ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् । बहु-म् ७०

बहु-म्, लुक् ६३ यस्कादिभ्यो गोत्रे । (३) गोत्रे ७०

१—(गणपा०)पैल, शालङ्कि, सात्यकि, सात्यंकामि, (सात्यकामि का राहवि, रावणि, औदञ्चि, औदव्रजि (औदव्यज्त्रि), औदमेघि, औदम औदभृज्जि, दैवस्थानि, पैङ्गलौदायनि, (पैङ्गलायनि का०), राहक्षति, (रा क्षिति, रागक्षति का०), भौलिङ्गि, राणि, औदन्यि, औद्गाहमानि, औज्जिह औदशुद्धि, (औदबुद्धि का०), तद्राजाच्चाणः। देवि, सौमनि, ऊहमानि, राणार्य आकृतिगणोऽयम् इति पैलादिः।

२—(गणपा०) तौल्वलि, धारणि, पारणि, रावणि, दैलीपि, दैव (दैवल्कि का०), वार्कलि, नैवकि (नैवति), दैवमति (दैवमित्रि), दैवय चाफट्टकि, वैल्वकि, वैङ्कि (बैंकि, वैकि का०), अनुराहति (आनुहारति का पौष्कर सादि, आनुरोहति, आनुति (आनुमति का०), प्रादोहनि, नैमि प्राडाहति (प्राणाहति का०), वान्धकि (रान्धकि का०), वैशीति, आसिना आहिंसि, आसुरि, नैमिषि, आसिबन्धकि, पौष्पि (पौष्कि का०), कारेणुपा वैकर्णि, वैरकि (वैहति का०), प्रावाहणि, मांधातकि, श्वाफल्कि, आय वैलकि, कामलि, आसुराहति, कान्दकि, दौषकगति, आन्तराहति तौल्वल्यादिः।

३—(गणपा०) यस्क, लह्य (लभ्य का०), द्रुह्य (दुह्य का०), स्थूण, तृणकर्ण, सदामत्त, कम्बलहार (कम्बलभार का०), वहिर्योग (अहि का०), कर्णाढक (कर्णाटक का०), पर्णाढक, पिण्डीजंघ, वकसक्थ, विश्रि, अजवस्ति, मित्रयुः, रक्षोमुख (रक्षामुख का०), जंघारथ, उत्कास, (कटुकमन्थक का०), मथक (मन्थक), पुष्करसद्, विषपुट, उपरिमे क्रोष्टुमान, क्रोष्टुपाद, क्रोष्टुमाय, शीर्षमाय, खरप, पदक, वर्षुक (वर्मक का भलन्दन, भडिल, भण्डिल, भडित, भण्डित, यस्ति, कद्रु इति यस्कादिः।

ब-म्, लुक्, गोत्रे ६४ यञञोश्च। (१)

बहु-म्, लुक्, गोत्रे ६५ अत्रि-भृगु-कुत्स-वशिष्ठ-गोतमाङ्गिरोभ्यश्च।

” ” ” ६६ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु।

” ” ” ६७ न गोपवनादिभ्यः। (२)

” ” ” ६८ तिक-कितवादिभ्यो द्वन्द्वे। (३)

” ” ” ६९ उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे। (४)

” ” ” ७० आगस्त्य-कौण्डिन्ययोरगस्ति-कुण्डिनच्।

लुक् ७१ सुपो धातु-प्रातिपदिकयोः।

१—(वा०) यञादीनमेकद्वयोर्वा तत्पुरुषे षष्ठ्या उपसंख्यानम्।

२—(गणपा०) गोपवन, शेयु, शिग्रु, विन्दु, भाजन, अश्वावतान (अश्व, अवतान का०), श्यामाक (श्योमाक), श्यामक, श्यापर्ण (श्वापर्ण का०), विदाद्यन्तर्गणोऽयं गोपवनादिः।

३—(गणपा०) तिककितवाः, वङ्खरभण्डीरथाः, उपकलमकाः, पफकनरकाः, वकनखगुदपरिणद्धाः (वकनखश्वगुद का०) उब्जककुभाः, लङ्कशान्तमुखाः, उत्तरशलङ्कटाः (उरसलंकटाः का०) कृष्णाजिनकृष्णसुन्वराः, भ्रष्टककपिष्ठलाः, अग्निवेशवशेरुकाः (अग्निवेशदासरेकाः) इति तिककितवादिः।

४—(गणपा०) उपक, लमक, भ्रष्टक, कपिष्ठल, कृष्णाजिन, कृष्णसुन्वर, चूडारक, आडरक (अण्डारक), गडुक, उदङ्क, सुधायुक (सुपर्यंक), अवन्धक, पिङ्गलक, पिष्ट, सुपिष्ठ (सपिष्ट), मयूरकर्ण, खरीजंघ (खारिजंघ का०), शलाथल (शलावल का०), पतंजल, पदञ्जल, कठेरणि, कुषीतक, काशकृत्स्न, निदाघ, कलशीकण्ठ, दामकण्ठ, कृष्णपिङ्गल, कर्णक, पर्णक, जटिलक, वधिरक, जन्तुक, अनुलोम, अनुपद, प्रतिलोम, अपजग्ध, प्रतान, अनभिहित, कमक, वटारक, लेखाभ्र, कमन्दक, पिञ्जूलक (पिञ्जल का०), वर्णक, मसूरकर्ण, मदाघ, कवन्तक, कमन्तक, कदामत्त, दामकण्ठ, पण्डारक, इत्युपकादयः।

लुक्	७२ अदि-प्रभृतिभ्यः शपः ।	शपः ७६
शपो, लुक्	७३ बहुलं छन्दसि ।	
लुक्	७४ यङोऽचि च ।	
शपः	७५ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ।	श्लुः ७६
शपः श्लुः	७६ बहुलं छन्दसि ।	
लुक्	७७ गाति-स्था-घु-पा-भूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु । (१)	सिचः ७९, प-षु ७८
सिचः,लुक्,प-षु	७८ विभाषा घ्रा-धेट्-शा-च्छासः ।	विभाषा ७९
सिचः, वि-षा, लुक्	७९ तनादिभ्यस्तथासोः ।	
लुक्	८० मन्त्रे घस-ह्वर-णश-वृ-दहाद्वृच्-कृ-गमि-जनिभ्यो लेः ।	लेः ८१
लेः, लुक्	८१ आमः ।	
लुक्	८२ अव्ययादाप्सुपः ।	सुपः ८३
सुपः, लुक्	८३ नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ।	अव्य-त्, अतोऽम् ८४
अ-तु, अतोऽम्	८४ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् । (२)	

(लुट आदेश—)

८५ लुटः प्रथमस्य डारौरसः ।

इति द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ।

द्वितीयाध्यायः समाप्तः ।

१—(वा०) गापोर्ग्रहणे इण्पिबत्योर्ग्रहणम् ।

२—(वा०) सप्तम्या ऋद्धिनदीसमाससंख्यावयवेभ्यो नित्यमिति वक्तव्यम् ।

अथ तृतीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(प्रत्ययाधिकार—)

१ प्रत्ययः । प्र-यः ५।४।१६०

(प्रत्ययस्थाननिर्देश—)

प्रत्ययः २ परश्च ।

(प्रत्ययस्वरनिर्देश—)

प्रत्ययः ३ आद्युदात्तश्च ।

प्रत्ययौ ४ अनुदात्तौ सुप्पितौ ।

(सन्प्रत्यय—)

५ गुप्तिज्किद्भ्यः सन् । (१) सन् ७

सन् ६ मान-बध-दान्-शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य । (२)

सन् ७ धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा । (३) वा ११, कर्मणः १०, इच्छायाम् ६

(सुब्धातुप्रत्यय—)

कर्मणः इच्छायाम् ८ सुप आत्मनः क्यच् । (४) सुपः ११, आत्मनः ६, क्यच् १०

१—(वा०) निन्दाक्षमाव्याधिप्रतीकारेषु सन्निष्यते।

२—(वा०) अत्रापि सन्नर्थविशेष इष्यते। मानेर्जिज्ञासायाम्। वधेर्वैरूप्ये। दानेरार्जवे। शानेर्निशाने।

३—(वा०) (क) आशङ्कायामुपसंख्यानम्। (ख) इच्छासन्नन्तात्प्रतिषेधो वक्तव्यः।

४—(वा०) (क) क्यचि मान्ताव्ययप्रतिषेधो वक्तव्यः। (ख) छन्दसि परेच्छायामिति वक्तव्यम्।

सुपः, आत्मनः कर्मणः इच्छायाम्	९ काम्यच्च ।	
कर्मणः, सुपः वा, क्यच्	१० उपमानादाचारे । (१)	आचारे ११
उपमानात् सुपः, आचारे, वा क्यच्	११ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च । (२)	क्यङ् १८
	१२ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः ।	भुवि १३
भुवि, वा,	१३ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् । (३)	
क्यङ्	१४ कष्टाय क्रमणे । (४)	
क्यङ्	१५ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः । (५)	कर्मणः २०
कर्मणः, क्यङ्	१६ बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने । (६)	
कर्मणः क्यङ्	१७ शब्द-वैर-कलहाभ्र-कण्व-मेघेभ्यः करणे । (७)	करणे २१
करणे, क्यङ्	१८ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ।	
करणे	१९ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् ।	
करणे	२० पुच्छ-भाण्ड-चीवराण्णिङ् ।	

१—(वा०) अधिकरणाच्चेति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) (क) ओजसोऽप्सरसो नित्यं पयसस्तु विभाषया । (आचारेऽवगल्भक्लीवहोडेभ्यः क्विब् वा वक्तव्यः । (ग) सर्वप्रातिपदिके इत्येके ।

३—(वा०) लोहितडाज्भ्यः क्यष्वचनं भृशादिष्वितराणि ।

४—(वा०) सत्रकष्टकक्षकृच्छ्रगहनेभ्यः कण्वचिकीर्षायामिति वक्तव्य

५—(वा०) (क) हनुचलन इति वक्तव्यम् । (ख) तपसः परस्मैपदं

६—(वा०) फेनाच्चेति वक्तव्यम् ।

७—(वा०) (क) सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्चेति वक्तव्यम् । (अटाट्टाशीकाकोटापोटासोटाकष्टाग्रहणं कर्तव्यम् ।

करणे　२१ मुण्ड-मिश्र-श्लक्ष्ण-लवण-व्रत-
वस्त्र-हल-कल-कृत-तूस्तेभ्यो
णिच् । (१)

२२ धातोरेकाचो हलादेः क्रिया-　यङ् २४
समभिहारे यङ् । (२)

यङ्　२३ नित्यं कौटिल्ये गतौ ।

यङ्　२४ लुप-सद-चर-जप-जभ-दह-
दश-गृभ्यो भावगर्हायाम् ।

२५ सत्याप-पाश-रूप-वीणा-तूल-
श्लोक-सेना-लोम-त्वच-वर्म-
वर्ण-चूर्ण-चुरादिभ्यो णिच्।(३)　णिच् २६

णिच्　२६ हेतुमति च । (४)

२७ कण्ड्वादिभ्यो यक् ।

२८ गुपू-धूप-विच्छि-पणि-पनिभ्य
आयः ।

२९ ऋतेरीयङ् ।

३० कमेर्णिङ् ।

३१ आयादय आर्धधातुके वा ।

१—(वा०) हलिकल्योरदन्तत्वनिपातनं सन्वद्भावप्रतिषेधार्थम् ।

२—(वा०) सूचिसूत्रिमूत्र्यटयर्त्यशूर्णोतीनां ग्रहणं यङ्विधावनेकाजहलाद्यर्थम् ।

३—(वा०) अर्थवेदसत्यानामापुग्वक्तव्यः ।

४—(वा०) (क) तत्करोतीत्युपसंख्यानं सूत्रयत्याद्यर्थम् । (ख) आख्यानात्कृतस्तदाचष्ट इति कृल्लुक् प्रकृतिप्रत्यापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम् । (ग) आङ्लोपश्च कालात्यन्तसंयोगे मर्यादायाम् । (घ) चित्रीकरणे प्रापि । (ङ) नक्षत्रयोगे ज्ञि ।

	३२ सनाद्यन्ता धातवः ।	
	(विकरणप्रत्यय—)	
	३३ स्यतासी लृलुटोः ।	
	३४ सिब्बहुलं लेटि ।	
	३५ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि(१)	आम् ४२, लिटि ३९
आम्, लिटि	३६ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।(२)	
आम् लिटि	३७ दयायासश्च ।	
आम्, लिटि	३८ उष-विद-जागृभ्योऽन्यतरस्याम् ।	अ-म् ३९
लिटि, वा, आम्	३९ भी-ह्री-भृ-हुवां श्लुवच्च ।	
	४० कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ।	
	४१ विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ।	अ-म् ४२
अन्यतरस्याम् आम्	४२ अभ्युत्सादयां-प्रजनयां-चिकयां-रमयामकः पावयांक्रियाद्विदामक्रन्निति छन्दसि ।	
	४३ च्लि लुङि ।	
	(च्लेरादेश—)	
	४४ च्लेः सिच् । (३)	च्लेः ६६
च्लेः	४५ शल इगुपधादनिटः क्सः ।	क्सः ४७
च्लेः, क्सः	४६ श्लिष आलिङ्गने ।	
च्लेः क्सः	४७ न दृशः ।	

१—(वा०) कास्यनेकाच इति वक्तव्यं चुलुम्पाद्यर्थम् ।
२—(वा०) ऊर्णोतेश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः ।
३—(वा०) स्पृशमृशकृषतृपदृपां सिज्वा वक्तव्यः ।

च्लेः	४८ णि-श्रि-द्रु-स्रुभ्यः कर्तरि चङ् (१)	चङ् ५१
च्लेश्चङ्	४९ विभाषा धेट्-श्व्योः ।	विभाषा ५०
" विभाषा	५० गुपेश्छन्दसि ।	छन्दसि ५१
" छन्दसि	५१ नोनयति-ध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः ।	
च्लेः	५२ अस्यति-वक्ति-ख्यातिभ्योऽङ् ।	अङ् ५९
च्लेरङ्	५३ लिपि-सिचि-ह्वश्च ।	लिपिसिचिह्वः ५४
लिपिसिचिह्वः च्लेरङ्	५४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ।	
च्लेः, अङ्	५५ पुषादि-द्युताद्य्-लृदितः परस्मैपदेषु ।	परस्मैपदेषु ५८
" "	५६ सर्ति-शास्त्यर्तिभ्यश्च ।	
च्लेरङ् प-षु	५७ इरितो वा ।	वा ५८
च्लेरङ्, वा	५८ जॄ-स्तम्भु-म्रुचु-म्लुचु-ग्रुचु-ग्लुचु-ग्लुञ्चु-श्विभ्यश्च ।	
च्लेरङ्	५९ कृ-मृ-दृ-रुहिभ्यश्छन्दसि ।	
	६० चिण् ते पदः ।	चिण् ६५, ते ६६
चिण्, ते, च्लेः	६१ दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ।	अन्यतरस्याम् ६३
च्लेश्चिण्तेवा	६२ अचः कर्मकर्तरि ।	कर्मकर्तरि ६५
च्लेश्चिण् ते वा कर्मकर्तरि	६३ दुहश्च ।	
च्लेश्चिण् ते, कर्म-रि	६४ न रुधः ।	न ६५

१—(वा०) कमेरुपसंख्यानम् ।

कर्म-रि, च्लेश्चिण्, न	६५ तपोऽनुतापे च ।	
	६६ चिण् भावकर्मणोः ।	
भावकर्मणोः	६७ सार्वधातुके यक् ।	सार्वधातुके ८
	(विकरणप्रत्ययाः प्रकृताः—)	
सार्व-के	६८ कर्तरि शप् ।	कर्तरि ८५
कर्तरि, सार्व-के	६९ दिवादिभ्यः श्यन् ।	श्यन् ७२
श्यन्, कर्तरि	७० वा भ्राश-भ्लाश-भ्रमु-क्रमु-क्लमु-त्रसि-त्रुटि-लषः ।	
" "	७१ यसोऽनुपसर्गात् ।	
" "	७२ संयसश्च ।	
कर्तरि, सा-के	७३ स्वादिभ्यः श्नुः ।	श्नुः ७६
श्नुः, कर्तरि, सा-के	७४ श्रुवः शृ च ।	
श्नुः	७५ अक्षोऽन्यतरस्याम् ।	अन्यतरस्याम् ७
अन्य-म्, श्नुः	७६ तनूकरणे तक्षः ।	
कर्तरि	७७ तुदादिभ्यः शः ।	
"	७८ रुधादिभ्यः श्नम् ।	
"	७९ तनादि-कृञ्भ्य उः ।	उः ८०
उः	८० धिन्वि-कृण्व्योर च ।	
	८१ क्र्यादिभ्यः श्ना ।	श्ना ८२
श्ना	८२ स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुञ्भ्यः श्नुश्च ।	
	८३ हलः श्नः शानज्झौ ।	श्नः ८४,हौ ८
श्नः, हौ,	८४ छन्दसि शायजपि ।	छन्दसि ८६
	(व्यत्यय—)	
छन्दसि	८५ व्यत्ययो बहुलम् ।	

छन्दसि	८६ लिङ्याशिष्यङ् । (१)	
	(कर्मवद्भाव—)	
कर्ता	८७ कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः ।	कर्मवत् ९०
कर्मवत्, कर्ता	८८ तपस्तपःकर्मकस्यैव ।	
कर्मकर्तरि	८९ न दुह-स्नु-नमां यक्चिणौ । (२)	
कर्मकर्तरि	९० कुषिरजोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च ।	
	(धातुविहिताः प्रत्ययाः उच्यन्ते—)	
	९१ धातोः ।	धातोः३।४।११७
	(उपपदसंज्ञा—)	
	९२ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ।	तत्र ९४
	(कृत्संज्ञा—)	
तत्र	९३ कृदतिङ् ।	कृत् ३।४।७७
तत्र	९४ वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ।	
	(कृत्सु कृत्यप्रत्यय—)	
	९५ कृत्याः ।	कृत्याः १३२
	९६ तव्यत्तव्यानीयरः । (३)	
	९७ अचो यत् । (४)	यत् १०६
यत्	९८ पोरदुपधात् ।	
”	९९ शकिसहोश्च ।	

१—(वा०) दृशेरग्वक्तव्यः ।

२—(वा०) यक्चिणोः प्रतिषेधे णिश्रन्थिग्रन्थिब्रूञात्मनेपदाकर्मकाणामुपसंख्यानम् ।

३—(वा०) (क) वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च । (ख) केलिमर उपसंख्यानम् ।

४—(वा०) (क) तकिशसिचतियतिजनीनामुपसंख्यानम् । (ख) हनो वा वध च ।

यत्	१०० गद-मद-चर-यमश्चानुपसर्गे । (१)	अनुपसर्गे १
”	१०१ अवद्य-पण्य-वर्या गर्ह्य-पणित-व्यानिरोधेषु ।	
	१०२ वह्यं करणम् ।	
	१०३ अर्यः स्वामिवैश्ययोः । (२)	
	१०४ उपसर्या काल्या प्रजने ।	
	१०५ अजर्यं संगतम् ।	
अनुपसर्गे, यत्	१०६ वदः सुपि क्यप् च ।	सुपि १० क्यप् १२
सुप्यनुपसर्गे, क्यप्	१०७ भुवो भावे ।	भावे १०
” भावे ”	१०८ हनस्त च ।	
	१०९ एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप् । (३)	
क्यप्	११० ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः (४)	
”	१११ ई च खनः ।	
”	११२ भृञोऽसंज्ञायाम् । (५)	
”	११३ मृजेर्विभाषा ।	
	११४ राजसूय-सूर्य-मृषोद्य-रुच्य-कुप्य-कृष्टपच्याव्यथ्याः ।	

१—(वा०) चरेराङि चागुरौ ।

२—(वा०) स्वामिन्यन्तोदात्तत्वञ्च वक्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) शंसिदुहिगुहिभ्यो वेति वक्तव्यम् । (ख) आङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुपसंख्यानम् ।

४—(वा०) (क) पाणौ सृजेर्ण्यद्वक्तव्यः । (ख) समवपूर्वाच्च ।

५—(वा०) संपूर्वाद्विभाषा ।

११५ भिद्योद्ध्यौ नदे ।
११६ पुष्य-सिध्यौ नक्षत्रे ।
क्यप् ११७ विपूय-विनीय-जित्या मुञ्ज-
कल्क-हलिषु ।
" ११८ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः । (१)
" ११९ पदास्वैरि-बाह्या-पक्ष्येषु च ।
" १२० विभाषा कृ-वृषोः ।
" १२१ युग्यश्च पत्रे ।
१२२ अमावस्यदन्यतरस्याम् ।
१२३ छन्दसि निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणी-
योन्नीयोच्छिष्य-मर्य-स्तर्याध्वर्य ।
खन्य-खान्य-देवयज्यापृच्छ्य-
प्रतिषीव्य-ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ता-
व्योपचाय्य-पृडानि । (२)
१२४ ऋहलोर्ण्यत् । ण्यत् १३१
ण्यत् १२५ ओरावश्यके ।
" १२६ आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-
चमश्च ।
" १२७ आनाय्योऽनित्ये ।
" १२८ प्रणाय्योऽसंमतौ ।

१—(वा०) छन्दसीति वक्तव्यम् ।*
२—(वा०) हिरण्य इति वक्तव्यम् ।

* काशिकाकारेण छन्दसीति पदं सूत्र एव प्रक्षिप्तम् ।

ण्यत् १२९ पाय्य-सान्नाय्य-निकाय्य-धाय्या
मान-हविर्निवास-सामिधेनीषु ।

,, १३० क्रतौ कुण्डपाय्य-संचाय्यौ ।

,, १३१ अग्नौ परिचाय्योपचाय्य-
समूह्याः ।

१३२ चित्याग्निचित्ये च ।

(कृत्प्रत्यय—)

१३३ ण्वुल्-तृचौ ।

१३४ नन्दि-ग्रहि-पचादिभ्यो ल्यु-
णिन्यचः । (१)

१३५ इगुपध-ज्ञा-प्री-किरः कः । कः १३६

१—(गणपा०) नन्दिवाशि (वासि) मदि दू (मदि भूषि) षिसाधिवर्धिशोभि रोचिभ्यो ण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम्। नन्दनः। वाशनः (वासनः का०), मदन दूषणः (भूषणः), साधनः, वर्धनः, शोभनः, रोचनः। सहितपिदमः (दमेः का०) संज्ञायाम्। सहनः, तपनः, दमनः, जल्पनः, रमणः, दर्पणः, संक्रन्दनः, संकर्षण संहर्षणः, जनार्दनः, यवनः (पवनः का०), मधुसूदनः, बिभीषणः, लव (निपातनाण्णत्वम् का०), चित्तविनाशनः, कुलदमनः, शत्रुदमनः। इति नन्द्यादि

ग्राही, उत्साही, उद्दासी, उद्भासी, स्थायी, मन्त्री, संमर्दी, रक्षश्रु (वस का० वपशां नौ। निरक्षी, निश्रावी (निवासी का०), निवायी, निशायी। या व्याहृव्रजवदवसां प्रतिषिद्धानाम् (याचिव्याहृसंव्याहृव्रज का०) अयाची, अव्या हारी, असंव्याहारी, अव्राजी, अवादी, अवासी। अचामचित्तकर्तृकाणाम् (प्रति षिद्धानामित्येव का०)। अकारिन्, अहारिन्, अविनायी, विशायी, (अविशा का०) विषायी (अविषायी), विशयी, विषयी देशे। विषयी देशः। अभिभा भूते। अपराधी, उपरोधी, परिभवी, परिभावी इति नन्द्यादिः।

पच, वच, वप, वद, चल, पत, नदट्, भषट्, प्लवट्, चरट्, गरट्, तर चोरट्, गाहट् (ग्राहट् का०), सूरट् (सूदट् का०), देवट्, दोषट्, रज (ज का०), मद (मर का०,) क्षप (क्षम का०), सेव, मेष, कोष, (कोप, क्रो का०), मेध, नर्त (मेधानर्त का०), व्रण, दर्श, सर्प, दम्भ, दर्प, जारभर, श्वप तप, वस, क्षर, मोरट्, दंश। आकृतिगणः। इति पचादिः।

कः	१३६ आतश्चोपसर्गे ।	उपसर्गे १३७
उपसर्गे, कः	१३७ पा-घ्रा-ध्मा-धेट्-दृशः शः । (१)	शः १३९
शः	१३८ अनुपसर्गाल्लिम्प-विन्द-धारि-पारि-वेद्युदेजि-चेति-साति-साहिभ्यश्च । (२)	अनुपसर्गात् १४०
शः, अनुपसर्गात्	१३९ ददाति-दधात्योर्विभाषा ।	विभाषा १४०
विभाषा, अ-त्	१४० ज्वलिति-कसन्तेभ्यो णः । (३)	णः १४३
णः	१४१ श्याद्व्यधास्रु-संस्र्वतीणवसावहृ-लिह-श्लिष-श्वसश्च ।	
,,	१४२ दुन्योरनुपसर्गे ।	
,,	१४३ विभाषा ग्रहः । (४)	ग्रहः १४४
ग्रहः	१४४ गेहे कः ।	शिल्पिनि, १४७
	१४५ शिल्पिनि ष्वुन् । (५)	
शिल्पिनि	१४६ गस्थकन् ।	गः १४७
,, गः	१४७ ण्युट् च ।	ण्युट् १४८
ण्युट्	१४८ हश्च व्रीहि-कालयोः ।	
	१४९ प्रु-सृ-ल्वः समभिहारे वुन् ।	वुन् १५०
वुन्	१५० आशिषि च ।	

इति तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ।

१—(वा०) जिघ्रतेः संज्ञायां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

२—(वा०) (क) नौ लिम्पेरिति वक्तव्यम्: (ख) गवादिषु विन्देः संज्ञायाम् ।

३—(वा०) तनोतेर्ण उपसंख्यानम् ।

४—(वा०) भवतेश्चेति वक्तव्यम् ।*

५—(वा०) नृति-खनि-रञ्जिभ्यः परिगणनं कर्तव्यम् ।

---

* इदं वार्तिकं भाष्ये न दृश्यते ।

अथ द्वितीयः पादः

(उपपदप्रत्यय—)

तत्र (अण्प्रत्यय—)

	१ कर्मण्यण् । (१)	कर्मणि ५७ अण् २
कर्मणि अण्	**२ ह्वावामश्च ।**	

(कप्रत्यय—)

कर्मणि	**३ आतोऽनुपसर्गे कः ।**	कः ७, अनुप सर्गे ६०
कः	**४ सुपि स्थः ।**	सुपि ७५
कर्मणि कः	**५ तुन्द-शोकयोः परिमृजापनुदोः । (२)**	
,, ,,	**६ प्रे दाज्ञः ।**	
,, ,,	**७ समि ख्यः ।**	
कर्मणि अनुपसर्गे	**८ गापोष्टक् । (३)**	

(अच्प्रत्यय—)

कर्मणि	**९ हरतेरनुद्यमनेऽच् । (४)**	अच् १५, हा ११
क-णि हरतेः, अच्	**१० वयसि च ।**	

१—(वा०) (क) शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं वक्तव्यम्। (ख) ईक्षिक्षमिभ्यां चेति वक्तव्यम्।

२—(वा०) (क) आलस्यसुखाहरणयोरिति वक्तव्यम्। (ख) कप्रक मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम्।

३—(वा०) (क) सुरासीध्वोः पिबतेरिति वक्तव्यम्। (ख) व छन्दसीति वक्तव्यम्।

४—(वा०) (क) अच्प्रकरणे शक्तिलाङ्गलाङ्कुशतोमरयष्टिघटघटीध ग्रहेरुपसंख्यानम्। (ख) सूत्रे च धार्येर्थे।

हरतेः, कर्मणि, अच्	११ आङि ताच्छील्ये ।	
कर्मणि, अच्	१२ अर्हः ।	
सुपि, अच्	१३ स्तम्ब-कर्णयो रमिजपोः । (१)	
अच्	१४ शमि धातोः संज्ञायाम् ।	
सुपि, अच्	१५ अधिकरणे शेतेः । (२)	अधिकरणे १६

(टप्रत्यय–)

अधिकरणे सुपि	१६ चरेष्टः	चरेः १७ टः २३
चरेष्टः	१७ भिक्षा-सेनादायेषु च ।	
टः	१८ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ।	सर्तेः १९
सर्तेष्टः	१९ पूर्वे कर्तरि ।	
कर्मणि, टः	२० कृञो हेतु-ताच्छील्यानुलोम्येषु ।	
कर्मणि, सुपि, टः	२१ दिवा-विभा-निशा-प्रभा-भास्कारान्तानन्तादि-बहु-नान्दी-किं-लिपि-लिबि-बलि भक्ति-कर्तृ-चित्र-क्षेत्र-संख्या-जङ्घा-बाह्वहर्यत्तद्धनुररुःषु । (३)	कृञः २३
कर्मणि, कृञः टः	२२ कर्मणि भृतौ ।	
कृञः, टः	२३ न शब्द-श्लोक-कलह-गाथा-वैर-चाटु-सूत्र-मन्त्र-पदेषु ।	

(इन्प्रत्यय—)

कर्मणि कृञः	२४ स्तम्बशकृतोरिन् । (४)	इन् २७

१—(वा०) हस्तिसूचकयोरिति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) (क) पार्श्वादिषूपसंख्यानम् । (ख) दिग्धसहपूर्वाच्च । (ग) उत्तानादिषु कर्तृषु । (घ) गिरौ डश्छन्दसि ।

३—(वा०) कियत्तद्बहुषु कृञोऽज्विधानम् ।

४—(वा०) व्रीहिवत्सयोरिति वक्तव्यम् ।

क-णि इन्	२५ हरतेर्दृति-नाथयोः पशौ ।	
इन्	२६ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च ।	
कर्मणि, इन्	२७ छन्दसि वन-सन-रक्षि-मथाम् ।	
	(खश्प्रत्यय—)	
कर्मणि	२८ एजेः खश् । (१)	खश् ३७
खश्	२९ नासिका-स्तनयोर्ध्माधेटोः । (२)	ध्माधेटोः
ध्माधेटोः, खश्	३० नाडीमुष्ट्योश्च ।	
खश् क-णि	३१ उदि कूले रुजिवहोः ।	
” ”	३२ वहाभ्रे लिहः ।	
” ”	३३ परिमाणे पचः ।	पचः ३४
पचः, खश्	३४ मितनखे च ।	
खश्	३५ विध्वरुषोस्तुदः ।	
”	३६ असूर्यललाटयोर्दृशितपोः ।	
	३७ उग्रम्पश्येरंमद-पाणिंधमाश्च ।	
	(खच्प्रत्यय–)	
कर्मणि	३८ प्रियवशे वदः खच् । (३)	खच् ४७
” खच्	३९ द्विषत्परयोस्तापेः ।	
” ”	४० वाचि यमो व्रते ।	
” ”	४१ पूः-सर्वयोर्दारिसहोः । (४)	
” ”	४२ सर्व-कूलाभ्र-करीषेषु कषः ।	

१—(वा०) खश्प्रत्यये वातशुनीतिलशर्धेष्वजधेट्तुदजहातीनामुपसंख्यानम्
२—(वा०) (क) स्तने धेटः। (ख) नासिकायां तु ध्मश्च धेटश्च।
३—(वा०) (क) खच्प्रकरणे गमेः सुप्युपसंख्यानम् । (ख) विहा
विह च। (ग) खच्च डिद्वा वक्तव्यः। (घ) डेच विहायसो विहादेशो वक्तव्
४—(वा०) भगे च दारेरिति वक्तव्यम् ।

कर्मणि खच्	४३ मेघर्ति-भयेषु कृञः । (१)	कृञः ४४
" ,	४४ क्षेम-प्रिय-मद्रेऽण् च ।	
सुपि, खच्	४५ आशिते भुवः करणभावयोः ।	
	४६ सञ्ज्ञायां भृ-तृ-वृ-जि-धारि-सहि-तपि-दमः ।	संज्ञायाम् ४७
संज्ञायां, सुपि, खच्	४७ गमश्च ।	गमः ४८
	(डप्रत्यय—)	
कर्मणि, गमः	४८ अन्तात्यन्ताध्व-दूर-पार-सर्वानन्तेषु डः । (२)	डः ५०
डः, कर्मणि	४९ आशिषि हनः । (३)	हनः ५५
डः, कर्मणि	५० अपे क्लेश-तमसोः ।	
हनः, कर्मणि,	५१ कुमारशीर्षयोर्णिनिः ।	
	(टक्प्रत्यय—)	
हनः, कर्मणि,	५२ लक्षणे जायापत्योष्टक् ।	टक् ५४
हनः, क-णि, टक्	५३ अमनुष्यकर्तृके च ।	
हनः, कर्मणि, टक	५४ शक्तौ हस्तिकपाटयोः ।	
	५५ पाणिघताडघौ शिल्पिनि । (४)	
	५६ आढ्य-सुभग-स्थूल-पलित-नग्नान्ध-प्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन् ।	आढ्य-षु ५७ च्व्य-च्वौ ५७

१—(वा०) उपपदविधौ भयादिग्रहणं तदन्तविधिं प्रयोजयति ।

२—(वा०) (क) डप्रकरणे सर्वत्रपन्नयोरुपसंख्यानम् । (ख) उरसो लोपश्च । (ग) सुदुरोरधिकरणे । (घ) निरो देशे । (ङ) डप्रकरणेऽन्येष्वपि दृश्यते ।

३—(वा०) (क) दारावाहनोऽणन्तस्य च टः संज्ञायाम् । (ख) चारौ वा । (ग) कर्मणि समि च ।

४—(वा०) राजघ उपसंख्यानम् ।

आढ्य-सु, च्व्य-च्वौ,	५७ कर्तरि भुवः खिष्णुच्-खुकञौ ।	
	(अप्रत्यय—)*	
सुपि	५८ स्पृशोऽनुदके क्विन् ।	क्विन् ६०
क्विन्	५९ ऋत्विग्दधृक्-स्रग्दिगुष्णिगञ्चु-युजि-क्रुञ्चाञ्च ।	
क्विन्	६० त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च । (१)	
सुपि	६१ सत्सू-द्विष-द्रुह-दुह-युज-विद-भिद-छिद-जि-नी-राजामुपसर्गेऽपि क्विप् ।	उ-पि ७७
उपसर्गेऽपि सुपि	६२ भजो ण्विः ।	ण्विः ६४
उपसर्गेऽपि सुपि ण्विः	६३ छन्दसि सहः ।	छन्दसि ६७
छन्दसि, सुपि, ण्विः	६४ वहश्च ।	वहः ६६
वहः, छन्दसि,	६५ कव्य-पुरीष-पुरीष्येषु ञ्युट् ।	ञ्युट् ६६
वहः, छन्दसि, ञ्युट्	६६ हव्येऽनन्तःपादम् ।	
छन्दसि, उपसर्गेऽपि सुपि	६७ जन-सन-खन-क्रम-गमो विट् ।	विट् ६९
सुपि, विट्	६८ अदोऽनन्ने ।	अदः ६९
अदः, विट्	६९ क्रव्ये च ।	
सुपि,	७० दुहः कब्घश्च ।	

१—(वा०) (क) समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम् । (ख) दृशेः क्स वक्तव्यः ।

* अविद्यमानः प्रत्ययोऽप्रत्ययः । यस्मिन् प्रत्यये सर्वे वर्णा लुप्यन्ते सोऽप्रत् इत्युच्यते । तादृशाश्च प्रत्ययाः—क्विन्, क्विप्, ण्वि, विट्, विच् एते सन्ति ।

	७१ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्। (१)	मन्त्रे ७२ ण्विन् ७२
मन्त्रे, ण्विन्	७२ अवे यजः।	यजः ७३
यजः	७३ विजुपे छन्दसि।	छन्दसि ७४ विच् ७४
	(मनिन्क्वनिप्वनिपः—)	
छन्दसि सुपि, उ-पि	७४ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च।	मनि-पः ७५
म-पः, विच्	७५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते।	
	७६ क्विप् च।	क्विप् ७७
क्विप्, सुपि, उ-पि	७७ स्थः क च।	
	(णिनिप्रत्यय—)	
	७८ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये। (२)	सुपि, ८३ णिनि ८६
णिनिः	७९ कर्तर्युपमाने।	
सुपि, णिनिः	८० व्रते।	
” ”	८१ बहुलमाभीक्ष्ण्ये।	
सुपि, णिनिः,	८२ मनः।	मनः ८३
मनः, सुपि, णिनिः	८३ आत्ममाने खश्च।	
	(भूतकालिककृत्प्रत्यय)	
	८४ भूते।*	भूते १२२
णिनिः	८५ करणे यजः।	

१—(वा०) श्वेतवहादीनां डस्पदस्येति वक्तव्यम्।

२—(वा०) (क) उत्प्रतिभ्यामाङि सर्तेरुपसंख्यानम्। (ख) साधुकारिणि च। (ग) ब्रह्मणि वदः।

* स्वावधिकेषु प्रत्ययेषु प्रतिसूत्रं भूतपदोपस्थानात् प्रतिसूत्रमस्यानुवृत्तिर्न दर्शिता।

णिनिः	८६ कर्मणि हनः ।	हनः ८८, ९२
	(भूत-कालिकक्विप्प्रत्यय—)	
हनः, कर्मणि	८७ ब्रह्म-भ्रूण-वृत्रेषु क्विप् ।	क्विप्
हनः, क्विप्	८८ बहुलं छन्दसि ।	
कर्मणि, क्विप्	८९ सुकर्म-पाप-मन्त्र पुण्येषु कृञः ।	
" "	९० सोमे सुञः ।	
" "	९१ अग्नौ चेः ।	चेः
क-णि चेः, क्विप्	९२ कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ।	
	९३ कर्मणीनिविक्रियः ।	
	(क्वनिप्प्रत्यय—)	
कर्मणि	९४ दृशेः क्वनिप् ।	क्वनिप्
क-णिं क्वनिप्	९५ राजनि युधि-कृञः ।	
युधिकृञः क्वनिप्	९६ सहे च ।	
	(डप्रत्यय—)	
	९७ सप्तम्यां जनेर्डः ।	जनेर्डः
जनेर्डः	९८ पञ्चम्यामजातौ ।	
"	९९ उपसर्गे च संज्ञायाम् ।	
"	१०० अनौ कर्मणि ।	
"	१०१ अन्येष्वपि दृश्यते ।	
	१०२ निष्ठा । (१)	
	१०३ सुयजोर्ङ्वनिप् ।	
	१०४ जीर्यतेरतृन् ।	

१—(वा०) आदिकर्मणि निष्ठा वक्तव्या ।

	१०५ छन्दसि लिट्।	छन्दसि १०७
छन्दसि	१०६ लिटः कानज्वा।	वा, लिटः १०९
छन्दसि,लिटः,वा	१०७ क्वसुश्च	क्वसुः १०९
लिटः, क्वसुः, वा	१०८ भाषायां सद-वस-श्रुवः।	
	१०९ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च।	
	११० लुङ् (१)	
	१११ अनद्यतने लङ्। (२)	अनद्यतने १२२
अनद्यतने	११२ अभिज्ञावचने लृट्।	अ-ने लृट् ११४,
अ-ने, अ-नेलृट्	११३ न यदि।	
अ-ने, अ-ने, यदि	११४ विभाषा साकाङ्क्षे।	
भूता-ने	११५ परोक्षे लिट्।	परोक्षे ११८ लिट् ११७
भू-ने, परोक्षे, लिट्	११६ हशश्वतोर्लङ् च।	लङ् ११७
लङ्लिटौ, भू-ने परोक्षे	११७ प्रश्ने चासन्नकाले।	
भूता-ने परोक्षे	११८ लट् स्मे।	लट् १२२, स्मे ११९
लट् स्मे भू-ने	११९ अपरोक्षे च।	
लट्, भूते	१२० ननौ पृष्टप्रतिवचने।	पृष्ट-ने १२१
पृष्ट-ने, लट्	१२१ नन्वोर्विभाषा।	विभाषा १२२
भूता-ने, लट्, वि-षा	१२२ पुरि लुङ् चास्मे।	

(वर्तमानकालिककृत्प्रत्यय—)

	१२३ वर्तमाने लट्।*	वर्तमाने ३।३।१

१—(वा०) वसतेर्लुङ्, रात्रिविशेषे जागरणसंततौ वक्तव्यः।

२—(वा०) परोक्षे च लोकविज्ञाते प्रयोक्तुर्दर्शनविषये लङ् वक्तव्यः।

* प्रतिसूत्रमनुवृत्तिर्न दर्शिता।

१२४ लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे । (१) लटः १२
शानचौ

लटः, शतृ-चौ १२५ सम्बोधने च ।

" " १२६ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ।

१२७ तौ सत् ।

१२८ पूङ्यजोः शानन् । (२)

१२९ ताच्छील्य-वयोवचन-शक्तिषु चानश् ।

१३० इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि । शतृ १

शतृ १३१ द्विषोऽमित्रे ।

शतृ १३२ सुञो यज्ञसंयोगे ।

शतृ १३३ अर्हः प्रशंसायाम् ।

१३४ आ क्वेस्तच्छील-तद्धर्म-तत्साधुकारिषु ।* तच्छील-
१७८

तच्छी-षु १३५ तृन् (३)

तच्छील-षु १३६ अलंकृञ्-निराकृञ्-प्रजनोत्पचोत्पतोन्मद-रुच्यपत्रप-वृतु-वृधु-सह-चर इष्णुच् । (४) इष्णुच्

इष्णुच् १३७ णेश्छन्दसि । छन्दसि

१—(वा०) माङ्याक्रोशे ।

२—(वा०) द्विषः शतुर्वा वचनम् ।

*प्रतिसूत्रमनुवृत्तिर्न दर्शिता ।

३—(वा०) (क) तृन्विधावृत्विक्षु चानुपसर्गस्य । (ख) नयतेः पु
(ग) त्विषेर्देवतायामकारश्चोपधाया अनिट्त्वं च । (घ) क्षदेश्च नियु
(ङ) छन्दसि तृच्च ।

४—(वा०) अलङ्कृञो मण्डनार्थाद्युचः पूर्वविप्रतिषेधेनेष्णुज्वक्त

छंदसि, इष्णुच्	१३८ भुवश्च ।	भुवः १३९
भुवः	१३९ ग्ला-जि-स्थश्च ग्स्नुः । (१)	
	१४० त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः क्नुः ।	
	१४१ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ।	घिनुण् १४५
घिनुण्	१४२ संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यस-परिसृ-संसृज-परिदेवि-संज्वर-परिक्षिप-परिरट-परिवद-परिमुह-दुष-द्विष-द्रुह-दुह-युजाक्रीड-विविच-त्यज-रज-भजातिचरापाचरामुषाभ्याहनश्च ।	
घिनुण्	१४३ वौ कष-लस-कत्थ-स्रम्भः ।	वौ १४४
ौ, घिनुण्	१४४ अपे च लषः ।	
घिनुण्	१४५ प्रे लप-सृ-द्रु-मथ-वद-वसः ।	
	१४६ निन्द-हिंस-क्लिश-खाद-विनाश-परिक्षिप-परिरट-परिवादि-व्याभाषासूयो वुञ् ।	वुञ् १४७
ञ्	१४७ देविक्रुशोश्चोपसर्गे ।	
	१४८ चलन-शब्दार्थादकर्मकाद्युच् ।	अकर्मकात् १४९ युच् १५३
कर्मकात्, युच्	१४९ अनुदात्तेतश्च हलादेः ।	
च्	१५० जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-शुच-लष-पत-पदः ।	
च्	१५१ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ।	
च्	१५२ न यः ।	न १५३

१—(वा०) दंशश्छन्दस्युपसंख्यानम् ।

न, युच् १५३ सूद-दीप-दीक्षश्च ।

१५४ लष-पत-पद-स्था-भू-वृष्-हन-कम-गम-शृभ्य उकञ् ।

१५५ जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ठ-वृङः षाकन् ।

१५६ प्रजोरिनिः ।

इनिः १५७ जि-दृ-क्षि-विश्रीण्-वमाव्यथाभ्यम-परिभू-प्रसूभ्यश्च ।

१५८ स्पृहि-गृहि-पति-दयि-निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धाभ्य-आलुच् । (१)

१५९ दा-धेट्-सि-शद-सदो रुः ।

१६० सृ-घस्यदः क्मरच् ।

१६१ भञ्ज-भास-मिदो घुरच् ।

१६२ विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच्।(२)

१६३ इण्-नश-जि-सर्तिभ्यः कुरच्।

१६४ गत्वरश्च ।

१६५ जागरूकः ।

ऊकः १६६ यज-जप-दशां यङः ।

१६७ नमि-कम्पि-स्म्यजस-कम-हिंस-दीपो रः ।

१६८ सनाशंस-भिक्ष उः ।

उः १६९ बिन्दुरिच्छुः ।

१—(वा०) आलुचि शीङो ग्रहणम्।

२—(वा०) व्यधेः सम्प्रसारणं कुरञ्च वक्तव्यः।

१७० क्याच्छन्दसि । छन्दसि १७१

१७१ आदृ-गम-हन-जनः किकिनौ लिट् च । (१)

१७२ स्वपितृषोर्नजिङ् । (२)

१७३ भृवन्द्योरारुः ।

१७४ भियः क्रुक्लुकनौ । (३)

१७५ स्थेश-भास-पिस-कसो वरच् । वरच् १७६

१७६ यश्च यङः ।

१७७ भ्राज-भास-धुर्विद्युतोर्जि-पॄ-जु-ग्रावस्तुवः क्विप् । क्विप् १७९

१७८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते । (४)

१७९ भुवः संज्ञान्तरयोः । भुवः १८०

१८० वि-प्र-संभ्यो ड्वसंज्ञायाम् । (५)

१८१ धः कर्मणि ष्ट्रन् । ष्ट्रन् १८३

१८२ दाम्नी-शस-यु-युज-स्तु-तुद-सि-सिच-मिह-पत-दश-नहः करणे । करणे१८६

१८३ हलसूकरयोः पुवः ।

१—(वा०) (क) किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात् । (ख) षायां धाञ्कृसृजनिगमिभ्यः किकिनौ वक्तव्यौ । सहिवहिचलिपतिभ्यो यङ-भ्यः किकिनौ वक्तव्यौ ।

२—(वा०) धृषेश्चेति वक्तव्यम् ।

३—(वा०) क्रुकन्नपि वक्तव्यः ।

४—(वा०) (क) क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसंप्रसारणं (ख) द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च । (ग) ध्यायतेः सम्प्रसारणञ्च ।

५—(वा०) डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम् ।

करणे	१८४ अर्ति-लू-धू-सू-खन-सह-चर इत्रः ।	इत्रः १८
करणे, इत्रः	१८५ पुवः संज्ञायाम् ।	पुवः १८
करणे, इत्रः, पुवः	१८६ कर्तरि चर्षिदेवतयोः ।	
	१८७ ञीतः क्तः ।	क्तः १८
क्तः	१८८ मति-बुद्धि-पूजार्थेभ्यश्च ।	

इति तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः

	१ उणादयो बहुलम् ।	उणादयः
उणादयः	२ भूतेऽपि दृश्यन्ते ।	
	(भविष्यत्कालिककृत्प्रत्यय—)	
"	३ भविष्यति गम्यादयः । (१)	भविष्यति
भविष्यति	४ यावत्पुरानिपातयोर्लट् ।	लट् ६
भवि-ति, लट्	५ विभाषा कदाकर्ह्योः ।	विभाषा
भवि-ति, विभाषा, लट्	६ किंवृत्ते लिप्सायाम् ।	
" " "	७ लिप्स्यमानसिद्धौ च ।	
" " "	८ लोडर्थलक्षणे च ।	लो-णे
लोड्-णे, भवि-ति, वा, लट्	९ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।	
भविष्यति	१० तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ।	क्रिया-म् क्रियाया

१—(वा०) अनद्यतन उपसंख्यानम् ।

११ भाववचनाश्च ।

१२ अण् कर्मणि च ।

१३ लृट् शेषे च ।

१४ लृटः सद्वा ।

१५ अनद्यतने लुट् । (१)

(घञ्प्रत्यय—)

१६ पद-रुज-विश-स्पृशो घञ् । (२) घञ् ५५

१७ सृ स्थिरे । (३)

(भावार्थकप्रत्यय—तत्र घञ् प्रकृतः)

१८ भावे ।* भावे ११२

१९ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ।* अक-म् ११२

२० परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः । (४)

२१ इङश्च । (५)

२२ उपसर्गे रुवः ।

२३ समि युद्रुदुवः ।

२४ श्रि-णी-भुवोऽनुपसर्गे ।

२५ वौ क्षु-श्रुवः ।

२६ अवोदोर्नियः ।

१—(वा०) परिदेवने श्वस्तनी भविष्यदर्थे वक्तव्या।

२—(वा०) स्पृश उपताप इति वक्तव्यम्।

३—(वा०) व्याधिमत्स्यबलेष्विति वक्तव्यम्।

४—(वा०) दारजारौ कर्तरि णिलुक् च।

५—(वा०) (क) अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानम् तदन्ताच्च वा ङीष्। (ख) शृवायुवर्णनिवृत्तेषु।

* प्रतिसूत्रमनयोरनुवृत्तिर्न दर्शिता।

घञ्	२७ प्रे द्रु-स्तु-स्रुवः ।
"	२८ निरभ्योः पूल्वोः ।
"	२९ उन्न्योर्ग्रः ।
" उन्न्योः	३० कॄ धान्ये ।
"	३१ यज्ञे समि स्तुवः ।
"	३२ प्रे स्त्रोऽयज्ञे ।
घञ्, स्त्रः	३३ प्रथने वावशब्दे ।
वौ, स्त्रः, घञ्	३४ छन्दोनाम्नि च ।
घञ्	३५ उदि ग्रहः । (१)
ग्रहः, घञ्	३६ समि मुष्टौ ।
घञ्	३७ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ।
"	३८ परावनुपात्यय इणः ।
"	३९ व्युपयोः शेतेः पर्याये ।
"	४० हस्तादाने चेरस्तेये । (२)
चेः, घञ्	४१ निवास-चिति-शरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ।
चेः, घञ्, आ-कः	४२ संघे चानौत्तराधर्ये ।
	४३ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् ।
	४४ अभिविधौ भाव इनुण् ।
घञ्	४५ आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ।
ग्रहः, घञ्	४६ प्रे लिप्सायाम् ।

१—(वा०) उद्गाभनिग्राभौ च च्छन्दसि स्रुगुद्यमननिपातनयोः ।*
२—(वा०) उच्चयस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

* 'छन्दसि निपूर्वादपीष्यते स्रुगुद्यमननिपातनयोः' इति काशिकास्थः पा

ग्रहः, घञ्	४७ परौ यज्ञे ।	
”	४८ नौ वृ धान्ये ।	
”	४९ उदि श्रयति-यौति-पू-द्रुवः ।	
घञ्	५० विभाषाऽऽङिरुप्लुवोः ।	विभाषा ५५
विभाषा, घञ्	५१ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ।	ग्रहः ५३
वि-षा, ग्रहः, घञ्	५२ प्रे वणिजाम् ।	प्रे ५४
प्रे, विभाषा, ग्रहः, घञ्	५३ रश्मौ च ।	
प्रे, विभाषा, घञ्	५४ वृणोतेराच्छादने ।	
विभाषा, घञ्	५५ परौ भुवोऽवज्ञाने ।	
	(अच्प्रत्यय—)	
भावे	५६ एरच् । (१)	
	(अप्प्रत्यय—)	
भावे	५७ ॠदोरप् ।	अप् ८७
अप्	५८ ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-गमश्च । (२)	
अप्	५९ उपसर्गेऽदः ।	अदः ६०
अदः अप्	६० नौ ण च ।	
अप्	६१ व्यध-जपोरनुपसर्गे ।	अनुपसर्गे ६५
अनुपसर्गे अप्	६२ स्वन-हसोर्वा ।	वा ६५
वा, अप्, अ-र्गे	६३ यमः समुपनिविषु च ।	
वा, अप्, अ-र्गे	६४ नौ गद-नद-पठ-स्वनः ।	नौ ६५

१—(वा०) (क) अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानम् नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम्। (ख) जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ।

२—(वा०) (क) वशिरण्योरुपसंख्यानम्। (ख) घञर्थे कविधानं स्थास्नापाव्यधिहनियुध्यर्थम्।

वा, अप्	६५ क्वणो वीणायाञ्च ।	
अप्	६६ नित्यं पणः परिमाणे ।	
अप्	६७ मदोऽनुपसर्गे ।	
	६८ प्रमद-संमदौ हर्षे ।	
अप्	६९ समुदोरजः पशुषु ।	
”	७० अक्षेषु ग्लहः ।	
”	७१ प्रजने सर्त्तेः ।	
”	७२ ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युपविषु ।	ह्वः ७५, संप्रसारणम् ७५
ह्वः, अप्, स-म्	७३ आङि युद्धे ।	
	७४ निपानमाहावः ।	
ह्वः, अप्, स-म्	७५ भावेऽनुपसर्गस्य ।	भावे, अ-स्य
अ-स्य, अप्	७६ हनश्च वधः ।	हनः ८७
	७७ मूर्तौ घनः	
	७८ अन्तर्घनो देशे ।	
	७९ अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च ।	
	८० उद्घनोऽत्याधानम् ।	
	८१ अपघनोऽङ्गम् ।	
हनः, अप्	८२ करणेऽयोविद्रुषु ।	करणे ८४
हनः, करणे, अप्	८३ स्तम्बे क च ।	
” ” ”	८४ परौ घः ।	
	८५ उपघ्न आश्रये ।	
	८६ संघोद्घौ गणप्रशंसयोः ।	
	८७ निघो निमितम् ।	
भावे	८८ ड्वितः क्त्रिः ।	

भावे	८९ ट्वितोऽथुच् ।	
,,	९० यज-याच-यत-विच्छ-प्रच्छ-रक्षो नङ् ।	
,,	९१ स्वपो नन् ।	
,,	९२ उपसर्गे घोः किः ।	घोः किः ९३
घोः, किः	९३ कर्मण्यधिकरणे च ।	
भावे	९४ स्त्रियां क्तिन् । (१)	स्त्रियाम् ११२ क्तिन् ९७
क्तिन्	९५ स्था-गा-पा-पचो भावे ।	भावे ९६
क्तिन्, भावे	९६ मन्त्रे वृषेष-पच-मन-विद-भू-वी-राः उदात्तः ।	उदात्तः १००
,, , ,,	९७ ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयश्च ।	
	९८ व्रजयजोर्भावे क्यप् ।	क्यप् १००
क्यप्, भावे	९९ संज्ञायां समज-निषद-निपत-मन-विद-षुञ्-शीङ्-भृञिणः ।	
क्यप्, भावे	१०० कृञः श च ।	श १०१
	१०१ इच्छा । (२)	
स्त्रियाम्	१०२ अ प्रत्ययात् ।	

१—(वा०) (क) स्त्रियां क्तिन्नाबादिभ्यः। (ख) श्रुयजिस्तुभ्यः* करणे। (ग) ग्लाम्लाज्याहाभ्यो निः। (घ) ऋकारल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्भवतीति वक्तव्यम्। (ङ) संपदादिभ्यः क्विप्।

२—(वा०) (क) इच्छापरिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानम्। जागर्तेरकारो वा।

* श्रुयजिषि। इति पाटान्तरम्। श्रुयजीषि इति च पा०।

स्त्रियाम्, अ	१०३ गुरोश्च हलः।	
स्त्रियाम्	१०४ षिद्भिदादिभ्योऽङ्।	अङ् १०६
स्त्रियाम्, अङ्	१०५ चिन्ति-पूजि-कथि-कुम्बि-चर्चश्च।	
" , "	१०६ आतश्चोपसर्गे।	
स्त्रियाम्	१०७ ण्यासश्रन्थो युच्। (१)	
"	१०८ रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्। (२)	ण्वुल् ११०
" , ण्वुल्	१०९ संज्ञायाम्।	
" , "	११० विभाषाख्यान-परिप्रश्नयोरिञ्च।	
विभाषा,स्त्रि-म्	१११ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्।	
स्त्रियाम्	११२ आक्रोशे नञ्यनिः।	
	११३ कृत्यल्युटो बहुलम्।	
	११४ नपुंसके भावे क्तः।	न-के, भावे।
न-के, भावे	११५ ल्युट् च।	ल्युट् ११
" ", ल्युट्,	११६ कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम्।	
ल्युट्	११७ करणाधिकरणयोश्च।	क-योः ११
कर-योः	११८ पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण।	पुंसि संज्ञा १२५, घः।

१—(वा०) (क) घट्टिवन्दिविदिभ्य उपसंख्यानम्। (ख) इषेरनिच्छा युज्वक्तव्यः। (ग) परेर्वा।

२—(वा०) (क) धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्वक्तव्यः। (ख) इक्श्तिपौ धातुनिर्दे (ग) वर्णात्कारः। (घ) रादिफः। (ङ) मत्वर्थाच्छः। (च) इणजादि (छ) इञ्वपादिभ्यः। (ज) इक् कृष्यादिभ्यः।

पुंसि, स-म्, क-योः	**११९ गोचर-संचर-वह-व्रज-व्यजापण-निगमाश्च ।**	
,, ,,	**१२० अवे तॄस्त्रोर्घञ् ।**	घञ् १२५
,, ,, , घञ्	**१२१ हलश्च ।**	
,, ,, ,,	**१२२ अध्याय-न्यायोद्यावसंहाराश्च । (१)**	
,, ,, ,,	**१२३ उदङ्कोऽनुदके ।**	
,, ,, ,,	**१२४ जालमानायः ।**	
रणा-योः, घञ्	**१२५ खनो घ च । (२)**	
	१२६ ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ।	ईष-षु, कृ-षु १३० खल् १२७
-पु, कृ-र्थेषु, खल्	**१२७ कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः । (३)**	
-षु, ई-षु	**१२८ आतो युच्**	युच् १३०
,, युच्	**१२९ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ।**	छन्दसि १३०
न्दसि, युच्	**१३० अन्येभ्योऽपि दृश्यते । (४)**	
	(लकारार्थनिर्देश—)	
	१३१ वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा ।	वर्तमानवत् १३२
र्तमानवत्	**१३२ आशंसायां भूतवच्च ।**	आश-म् १३३
शा-म्	**१३३ क्षिप्रवचने लृट् ।**	
	१३४ आशंसावचने लिङ् ।	

१—(वा०) घञ्विधाववहाराधारावायानामुपसंख्यानम् ।

२—(वा०) (क) डो वक्तव्यः । (ख) डरो वक्तव्यः । (ग) इको क्तव्यः । (घ) इकवको वक्तव्यः ।

३—(वा०) कर्तृकर्मणोश्च्व्यर्थयोरिति वक्तव्यम् ।

४—(वा०) भाषायां शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो युज् वक्तव्यः ।

	१३५ नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ।	न,अनद्य
न, अन-वत्	१३६ भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ।	भ-ति म-ने अ-कणत
अव-न्, म-ने अ-त्, न	१३७ कालविभागे चानहोरात्राणाम् ।	का-गे अ-म्
का-गे,अ-त्राणाम्, अ-त्, न	१३८ परस्मिन् विभाषा ।	
	१३९ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ	लिङ्-त्ते, क्रि-त्तौ
लि-त्ते, क्रि-त्तौ, लृङ्	१४० भूते च ।	भूते
	१४१ वोताप्योः ।	उताप्योः
	१४२ गर्हायां लडपिजात्वोः ।	ग-याम् लट्
गर्हा-म्, लट्	१४३ विभाषा कथमि लिङ् च ।	
,, , ,,	१४४ किंवृत्ते लृङ्लृटौ ।	लृङ्लृटौ
लृङ्लृटौ, किंवृत्ते	१४५ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ।	अन-योः
अन-योः	१४६ किङ्किलास्त्यर्थेषु लृट् ।	
,,	१४७ जातुयदोर्लिङ् ।	लिङ्
,, , लिङ	१४८ यच्चयत्रयोः ।	य-योः
यच्च-योः लिङ्	१४९ गर्हायाञ्च ।	
यच्च-योः, लिङ्	१५० चित्रीकरणे च ।	चि-णे
चि-णे	१५१ शेषे लृडयदौ ।	
	१५२ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ।	लिङ्
लिङ्	१५३ कामप्रवेदनेऽकच्चिति ।	
,,	१५४ संभावनेऽलमितिचेत्सिद्धाप्रयोगे।	सम्भा-योगे
संभावन-योगे, लिङ्	१५५ विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि ।	विभाषा

विभाषा	१५६ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ।	
	१५७ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ । (१)	इ-षु १५९
इच्छार्थेषु	१५८ समानकर्तृकेषु तुमुन् ।	स-षु १५९
समा-षु, इ-षु	१५९ लिङ् च ।	लिङ् १६०
लिङ्	१६० इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने ।	
	१६१ विधि-निमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-संप्रश्न-प्रार्थनेषु लिङ् ।	विधि-षु १६२
विधि-षु	१६२ लोट् च ।	लोट् १६३
लोट्	१६३ प्रैषातिसर्ग-प्राप्तकालेषु कृत्याश्च	प्रैषा-षु १६५
प्रैषा-षु	१६४ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।	ऊ-के १६५
,, ऊर्ध्व-के	१६५ स्मे लोट् ।	स्मे लोट् १६६
स्मे, लोट्	१६६ अधीष्टे च ।	
	१६७ काल-समय-वेलासु तुमुन् ।	काल-लासु १६८
काल-लासु	१६८ लिङ् यदि ।	
	१६९ अर्हे कृत्यतृचश्च ।	
	१७० आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ।	आव-योः १७१
आव-योः	१७१ कृत्याश्च ।	कृत्याः १७२
कृत्याः	१७२ शकि लिङ् च ।	
	१७३ आशिषि लिङ्लोटौ ।	आशिषि १७४
आशिषि	१७४ क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम् ।	
	१७५ माङि लुङ् ।	माङि लुङ् १७६
माङि, लुङ्	१७६ स्मोत्तरे लङ् च ।	

इति तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः

१—(वा०) कामप्रवेदन इति वक्तव्यम्।

अथ चतुर्थः पादः

(लकारार्थनिर्देश एव प्रकृतः)

	१ धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ।	धातु-न्धे ६
धातु-न्धे ।	२ क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः ।	लोट्लोटो-मोः ३
लोट्-मोः	३ समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ।	
	४ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ।	अनुप्रयोगः ।
अनुप्रयोगः	५ समुच्चये सामान्यवचनस्य ।	
धा-न्धे ।	६ छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः ।	छन्दसि १७
छन्दसि	७ लिङर्थे लेट् ।	लेट् ८
छन्दसि, लेट्	८ उपसंवादाशंकयोश्च ।	

(तुमर्थप्रत्यय—)

छन्दसि	९ तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्कसेकसेनध्यैअध्यैन् कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन् तवैतवेङ्तवेनः ।	तुमर्थे १३
छन्दसि, तुमर्थे	१० प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ।	
” ”	११ दृशे विख्ये च ।	
तुमर्थे, छ-सि	१२ शकि णमुल्कमुलौ ।	
” ”	१३ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ।	
छन्दसि	१४ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ।	कृत्यार्थे १५
कृत्यार्थे,छन्दसि	१५ अवचक्षे च ।	
तुमर्थे, छन्दसि	१६ भावलक्षणे स्थेण्-कृञ्-वदि-चरि-हु-तमि-जनिभ्यस्तोसुन् ।	भा-णे १७
भा-णे, छ-सि	१७ सृपि-तृदोः कसुन ।	

(क्त्वाप्रत्यय—)

	१८ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ।	क्त्वा २४
क्त्वा	१९ उदीचां माङो व्यतीहारे ।	
क्त्वा	२० परावरयोगे च ।	
क्त्वा	२१ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ।(१)	स-योः २६, पू-ले २६
क्त्वा	२२ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ।	आभी-क्ष्ण्ये २३ णमुल् २४
क्त्वाणमुलौ	२३ न यद्यनाकाङ्क्षे ।	
,,	२४ विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ।	
	२५ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ।	कृञः २८

(णमुल्प्रत्यय—)

ञः	२६ स्वादुमि णमुल् ।	णमुल् ६४
ञः णमुल्	२७ अन्यथैवं-कथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् ।	सिद्धा-गः २८
ञः णमुल्, स-गः	२८ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ।	
मुल्	२९ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ।	कर्मणि ३६
,, कर्मणि	३० यावति विन्दजीवोः ।	
,, ,,	३१ चर्मोदरयोः पूरेः ।	पूरेः ३२
रेः, णमुल् ,,	३२ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ।	वर्ष-णे ३३
र्ष-णे, णमुल् कर्मणि	३३ चेले क्नोपेः ।	

१—(वा०) आस्यं व्यादाय स्वपिति संमील्य हसतीत्युपसंख्यानमपूर्वकालत्वात्।

कर्मणि, णमुल्	३४ निमूल-समूलयोः कषः ।	
,, ,,	३५ शुष्क-चूर्ण-रूक्षेषु पिषः ।	
,, ,,	३६ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ।	
णमुल्	३७ करणे हनः ।	करणे ४०
करणे, णमुल्	३८ स्नेहने पिषः ।	
,, ,,	३९ हस्ते वर्त्तिग्रहोः ।	
,, ,,	४० स्वे पुषः ।	
णमुल्	४१ अधिकरणे बन्धः ।	बन्धः ४२
बन्धः, णमुल्	४२ संज्ञायाम् ।	
णमुल्	४३ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ।	कर्त्रोः ४५
कर्तरि, णमुल्	४४ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ।	
कर्तरि, णमुल्	४५ उपमाने कर्मणि च ।	
	४६ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ।	
णमुल्	४७ उपदंशस्तृतीयायाम्	तृतीयायाम्
तृती-म्, णमुल्	४८ हिंसार्थानाञ्च समानकर्मकाणाम् ।	
,, ,,	४९ सप्तम्याञ्चोपपीड-रुध-कर्षः ।	सप्तम्याम्
तृतीयासप्तम्योः णमुल्	५० समासत्तौ ।	
,, ,,	५१ प्रमाणे च ।	
णमुल्	५२ अपादाने परीप्सायाम् ।	परीप्सायाम्
प-म्, णमुल्	५३ द्वितीयायाञ्च ।	द्वि-याम् ५
द्वि-म्, णमुल्	५४ स्वाङ्गेऽध्रुवे ।	स्वाङ्गे ५
स्वाङ्गे, द्वि-म्, णमुल्	५५ परिक्लिश्यमाने च ।	
द्वि-म्, णमुल्	५६ विशि-पति-पदि-स्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ।	
द्वि-म्, णमुल्	५७ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ।	

द्वि-म्, णमुल्	५८ नाभ्न्यादिशिग्रहोः ।	
	(क्त्वाणमुल्प्रत्यय—)	
	५९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ।	कृञः६०,क्त्वा-लौ ६४
कृञः,क्त्वा ण-लौ	६० तिर्यच्यपवर्गे ।	
,,	६१ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ।	कृभ्वोः ६२
कृभ्वोः,क्त्वाण-लौ	६२ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ।	
क्त्वाणमुलौ	६३ तूष्णीमि भुवः ।	भुवः ६४
भुवः,क्त्वाण-लौ	६४ अन्वच्यानुलोम्ये ।	
	(तुमुन्प्रत्यय—)	
	६५ शक-धृष-ज्ञा-ग्ला-घट-रभ-लभ-क्रम-सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ।	तुमुन् ६६
तुमुन्	६६ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ।	
	(कृत्प्रत्ययार्थ—)	
	६७ कर्तरि कृत् ।	कर्तरि ७०
कर्तरि	६८ भव्य-गेय-प्रवचनीयोपस्थानीय-जन्याप्लाव्यापात्या वा ।	
कर्तरि	६९ लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ।	
	७० तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ।	
भावकर्मणोः	७१ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ।	कर्तरि ७२
कर्तरि, भा-णोः	७२ गत्यर्थाकर्मक-श्लिष-शीङ्-स्थास-वस-जन-रुह-जीर्यतिभ्यश्च ।	
	७३ दाशगोघ्नौ संप्रदाने ।	
	७४ भीमादयोऽपादाने ।	
	७५ ताभ्यामन्यत्रोणादयः ।	

	७६ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्य-गति-प्रत्यवसानार्थेभ्यः ।	
	(लादेश—)	
	७७ लस्य ।	लस्य ११७
लस्य	७८ तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिप्‌वस् मस् तातां झ थासाथां ध्वमिड्‌वहि महिङ् ।	
	(लकारादेशविकार—)	
लस्य	७९ टित आत्मनेपदानां टेरे ।	टितः ८०
टितः, लस्य	८० थासस्से ।	
	८१ लिटस्तझयोरेशिरेच् ।	लिटः ८२
लिटः	८२ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ।	परस्मै-म् ८ ण-वमाः ८४
पर-म्, ण-वमाः	८३ विदो लटो वा ।	लटः ८४
पर-म्,लटः,ण-माः	८४ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः।	
	८५ लोटो लङ्वत् ।	लोटः ९३
लोटः	८६ एरुः ।	
”	८७ सेर्ह्यपिच्च ।	सेर्ह्यपित् ८
सेर्ह्यपित् लोटः	८८ वा छन्दसि ।	
लोटः	८९ मेर्निः ।	
”	९० आमेतः ।	एतः ९१
” एतः	९१ सवाभ्यां वामौ ।	
लोटः	९२ आडुत्तमस्य पिच्च ।	उत्तमस्य
लोटः, उ-स्य	९३ एत ऐ ।	
	९४ लेटोऽडाटौ ।	लेटः ९८
लेटः	९५ आत ऐ ।	ऐ ९६

लेटः, ऐ	९६ वैतोऽन्यत्र	वा ९८
लेटः, वा	९७ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु	लोपः १००
लेटः, वा, लोपः	९८ स उत्तमस्य ।	उत्तमस्य,सः ९९
उत्तमस्य, सः, लोपः	९९ नित्यं ङितः ।	ङितः १०१, नित्यं १००
ङितः,नित्यम् लोपः	१०० इतश्च ।	
ङितः	१०१ तस्-थस्-थ-मिपां तान्तन्तामः ।	
	१०२ लिङः सीयुट् ।	लिङः १०८
लिङः	१०३ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ।	यासुट्, पर-षु उदात्तः १०४
लिङः,यासुट् पर-षु	१०४ किदाशिषि ।	
लिङः	१०५ झस्य रन् ।	
,,	१०६ इटोऽत् ।	
,,	१०७ सुट् तिथोः ।	
,,	१०८ झेर्जुस् ।	झेः, जुस् ११२
झेः, जुस्	१०९ सिजभ्यस्त-विदिभ्यश्च ।	
,, ,,	११० आतः ।	आतः १११
आतः, झेः, जुस्	१११ लङः शाकटायनस्यैव ।	लङः,शा-स्य ११२
लङः, झेर्जुस्, शा-स्य	११२ द्विषश्च ।	

(लादेशसंज्ञा—)

	११३ तिङ्शित्सार्वधातुकम् ।	
	११४ आर्धधातुकं शेषः ।	आ-म् ११७
आर्धधातुकम्	११५ लिट् च ।	
,,	११६ लिङाशिषि ।	
,,	११७ छन्दस्युभयथा ।	

इति तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः

तृतीयाध्यायश्च समाप्तः

अथ चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(अथ सुप्प्रत्यय—) ५।४।१६०

१ ङ्याप्प्रातिपदिकात् ।

२ स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्
ङेभ्यांभ्यस् ङसिभ्यांभ्यस
ङसोसां ङ्योस्सुप् ।

(स्त्रीप्रत्यय—) ४।१।८१

३ स्त्रियाम् । स्त्रियाम् ८१

स्त्रियाम् ४ अजाद्यतष्टाप् (१)

(स्त्रीप्रत्ययेषु ङीप्प्रत्यय—)

५ ऋन्नेभ्यो ङीप् । ङीप् २४

ङीप् ६ उगितश्च । (२)

,, ७ वनो र च । (३)

,, ८ पादोऽन्यतरस्याम् । पादः ९

१—(गणपा०) अजा, एडका, कोकिला, चटका, अश्वा, मूषिका (मूषिकेति जातिः का०) बाला, होडा (होढा का०), पाका, वत्सा, मन्दा, विलाता (विलातेति वयः का०) पूर्वापहाणा (पूर्वापहरणा का०), अपरापहाणा (अपरापहरणा का०), संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात् (संफला, त्रिफला द्विगौ। बहुव्रीहौ त्रिफली संहतिः का०)। सदच्काण्डप्रान्तशतैकेभ्यः पुष्पात् (सत्प्राक्काण्ड—का०)। शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः। क्रुञ्चा, उष्णिहा, देवविशा (हलन्ताः क्रुञ्च्, उष्णिह्, देवविश्) ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा पुंयोगेऽपि (मध्यमा पुंयोगेऽपि) मूलान्नञः (अमूला) दंष्ट्रा। इत्यजादिः।

२—(वा०) (क) धातोरुगितः प्रतिषेधो वक्तव्यः। (ख) अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्।

३—(वा०) वनो न हशः।

पादः	९ टाबृचि ।	
ङीप्टापौ	१० न षट्स्वस्रादिभ्यः। (१)	न १२
ङीप्, न	११ मनः ।	मनः १३
,, ,,	१२ अनो बहुव्रीहेः ।	अनः, ब-हेः १३
अनः, मनः	१३ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ।	
	१४ अनुपसर्जनात् ।	अनुप-त् ८१
अनु-त्, ङीप्	१५ टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः।(२)	
अनु-त्, ङीप्	१६ यञश्च । (३)	यञः १८
यञः	१७ प्राचां ष्फस्तद्धितः ।	
यञः ष्फः	१८ सर्वत्र लोहितादि-कतन्तेभ्यः।	ष्फः १९
,, ,,	१९ कौरव्य-माण्डूकाभ्याञ्च (४)	
ङीप्, अतः	२० वयसि प्रथमे । (५)	
अतः, द्विगोः,	२१ द्विगोः ।	द्विगोः २४
,, ,,	२२ अपरिमाण-विस्ताचित-कम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ।	न, तद्धि-कि २४
द्विगोः, तद्धि-कि, न, ङीप्	२३ काण्डान्तात् क्षेत्रे ।	
तद्धि-कि, द्विगोः ङीप्, न	२४ पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ।	
	२५ बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ।	ब-हेः, ऊ-सः २६
ब-हेः, ऊधसः	२६ संख्याव्ययादेर्ङीप् ।	ङीप् ३९ संख्यादेः २७

१—(गण०) स्वसृ, दुहितृ, ननान्दृ, यातृ, मातृ, तिसृ, चतसृ, इति स्वस्रादिः।

२—(वा०) नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलनानामुपसंख्यानम्।

३—(वा०) आपत्यग्रहणं कर्तव्यम्।

४—(वा०) कौरव्यमाण्डूकयोरासुरेरुपसंख्यानम्।

५—(वा०) वयस्यचरम इति वक्तव्यम्।

व-हेः, संख्यादेः ङीप्	२७ दामहायनान्ताच्च । (१)	
बहु-हेः, ङीप्	२८ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ।	अनः, उप २९
अनः, उप-नः, बहु-हेः, ङीप्	२९ नित्यं संज्ञाछन्दसोः ।	सं-सोः ३
सं-सोः, ङीप्	३० केवल-मामक-भागधेय-पापापर-समानार्य कृत-सुमङ्गल-भेषजाच्च ।	
सं-सोः, ङीप्	३१ रात्रेश्चाजसौ । (२)	
	३२ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ।	
	३३ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ।	नः ३४
पत्युः, नः	३४ विभाषा सपूर्वस्य ।	
पत्युः नः	३५ नित्यं सपत्न्यादिषु ।	
ङीप्	३६ पूतक्रतोरै च ।	ऐ ३७
ङीप्, ऐ	३७ वृषाकप्यग्नि-कुसित-कुसीदानामुदात्तः ।	उदात्तः ३
ङीप्, ऐ	३८ मनोरौ वा ।	वा ३९
वा, ङीप्	३९ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः । (३)	वर्णात्, ४०
	(स्त्रीप्रत्ययेषु ङीष्—)	
वर्णात्, अनु-त्	४० अन्यतो ङीष् ।	ङीष् ६५

१—(वा०) हायनो वयसि स्मृतः।

२—(वा०) अजसादिष्विति वक्तव्यम्।

३—(वा०) (क) पिशङ्गादुपसंख्यानम्। (ख) असितपलितयोः प्रति
(ग) छन्दसि क्नमित्येके।

ङीष् ४१ पिद्गौरादिभ्यश्च। (१)

„ ४२ जानपद-कुण्ड-गोण-स्थल-भाज-नाग-काल-नील-कुश-कामुक-कबराद्-वृत्यमत्रावपनाकृत्रिमा-श्राणा-स्थौल्य-वर्णानाच्छादना-योविकार-मैथुनेच्छा-केशवेशेषु। (२)

१—(गणपा०) गौर, मत्स्य, मनुष्य, शृंग पिंगल, हय, गवय, मुकय, ऋश्य, पुट, तूण, द्रुण, द्रोण, हरिण, काकण, (कोकण, कण का०), पटर, उणक (उकण का०), आमलक (आमल), कुवल, बिम्ब, बदर, कर्कर, (कर्करक,) तर्कार, शर्कार, पुष्कर, शिखण्ड, सलद, शष्कण्ड, सनन्द, (सलन्द का०), सुषम, सुअव, अलिन्द, गडुल, (गडुज का०), षाण्डस, आढक, आनन्द, पाश्वत्थ, सृपाट, आपच्चिक, (आखक, आपिच्छिक का०), शष्कुल, सूर्म, शूर्प, सूच, यूष, (पूष), यूथ, सुप, मेथ, बल्लक, धातक, (घातक का०), सल्लक, मालक, मालत, साल्वक, वेतस, वृस (वृक्ष, पृस, का०), अतस, उभय, भृङ्ग, मह, मठ, छेद, वेश, मेद, श्वन्, तक्षन्, अनडुही, अनड्वाही, एषणः करणे, वेह, वेहल, काकादन, गवादन, तेजन, रजन, लवण, औदगाहमानि, (आदृगाहमानि) गोतम (गौतम का०), पारक, अयःस्थूणः, (आप, स्थूण का०), भौरिकि (भौरि का०), भौलिकि, भौलिगि, यान, (पान का०), मेध, आलम्बि, आलजि, आलब्धि, आलक्षि, केवाल, आपक, आरट, नट, टोट, नोट, (नाट का०, मूलाट, शातन, पोतन, पातन, पानठ, (पाठन), आस्तरण, अधिकरण, अधिकार, आग्रहायणि (अग्रहायणी), प्रत्यवरोहिणी, सेचन, सुमङ्गलात् संज्ञायाम्, अण्डर, सुन्दर, मण्डल, मन्थर, मङ्गल, पट, पिण्ड, षण्ड, ऊर्द (कुर्द का०), गुर्द (गूर्द का०), शम, सूद, आर्द्र, (आौड) हद (ह्लद), पाण्ड (पाण्ट का० भाण्ड (भाण्डल भाण्ड), लोहाण्ड, (लोफाण्ट का०), कदर, कन्दर, कदल, (कन्दल का०), तरुण, तलुन, कल्माष, बृहत्, महत्, सोम, सौधर्म, रोहिणी नक्षत्रे। रेवती नक्षत्रे, विकल, निष्कल, पुष्कल, कटाच्छ्रोणिवचने। पिप्पल्यादयश्च। पिप्पली हरीतकी (हरितकी) कोशातकी, शमी, वरी, शरी, (शमी करीरी का०), पृथिवी, क्रोष्टु (क्रोष्ट्री का०), मातामह, पितामह, सृगेठ, सुव, सूर्य, सकूलक, आलिङ्गि, पावन, एत, विटक, भट्ट, दहन, कन्द, काकण। इति गौरादिः।

२—(वा०) (क) नीलादोषधौ, (ख) प्राणिनि च (ग) वा संज्ञायाम्।

ङीष्	४३ शोणात्प्राचाम् ।	
,,	४४ वोतो गुणवचनात् । (१)	वा ४५
वा, ङीष्	४५ बह्वादिभ्यश्च । (२)	बह्वादिभ्यः
ङीष्, ब-भ्यः	४६ नित्यं छन्दसि ।	छन्दसि ४
नित्यम्,छ०ङीष्	४७ भुवश्च ।	
ङीष्	४८ पुंयोगादाख्यायाम् । (३)	पुंयोगात्
ङीष्	४९ इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणामानुक् । (४)	
ङीष्	५० क्रीतात्करणपूर्वात् ।	करणपूर्वात्
कर-त्, ङीष्	५१ क्तादल्पाख्यायाम् ।	क्तात् ५३
क्तात्, ङीष्	५२ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् । (५)	ब-हेः अन्त्

१—(वा०) (क) वसुशब्दाद् गुणवचनाद् ङीबाद्युदात्तार्थम्। (ख) खरुसंयोगोपधात् प्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(गणपा०) बहु, पद्धति, अङ्कति, अञ्चति, अंहति, शकटि (शक्ति शक्तिः शस्त्रे, शारि, वारि, राति, राधि, शाधि, अहि, कपि, यष्टि, मु इतः प्राण्यङ्गात्, कृविकारादक्तिनः, सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके, चण्ड, अराल, कृ (कृपाण का०), कमल, विकट, विशाल, विशङ्कट, भरुज, ध्वज, चन्द्रभागाश (चन्द्रभागा नद्याम्), कल्याण, उदार, पुराण, अहन्, क्रोड, नख, खुर, शि बाल, शफ, गुद, वहति, गति, आकृतिगणः। तेन, भग, गल, राग इति बह्वा

३—(वा०) (क) गोपालकादीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः। (ख) सूर्या तायां चाब्वक्तव्यः।

४—(वा०) (क) हिमारण्ययोर्महत्वे (ख) यवाद्दोषे (ग) यवनाल्लि (घ) उपाध्यायमातुलाभ्यां वा (ङ) आचार्यादणत्वं च (च) अर्यक्षत्रियाभ्यां (छ) मुद्गलाच्छन्दसि लिच्च।

५—(वा०) (क) अन्तोदात्ताज्जातप्रतिषेधः (ख) पाणिगृहीत्यादीना विशेषे। (ग) अबहुन*न्सुकालसुखादिपूर्वादिति वक्तव्यम्।

---

* 'अबह्वनञ्' इति पाठः।

अन्तो-त्, क्तात् ङीष्, ब-हेः	५३ अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा (१)	वा ५५
वा, ङीष्	५४ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्। (२)	स्वा-त्, उपसर्जनात् ६०
उप-त्, स्वा-त्, वा, ङीष्	५५ नासिकोदरौष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-शृङ्गाच्च। (३)	
उप-त्, स्वा-त्, ङीष्,	५६ न क्रोडादिबह्वचः।	न ५८
उप-त् स्वा-त्, ङीष्, न	५७ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च।	
,, ,, ,, ,,	५८ नखमुखात्संज्ञायाम्।	
	५९ दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि।	
स्वा-त्	६० दिक्पूर्वपदान्ङीप्।	
ङीष्,	६१ वाहः।	
	६२ सख्यशिश्वीति भाषायाम्।	
ङीष्	६३ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्। (४)	जातेः ६४
ङीष्	६४ पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-बालोत्तरपदाच्च। (५)	
ङीष्	६५ इतो मनुष्यजातेः। (६)	मनु-तेः ६६

१—(वा०) बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम्।

२—(वा०) अङ्गगात्रकण्ठेभ्य इति वक्तव्यम्।

३—(वा०) (क) पुच्छाच्चेति वक्तव्यम्। (ख) कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम् (ग) उपमानात्पक्षाच्च पुच्छाच्च।

४—(वा०) योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमत्स्यमनुष्याणामप्रतिषेधः।

५—(वा०) (क) सत्प्राक्काण्डप्रान्तशतैकेभ्यः पुष्पात्। (ख) संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात्। (ग) मूलान्नञः।

६—(वा०) इव उपसंख्यानमजात्यर्थम्।

(स्त्रीप्रत्ययेषु ऊङ्—)

मनुष्यजातेः	**६६ ऊङुतः । (१)**	ऊङ् ७२
ऊङ्	**६७ बाह्वन्तात्सञ्ज्ञायाम् ।**	
,,	**६८ पङ्गोश्च । (२)**	
,,	**६९ उरूत्तरपदादौपम्ये ।**	उरू-त् ७०
उरू-त्, ऊङ्	**७० संहित-शफ-लक्षण-वामादेश्च । (३)**	
,,	**७१ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि । (४)**	कद्रु-ल्वोः ७
कद्रु-ल्वोः, ऊङ्	**७२ संज्ञायाम् ।**	

(स्त्रीप्रत्ययेषु ङीन्—)

७३ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् । (५)

(स्त्रीप्रत्ययेषु चाप्—)

	७४ यङश्चाप् । (६)	चाप् ७५
चाप्	**७५ आवट्याच्च ।**	

(अथ तद्धिताधिकारः)

	७६ तद्धिताः ।	तद्धिताः ५ १६०

१—(वा०) अप्राणिजातेश्चारज्ज्वादीनामिति वक्तव्यम्।

२—(वा०) श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च।

३—(वा०) सहितसहाभ्याञ्चेति वक्तव्यम्।

४—(वा०) गुग्गुलुमधुजतुपतयालूनामिति वक्तव्यम्।

५—(गणपा०) शार्ङ्गरव, कापटव, गौग्गुलव, ब्राह्मण, वैद (का गौतम, कामण्डलेय, ब्राह्मणकृतेय (ब्राह्मकृतेय), आनिचेय, आनिधेय, आ केय, वात्स्यायन, मौञ्जायन, कैकस (कैकसेय का०), काप्प (काव्य) एहि, पर्येहि, आश्मरथ्य, औदपान, अराल, चण्डाल, वतण्ड, भोगववृगौरि संज्ञायाम् धाविषु नित्यं ह्रस्वार्थम्। नृनरयोर्वृद्धिश्च। इति शार्ङ्गरवादिः।

६—(वा०) षाच्च यञः।

	(स्त्रीप्रत्ययेषु ति—)	
स्त्रियाम् तद्धित	७७ **यूनस्तिः ।**	
	(स्त्रीप्रत्ययेषु ष्यङ्—)	
,, ,,	७८ **अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे ।**	ष्यङ् ८१ गोत्रे ८० अणिञोः ७९
अणिञोः, ष्यङ्	७९ **गोत्रावयवात् ।**	
ष्यङ् गोत्रे	८० **क्रौड्यादिभ्यश्च ।** (१)	
,,	८१ **दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुग्रि-काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ।**	
	(तद्धितेष्वपत्याधिकार—)	
	८२ **समर्थानां प्रथमाद्वा ।**	५।२।१४४
	८३ **प्राग्दीव्यतोऽण्**	प्राग्-तः ९१
प्राग्दीव्यतीयेषु, अण्	८४ **अश्वपत्यादिभ्यश्च ।** (२)	
प्राग्दी-षु	८५ **दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः ।** (३)	

१—(गणपा०) क्रौडि, लाडि, व्याडि, आपिशलि, आपक्षिति, चौपयत, चैटयत, (वैटयत), सैकयत, (शैकयत का०) वैल्वयत (वैकल्पयत का०), सौधातकि, सूत युवत्याम्। भोज क्षत्रिये। यौतकि, कौटि, भौरिकि, भौलिकि, शाल्मलि, शालास्थलि, कापिष्ठलि, गौकक्ष्य (गौलक्ष्य का०), इति क्रौड्यादिः।

२—(गणपा०) अश्वपति, ज्ञानपति, शतपति, धनपति, गणपति, स्थानपति, यज्ञपति, राष्ट्रपति, कुलपति, गृहपति, धान्यपति, धन्वपति, बन्धुपति, धर्मपति, सभापति, प्राणपति, क्षेत्रपति, इत्यश्वपत्यादिः।

३—(वा०) (क) यमाच्चेति वक्तव्यम्। (ख) वाङ्मतिपितृमतां छन्दस्युपसंख्यानम्। (ग) पृथिव्या ञाञौ। (घ) देवाद्यञञौ। (च) बहिषष्टिलोपश्च। (छ) ईकक्च (ज) ईकञ् छन्दसि (झ) स्थाम्नोऽकारः (ञ) लोम्नोऽपत्येषु बहुषु (ट) ण्यादयोऽर्थविशेषलक्षणादपवादात्पूर्वविप्रतिषेधेन। (ठ) सर्वत्र गोरजादिप्रत्ययप्रसङ्गे यत्।

प्रागदी-षु	८६ उत्सादिभ्योऽञ् । (१)	
	८७ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् ।	
	(तद्धितलुक्—)	
प्राग्दीव्यतीयस्य	८८ द्विगोर्लुगनपत्ये ।	
प्राग्दी-स्य	८९ गोत्रेऽलुगचि ।	अचि ९१
प्राग्-तीये, अचि	९० यूनि लुक् ।	यनि९१,लुक्
प्राग्-तीये, अचि यूनोः	९१ फक्फिञोरन्यतरस्याम् ।	
	(अपत्याधिकारः प्रस्तुतः)	४।१।१७६
	९२ तस्यापत्यम् ।	त-म ४।१।९
	९३ एको गोत्रे ।	
	९४ गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् ।	
तस्यापत्यम्	९५ अत इञ् ।	इञ् ९७
,, इञ्	९६ बाह्वादिभ्यश्च । (२)	

१—(गणपा०) उत्स, उदपान, विकर, विनद (विनोद का०), महान महानस, महाप्राण, तरुण, तलुन, बष्कय असे (असमासे), पृथिवी, धे पङ्क्ति, जगती, त्रिष्टुभ्, अनुष्टुभ्, जनपद, भरत, उशीनर, ग्रीष्म, पीलुकु (पीलु, कुल का०), उदस्थान देशे। पृषदंश (पृष, दंशे का०), भल्लकी रथन्तर, मध्यन्दिन, बृहत्, महत्, सत्वत् (सत्त्वन्तु। सद्शब्दो मतुबन्त प्राग नुट्को गृह्यते। सत्त्वन्त्विति), कुरु, पञ्चाल, इन्द्रावसान, उष्णिह्, ककु सुवर्ण (सुपर्ण), देव, ग्रीष्मादच्छन्दसि। इत्युत्सादिः।

२—(गणपा०) बाहु, उपबाहु, उपवाक (उपचाकु), निवाकु (विवाकु का०) शिवाकु, वटाकु, उपविन्दु (उपनिन्दु का०), वृषली, वृकला, चूडा, बलाक मूषिका, कुशला, छगला (भगला), ध्रुवका, धुवका, सुमित्रा, दुर्मित्रा, पुष्करस मनुहरत्, देवशर्मन्, अग्निशर्मन्, भद्रशर्मन्, सुशर्मन्, कुनामन्, सुनामन्, पञ्च सप्तन्, अष्टन्, अमितौजसः सलोपश्च। सुधावत (सुधावत्, सुधात्रन् का०) उदञ्चु, शिरस्, माष, शराविन्, मरीची, क्षेमवृद्धिन्, शृङ्खलतोदिन्, खरनादि नगरमर्दिन्, प्राकारमर्दिन्, लोमन्, अजीगर्त, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, साम्

तस्यापत्यम्, इञ् ९७ सुधातुरकङ् च । (१)

९८ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ् । (२) गोत्रे १११

गोत्रे, तस्या-म् ९९ नडादिभ्यः फक् । (३) फक् १०३

फक् गोत्रे १०० हरितादिभ्योऽञः ।

फक् गोत्रे १०१ यञिञोश्च ।

गोत्रे फक् १०२ शरद्वच्छुनक-दर्भाद्भृगु-वत्सा-ग्रायणेषु ।

गोत्रापत्ये, फक् १०३ द्रोण-पर्वत-जीवन्तादन्यतरस्याम् ।

ाद, प्रद्युम्न, राम, उदङ्क, (उदङ्कः संज्ञायाम् का०), सभूयोऽम्भसोः सलोपश्च । ूक, चूडाला, भ्रगला, सलक । आकृतिगणः । तेन—सात्वकि, जाङ्घि, ऐन्द्रशर्मि, ाजधेनवि, औडुलोमिः । इति वाह्वादिः ।

१—(वा०) व्यासवरुडनिषादचण्डालविम्बानामिति वक्तव्यम् ।

२—(गणपा०) कुञ्ज, ब्रध्न, शङ्ख, भस्मन्, गण, लोमन्, शठ, शाक, ुण्डा, शुभ, विपाश् (विपाश का०), स्कन्द, स्कम्भ, शाकट्, शुम्भा, शिव, ुभंया । इति कुञ्जादिः ।

३—(गणपा०) नड, चर (वर), वक, मुञ्ज, इतिक, इतिश, उपक, रक, लमक, शलङ्कु शलङ्कं च (शालङ्कायन) सप्तल, वाजप्य, तिक, अग्निशर्मन् (वृषगणे) प्राण, नर, सायक, दास, मित्र, द्वीप, पिंगर, पिंगल, किङ्कर, किङ्कल, कातर, कातल, काश्यप, (कुश्यप), काश्य, काव्य, (काल्य का०), अज, अमुष्य (अमुष्म), कृष्णरणौ ब्राह्मणवासिष्ठे (ब्राह्मणवासिष्ठयोः का०), अमित्र, लिगु, चित्र, कुमार, क्रोष्टु क्रोष्टं च (क्रौष्टायन), लोह, दुर्ग, स्तम्भ, शिशपा, अग्र, तृण, शकट, सुमनस्, सुमत, मिमत, ऋच्, जलन्धर, अध्वर (अध्वरावण्डप का०), युगन्धर, हंसक, दण्डिन्, हस्तिन्, पिण्ड, पञ्चाल, चमसिन्, सुकृत्य, स्थिरक, ब्राह्मण, चटक, बदर, अश्वल (अश्वला का०), खरप, लङ्क, इन्ध, अस्त्र, कामुक, ब्रह्मदत्त, उदुम्बर, शोण, अलोह, दण्डप (दण्ड-अध्वरावण्डप का०), ात, अश्वक, वानव्य, नाव्य, अन्वजत्, अन्तजन, इत्वरा, अंशक, याम, काम, ात इति नडादिः ।

१०४ अनृषानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ्।(१)

गोत्रापत्ये १०५ गर्गादिभ्यो यञ्। (२) यञ् १०६

१—(गणपा०) बिद, उर्व, कश्यप, कुशिक, भरद्वाज, उपमन्यु, किला किदर्भ (कन्दर्प, किदर्भ का०), विश्वानर, ऋष्टिषेण (ऋषिषेण), ऋतभा हर्यश्व, प्रियक, आपस्तम्ब, कूचवार, शरद्वत्, शुनक (शुनक्), धेनु, गोप शिग्रु, बिन्दु (विन्दु का०), भोगक, भाजन, शमिक, अश्वावतान, श्याम श्यामक (श्यमाक का०), श्यावलि (शावलि का०), श्यापर्ण।

हरितादयः।

हरित, किदास, वह्यस्क, अर्कलूष (अर्कजूष), वध्योग (वध्योष का विष्णु, वृद्ध (विष्णुवृद्ध का०), प्रतिबोध, रथीतर, रथन्तर, गविष्ठिर, नि शबर, अलस, मठर, मृडाकु, सृपाकु, मृवु (भृव का०), पुनर्भू, पुत्र, दु ननान्दृ, परस्त्री परशुं च। फिलालप, सम्बक, श्यायक। इति बिदादिः।

२—(गणपा०) गर्ग, वत्स, वाज असे (असमासे), संकृति, अज, अपाद्, विदभृत्, प्राचीनयोग, अगस्ति, पुलस्ति, चमस, रेभ, अग्निवेश, शट, (शठ का०), शक, एक, धूम, अवट, मनस् (मनस का०), धनञ्ज वृक्ष, विश्वावसु, जरमाण (जनमान का०)।

(लोहितादयः।४।१।१८)

लोहित, संशित, बभ्रु, वल्गु, मण्डु, गण्डु, शङ्कु (शङ्कु का०), गुहलु, गुलु का०), मन्तु, मङ्क्षु (मक्षु का०), अलिगु, जिगीषु, मनु, मनायी, सूनु, कथक, कंथक, ऋक्ष, वृक्ष (तृक्ष का०), तनु, तरुक्ष, तलुक्ष, तण्ड, व कपि, कत (कपिकत का०), कष, भूत, कुरुकत, अनडुह्, कवि, पुरुकुत्स, श

(कण्वादयः।४।२।१११)

कण्व, शकल, गोकक्ष, अगस्त्य, कुण्डिनी (कण्डिनी, कुण्डिन का०), वल्क, पर्णवल्क, अभयजात (उभय, जात का०), विरोहित, वृषगण, शण्डल, वणक (वर्णक, वण का०), चुलुक (कचुलुक का०), मुद्गल, जमदग्नि, पराशर, जातूकर्ण (जतूकर्ण का०), महित, मन्त्रित, अश्मरथ, राक्ष, पूतिमाष, स्थूरा (स्थूण का०), अररक (अवरक), एलाक, कृष्ण, गोलन्द (गोलुन्द का०), उलूक, तितिक्ष, भिषज (भिषज्), भडित, भण्डित, दल्भ, चेकित (चिकित का०), चिकित्सित, देवहू, एकलू, पिप्पलू, वृहदग्नि (वृदग्नि का०), सुलोहिन्, सुलाभिन् (सुल का०), उक्थ, (उकस्थ का०, उचथ), कुटीगु, संहित, पथ, कन्थु, श्रुव, टक, रक्ष, प्रचुल, विलम्ब, विष्णुज। इति गर्गादिः।

गोत्रे, यञ्	१०६ मधु-बभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ।	
,, ,,	१०७ कपिबोधादाङ्गिरसे ।	आङ्गिरसे, १०९
आङ्गिरसे गोत्रे यञ्	१०८ वतण्डाच्च ।	वतण्डात् १०९
,, यञः	१०९ लुक् स्त्रियाम् ।	
गो-त्ये	११० अश्वादिभ्यः फञ् । (१)	फञ् १११
गोत्रे, फञ्	१११ भर्गात् त्रैगर्ते ।	
अपत्ये	११२ शिवादिभ्योऽण् । (२)	अण ११९

१—(गणपा०) अश्व, अश्मन्, शङ्ख, शूद्रक विद, पुट (विदापुट का०), रोहिणी, खर्जूर (खजूर), खञ्जार (खञ्जूल का०), वस्त, पिजूल (पिञ्जूर का०), भडिल, भण्डिल, भडित, भण्डित, प्रकृत, रामोद, क्षान्त (क्षम का०), काश, तीक्ष्ण, गोलाङ्क, अर्क, स्वर (स्वन का०), स्फुट, चक्र, श्रविष्ठ (श्रविष्ठा का०), पविन्द (पविन्दा का), पवित्र, गोमिन्, श्याम, धूम, धूम्र, वाग्मिन्, विश्वानर, कुट, शप आत्रेये (वेश आत्रेये का०), जन, जड, खड, ग्रीष्म, अर्ह, कित, विशप, विशाल (विशाला का०), गिरि, चपल, चुप (चुम्प का०), वासक, बिल्व (वैल्य का०) प्राच्य, धर्म्य (मन), आनडुह्य, पुंसि जाते। अर्जुन, प्रहृत, सुमनस्, दुर्मनस्, मनस्, प्रान्त, (क्षान्त का०), भरद्वाज, उत्स (कुत्स का०), आतव, कितव, वद, धन्य, पाद, शिव, खदिर, भण्डिक ग्रीवा, कुल, काण, नड, वीक्ष्य, वह, खेड, नत्त, ओजस्, नम। इत्यश्वादिः।

२—(गणपा०) शिव, प्रोष्ठ (प्रौष्ठ का०), प्रोष्ठिक, चण्ड, जम्भ (भण्ड का०), भूरि, दण्ड, कुठार, ककुभ् (ककुभा का०), अनभिम्लान (अनभिग्लान का०), कोहित, सुख, सन्धि, मुनि, (ककुत्स्थ), कहोड, कोहड, कहूय (कहूष का०), कहग, कपिञ्जल (कुपिञ्जल), खञ्जन, वतण्ड, तृणकर्ण (तूणकर्ण का०), क्षीरह्रद, जलह्रद, परिल, पथिक (पथिक), पिष्ट, हैहय (हेहय का०), पार्षिका (परिषिक का०), गोपिका, कपिलिका, जटिलिका (जटिलिक का०), वधिरिका, मञ्जीरक (मजीरक), वृष्णिक, खञ्जार, (खञ्जाल), कर्मार, रेख, लेख, आलेखन, विश्रवण, रवण, (रवण का०), वर्तनाक्ष, ग्रीवाक्ष, विटप, पिटक (पिटाक का०), तृक्षाक, नभाक, ऊर्णनाभ, जरत्कारु, पृथा, उत्क्षेप (उत्क्षिपा का०), पुरोहितिका, सुरोहितिका, सुरो-

अपत्ये	अण्	११३ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः ।	
,,	,,	११४ ऋष्यन्धक-वृष्णि-कुरुभ्यश्च ।	
,,	,,	११५ मातुरुत् संख्या-सं-भद्रपूर्वायाः	
,,	,,	११६ कन्यायाः कनीन च ।	
,,	,,	११७ विकर्णशुङ्ग-च्छगलाद्वत्स-भरद्वाजात्रिषु ।	
,,	,,	११८ पीलाया वा ।	
,,	,,	११९ ढक् च मण्डूकात् ।	
अपत्ये		१२० स्त्रीभ्यो ढक् । (१)	स्त्रीभ्यः १ ढक् १२७
स्त्रीभ्यः, ढक् अपत्ये		१२१ द्व्यचः ।	द्व्यचः १
द्व्यचोऽपत्येढक्		१२२ इतश्चानिञः ।	
अपत्ये,	ढक्	१२३ शुभ्रादिभ्यश्च । (२)	

हिका, आर्यश्वेत (अर्यश्वेत का०), सुपिष्ट, मसुरकर्ण, (मसूरकर्ण), म कर्ण, खर्जुरकर्ण, (खर्जूरकर्ण का०), खडूरक (खडरक का०), तक्षन्, ऋ षेण, गङ्गा, विपाश (विपाश विपाशा का०), यस्क, लह्य, द्रुह्य (द्रुघ का अयःस्थूण, तृण, कर्ण (तृणकर्ण), पर्ण, भलन्दन, विरूपाक्ष, भूमि, सप द्व्यचो नद्याः। त्रिवेणी त्रिवणं च। गोफिलिक, रोहितिक, कबोध, गौ लिक, राजल, तडाक, वडाक, परल, आकृतिगणः। इति शिवादिः।

१—(वा) वडवाया वृषे वाच्ये। अण् क्रुञ्चा कोकिलात्स्मृतः। आ पुंसि ततोऽन्यत्र गोधाया ढृग्विधौ स्मृतः।

२—(गणपा०) शुभ्र, विष्टपुर (विष्ट, पुर), ब्रह्मकृत, शता शलाथल (शलाचल का०), शलाकाभ्रू, लेखाभ्रू (लेखाभ्र), वि (विकंसा), रोहिणी, रुक्मिणी, धर्मिणी, दिश् (दिशा का), शालूक, अजव शकन्धि, विमातृ, विधवा, शुक, विश, देवतर, शकुनि, शुक्र, उग्र, (आतल), सन्धकी, सृकण्डु, (कृकण्डू सृकण्ड का०), विस्त्रि, अतिथि, गो

गोत्रे, ढक्	१२४ विकर्णकुशीतकात्काश्यपे ।	
अपत्ये, ढक	१२५ भ्रुवो वुक् च ।	
,, ,,	१२६ कल्याण्यादीनामिनङ् च । (१)	इनङ् १२७
,, ,,	१२७ कुलटाया वा ।	
अपत्ये	१२८ चटकाया ऐरक् । (२)	
,,	१२९ गोधाया ढ्रक् ।	गोधाया १३०, ढ्रक् १३१
गो-याः, अपत्ये	१३० आरगुदीचाम् ।	
अपत्ये, ढ्रक्	१३१ क्षुद्राभ्यो वा ।	
,,	१३२ पितृष्वसुश्छण् ।	पि-सुः १३४
पितृ-सुः	१३३ ढकि लोपः ।	ढकि लोपः १३४
ढकि, छणि, लोपः	१३४ मातृष्वसुश्च ।	
अपत्ये	१३५ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ।	ढञ् १३६

कुशाम्ब, मकष्टु, शाताहर, पवष्टुरिक, सुनामन्, लक्ष्मणश्यामयोर्वासिष्ठे (लक्षण का०), गोधा, कृकलास, अणीव, प्रवाहण, भारत (भरत), भरम (भारम का०), मृकण्डु, कर्पूर, इतर, अन्यतर, आलीढ, सुवन्त (सुवत्त का०), सुवक्ष, सुवक्षस् (सुचक्षस् का०), सुदामन्, कद्रु, तुद, अकशाय (अकशाप का०), कुमारिका, कुठारिका, किशोरिका, अम्बिका, जिह्माशिन् (जिह्माशिन का०), परिधि, वायुवत्त, शकल, शलाका, खडूर (खट्वर का०), कुबेरिका (कुवेणिका का०), अशोका, गन्धपिङ्गला (शुद्धपिगला का०), खडोन्मत्ता, अनुदृष्टि (अनुदृष्टिन्), जरतिन्, बलीवर्दिन् (बलिवर्दिन् का०), विप्र (विप्रज का०), वीज, जीव, श्वत्, अश्मन्, अश्व, अजिर, शतावर, शलाका, कृकसा, भरत, मघष्टु, ककल, स्थूल, मकथु, यमष्टु, कष्टु, मृकण्ड, गुद, रूव, कुशोरिका, शबल, अजिन, आकृतिगणः। तेन—गंगा, पाण्डु। इति शुभ्रादिः।

१—गणपा(०) कल्याणी, सुभगा, दुर्भगा, बन्धकी, अनुदृष्टि, अनुसृष्टि (अनुसृति), जरती, बलीवदी (बलीवर्दी का०), ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा, परस्त्री। इति कल्याण्यादिः।

२—(वा०) (क) चटकाच्चेति वक्तव्यम्। (ख) स्त्रियामपत्ये लुग्वक्तव्यः।

अपत्ये, ढञ्	१३६ गृष्ट्यादिभ्यश्च । (१)	
अपत्ये	१३७ राजश्वशुराद्यत् । (२)	
अपत्ये	१३८ क्षत्राद्घः ।	
”	१३९ कुलात्खः ।	कुलात् १
” कुलात्	१४० अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ।	अ-म् १४
अपत्ये	१४१ महाकुलादञ्खञौ ।	
”	१४२ दुष्कुलाड्ढक् ।	
”	१४३ स्वसुश्छः ।	छः १४४
” छः	१४४ भ्रातुर्व्यच्च ।	भ्रातुः १४
भ्रातुः	१४५ व्यन्त्सपत्ने ।	
अपत्ये	१४६ रेवत्यादिभ्यष्ठक् । (३)	ठक् १४७
ठक्	१४७ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ।	कुत्सने १
कुत्सने, अपत्ये	१४८ वृद्धाट्ठक् सौवीरेषु बहुलम् ।	ठक् १४९, षु, ब-म् १
” सौवी-षु, ठक्	१४९ फेश्छ च ।	
सौवीरेषु	१५० फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ।	
अपत्ये	१५१ कुर्वादिभ्यो ण्यः । (४)	ण्यः १५

१—(गणपा०) गृष्टि, दृष्टि, बलि, हलि, विश्रि, कुद्रि, अजव मित्रयु, फलि, अलि, दृष्टि। इति गृष्ट्यादिः।

२—(वा०) राज्ञोऽपत्ये जातिग्रहणम् ।

३—(गणपा०) रेवती, अश्वपाली, मणिपाली, द्वारपाली, वृकव वृकग्राह, कर्णग्राह, दण्डग्राह, कुक्कुटाक्ष, वृकबन्धु, चामरग्राह, ककुद इति रेवत्यादिः।

४—(गणपा०) कुरु, गर्गर (गर्ग का०), मङ्गुष, अजमार (अजम का०), रथकार, बाववृक, सम्राजः क्षत्रिये। कवि, विमति (मति का

अपत्ये, ण्यः	१५२ सेनान्त-लक्षण-कारिभ्यश्च ।	से-भ्यः १५३
से-भ्यः, अपत्ये	१५३ उदीचामिञ् ।	
अपत्ये	१५४ तिकादिभ्यः फिञ् । (१)	फिञ् १५६
,, फिञ्	१५५ कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ।	
,, ,,	१५६ अणो द्व्यचः । (२)	
,, ,,	१५७ उदीचां वृद्धादगोत्रात् ।	उदीचां वृद्धादगोत्रात् १५६
उ-त्, अपत्ये, फिञ्	१५८ वाकिनादीनां कुक् च । (३)	कुक् १५६
उ-त्, अपत्ये, फिञ् कुक्	१५९ पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ।	
अपत्ये	१६० प्राचामवृद्धात् फिन् बहुलम् ।	

कापिञ्जलादि, वाक् (वाच्), वामरथ, पितृमत्, इन्द्रलाजी (इन्द्रजालि का०), एजि, वातकि, दामोष्णीषि, गणकारि, कैशोरि, कुट, शलाका, (शालाका का०), मुर, पुर, एरका (एरक का०), शुभ्र, अभ्र, दर्भ, केशिनी, वेनाच्छन्दसि। शूर्पणाय, श्यावनाय, श्यावरथ, श्यावपुत्र, सत्यंकार, वडभीकार, पथिकार, मूढ, शकन्धु, शङ्कु, शाक, शाकिन् (शालिन्), शालीन, कर्तु, हर्तु, इन, पिण्डी (इनपिण्डी का०), वामरथस्य कण्वादिवत् स्वरवर्जम्। विस्फोटक, काक, स्फाटक, घातकि, धेनुजि, वुद्धिकार। इति कुर्वादिः।

१—(गणपा०) तिक, कितव (कितक का०), संज्ञा, वाला (वाल का०), शिख, (संज्ञावालशिख), उरस् (उरश), शाट्य (शाठ्य का०), सैन्धव, यमन्द, रूप्य, ग्राम्य, नील, अमित्र, गौकक्ष्य (गौकुक्ष्य), कुरु (करु का०), देवरथ, तैतल (तैतिल) औरस (औरश), कौरव्य, भौरिकि, भौलिकि, चौपयत, चैटयत, शीकयत (शैकयत का०), क्षैतयत, वाजवत (ध्वाजवत का०), चन्द्रमस्, शुभ, गंगा, वरेण्य, सुपामन्, आरद्ध (आरटव), वह्यका, खल्यका (खल्या, खल्य का०), वृष, लोमक, उदञ्ज (उदन्य का०), यज्ञ, सुयामन्, ऋश्य (ऋष्य), भीत, जाजल, रस, लावक, ध्वजवद, वसु, बन्धु, आबन्धका, (इति तिकादिः)।

२—(वा) त्यदादीनां वा फिञ् वक्तव्यः।

३—(गणपा०) वाकिन, गारेध, कार्कट्य, काक, लङ्का। चर्मिवर्मिणोर्नलोपश्च। इति तिकादिः।

	१६१ मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च ।	
	(गोत्रसंज्ञा—)	
	१६२ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ।	अपत्यं, प्र-ति १६
	(युवसंज्ञा—)	
पौ-ति, अपत्यम्	१६३ जीवति तु वंश्ये युवा ।	जीवति १ युवा १६
जीवति, युवा	१६४ भ्रातरि च ज्यायसि ।	
पौ-ति अपत्यम्, युवा	१६५ वान्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति । (१)	
	(तद्राजसंज्ञकप्रत्यय—)	
अपत्ये	१६६ जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् ।	ज-त् क्ष-त् अञ् १६७
ज-त्, क्ष-त्, अञ्	१६७ साल्वेयगान्धारिभ्यां च ।	
ज-त्, क्ष-त्	१६८ द्व्यञ्मगध-कलिङ्ग-सूरमसादण् । (२)	
ज-त्, क्ष-त्	१६९ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ् । (३)	
” ”	१७० कुरुनादिभ्यो ण्यः ।	
” ”	१७१ साल्वावयव-प्रत्यग्रथ-कलकूटाश्मकादिञ् ।	
	१७२ ते तद्राजाः ।	तद्राजाः

१—(वा०) (क) वृद्धस्य च पूजायाम् (ख) यूनश्च कुत्सायाम्।*

२—(वा०) क्षत्रियसमानशब्दाज्जनपदशब्दात्तस्य राजन्यपत्यवत्।

३—(वा०) पाण्डोर्जनपदशब्दात् क्षत्रियाड् ड्यण् वक्तव्यः।

* इदं वार्तिकद्वयं वैदिकपुस्तके काशिकापुस्तके च सूत्रद्वयत्वेन परिगृही वस्तुतस्तु द्वयमिदं वार्तिकं भाष्ये तथैव परिग्रहणात्।

तद्राजस्य	१७३ कम्बोजाल्लुक्। (१)	लुक् १७६
तद्राजस्य, लुक्	१७४ स्त्रियामवन्ति-कुन्ति-कुरुभ्यश्च।	स्त्रियाम् १७५
त-स्य, लुक्, स्त्रि-म	१७५ अतश्च।	
त-स्य, लुक्	१७६ न प्राच्य-भर्गादि-यौधेयादिभ्यः। (२)	

इति चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः।

अथ द्वितीयः पादः

(तद्धिते चातुरर्थिकप्रत्यय—)

	१ तेन रक्तं रागात्।	तेन १३, रक्तं, रागात् २
तेन रक्तं,रागात्	२ लाक्षारोचनाट्ठक्। (३)	
तेन	३ नक्षत्रेण युक्तः कालः।	नक्षत्रेण युक्तः कालः ५
नक्षत्रेण	४ लुबविशेषे।	लुप् ५
लुप्, नक्षत्रेण,	५ संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम्।	
तेन, युक्तःकालः	६ द्वन्द्वाच्छः।	
तेन	७ दृष्टं साम।	दृष्टं साम ९

१—(वा०) कम्बोजादिभ्यो लुग्वचनं चोलाद्यर्थम्।

२—(गणपा०) भर्ग, करूश (करूष का०), केकय, कश्मीर, साल्व, सुस्थाल, उरस् (उरश, उरस का०), कौरव्य। इति भर्गादिः।

यौधेय, शौक्रेय, शौभ्रेय, ज्यावाणेय (ग्रावाणेय का०), धौर्तेय (घार्तेय, धार्तेय का०), त्रिगर्त, भरत, उशीनर, वार्तेय। इति यौधेयादिः।

३—(वा०) (क) ठक्प्रकरणे शकलकर्दमाभ्यामुपसंख्यानम्। (ख) नील्या अन् वक्तव्यः। (ग) पीतात्कन् वक्तव्यः। (घ) हरिद्रामहारजनाभ्यामञ्वक्तव्यः।

तेन, दृष्टं साम	८ कलेर्ढक् । (१)	
,, ,,	९ वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ ।	
,,	१० परिवृतो रथः ।	परि-वृतः, र १२
तेन परि-रथः	११ पाण्डुकम्बलादिनिः ।	
तेन, परि-रथः	१२ द्वैपवैयाघ्रादञ् ।	
अण्	१३ कौमारापूर्ववचने ।	
अण्	१४ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ।	तत्र २०
तत्र, अण्	१५ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ।	
तत्र, अण्	१६ संस्कृतं भक्षाः ।	संस्कृतं भक्षाः
तत्र, स-क्षा,	१७ शूलोखाद्यत् ।	
तत्र, स-क्षाः	१८ दध्नष्ठक् ।	ठक् १९
,, ,, ठक्	१९ उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ।	
,, ,, ,,	२० क्षीराड्ढञ् ।	
अण्	२१ सास्मिन् पौर्णमासीति	सा-ति २३
सा-ति	२२ आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ।	ठक् २३
,, ठक्	२३ विभाषा फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यः ।	
अण्	२४ सास्य देवता ।	सास्य देवता
अण्, सा-ता	२५ कस्येत् ।	
सा-ता	२६ शुक्राद्घन् ।	
,,	२७ अपोनप्त्रपान्नप्तृभ्यां घः ।	अपो-भ्याम्

१—(वा०) (क) सर्वत्राग्निकलिभ्यां ढग्वक्तव्यः। (ख) दृष्टे सामर् अण्वा डिद्भवतीति वक्तव्यम्। (ग) जाते च ढिरण् वा डिद्भवतीति वक्तव्यम् (घ) तीयादीकक् स्वार्थे वा वक्तव्यः। (ङ) न विद्यायाः (च) गोत्रादङ्कवदिष्यते

सा-ता,अपो-भ्यां	२८ छ च । (१)	छ १२६
,, छ	२९ महेन्द्राद् घाणौ च ।	
सास्य देवता	३० सोमाट् ट्यण्	
,,	३१ वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ।	यत् ३२
,, यत्	३२ द्यावापृथिवी-शुनासीर-मरुत्वदग्नीषोम-वास्तोष्पति-गृहमेधाच्छ च ।	
,,	३३ अग्नेर्ढक् ।	
,,	३४ कालेभ्यो भववत् ।	
,,	३५ महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् । (२)	
	३६ पितृव्य-मातुल-मातामह-पितामहाः । (३)	
अण्	३७ तस्य समूहः । (४)	तस्य ५४, समूहः ५१
तस्य समूहः	३८ भिक्षादिभ्योऽण् । (५)	
तस्य समूहः	३९ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्र-राज-राजन्य-राजपुत्र-वत्स-मनुष्याजाद्वुञ्(६)	वुञ् ४०

१—(वा०) (क) छप्रकरणे पैङ्गाक्षीपुत्रादिभ्य उपसंख्यानम् (ख) शतरुद्राच्छश्च घश्च ।

२—(वा०) (क) ठञ्प्रकरणे तदस्मिन्वर्तत इति नवयज्ञादिभ्य उपसंख्यानम् । (ख) पूर्णमासादण् ।

३—(वा०) (क) मातरि पिच्च । (ख) अवेर्दुग्धे सोढदूसमरीसचो वक्तव्याः । (ग) तिलान्निष्फलात् पिञ्जपेजौ प्रत्ययौ वक्तव्यौ । (घ) पिञ्जश्छन्दसि डिच्च ।

४—(वा०) गुणादिभ्यो ग्रामज्वक्तव्यः ।

५—(गणपा०) भिक्षा, गर्भिणी, क्षेत्र, करीष, अङ्गार (अङ्कार), चर्मन् (चर्मिन् का०), सहस्र, युवति, पदाति, पद्धति, अथर्वन् (अर्वन् का०), दक्षिणा, भूत, विषय, श्रोत्र, धर्मिन् (धर्मन्) । इति भिक्षादिः ।

६—(वा०) वृद्धाच्चेति वक्तव्यम् ।

तस्य समूहः, वुञ् **४० केदाराद्यञ्च (१)**
त-हः, के-त् **४१ ठञ् कवचिनश्च ।**
,, **४२ ब्राह्मण-माणव-वाडवाद्यन् ।(२)**
,, **४३ ग्राम-जन-बन्धुभ्यस्तल् । (३)**
,, **४४ अनुदात्तादेरञ् ।**
,, अन् **४५ खण्डिकादिभ्यश्च । (४)**
,, **४६ चरणेभ्यो धर्मवत् ।**
,, **४७ अचित्त-हस्ति-धेनोष्ठक् । (५)**
,, **४८ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् ।**
,, **४९ पाशादिभ्यो यः (६)**
,, यः **५० खल-गो-रथात्**
तस्य समूहः **५१ इनि-त्र-कट्यचश्च । (७)**

१—(वा०) गणिकायाश्च यञ्वक्तव्यः ।

२—(वा०) (क) यत्प्रकरणे पृष्ठादुपसंख्यानम् । (ख) पश्वा णस् वक्त (ग) वातादूलः ।

३—(वा०) गजसहायाभ्याञ्चेति वक्तव्यम् ।

४—(गणपा०) खण्डिक (खण्डिका का०), वडवा, क्षुद्रकमाल नासंज्ञायाम् । भिक्षुक, शुक, उलूक, श्वन्, अहन्, युगवरत्र, (युगवरत्रा का०) वरत्रा का०), हलबन्ध (बन्धा) । इति खण्डिकादिः ।

५—(वा०) धेनोरनञ इति वक्तव्यम् ।

६—(गणपा०) पाश, तृण, धूम, वात, अंगार, पाटल (पाटलका पोत, गल, पिटक, पिटाक, शकट, हल, नट (नड का०), वन, वालक पाशादिः ।

७—(वा०) (क) खलादिभ्य इनिर्वक्तव्यः । (ख) कमलादिभ्यः प्रत्ययो वक्तव्यः । (ग) नरकरितुरङ्गाणां स्कन्धच् प्रत्ययः । (घ) पूर्वा काण्डः ।

ास्य, अण्	५२ विषयो देशे ।	विषयः, देशे ५४
'' विष-शे	५३ राजन्यादिभ्यो वुञ् । (१)	
ास्य, विषयः	५४ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ । (२)	
ण्	५५ सोऽस्यादिरिति छन्दसः प्रगाथेषु । (३)	सः, अस्य ५६
ोऽस्य, अण्	५६ संग्रामे प्रयोजन-योद्धृभ्यः ।	
	५७ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः ।	
	५८ घञः सास्यां क्रियेति ञः ।	
ण्	५९ तदधीते तद्वेद ।	तद-तद्वेद ६६

१—(गणपा०) राजन्य, आनृत, बाभ्रव्य, शालङ्कायन, देवयात (दैवयात-
, देवयान का०), अब्रीड, वरत्रा, जालन्धरायण, राजायन, तेलु, आत्मकामेय,
म्बरीषपुत्र, वसाति, बैल्वबन, शैलूष, उदुम्बर, तीव्र, बैल्वज (बैल्वल का०),
ार्जुनायन, संप्रिय, दाक्षि, ऊर्णनाभ, आप्रीत, वैतिलि, वात्रफ, आकृतिगणः।
ति राजन्यादिः।

२—(गणपा०) भौरिकि, भौलिकि, चौपयत, चैटयत(चौटयत), काणेय,
ाणिजक, वालिकाज्य, (वाणिकाज्य, वालिज, वालिज्यक का०) सैकयत (शैकयत
ा०), वैकयत, बैधेय, इति भौरिक्यादिः।

ऐषुकारि, सारस्यायन (सारसा-यन), चान्द्रायण द्व्याक्षायण, त्र्याक्षायण
(श्यायण का०), औडायन, जौलायन, खाडायन, दासमित्रि, दासमित्रायण,
ौद्रायण (शौद्राण का०), दाक्षायण, शायण्डायन (शापण्डायन), तार्क्ष्यायण,
ौभ्रायण, सौवीर, सौवीरायण, शयण्ड, (शपण्ड), शौण्ड, शयाण्ड
(शयाण्डि), वैश्वमानव, वैश्वधेनव, नड (नद का०), तुण्डदेव, विश्वदेव
(विशदेव, वैश्वदेव का०), सापिण्डि, शौण्डि, सायण्डि, अलायत, औलालायत।
त्यैषुकार्यादिः।

३—(वा०) छन्दसः प्रत्ययविधाने नपुंसके स्वार्थे उपसंख्यानम् ।

तदधीते तद्वेद	६० क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक्।(१)	
तद-तद्वेद	६१ क्रमादिभ्यो वुन्। (२)	
,,	६२ अनुब्राह्मणादिनिः।	
,,	६३ वसन्तादिभ्यष्ठक् (३)	
अधीते, वेद	६४ प्रोक्ताल्लुक्।	लुक् ६६
अधीते, वेद, लुक्	६५ सूत्राच्च कोपधात्। (४)	
	६६ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि।	
अण्	६७ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि।	देशे तन्ना
देशे त-म्नि, अण्	६८ तेन निर्वृत्तम्।	
,, ,,	६९ तस्य निवासः।	तस्य ७०
देशे त-म्नि, अण्, तस्य	७० अदूरभवश्च।	
चातुरर्थिकः	७१ ओरञ्।	अञ् ७६

१—(वा०) (क) विद्यालक्षणकल्पान्तादिति वक्तव्यम्। (ख) नाङ्गक्षत्रधर्मसंसर्गत्रिपूर्वा। (ग) आख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणेभ्यष्ठग्वक्त (घ) सर्वसादेर्द्विगोश्च लः। (ङ) अनुसूर्लक्ष्यलक्षणे च (च) इकन्पदोत्तरप (छ) शतषष्टेः षिकन् पथो बहुलम्।

(गणपा०) उक्थ, लोकायत, न्याय, न्यास, पुनरुक्त, निरुक्त, द्विपदा, ज्योतिष (द्विपदी ज्योतिषि), अनुपद, अनुकल्प, यज्ञ, धर्म, चर्चा, तर, श्लक्षण (श्लक्ष), संहिता, पदक्रम, (पद, क्रम, का०), संघट्ट (संघट का०), वृत्ति, परिषद्, संग्रह, गण, गुण (गुणागुण का०), (आयुर्वेद), अनुगुण। इत्युक्थादिः।

२—(गणपा०) क्रम, पद, शिक्षा, मीमांसा, सामन्। इति क्रमादिः।

३—(गणपा०) वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् (शरद) हेमन्त, प्रथम, गुण, चरम, अनुगुण, अथर्वन्, आथर्वण, अपर्वन्, इति वसन्तादिः।

४—(वा०) संख्याप्रकृतेरिति वक्तव्यम्।

चा-कः, अञ्	७२ मतोश्च वह्वजङ्गात् ।	
चा-कः, अञ्	७३ बह्वचः कूपेषु ।	कूपेषु ७४
” ” कूपेषु	७४ उदक्च विपाशः ।	
चा-कः, अञ्	७५ संकलादिभ्यश्च । (१)	
” ”	७६ स्त्रीषु सौवीर-साल्व-प्राक्षु ।	
” ”	७७ सुवास्त्वादिभ्योऽण् । (२)	अण् ७९
” अण्	७८ रोणी ।	
” ”	७९ कोपधाच्च ।	
	८० वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्यय-फक्फिञिञ्ञ्यककठकोऽरीहण-कृशाश्वर्श्य-कुमुद-काश-तृण-प्रेक्षाश्म-सखि-संकाश-वल-पक्ष-कर्ण-सुतङ्गम-प्रगदिन्-वराह-कुमुदादिभ्यः । (३)	

१--(गणपा०) संकल, पुष्कल, उत्तम, उडुप, उद्वेप, (उद्वप का०), उत्पुट, कुम्भ, निधान (विधान का०), सुदक्ष, सुदत्त, सुभूत, सुपूत, सुनेत्र, सुमङ्गल, सुपिङ्गल, सूत, सिकत (सिकता का०), पूतिक (पूतिका, पूतीकी का०), पूलास, कूलास, पलाश, निवेश, गवेश (गवेष), गम्भीर, इतर, श्वान्, अहन्, लोमन्, वेमन्, वरुण (चरण), वहुल, सद्योज, अभिषिक्त, गोभृत्, राजभृत्, भल्ल, मल्ल, माल, शर्मन्, गृह, भूत। इति संकलादिः।

२—(गणपा०) सुवास्तु (सुवस्तु), वर्णु, भण्डु, खण्डु (कण्डु का०), सेवालिन् (सेचालिन् का०), कर्पूरिन्, शिखण्डिन्, गर्त, कर्कश, शकटीकर्ण (शटीकर्ण का०), कृष्णकर्ण (कृष्ण का०), कर्क, कर्कन्धुमती (कर्कन्धूमती का०), गोह, गोह्य (गाहि का०), अहिसक्थ। इति सुवास्त्वादिः।

३—(गण०) अरीहण (अहीरण), द्रुघण, द्रुहण, भगल (भलग), उलन्द, किरण, सांपरायण, क्रौष्ट्रायण (क्रौष्टायन), औष्ट्रायण, त्रैगर्तायन, मैत्रायण, भास्त्रायण, वैमतायन, (वैमत्तायन), गौमतायन (गोमतायन का०),

सौमतायन, सौसायन, धौमतायन, सौमायन, ऐन्द्रायण, कान्द्रायण (कौद्राय
खाडायन, शाण्डिल्यायन, रायस्पोष, विपथ, विपाश, उद्दण्ड, उवञ्
खाण्डवीरण (खाण्ड का०), वीरण, काशकृत्स्न (कशकृत्स्न), जाम्ब
(जाम्बवन्त का०), शिंशपा, रैवत (रेवत), बिल्व (बैल्व का०), सुय
शिरीष, बधिर, जम्बु, खदिर, सुशर्मन् (सशर्मन्, सशर्म का०), दलतृ, भ
न्दन, खण्ड, कनल (कलन), यज्ञदत्त, सार (का०), वैगर्तायण (का०
खाण्डायन (का०),। इत्यरीहणादिः।

कृशाश्व, अरिष्ट, अरिश्म (अरिश्व का०), वेश्मन्, विशाल, लोम
रोमश, रोमक, लोमक, शबल, कूट, वर्चल, सुवर्चल, सुकर, सूकर, प्रा
(प्रातर), सदृश, पुरग (पुराग), सुख, धूम, अजिन, विनत, (विनता, वनिता का०
अवनत, विकुट्यास (कुविद्यास, विकुद्यास का०), पराशर, अरुस्, अयस्, मौद्गल
यूकर, (मौद्गल्याकर का०), रोमन्, बर्बर, अवयास, अयावस् इति कृशाश्वादि

ऋश्य (ऋष्य), न्यग्रोध, शर (शिरा का०), निलीन, निवास, निवा
निधान, निबन्ध (निबन्धन, निबद्ध का०), विबद्ध, परिगूढ, उपगूढ, अस
सित, मत, वेश्मन्, उत्तराश्मन्, अश्मन्, स्थूल, बाहु (स्थूलबाहु का०), खदि
शर्करा, अनडुह् (अनडुह का०), अरडु, परिवंश, वेणु, वीरण, खण्ड, द
परिवृत्त, कर्दम, अंशु। इत्यृष्यादिः।

कुमुद, शर्करा, न्यग्रोध, इक्कट (इत्कट, उत्कट का०), संकट, कङ्क
गर्त, बीज, परिवाप, निर्यास, शकट, कच, मधु, शिरीष, अश्व, अश्वत
बल्वज, यवाष, कूप, विकङ्कत (विकङ्कट का०), दशग्राम, कण्टक, पला
त्रिक, कत। इति कुमुदादिः। (१)

काश, पाश (बाश का०), अश्वत्थ, पलाश, पीयूक्षा (पीयूष का०), चर
वास, नड, वन, कर्दम, कच्छूल, कङ्कट (कण्टक का०), गुहा, विस (वि
विस का०), तृण, कर्पूर, बर्बर, मधुर, ग्रह (गूह का०), कपित्थ, जतु, सीपा
(सीपाल), वर, कण्टका। इति काशादिः।

तृण, नड, मूल, वन, पर्ण, वर्ण, वराण, बिल, पुल, फल, अर्जुन, अर्ण, सुव
बल, चरण, बुस (का०), जन, लव। इति तृणादिः।

प्रेक्षा, हलका (फलका), बन्धुका, ध्रुवका, क्षिपका, न्यग्रोध, इक
(इकुंट का०), कङ्कट (कर्कटा का०), संकट, कट, कूप, बुक, पुक, पु
मह (महा का०), परिवाप यवाष (यवास), ध्रुवका, गर्त, कूपक, (कूप
का०), हिरण्य, बुधका, सुकटा, मङ्कट, शुक इति प्रेक्षादिः।

अश्मन्, यूथ (यूष का०), ऊष, (रूष, रुष का०), मीन, नद, दर्भ, वृन्द, गुद, खण्ड, नग, शिखा, कोट (काट का०), पाम (पाम का०), कन्द, कान्द, कुल, गह्व, गुड, कुण्डल, पान, गुह, इत्यश्मादिः।

सखि, अग्निदत्त, वायुदत्त, सखिदत्त, गोपिल, (गोहित, गोहिल का०), भल्ल, पाल (भल्लपाल), चक्र (चर्क का०), चक्रवाक, छगल, अशोक, करवीर, वासव, वीर, पूर, वज्र, कुशीरक, सीहर (शीहर, सीकर का०), सरक (सकर का०), सरस, समर, समल, सुरस, रोह, तमाल, कदल, सप्तल, चक्रपाल, चक्रवाल, अक्रपाल, उशीर। इति सख्यादिः।

सङ्काश, कम्पिल (कपिल), कश्मीर (कश्मर का०), समीर, सूरसेन (शूरसेन), सरक, सूर, सुपन्थिन् (सुपथिन् का०), पन्थ (सन्थ का०), च, यूप (यूथ), अंश, अङ्ग, नासा, पलित, अनुनाश, अश्मन्, कूट, मलिन, दश, कुम्भ, शीर्ष, विरत (चिरन्त विरत का०), समल, सीर, पञ्च, मन्थ (पन्थ), नल, रोमन्, लोमन्, पुलिन्, सुपरि, कटिप, सकर्णक, वृष्टि, तीर्थ, अगस्ति, विकर, नासिका, एग, चिकार, विरह, इति संकाशादिः।

बल, चुल (बुल का०), नल, दल, वट, लकुल, उरल, पुल (पुख), मूल, उल, डुल (उलडुल), वन, कुल, तुल, कवल। इति बलादिः।

पक्ष, तुक्ष, तुष, कुण्ड, अण्ड, कम्बलिका (कम्बलिक का०), वलिक, चित्र, अस्ति, पथिन् पन्थ च (पान्थायन), कुम्भ, सीरक (सीरज का०), सरक, सकल (सलक का०), सरस, समल, अतिश्वन् (अतिस्वन् का०), रोमनु, लोमन्, हस्तिन्, मकर, लोमक, शीर्ष, निवात, पाक, सिंहक (सहक) अङ्कुश, सुवर्णक, हंसक (हंसका का०), हिंसक, कुत्स, बिल, खिल, यमल, हस्त, कला, सकर्णक, (सकण्डक का०), अश्मन्, अस्तिबल। इति पक्षादिः।

कर्ण, वसिष्ठ, अर्क, अर्कलूष (लूष का०), द्रुपद (डुपद का०), आनडुह्य (अनडुह्य का०), पाञ्चजन्य, स्फिज् (स्फिग), कुम्भी, कुन्ती, जित्वन् (जित्व का०), जीवन्त (जीवन्ती का०), कुलिश, आण्डीवत (आण्डीवत् का०), मव, जैत्र, आनक (आकन का०), अलुश, शल, स्थिरा, इति कर्णादिः।

सुतङ्गम, मुनिचित, (मुनिचित्त का०), विप्रचित (विप्रचित्त का०), महाचित्त, महापुत्र, स्वन, श्वेत, खडिक, (गडिक का०), शुक्र, विप्र, बीजवापिन्, (बीज, वापिन्), अर्जुन, श्वन्, अजिर, जीव, खण्डिव, कर्ण, विग्रह, इति सुतंगमादिः।

प्रगदिन्, मगदिन्, मददिन् (शरदिन् का०), कविल (कलिव का०),

चातुर्रार्थिकस्य	८१ जनपदे लुप् ।	लुप् ८३
चातु-स्य, लुप्	८२ वरणादिभ्यश्च । (१)	
चातु-स्य, लुप्	८३ शर्कराया वा ।	शर्करायाः
शर्करायाः	८४ ठक्छौ च ।	
	८५ नद्यां मतुप् ।	मतुप् ८६
मतुप्	८६ मध्वादिभ्यश्च । (२)	
	८७ कुमुद-नड-वेतसेभ्यो ड्मतुप्।(३)	
	८८ नड-शादाड्ड्वलच् ।	
	८९ शिखाया वलच् ।	

खण्डित (खंडिव का०), गदित (गदिव का०), चूडार, मडार (मार्ज मन्दार, कोविदार। इति प्रगद्यादिः।

वराह, पलाश (पलाशा), शिरीष (शेरिष), पिनद्ध, निबद्ध, व स्थूल (स्थूण का०), विदग्ध, विजग्ध, विभग्न, निमग्न, वाहु, खदिर, श विनद्ध, विरुद्ध, मूल। इति वराहादिः।

कुमुद, गोमय (गोमथ), रथकार, दशग्राम, अश्वत्थ, शाल्मलि, शि मुनिस्थल (मुनिस्थूल का०), कुण्डल, कूट, मधुकर्ण, घासकुन्द, शुचि मुचुकर्ण, कुन्द, इति कुमुदादिः।

१—(गणपा०) वरणा (वरण), भृंगी, शाल्मलि, शुण्डी, शयाण्डी, ताम्रपर्णी, गोद (पूर्वा गोदौ, पूर्वेण गोदौ, अपरेण गोदौ का०), आलिङ्ग्य जानपदी (जालपदी जालपद का०), जम्बू, पुष्कर, चम्पा, पम्पा, उज्जयनी (उज्जयिनी का०), गया, मथुरा, तक्षशिला, उरसा (उरशा क गोमती, वलभी, कटुकबदरी (कन्दुक), शिरीषाः, काञ्ची, सदाण्वी, व वणिक। आकृतिगणः। इति वरणादिः।

२—(गणपा०) मधु, बिस, स्थाणु, वेणु, कर्कन्धू, शमी, करीर (किरीर क हिम, किशरा, शर्याण (शर्पणा का०), मरुत्, वार्दाली, शर, इष्टका, आ शक्ति, आसन्दी, शकल, शलाका, आमिषी, (आमिधी का०), इक्षु, रुष्टि (मुष्टि, वृष्टि का०), रुष्य, तक्षशिला, खड (खडा का०), वट (वेटा का०), रम्य, ऋक्ष, मरुव, दार्वाघाटा। इति मध्वादिः।

३—(वा०) महिषाच्चेति वक्तव्यम्।

९० उत्करादिभ्यश्छः । (१)　　छः ९१

छः　　९१ नडादीनां कुक् च । (२)

(तद्धिते शैषिकप्रत्यय—)

९२ शेषे ।

शेषे　　९३ राष्ट्रावारपाराद् घखौ । (३)

९४ ग्रामाद्यखञौ ।

९५ कत्र्यादिभ्यो ढकञ् । (४)　　ढकञ् ९६

ढकञ्　　९६ कुल-कुक्षि-ग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु ।

१—(गणपा०) उत्कर, संकल, शफर, पिप्पल, पिप्पलीमूल, अश्मन्, सुवर्ण (सुपर्ण का०), खलाजिन, तिक, कितव, अणक, त्रैवण, पिचुक, अश्वत्थ, काश, क्षुद्र (काशाक्षुद्र शकाक्षुद्र का०), भस्त्रा, शाल, जन्या, अजिर (अजिन का०), चर्मन्, उत्क्रोश, क्षान्त (शान्त का०), खदिर, शूर्पणाय, श्यावनाय, नैवाकव (नैव, वक का०), तृण, वृक्ष, शाक, पलाश, विजिगीषा, अनेक, आतप, फल, संपर, अर्क, गर्त, अग्नि, वेराणक, इडा, अरण्य, निशान्त, पर्ण, नीचायक, शंकर, अवरोहित, क्षार, विशाल, नेत्र, अरीहण, खण्ड, वातागर, मन्त्रणार्ह, इन्द्रवृक्ष, नितान्तवृक्ष (नितान्तावृक्ष, नितान्त, वृक्ष का०), आर्द्रवृक्ष, तृणव, अन्य, मञ्ज, अर्जुनवृक्ष, इत्युत्करादिः।

२—(गणपा०) नड, प्लक्ष,

विल्वकादयः।६।४।१५३

विल्व, वेणु, वेत्र, वेतस, इक्षु, काष्ठ, कपोत, तृण, कुञ्चा (कुञ्चाया) ह्रस्वत्वञ्च। तक्षन् नलोपश्च। इति नडादिः।

३—(वा) (क) विगृहीतादपीष्यते। (ख) विपरीताच्च।

४—(गणपा०) कत्रि, उम्भि, पुष्कर, पुष्कल, मोदन, कुम्भी, कुण्डिन्, नगरी (नगर का०), माहिष्मती, वर्मती (चर्मण्वती का०), उख्या, ग्राम, कुड्याया (कुल्याया का०), नलोपश्च। वञ्जी, भक्ति। इति कत्र्यादिः।

९७ नद्यादिभ्यो ढक् । (१)

९८ दक्षिणा-पश्चात्पुरसस्त्यक् ।

९९ कापिश्याः ष्फक् । (२) ष्फक् १००

ष्फक् १०० रङ्कोरमनुष्येऽण् च ।

१०१ द्यु-प्रागपागुदक्-प्रतीचो यत् ।

१०२ कन्थायाष्ठक् । कन्थायाः १०

कन्थायाः १०३ वर्णौ वुक् ।

१०४ अव्ययात्त्यप् । (३) त्यप् १०५

त्यप् १०५ ऐषमो-ह्यः-श्वसोऽन्यतरस्याम् ।

१०६ तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ ।

१०७ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः । दि० त् १०

दि-त् १०८ मद्रेभ्योऽञ् । अञ् १०९

अञ् १०९ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् ।

११० प्रस्थोत्तरपद-पलद्यादि-कोपधादण् । (४) अण् ११३

१—(गणपा०) नदी, मही, वाराणसी, श्रावस्ती, कौशाम्बी, वनकौ
शाम्बी, (वनकोशाम्बी), काशपरी, काशफरी (काशफारी), खादिरी, पू
नगरी, पाठा (पावा का०), माया (मावा का०), शाल्वा (साल्वा का०)
दार्वा, सेतकी, (वासेनकी का०), वडवाया वृषे, वाल्वा। इति नद्यादिः।

२—(वा०) वाह्लीकादिभ्यश्चेति वक्तव्यम्।

३—(वा०) (क) त्यब्नेर्ध्रुवे (ख) निसो गते। (ग) आविसश्छ
न्दसि। (घ) अरण्याण्णो वक्तव्यः। (ङ) दूरादेत्यः। (च) उत्तरादाहञ्

४—(गण०) पलदी, परिषद्, रोमक, वाहीक, कलकीट, बहुकी
बालकीट, कमलकीट, कमलकीकर, कमलाभिदा, गौष्ठी, नैकती, परिख
शूरसेन, गोमती, पटच्चर, उदपान, यकृल्लोम। इति पलद्यादिः।

अण्	१११ कण्वादिभ्यो गोत्रे। (१)	गोत्रे ११३
गोत्रे, अण्	११२ इञश्च।	इञः ११३
गोत्रे, अण्, इञ्	११३ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु।	
	११४ वृद्धाच्छः।	वृद्धात् ११८
वृद्धात्	११५ भवतष्ठक्छसौ।	
वृद्धात्	११६ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ। (२)	ठ-ठौ ११८
वृ-त् ठ-ठौ	११७ वाहीकग्रामेभ्यश्च।	वाही-भ्यः ११८
वा-भ्यः, ठ-ठौ	११८ विभाषोशीनरेषु।	
	११९ ओर्देशे ठञ्।	ओः, ठञ् १२० देशे १४५
ओ०, ठञ् देशे	१२० वृद्धात्प्राचाम्।	वृद्धात् १२६
देशे, वृद्धात्	१२१ धन्वयोपधाद्वुञ्।	वुञ् १३०
,, ,, वुञ्	१२२ प्रस्थ-पुर-वहान्ताच्च।	
,, ,, ,,	१२३ रोपधेतोः प्राचाम्।	
,, ,, ,,	१२४ जनपदतदवध्योश्च।	जन-ध्योः १२५
,, ,, ,, ज-ध्योः	१२५ अवृद्धादपि बहुवचनविषयात्।	अवृद्धात् १२६
वृ-त्, अ-त, वुञ्	१२६ कच्छाग्नि-वक्त्र-*गर्तोत्तरपदात्।	

१—(गण०) कण्वादिर्गर्गाद्यन्तर्गणः।

२—(गणपा०) काशि, चेदि, (वेदि, वैदी का०), सांयाति, संवाह, मोदमान, (मोहमान का०), शकुलाद, हस्तिकर्षू, कुनामन् (कुदामन्), हिरण्य, करण, गोवासन, (गोधाशन का०), भारङ्गी, अरिंदम, अरित्र, देवदत्त, दशग्राम (वासग्राम का०), शौवावतान (सौधावतान का०), युवराज, उपराज, देवराज, मोदन, सिन्धुमित्र, दासमित्र सुधामित्र, सोममित्र, छागमित्र, सधमित्र (साधुमित्र), आपदादिपूर्वपदात् (आपद, ऊर्ध्व, तद्) कालान्तात्। संज्ञा, भौरिकि, भौलिङ्गि, सर्वमित्र, साधुमित्र,। इति काश्यादिः।

*वर्तोत्तरपदादिति पाठान्तरम्।

देशे, वुञ्	१२७ धूमादिभ्यश्च । (१)	
वुञ्	१२८ नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः ।	
वुञ्	१२९ अरण्यान्मनुष्ये । (२)	
देशे, वुञ्	१३० विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम्	
देशे	१३१ मद्रवृज्योः कन्	
देशे	१३२ कोपधादण् ।	अण् १३३
देशे अण्	१३३ कच्छादिभ्यश्च । (३)	क-भ्यः १३
देशे,क-भ्यः अण्	१३४ मनुष्य-तत्स्थयोर्वुञ् ।	म-योः १३ वुञ १३६
देशे, वुञ्	१३५ अपदातौ साल्वात् ।	साल्वात् १
देशे सा-त् वुञ्	१३६ गोयवाग्वोश्च ।	
देशे	१३७ गर्त्तोत्तरपदाच्छः ।	छः ।४।३।

१—(गण०) धूम, षडण्ड (खडण्ड, खण्ड का०), शशादन, अर्जु (अर्जुनाव का०), माहकस्थली, आनकस्थली, माहिषस्थली, मानस्थली (स्थली), अट्टस्थली मद्रुकस्थली, समुद्रस्थली, वाण्डायनस्थली, राजस् विदेह, राजगृह, साम्रासाह, शष्प (शिष्य का०), मित्रवर्ध (मित्र वर्ध, वल का०), भक्षाली, मद्रकूल, आजीकूल, (आञ्जीकूल का०), वृषा (वृषाहव), अ्याहाव (अ्याहव), संस्फीय (संहीय का०), बर्बर, वर्ज्य, (वर्चगर्त का०), आनर्त (आनत का०), माठर, पाथेय, घोष, पल्ली (का०), आराज्ञी, धार्तराज्ञी, आवय (अवयात का०), तीर्थ, कूलात्सौवी समुद्रान्नावि मनुष्ये च। कुक्षि, अन्तरीय (अन्तरीप का०), द्वीप, अरुण, उ यिनी (उज्जयनी), पट्टार, दक्षिणापथ, साकेत, घोषस्थली, भक्षाल गर्तकूल, मानवल्ली, सुराज्ञी। इति धूमादिः।

२—(वा०) (क) पथ्यध्यायन्यायविहारमनुष्यहस्तिष्विति (ख) वा गोमयेषु।

३—(गण०) कच्छ, सिन्धु, वर्णु, गन्धार, मधुमत्, कम्बोज, साल्व, कुरु, अनुषण्ड (अणु, अण्ड, खण्ड का०), द्वीप, अनूप, अजवाह, पक, कलुतर, (कुलून का०) रङ्कु। इति कच्छादिः।

देशे छः	१३८ गहादिभ्यश्च। (१)	
देशे छः	१३९ प्राचां कटादेः।	
छः	१४० राज्ञः क च।	
देशे, छः	१४१ वृद्धादकेकान्त-खोपधात्। (२)	वृद्धात् १४२
देशे, वृद्धात् छः	१४२ कंथा-पलद-नगर-ग्राम-ह्रदोत्तर-पदात्।	
छः	१४३ पर्वताच्च।	पर्वतात् १४४
प-त्, छः	१४४ विभाषाऽमनुष्ये।	
देशे, छः	१४५ कृकणपर्णाद्भारद्वाजे।	

इति चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः

अथ तृतीयः पादः

शेषे, छः	१ युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च।	यु-दोः ३
यु-दोः	२ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ।	तस्मिन्नणि ३

१—(गणपा०) गह, अन्तस्थ, सम, विषम, मध्य मध्यमं चाण् चरणे। उत्तम, अङ्ग, वङ्ग, मगध, पूर्वपक्ष, अपरपक्ष, अधमशाख, उत्तमशाख, एकशाख, समानशाख, समानग्राम, एकग्राम, एकवृक्ष, एकपलाश, इष्वग्र, इष्वनीक (इष्वनीका का०), अवस्यन्दन (अवस्यन्दी, अवस्कन्द का०), कामप्रस्थ, खाडायन (शाडिकाडायनि, खाडायनि, खाण्डायनी का०), काठेरणि (कावेरणि, कामवेरणि का०), लावेरणि, सौमित्रि, शैशिरि, आसुत्, दैवशर्मि (देवशर्मन् का०), श्रौति, आर्हिंसि, आमित्रि, व्याडि, बैजि (वैदजि का०), आध्यश्वि, आनृशंसि, शौङ्गि, आग्निशर्मि (अग्निशर्मन् का०), भौजि, वाराटकि (आराटकि), वाल्मीकि (वाल्मिकि), क्षैमवृद्धि (क्षेमवृद्धिन् का०), आश्वत्थि, औद्ग्राहमानि (औद्गाहमानि), ऐक, बिन्दवि, दन्ताग्र, हंस, तन्त्वग्र, तत्त्वग्र, उत्तर, अनन्तर (अन्तर का०), मुखपार्श्वतसोर्लोपः (मुखतीय, पार्श्वतीय)। जनपरयोः कुक् च (जनकीय, परकीय), देवस्य च। वेणुकादिभ्यश्छण्। आसुरि, सौवि, पारकि, आकृतिगणः। इति गहादिः।

२—(वा०) अकेकान्तग्रहणे कोपधग्रहणं सौसुकाद्यर्थम्।

त-णि, यु-दोः	३ तवकममकावेकवचने ।
	४ अर्धाद्यत् । (१)
अर्धात्, यत्	५ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ।
,, ,,	६ दिक्पूर्वपदाट्ठञ् च ।
दि-त्, अर्धात्	७ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ ।
	८ मध्यान्मः ।
मध्यात्	९ अ साम्प्रतिके ।
	१० द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ।
	११ कालाट्ठञ् ।
का-त्, ठञ्	१२ श्राद्धे शरदः ।
शरदः,ठञ्,का-त्	१३ विभाषा रोगातपयोः ।
का-त्, ठञ्, वा	१४ निशाप्रदोषाभ्यां च ।
,, ,, ,,	१५ श्वसस्तुट् च ।
कालात्	१६ सन्धिवेलाद्यृतु-नक्षत्रेभ्योऽण् । (२)
कालात्	१७ प्रावृष एण्यः ।
,,	१८ वर्षाभ्यष्ठक् ।
,, व-भ्यः	१९ छन्दसि ठञ् ।
का०, छ०, ठञ्	२० वसन्ताच्च ।
,, ,,	२१ हेमन्ताच्च ।
का-त् हे-त्	२२ सर्वत्राण् च तलोपश्च ।

१—(वा०) सपूर्वपदाट्ठञ् वक्तव्यः ।

२—(गणपा०) सन्धिवेला, संध्या, अमावास्या, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पौर्णमासी, प्रतिपद्, संवत्सरात्फलपर्वणोः । इति सन्धिवेलादिः ।

कालात्	२३ सायं-चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्यु-ट्युलौ तुट् च । (१)	ट्यु-लौ, तुट् २४
का-त्, ट्यु-लौ, तुट्	२४ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् ।	

(शैषिकप्रत्ययार्थनिर्देश—)

अण्	२५ तत्र जातः ।	तत्र ५१, जातः ३७
तत्र, जातः	२६ प्रावृषष्ठप् ।	
,, ,,	२७ संज्ञायां शरदो वुञ् ।	सञ्ज्ञायाम् २८
सं-म्, तत्र जातः	२८ पूर्वाह्णापराह्णार्द्रा-मूल-प्रदोषावस्कराद्वुन् ।	वुन् ३०
तत्र, जातः, वुन्	२९ पथः पन्थ च ।	
,, ,, ,,	३० अमावास्याया वा ।	अमा-याः ३१
,, ,, अ-याः	३१ अ च ।	
तत्र, जातः	३२ सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ।	सि-म् ३३
तत्र जातः सि-म्	३३ अणञौ च ।	
तत्र, जातः	३४ श्रविष्ठा-फल्गुन्यनुराधा-स्वाति-तिष्य-पुनर्वसु-हस्त-विशाखाषाढा-बहुलाल्लुक् । (२)	लुक् ३७
,, ,, लुक्	३५ स्थानान्त-गोशाल-खरशालाच्च ।	
,, ,, ,,	३६ वत्स शालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा ।	

१—(वा०) (क) चिरपरुत्परारिभ्यस्त्नो वक्तव्यः। (ख) प्रगस्य छन्दसि गलोपश्च। (ग) अग्रपश्चाड्डिमच्। (घ) अन्ताच्चेति वक्तव्यम्।

२—(वा०) (क) फल्गुन्यषाढाभ्यां टानौ वक्तव्यौ। (ख) श्रविष्ठाषाढाभ्यां छणपि वक्तव्यः। (ग) लुक्प्रकरणे चित्रारेवतीरोहिणीभ्यः स्त्रियामुपसंख्यानम्।

तत्र, जातः लुक्	३७ नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ।	
तत्र, अण्	३८ कृत-लब्ध-क्रीत-कुशलाः ।	
,, अण्	३९ प्रायभवः ।	प्रायभवः
,, प्रा-वः	४० उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ।	
तत्र, अण्	४१ सम्भूते ।	सम्भूते ४
तत्र, सम्भूते	४२ कोषाड्ढञ् ।	
तत्र, अण्	४३ कालात्साधु-पुष्प्यत्पच्यमानेषु ।	कालात्
,, का-त्, अण्	४४ उप्ते च ।	उप्ते ४६
का-त्, तत्र उप्ते	४५ आश्वयुज्या वुञ् ।	
का०तत्र उप्ते वुञ्	४६ ग्रीष्म-वसन्तादन्यतरस्याम् ।	
,, ,, अण्	४७ देयमृणे ।	देयमृणे ।
,, ,, दे-णे	४८ कलाप्यश्वत्थ-यववुसाद्वुन् ।	
,, ,, ,,	४९ ग्रीष्मावरसमाद्वुञ्	वुञ् ५०
का०त०दे० वुञ्	५० संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ।	
,, ,, अण्	५१ व्याहरति मृगः ।	
का-त्, अण्	५२ तदस्य सोढम् ।	
अण्	५३ तत्र भवः ।	तत्र भव
तत्र भवः	५४ दिगादिभ्यो यत् । (१)	यत् ५५
तत्र, भवः, यत्	५५ शरीरावयवाच्च ।	

१—(गणपा०) दिश्, वर्ग्यादयः (वर्ग्यादयः प्रातिपदिकेषु न पठ दिगादिषु वर्ग, पूग, गण, इत्येवमादयो ये पठितास्त एव यत्प्रत्ययान्ता इह प्रतिपत्तव्याः), वर्ग, पूग, गण, यक्ष, धाय्य (धाय्या का०), मित्र, अन्तर, पथिन्, रहस्, अलीक, उखा, साक्षिन्, देश, आदि, अन्त, मुख, मेघ, यूथ। उदकात्संज्ञायाम्। न्याय (ज्ञाय), वंश, वेश (विश का०), आकाश, अनुवंश इति दिगादिः।

तत्र, भवः	५६ दृति-कुक्षि-कलशि-वस्त्यस्त्यहेर्ढञ् ।		ढञ् ५७
तत्रभवः ढञ्	५७ ग्रीवाभ्योऽण् च ।		
तत्र भवः	५८ गम्भीराञ्ञ्यः ।	(१)	ञ्यः ५९
तत्रभवः ञ्यः	५९ अव्ययीभावाच्च ।	(२)	अ-त् ६१
तत्र, भवः, अ-त्	६० अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् ।	(३)	ठञ् ६१
,, ,, ,, ठञ्	६१ ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् ।		
तत्रभवः	६२ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ।		छः ६३
,, छः	६३ वर्गान्ताच्च ।		वर्गान्तात् ६४
,, व-त्	६४ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्		
तत्रभवः	६५ कर्ण-ललाटात्कनलंकारे ।		
अण् तत्रभवः	६६ तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः ।		तस्य व्याख्यानः, व्या-म्नः ७३
तस्य व्या-म्नः तत्रभवः	६७ बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् ।		
तस्यव्या०त-भवः	६८ क्रतु-यज्ञेभ्यश्च ।		
,, ,,	६९ अध्यायेष्वेवर्षेः ।		
,, ,,	७० पौरोडाश-पुरोडाशात् ष्ठन् ।		
,, ,,	७१ छन्दसो यदणौ ।		

१—(वा०) वहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्चेति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) ञ्यप्रकरणे परिमुखादिभ्य उपसंख्यानम् ।

३—(वा०) (क) समानशब्दाट्ठञ् वक्तव्यः (ख) तदादेश्च (ग) अध्यात्मादिभ्यश्च । (घ) ऊर्ध्वं दमाच्च ठञ् वक्तव्यः (ङ) देहाच्च । (च) लोकोत्तरपदाच्च (छ) मुखपार्श्वतसोरीयः (ज) जनपरयोः कुक् च । (झ) मध्यशब्दादीयः । (ञ) मणमीयौ च प्रत्ययौ वक्तव्यौ । (ट) स्थाम्नो लुग्वक्तव्यः । (ठ) अजिनान्ताच्च ।

तस्यव्या०त-भुवः	७२ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्-प्रथमाध्वर-पुरश्चरण-नामाख्याताट्ठक् ।	
,, ,,	७३ अणृगयनादिभ्यः । (१)	
अण्	७४ तत आगतः ।	तत आगतः
तत आगतः	७५ ठगायस्थानेभ्यः ।	
,, ,,	७६ शुण्डिकादिभ्योऽण् । (२)	
,, ,,	७७ विद्यायोनिसबन्धेभ्यो वुञ् ।	वि-भ्यः ७८
त-तः, वि-भ्यः	७८ ऋतष्ठञ् ।	ठञ् ७९
,, ठञ्	७९ पितुर्यच्च ।	
तत आगतः	८० गोत्रादङ्कवत् ।	
तत आगतः	८१ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ।	हेतुम-भ्यः ८
ततआ-तः,हे-भ्यः	८२ मयट् च ।	
ततः अण्	८३ प्रभवति ।	प्रभवति ८
ततः प्र-ति	८४ विदूराञ्ञ्यः ।	
अण्	८५ तद् गच्छति पथिदूतयोः ।	तद् ८८
तद् अण्	८६ अभिनिष्क्रामति द्वारम् ।	
,, ,,	८७ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे । (३)	अ-कृते ग्रन्थे

१—(गणपा०) ऋगयन, पदव्याख्यान, छन्दोमान, छन्दोभाषा, छन् विचिति, न्याय, पुनरुक्त, निरुक्त, व्याकरण, निगम, वास्तुविद्या, क्षत्रवि अङ्गविद्या, विद्या, उत्पात, उत्पाद, उद्याव, संवत्सर, मुहूर्त, उपनिषद्, निमि शिक्षा, भिक्षा, छन्दोविजिति, व्यायः। इत्यृगयनादिः।

२—(गणपा०) शुण्डिक, कृकण, स्थण्डिल, उदपान, उपल, तौ भूमि, तृण पर्ण। इति शुण्डिकादिः।

३—(वा०) लुबाख्यायिकार्थस्य प्रत्ययस्य बहुलम्।

अ-कृते ग्रन्थे तद्	८८ शिशुक्रन्द-यमसभ-द्वन्द्वेन्द्र-जननादिभ्यश्छः। (१)	
अण्	८९ सोऽस्य निवासः।	सोऽस्य १००
सोऽस्य, अण्	९० अभिजनश्च।	अभिजनः ९४
सोऽस्याभिजनः	९१ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते।	
,,	९२ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः। (२)	
सोऽस्याभिजनः	९३ सिन्धु-तक्षशिलादिभ्योऽणञौ। (३)	
,,	९४ तूदी-शलातुर-वर्मती-कूचवारा-ड्-ढक्-छण्-ढञ्-यकः।	
सोऽस्य, अण्	९५ भक्तिः।	भक्तिः १००
सोऽस्यभक्तिः	९६ अचित्ताददेशकालाट्ठक्।	
,,	९७ महाराजाट्ठञ्।	
,,	९८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्।	
,,	९९ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ्।	

१—(वा०) द्वन्द्वे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधः।

(गणपा०) इन्द्रजननादिराकृतिगणः प्रयोगतोऽनुसर्तव्यः। प्रातिपदिकेषु न पठ्यते।

२—(गणपा०) शण्डिक, सर्वसेन, सर्वकेश, शक, शट, (सट का०), रक, शङ्ख, बोध। इति शण्डिकादिः।

३—(गण०) सिन्धु, वर्णु, मधुमत्, कम्बोज, साल्व, कश्मीर, गन्धार, किष्किन्धा, उरसा (उरस का०), दरद् (दरद), गन्दिका (गब्दिका का०), कुलुन, विरसा, इति सिन्ध्वादिः।

तक्षशिला, वत्सोद्धरण, कैर्मेदुर (कौमेदुर), ग्रामणी, छगल, क्रोष्टुकर्ण (कर्णकोष्ठ का०), सिंहकर्ण (सिंहकोष्ठ), संकुचित, किन्नर, काण्डधार (काण्डवारण), पर्वत, अवसान, बर्बर, कंस, सरालक। इति तक्षशिलादिः।

सोऽस्यभक्तिः	१००	जनपदिनां जनपदवत् सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने।	
अण्	१०१	तेन प्रोक्तम् ।	तेनप्रो-म् ११
तेनप्रोक्तम्	१०२	तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिकोखाच्छण् ।	
,,	१०३	काश्यप-कौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ।	णिनिः १०
,, णिनिः	१०४	कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च ।	
तेनप्रो-म्, णिनिः	१०५	पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ।	
तेनप्रो-म्, णिनिः	१०६	शौनकादिभ्यश्छन्दसि । (१)	
तेनप्रोक्तम्	१०७	कठचरकाल्लुक् ।	
,,	१०८	कलापिनोऽण् । (२)	
,,	१०९	छगलिनो ढिनुक् ।	
,, णिनिः	११०	पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ।	भिक्षु-योः ११
तेन-म्, भि-योः	१११	कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ।	
अण्	११२	तेनैकदिक् ।	तेन ११९, एकदिक् ११

१—(गणपा०) शौनक, वाजसनेय, शार्ङ्गरव, शापेय, (सापेय का०) शाष्पेय (शाक्षेय का०), खाडायन, स्तम्भ (स्कम्भ का०), स्कन्ध, देवदर्श रज्जुभार, रज्जुकण्ठ, कठशाठ, कषाय, (कशाय का०), तल, दण्ड, पुरुषांस (पुरुषासक का०), अश्वपेज (अश्वपेय का०), साङ्गरव, स्कन्व, देवद शठ, तलवकर। इति शौनकादिः।

२—(वा०) नान्तस्य टिलोपे सब्रह्मचारिपीठसर्पिकलापिकुथुमितैतलिजाजलि जाङ्गलिलाङ्गलिशिलालिशिखण्डिसूकरसद्मसुपर्वणामुपसंख्यानम्।

तेनैकदिक्	११३ तसिश्च	तसिः ११४
,, तसिः	११४ उरसो यच्च ।	
तेन, अण्	११५ उपज्ञाते ।	
तेन, अण्	११६ कृते ग्रंथे ।	कृते ११९
तेन, कृते, अण्	११७ संज्ञायाम् ।	सञ्ज्ञायाम् ११९
स-म्, तेन कृते	*११८ कुलालादिभ्यो वुञ् । (१)	
,, ,,	११९ क्षुद्रा-भ्रमर-वटर-पादपादञ् ।	
अण्	१२० तस्येदम् । (२)	तस्येदम् १३१
तस्येदम्	१२१ रथाद्यत् । (३)	रथात् १२२
रथात्, ॰त-म्	१२२ पत्रपूर्वादञ् ।	अञ् १२३
तस्येदम्, अञ्	१२३ पत्राध्वर्यु-परिषदश्च । (४)	
,,	१२४ हलसीराट्ठक् ।	
,,	१२५ द्वन्द्वाद्वुन् वैरमैथुनिकयोः । (५)	
तस्येदम्	१२६ गोत्रचरणाद्वुञ् ।	

१—(गणपा०) कुलाल, वरुड, चण्डाल, निषाद, कर्मार, सेना, सिरिध्र (सिरिन्ध्र), सैरिन्ध्र (सेन्द्रिय का०), देवराज, परिषद् (पर्षद्), वधू, मधु, रुरु, रुद्र, अनडुह (अनड्डह), ब्रह्मन् कुम्भकार, श्वपाक, ध्रुव। इति कुलालादिः।

२—(वा०) (क) वहेस्तुरणिट् च। (ख) अग्नीधः शरणे रण् भञ्च। (ग) समिधामाधाने षेण्यण्।

३—(वा०) (क) रथाङ्ग एवेष्यते। (ख) रथसीताहलेभ्यो यद्विधाविति तदन्तविधिरुपसंख्यायते।

४—(वा०) पत्राद्वाह्ये।

५—(वा) वैरे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

*भाष्ये 'संज्ञायां कुलालादिभ्यो वुञ्' अत्र योगविभागदर्शनादनयोरेकसूत्रत्वमनुमीयते।

तस्येदम्	१२७ सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण्। (१)	स-षु १
,, अण्	१२८ शाकलाद्वा ।+	
तस्येदम्	१२९ छन्दोगौक्थिक-याज्ञिक-बह्वृच-नटाञ्ञ्यः।	
तस्येदम्, वुञ्	१३० न दण्डमाणवान्तेवासिषु।	
त-म्	१३१ रैवतिकादिभ्यश्छः। (२)	
	(तद्धितेषु प्राग्दीव्यतीयप्रत्यय—)	
अण्	१३२ तस्य विकारः।	त-रः १
तस्य, वि-रे, अण्	१३३ अवयवे च प्राण्योषधि-वृक्षेभ्यः।	अवयवे
तस्य, वि-का-वयोः	१३४ बिल्वादिभ्योऽण्। (३)	
,, ,, अण्	१३५ क्रोपधाच्च।	
तस्यवि-रः, अण्	१३६ त्रपुजतुनोः षुक्।	
तस्य वि-योः	१३७ ओरञ्।	अन् १३

१—(वा०) संघादिषु घोषग्रहणम्।

२—(वा०) (क) कौपिञ्जलहास्तिपदादण्। (ख) आथर्वणिकस्येकलो

(गणपा०) रैवतिक, स्वापिशि, क्षेमवृद्धि, गौरग्रीव (गौरग्रीवि), औ (औदमेयि का०), औदवापि (औदवाहि का०), बैजवापि। इति रैवतिका

३—(गणपा०) विल्व, व्रीहि, काण्ड, मुद्ग, मसूर, गोधूम, इक्षु, गवेधुका, कर्पासी, पाटली, कर्कन्धू, कुटीर। इति विल्वादिः।

+ भाष्यपर्यालोचनया तु 'शकलाद्वे'ति सूत्रपाठोऽनुमीयते।

---

*इदं वार्तिकद्वयं न सूत्रद्वयं यतस्तथा महाभाष्ये 'रैवतिकाभ्यश्छः' सूत्र उपलम्भः। प्रथमस्य सूत्रपाठे ग्रहणमपाणिनीयमिति कैयटः। सूत्रमिति कैयटः। इदमपि वार्तिकमेवेति हरदत्तः। सूत्रत्वे चकारेण वार्ति स्याणः संग्रहस्य क्लिष्टत्वादस्य वार्तिकत्वमेव युक्तम्। अस्माभिरतएव वा त्वेनोपन्यस्तमिदं द्वयम्।

वि-यीः अञ्	१३८ अनुदात्तादेश्च ।	
,, ,,	१३९ पलाशादिभ्यो वा । (१)	
,,	१४० शम्याष्ट्लञ् । (२)	
,,	१४१ मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ।	मयट् १४६, भाषा-म्,अभ-योः१४२
मयट् वि-योः, अभ-योः	१४२ नित्यं वृद्धशरादिभ्यः । (३)	
तस्यावि-रः मयट्	१४३ गोश्च पुरीषे ।	
,, ,,	१४४ पिष्टाच्च ।	पिष्टात् १४५
,, पिष्टात्	१४५ संज्ञायां कन् ।	
,, मयट्	१४६ व्रीहेः पुरोडाशे ।	
,, ,,	१४७ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ।	
,, ,,	१४८ द्व्यचश्छन्दसि ।	द्व्यचः, छन्दसि १४९
तवि-रः मयट्	१४९ नोत्वद्वर्ध्रविल्वात् ।	
,,	१५० तालादिभ्योऽण् । (४)	अण् १५१
,, अण्	१५१ जातरूपेभ्यः परिमाणे ।	

१—(गण०) पलाश, खदिर, शिंशपा, स्यन्दन (स्पन्दन का०), पूलाक, करीर, शिरीष, यवास, विकङ्कत। इति पलाशादिः।

२—'शम्याः ष्लञ्' इति पाठान्तरम्। प्रत्ययस्य टित्वमेव युक्तं यतः शेखरे 'टित्प्रत्ययः। 'ञितश्च तत्प्रत्ययादि'ति सूत्रभाष्ये विकारविकारेऽपि तद्विकारित्वमारोप्य तत्सूत्रं प्रत्याख्यातम्। अस्य षित्वे हि तत्प्रत्याख्याने षित्वान् ङीष्, आरम्भे त्वञन्तत्वान्ङीबिति फलभेदः स्यात्' इत्युक्तम्।

३—(गणपा०) शर, दर्भ, मृद् (मृत्) कुटी, तृण, सोम, बल्वज (बल्वज का०), इति शरादिः।

४—(गणपा०) तालाद्धनुषि। वार्हिण, इन्द्रालिश (इन्द्रासिष) इन्द्रावृश, इन्द्रायुष, चय (चाप, चग का०), श्यामाक । इति तालादिः।

तवि-रः		१५२ प्राणिरजतादिभ्योऽञ् (१).	अञ् १५३
"	अञ्	१५३ ञितश्च तत्प्रत्ययात् ।	
"		१५४ क्रीतवत्परिमाणात् ।	
"		१५५ उष्ट्राद्वुञ् ।	वुञ् १५६
"	वुञ्	१५६ उमोर्णयोर्वा ।	
"		१५७ एण्या ढञ् ।	
"		१५८ गोपयसोर्यत् ।	यत् १५९
"	यत्	१५९ द्रोश्च ।	द्रोः १६०
"	द्रोः	१६० माने वयः ।	
"		१६१ फले लुक् ।	फले १६५
तस्य वि-यो०		१६२ प्लक्षादिभ्योऽण् । (२)	अण् १६३
तस्य, फले, अण्		१६३ जम्ब्वा वा ।	जम्ब्वाः,वा
तस्य जम्ब्वाः फले वा		१६४ लुप् च । (३)	लुप् १६५
तस्य फले लुप्		१६५ हरीतक्यादिभ्यश्च । (४)	
तस्यवि-रः		१६६ कंसीय-परशव्ययोर्यञञौ लुक् च	

इति चतुर्थाध्यायस्य तृतीयः पादः

१—(गणपा०) रजत, सीस, लोह, उदुम्बर, नीप (नीच, नील का०) दारु, रोहीतक (रोहितक का०), बिभीतक, पीतदारु (कपीत, दारु का०) तीव्रदारु, त्रिकण्टक, कण्टकार। इति रजतादिः।

२—(गणपा०) प्लक्ष, न्यग्रोध, अश्वत्थ, इङ्गुदी, शिग्रु, रुरुः, कर्क (कर्कन्धु, कर्कन्तु, ऋकन्तु का०), बृहती। इति प्लक्षादिः।

३—(वा०) (क) लुप्प्रकरणे फलपाकशुषामुपसंख्यानम्। (ख) पुष्पमूलेषुबहुलम्।

४—(गणपा०) हरीतकी, कोशातकी, नखरजनी (नखररजनी का०), शष्कण (शाकण्डी का०), दाडी, दोडी, श्वेतपाकी, अर्जुनपाकी, द्राक्षा, काला, ध्वा (ध्वाङ्क्षा का०), गभीका (गर्गरिका का०), कण्टकारिका, पिप्पली, चिम्ब (चिम्पा), शेफालिका, दडी इति हरीतक्यादिः।

अथ चतुर्थः पादः

(तद्धितेषु ठक्प्रत्यय—)

१ प्राग्वहतेष्ठक्। (१)	ठक् ७६
२ तेन दीव्यति-खनति-जयति-जितम्।	तेन २७
३ संस्कृतम्।	संस्कृतम् ४
४ कुलत्थकोपधादण्	
५ तरति।	तरति ७
६ गोपुच्छाट्ठञ्।	
७ नौद्व्यचष्ठन्।	
८ चरति।	चरति ११
९ आकर्षात् ष्ठल्।	
१० पर्पादिभ्यः ष्ठन्। (२)	ष्ठन् ११
११ श्वगणाट्ठञ् च।	
१२ वेतनादिभ्यो जीवति। (३)	जीवति १४
१३ वस्न-क्रयविक्रयाट्ठन्।	
१४ आयुधाच्छ च।	

१—(वा०) (क) ठक्प्रकरणे तदाहेति माशब्दादिभ्य उपसंख्यानम् (ख) माहो भूतादिभ्यः। (ग) पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः। (घ) गच्छतौ परदारादिभ्यः।

२—(गणपा०) पर्प, अश्व, अश्वत्थ, रथ, जाल, न्यास, व्याल, पादः ञ्च, (पदिक)। इति पर्पादिः।

३—(गणपा०) वेतन, वाहन (वाह का०), अर्धवाहन (अर्धवाह का०), धनुर्दण्ड, जाल, वेश (वेस का०), उपवेश, (उपवेष, उपवेस का०), प्रेषण, उपवस्ति (उपस्ति का०), सुख, शय्या, शक्ति, उपनिषद्, उपदेश, स्फिज्, पाद, उपस्थ, उपस्थान, उपहस्त, स्रज्। इति वेतनादिः।

तेन ठक्	**१५ हरत्युत्संगादिभ्यः । (१)**	हरति
तेन हरति	**१६ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् । (२)**	ष्ठन्
,, ,, ष्ठन्	**१७ विभाषा विवधात् ।**	
तेन हरति	**१८ अण् कुटिलिकायाः ।**	
तेन ठक्	**१९ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः । (३)**	निर्वृत्ते
तेन निर्वृत्ते	**२० क्त्रेर्मम्नित्यम् । (४)**	
,,	**२१ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ ।**	
तेन ठक्	**२२ संसृष्टे ।**	संसृष्टे
तेन सं-ष्टे	**२३ चूर्णादिनिः ।**	
ठकः	**२४ लवणाल्लुक् ।**	
तेन संसृष्टे	**२५ मुद्गादण् ।**	
तेन ठक्	**२६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते ।**	
तेन ठक्	**२७ ओजःसहोम्भसा वर्तते ।**	वर्तते
वर्तते ठक्	**२८ तत्प्रत्यनुपूर्वमीप-लोम-कूलम् ।**	तत् ४६
तत् व-ते, ठक्	**२९ परिमुखं च ।**	
तत् ठक्	**३० प्रयच्छति गर्ह्यम् । (५)**	प्र-ति, गर्ह्यं
तत्, प्रयच्छति गर्ह्यम्	**३१ कुसीद-दशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ ।**	

१—(गणपा०) उत्संग, उड्डुप, उत्पुत (उत्पत का०), उत्पन्न, पिटक, पिटाक, उडप। इत्युत्सङ्गादिः।

२—(गणपा०) भस्त्रा, भरण, शीर्षभार, शीर्षेभार, अंसभार, इति भस्त्रादिः।

३—(गणपा०) अक्षद्यूत, जानुप्रहृत (जानुप्रहूत का०), (जंघाप्रहूत का०), जंघाप्रहृत, पादस्वेदन,, कण्टकमर्दन, गतानुगत, यातोपयात, अनुगत। इत्यक्षद्यूतादिः।

४—(वा०) भावप्रत्ययान्तादिमज्वक्तव्यः।

५—(वा०) वृद्धेर्वृधुषिभावो वक्तव्यः।

तत् ठक्	३२ उञ्छति ।	
तत् ठक्	३३ रक्षति ।	
तत् ठक्	३४ शब्ददर्दुरं करोति ।	
तत् ठक्	३५ पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति ।	
तत् ठक्	३६ परिपन्थं च तिष्ठति ।	
" "	३७ माथोत्तरपद-पदव्यनुपदं धावति ।	धावति ३८
तत् धावति ठक्	३८ आक्रन्दाट् ठञ् च ।	
तत् ठक्	३९ पदोत्तरपदं गृह्णाति ।	गृह्णाति ४०
तत् गृ-ति ठक्	४० प्रतिकण्ठार्थ-ललामञ्च ।	
तत् ठक्	४१ धर्मं चरति । (१)	
तत् ठक्	४२ प्रतिपथमेति ठंश्च ।	
" "	४३ समवायान् समवैति ।	समवैति ४५
तत् समवैति	४४ परिषदो ण्यः ।	ण्यः ४५
तत् स-ति ण्यः	४५ सेनाया वा ।	
तत् ठक्	४६ संज्ञायां ललाट-कुक्कुट्यौ पश्यति ।	
ठक्	४७ तस्य धर्म्यम् ।	तस्य५०, ध०४९
तस्य धर्म्यम्	४८ अण् महिष्यादिभ्यः । (२)	
तस्य धर्म्यम्	४९ ऋतोऽञ् (३)	

१—(वा०) अधर्माच्चेति वक्तव्यम् ।

२—(गणपा०) महिषी, प्रजापति, प्रजावती, प्रलेपिका, विलेपिका, अनुलेपिका, पुरोहित, मणिपालो, अनुचारक (अनुवारक), होतृ, यजमान। इति महिष्यादिः।

३—(वा०) (क) नृनराभ्यामञ् (ख) विशसितुरिड्लोपश्च । (ग) विभाजयितुर्णिलोपश्च ।

तस्य ठक्	५० **अवक्रयः** ।
ठक्	५१ **तदस्य पण्यम्** ।
तदस्यपण्यम्	५२ **लवणाट्ठञ्** ।
,,	५३ ***किसरादिभ्यः ष्ठन्** । (१)
,, , ष्ठन	५४ **शलालुनोऽन्यतरस्याम्** ।
तदस्य ठक्	५५ **शिल्पम्** ।
तदस्य शि-म्	५६ **मड्डुक-झर्झरादणन्यतरस्याम्** ।
तदस्य ठक्	५७ **प्रहरणम्** ।
तदस्य, प्र-म्, ठक्	५८ **परश्वधाट्ठञ् च** ।
तदस्य प्रह-म्	५९ **शक्ति-यष्ट्योरीकक्** ।
तदस्य ठक्	६० **अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः** ।
,, ,,	६१ **शीलम्** ।
तदस्य, शीलम्	६२ **छत्रादिभ्यो णः** (२)
तदस्य ठक्	६३ **कर्माध्ययने वृत्तम्** ।
,, वृत्तम्	६४ **बह्वच्पूर्वपदाट्ठञ्** ।
तदस्य ठक्	६५ **हितं भक्षाः** ।
ठक्	६६ **तदस्मै दीयते नियुक्तम्** ।
त-म्	६७ **श्राणा-मांसौदनाट्टिठन्** ।

१—(गणपा०) किसर (किशर), नरद, नलद, स्थागल, तगर, गु उशीर, हरिद्रा, हरिद्रु, पर्णी (पर्गी), सुमङ्गल, हरिद्रायणी, इति किसरादि

*किशरादिभ्य इति पाठः

२—(गणपा०) छत्र, शिक्षा, प्ररोह (पुरोह का०), स्था (आस्था सं अवस्था का०), बुभुक्षा, चुरा, तितिक्षा, उपस्थान, कृषि (ऋषि का०), विश्वधा, तपस्, सत्य, अनृत, विशिखा, विशिका (शिविका का०), उदस्थान, पुरोडा, विक्षा, चुक्षा, मन्द्र। इति छत्रादिः।

तदस्मैदी-म्	६८ भक्तादणन्यतरस्याम् ।	
ठक्	६९ तत्र नियुक्तः ।	तत्र ७४, नियुक्तः ७०
तत्र नियुक्तः	७० अगारान्ताट्ठन् ।	
तत्र ठक्	७१ अध्यायि न्यदेशकालात् ।	
” ”	७२ कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानेषु व्यवहरति ।	
” ”	७३ निकटे वसति ।	वसति ७४
तत्र, वसति	७४ आवसथात् ष्ठल् ।	
	(तद्धिते प्राग्घितीयप्रत्यय---)	
	७५ प्रग्घिताद्यत् ।	यत ।५।१।५
यत	७६ तद्वहति-रथ-युग-प्रासङ्गम् ।	तत् ८६, वहति ८२
तद्वहति	७७ धुरो यड्ढकौ ।	
”	७८ खः सर्वधुरात् ।	खः ७९
”, खस्य	७९ एकधुराल्लुक् च ।	
”	८० शकटादण् ।	
”	८१ हलसीराट्ठक् ।	
” यत्	८२ संज्ञायां जन्याः ।	
तत् यत्	८३ विध्यत्यधनुषा ।	
तत् यत्	८४ धनगणं लब्धा ।	लब्धा ८५
तत् लब्धाः	८५ अन्नाण्णः ।	
तत यत्	८६ वशङ्गतः ।	
यत्	८७ पदमस्मिन् दृश्यम् ।	
”	८८ मूलमस्याबर्हि ।	
”	८९ संज्ञायां धेनुष्या ।	
	९० गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ।	

यत्	९१ नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-बध्यानाम्य-सम-समित-संमितेषु ।	
यत्	९२ धर्म-पथ्यर्थ-न्यायादनपेते ।	
यत्	९३ छन्दसो निर्मिते	निर्मिते
निर्मिते, यत्	९४ उरऽसोण् च ।	
यत्	९५ हृदयस्य प्रियः ।	हृदयस्य
हृदयस्य, यत्	९६ बन्धने चर्षौ ।	
यत्	९७ मत-जन-हलात् करण-जल्प-कर्षेषु ।	
यत्	९८ तत्र साधुः ।	तत्र ११ साधुः १०
तत्र साधुः	९९ प्रतिजनादिभ्यः खञ् । (१)	
तत्र साधु	१०० भक्ताण्णः ।	
,, ,,	१०१ परिषदो ण्यः ।	
,, ,,	१०२ कथादिभ्यष्ठक् । (२)	
,, ,,	१०३ गुडादिभ्यष्ठञ् । (३)	
,, ,,	१०४ पथ्यतिथि-वसति-स्वपतेर्ढञ् ।	

१—(गणपा०) प्रतिजन, इदंयुग, संयुग, समयुग, परयुग, परकुल, स्यकुल, अमुष्यकुल, सर्वजन, विश्वजन, महाजन, पञ्चजन। इति प्रतिजना

२—(गणपा०) कथा, विकथा, विश्वकथा, संकथा, वितण्डा, कुष्ठ (कुष्टवित् कुष्टचित्, का०), जनवाद, जनेवाद, जनोवाद, वृत्ति, संग्रह, (स का०), गुण, गण, आयुर्वेद। इति कथादिः।

३—(गणपा०) गुड, कुल्माष, सक्तु, अपूप, मांसौदन, इक्षु, वेणु, सं संघात, संकाम, संवाह, प्रवास, निवास, उपवास। इति गुडादिः।

त्र, साधुः	१०५ सभाया यः ।	सभायाः १०६
भायाः, तत्र साधुः	१०६ ढश्छन्दसि ।	
त्र, यत्	१०७ समानतीर्थे वासी ।	
, ,,	१०८ समानोदरे शयित ओ चोदात्तः ।	शयितः १०९
त्र शयितः	१०९ सोदराद्यः ।	
त्र यत्	११० भवे च छन्दसि ।	भवे ११८ छन्दसि १४४
त्र,भवे,छ-सि	१११ पाथो-नदीभ्यां ड्यण् ।	
,, ,, ,,	११२ वेशन्त-हिमवद्भ्यामण् ।	
त्र भवे छ-सि	११३ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ।	
त्र भवे,छ-सि	११४ सगर्भ-सयूथ-सनुताद्यन् ।	
त्र भवे,छ-सि	११५ तुग्राद्घन् ।	
, ,, ,,	११६ अग्राद्यत् ।	अग्रात् ११७
, ,, ,,	११७ घच्छौ च ।	
, ,, ,,	११८ समुद्राभ्राद् घः ।	
त्र,यत्,छ-सि	११९ वर्हिषि दत्तम् ।	
त् छ-सि	१२० दूतस्य भागकर्मणी ।	
, ,,	१२१ रक्षोयातूनां हननी ।	
, ,,	१२२ रेवती-जगती-हविष्याभ्यः प्रशस्ये ।	
,,	१२३ असुरस्य स्वम् ।	असुरस्य १२४
सुरस्य,छ-सि	१२४ मायायामण् ।	
त्. छ-सि	१२५ तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः ।	तद्वा-मतोः १२६

त-तो छ-सि	१२६ अश्विमानण् ।
छन्दसि	१२७ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ।
,, यत्	१२८ मत्वर्थे मासतन्वोः ।
म-र्थे,छ-सि,यत्	१२९ मधोर्ञ च ।
,, ,,	१३० ओजसोऽहनि यत्खौ ।
मत्वर्थे, छ-सि	१३१ वेशोयशआदेर्भगाद्यल् ।
,, ,, वे-त्	१३२ ख च ।
छन्दसि खः	१३३ पूर्वैः कृतमिनियौ च ।
,, , यत्	१३४ अद्भिः संस्कृतम् ।
छन्दसि	१३५ सहस्रेण संमितौ घः ।
स-ण,घः छ-सि	१३६ मतौ च ।
छन्दसि	१३७ सोममर्हति यः ।
छ-सि,सो-म् यः	१३८ मये च ।
मये, यत्, छ-सि	१३९ मधोः ।
मये, यत्, छ-सि	१४० वसोः समूहे च । (१)
छन्दसि	१४१ नक्षत्राद् घः ।
,	१४२ सर्वदेवात् तातिल् ।
,, ता-ल्	१४३ शिव-शमरिष्टस्य करे ।
छ-सि, शि-स्य, ता-ल्	१४४ भावे च ।

इति चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः

चतुर्थाध्यायश्च समाप्तः ।

१—(वा०) (क) अक्षरसमूहे छन्दसः स्वार्थ उपसंख्यानम् । (ख) मधुशब्दादपि यद्वक्तव्यः ।

अथ पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(आर्हीये छयद्विधिप्रकरणम्)

	१ प्राक्क्रीताच्छः ।	छः ३६
	२ उगवादिभ्यो यत् । (१)	यत् ४
यत्	३ कम्बलाच्च संज्ञायाम् ।	
,,	४ विभाषा हविरपूपादिभ्यः । (२)	
छः	५ तस्मै हितम् ।	तस्मै हितम् ११
तस्मै हितम्	६ शरीरावयवाद्यत् ।	यत् ७
त-हि, यत्	७ खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्म-णश्च ।	
तस्मै हितम्	८ अजाविभ्यां थ्यन् ।	
तस्मै हितम्	९ आत्मन्विश्वजन-भोगोत्तरपदात् खः । (३)	

१—(गणपा०) गो, हविस, अक्षर, विष, वर्हिस्, अष्टका, स्खवा (स्खव का०), युग, मेधा, स्रुच्, (स्रक्, का०,) नाभि नभं च, शुनः सम्प्रसारणम् वा च दीर्घत्वं तत्सन्नियोगेन चान्तोदात्तत्त्वम्। ऊधसोऽनङ् च। कूप, खद, दर (उवर का०), खर, असुर, अध्वन् (अध्वा का०), क्षर, वेद, बीज, दीप्त (दसि), स्कन्द। इति गवादिः।

२—(गणपा०) अपूप, तण्डुल, अभ्यूष (अभ्युष), अभ्योष, अभ्येष, पृथुक, ओदन, सूप, पूप, किण्व, प्रदीप, मसल, कटक, कर्णवेष्टक, इर्गल, अर्गल, अन्नविकारेभ्यश्च। यूप, स्थूणा, दीप (पीप का०), अश्व, पत्र, कट, अयःस्थूण। इत्यपूपादिः।

३—(वा०) (क) खविधाने पंचजनादुपसंख्यानम्। (ख) सर्वजनाट्ठञ्

तस्मै हितम्	१० सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ । (१)	
,,	११ माणव-चरकाभ्यां खञ् ।	
छः	१२ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ।	तदर्थं वि-तौ
तदर्थं वि-तौ	१३ छदिरुपधि-बलेर्ढञ् ।	
,,	१४ ऋषभोपानहोर्ञ्यः ।	
,,	१५ चर्मणोऽञ् ।	
छः	१६ तदस्य तदस्मिन्स्यादिति ।	तदस्य तद स्यात् १७
तदस्य त-त्	१७ परिखाया ढञ् ।	
	(आर्हीय—)	
	१८ प्राग्वतेष्ठञ् ।	ठञ् ११४
	१९ आर्हादगोपुच्छ-संख्या-परिमाणाट्ठक्	ठक् ७१
ठक्, आर्हीयेषु	२० असमासे निष्कादिभ्यः । (२)	
आर्हीयेषु	२१ शताच्च ठन्यतावशते । (३)	
,,	२२ संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ।	
,,	२३ वतोरिड्वा ।	
,,	२४ विंशति-त्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् ।	

खश्च (ग) महाजनान्नित्यं ठञ्वक्तव्यः। (घ) राजाचार्याभ्यां नित्यम् (
आचार्यादणत्वञ्च।

१—(वा०) (क) सर्वाण्णस्य वा वचनम् (ख) पुरुषाद्वधविक
समूहतेनकृतेष्विति वक्तव्यम्।

२—(गणपा०) निष्क, पण, पाद, माष, वाह, द्रोण (वाहद्रोण का०
यष्टिः। इति निष्कादिः।

३—(वा०) शतप्रतिषेधेऽन्यशतत्वेऽप्रतिषेधः।

आर्हीयेषु	२५ कंसाट्टिठन् । (१)	
,,	२६ शूर्पादञन्यतरस्याम् ।	
,,	२७ शतमान-विंशतिक-सहस्र-वसनादण् ।	
आर्हीयस्य	२८ अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुगसञ्ज्ञायाम्।	अ-गोः ३५ लुक् ३१
अ-गोः, आ-स्य, लुक्	२९ विभाषा कार्षापण-सहस्राभ्याम्। (२)	विभाषा ३१
द्विगोः, वा, आ०, लुक्	३० द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् । (३)	द्वि-त् ३१
द्वि-त्, द्विगोः, आ-स्य, द्वा, लुक्	३१ बिस्ताच्च ।	
अ-गोः, आ-षु	३२ विंशतिकात्खः ।	
,, ,,	३३ खार्या ईकन् । (४)	
अ-गोः, आ-षु	३४ पण-पाद-माष-शताद्यत् ।	यत् ३६
,, ,, यत्	३५ शाणाद्वा । (५)	शाणात् ३६
शा-त्,आ-षु ,,	३६ द्वित्रिपूर्वादण् च ।	
ठञ्	३७ तेन क्रीतम् ।	
	३८ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ।(६)	तस्यनि-तौ ४१

१—(वा०) (क) अर्धाच्चेति वक्तव्यम् । (ख) कार्षापणाद्वा टिठन् वक्तव्यः। प्रतिशब्दश्चास्यादेशो वा वक्तव्यः।

२—(वा०) कार्षापणसहस्राभ्यां सुवर्णशतमानयोरुपसंख्यानम् ।

३—(वा०) तत्र च बहुग्रहणम् ।

४—(वा०) (क) केवलाच्चेति वक्तव्यम् (ख) काकिण्याश्चोपसंख्यानम् । (ग) केवलायाश्च ।

५—(वा०) शताच्चेति वक्तव्यम् ।

६—(वा०) (क) तस्य निमित्तप्रकरणे वातपित्तश्लेष्मभ्यः शमनकोपनयोरुपसंख्यानम् । (ख) सन्निपाताच्चेति वक्तव्यम् ।

तस्य-तौ	**३९ गोद्व्यचोऽसंख्या-परिमाणाश्वादेर्यत् । (१)**	यत् ४०
" यत्	**४० पुत्राच्छ च ।**	
"	**४१ सर्वभूमि-पृथिवीभ्यामणञौ ।**	सर्वभू-णञौ
सर्व-णञौ	**४२ तस्येश्वरः ।**	
सर्व-णञौ	**४३ तत्र विदित इति च ।**	तत्र विदितः
तत्र विदितः	**४४ लोक-सर्वलोकाट्ठञ् ।**	
ठञ्	**४५ तस्य वापः ।**	तस्य वापः ४६
तस्य वापः	**४६ पात्रात्ष्ठन्**	
ठक्	**४७ तदस्मिन् वृद्ध्याय-लाभ-शुल्कोपदा दीयते । (२)**	तद-यते ४९
तद-ते	**४८ पूरणार्धाट् ठन् ।**	ठन् ४९
तद-ते, ठन्	**४९ भागाद्यच्च ।**	
ठक्	**५० तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः । (३)**	तत् ५५. ह ति ५१
तद्ध-ति	**५१ वस्न-द्रव्याभ्यां ठन्कनौ ।**	
तत्, ठक्	**५२ संभवत्यवहरति-पचति ।**	स-ति ५५
तत्, स-ति	**५३ आढकाचित-पात्रात् खोऽन्यतरस्याम् ।**	आ-त् ५४

१—(वा०) ब्रह्मवर्चसादुपसंख्यानम् ।

(गणपा०) अश्व, अश्मन्, गण, ऊर्णा, उमा, गंगा (भङ्ग, भंगा), (वर्ष का०), वसु । इत्यश्वादिः ।

२—(वा०) चतुर्थ्यर्थं उपसंख्यानम् ।

३—(गणपा०) वंश, कुटज, बल्वज, मूल, स्थूणा (स्थूण का०), अश्मन्, अश्व, श्लक्ष्ण, इक्षु, खट्वा । इति वंशादिः ।

तत्,आ-त्,स-ति	५४ द्विगोः ष्ठंश्च ।	द्विगोः, ष्ठन् ५५
तत्, स-ति, ष्ठन् द्विगोः	५५ कुलिजाल्लुक्खौ च ।	
य-हितः	५६ सोऽस्यांश-वस्न-भृतयः ।	
य-हितः	५७ तदस्य परिमाणम् ।	तद-णम् ६२
तद-म्, कः	५८ संख्यायाः संज्ञा-संघ-सूत्राध्ययनेषु । (१)	
,,	५९ पंक्ति-विंशति-त्रिंशत्-चत्वारिंशत्-पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति-नवति-शतम् ।	
,,	६० पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ।	वर्गे ६१
वर्गे, त-म्	६१ सप्तनोऽञ् छन्दसि ।	
तद-म्	६२ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण् ।	
यथाविहितः	६३ तदर्हति ।	तद् ७६, अ-ति ७१
तत्,अर्हति,यथा-तः	६४ छेदादिभ्यो नित्यम् । (२)	नि-म् ६५
तत्, नित्यमर्हति	६५ शीर्षच्छेदाद्यच्च ।	यत् ७०
तद् अर्हति	६६ दण्डादिभ्यो यः । (३)	
,, ,, यत्	६७ छन्दसि च ।	

१—(वा०) (क) स्तोमे डविधिः पंचदशाद्यर्थः। (ख) शन्शतोर्डिनिश्छन्दसि। (ग) विंशतेश्चेति वक्तव्यम्।

२—(गणपा०) छेद, भेद, द्रोह, दोह, नर्त (नर्ति, वर्त का०), कर्ष, तीर्थ, संप्रयोग, विप्रयोग, प्रयोग, विप्रकर्ष, प्रेषण, संप्रश्न, विप्रश्न, विकर्ष, प्रकर्ष, विराग विरङ्गं च। इति छेदादिः।

३—(गणपा०) दण्ड, मुसल, मधुपर्क, कशा, अर्घ, मेघ, मेधा, सुवर्ण, उदक, वध, युग, गुहा, भाग, इभ, भंग, इति दण्डादिः।

तदर्हति यत्	६८ पात्राद्घंश्च ।
,, ,,	६९ कडङ्कर-दक्षिणाच्छ च ।
तदर्हति, छयतौ	७० स्थालीबिलात् ।
तदर्हति	७१ यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ । (१)
	(ठञधिकार—)
,, ,, ठञ्	७२ पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति ।
तत्, ठञ्	७३ संशयमापन्नः ।
तत्, ठञ्	७४ योजनङ्गच्छति । (२)
तत्, गच्छति	७५ पथः ष्कन् ।
तत्, ग-ति, पथः	७६ पन्थो ण नित्यम् ।
गच्छति, ठञ्	७७ उत्तरपथेनाहृतं च । (३)
	७८ कालात् ।
कालात्, ठञ्	७९ तेन निर्वृत्तम् ।
,,	८० तमधीष्टो भृतो भूतो भावी ।
तम्, भूते	८१ मासाद्वयसि यत्खञौ ।
तम्, मासात्, वयसि, भूते	८२ द्विगोर्यप् ।
वयसि, तम्, भूते यत्ठञौ	८३ षण्मासाण्ण्यच्च ।
तम्, ष-त्, ण्यत्	८४ अवयसि ठंश्च ।

१—(वा०) यज्ञर्त्विग्भ्यां तत्कर्मार्हतीत्युपसंख्यानम् ।

२—(वा०) (क) योजनं गच्छतीति क्रोशशतयोजनशतयोरुपसं (ख) ततोऽभिगमनमर्हतीति च ।

३—(वा०) (क) आहृतप्रकरणे वारिजंगलस्थलकान्तारपूर्वपदादु नम् । (ख) अजपथशङ्कुपथाभ्याञ्च (ग) मधुकमरिचयोरण् स्थलात् ।

तम्, अधी-दिषु	८५ समायाः खः ।	स-याः ८६, खः ८८
तम्, समायाः, निर्वृत्तादिषु	८६ द्विगोर्वा ।	द्विगोः ८९ वा ८८
तम्, द्विगोः नि-षु वा, खः	८७ रात्र्यहःसंवत्सराच्च ।	
तम्, द्विगोः, नि-षु, वा, खः	८८ वर्षाल्लुक् च ।	वर्षात् ८९
तम्, तेन, नि-षु, व-त्, द्विगोः,लुक्	८९ चित्तवति नित्यम् ।	
	९० षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ।	
निर्वृत्तादिषु	९१ वत्सरान्ताच्छश्छंदसि ।	वत्स-त्,छ-सि९२
छः, वत्स-त्, नि-षु	९२ संपरिपूर्वात्ख च ।	
ठञ्	९३ तेन परिजय्य-लभ्य-कार्य-सुकरम् ।	
ठञ्, कालात्	९४ तदस्य ब्रह्मचर्यम् । (१)	
ठञ्	९५ तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः।	
कालात्,	९६ तत्र च दीयते कार्यं भववत् ।	तत्र ९७ दी-म् ९८
तत्र दीयते कार्यम्	९७ व्युष्टादिभ्योऽण् । (२)	
दीयते कार्यम्	९८ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ।	

१—(वा०) (क) तदस्य ब्रह्मचर्यमिति महानाम्न्यादिभ्य उपसंख्यानम् । (ख) तच्चरतीति च । (ग) अवान्तरदीक्षादिभ्यो डिनिः । (घ) अष्टाचत्वारिंशतो ड्वुंश्च । (ङ) चातुर्मास्यानां यलोपश्च । (च) चतुर्मासाण्ण्यो यज्ञे तत्र भवे । (छ) संज्ञायामण् वक्तव्यः ।

२—(वा०) अण्प्रकरणे अग्निपदादिभ्य उपसंख्यानम् ।

(गणपा०) व्युष्ट, नित्य, निष्क्रमण, प्रवेशन, उपसंक्रमण, तीर्थ, अस्तरण, (आस्तरण का०), संग्राम, संघात, अग्निपद, पीलुमूल, प्रवास, उपवास, संभ्रम, शीर्ष । इति व्युष्टादिः ।

तेन, ठञ्	९९ संपादिनि ।	सम्पादिनि १०
तेन, सम्पादिनि	१०० कर्मवेषाद्यत् ।	
ठञ्	१०१ तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः । (१)	तस्मै, प्र-ति १०
तस्मै, प्र-ति, ठञ्	१०२ योगाद्यच्च ।	
,, ,, ,,	१०३ कर्मण उकञ् ।	
ठञ्	१०४ समयस्तदस्य प्राप्तम् ।	तदस्य ११५ प्राप्तम् १०७
तदस्यप्राप्तम्	१०५ ऋतोरण् । (२)	ऋतोः १०६
,, ऋतोः	१०६ छन्दसि घस् ।	
तद-म्	१०७ कालाद्यत् ।	कालात् १०८
तदस्य, कालात्	१०८ प्रकृष्टे ठञ् ।	
तदस्य, ठञ्	१०९ प्रयोजनम् ।	प्र-म् ११४
तदस्य, प्रयो-म्	११० विशाखाषाढादण् मन्थदण्डयोः । (३)	
तदस्य, प्र-म्	१११ अनुप्रवचनादिभ्यश्छः । (४)	छः ११२
तदस्य प्र-म्, छः	११२ समापनात्सपूर्वपदात् ।	

१—(गणपा०) संताप, संनाह, संग्राम, संयोग, संपराय, संवेशन, संपेष, निष्पेष, सर्ग, निसर्ग, विसर्ग, उपसर्ग, प्रवास, उपवास, संघात, संवेष, संवाह, संमोदन, सक्तु, मांसौदनाद्विगृहीतादपि, असर्ग। इति संतापादिः।

२—(वा०) तदस्य प्रकरणे उपवस्त्रादिभ्य उपसंख्यानम्।

३—(वा०) चूडादिभ्य उपसंख्यानम्।

४—(गणपा०) अनुप्रवचन, उत्थापन, उपस्थापन, संवेशन, प्रवेशन, अनुप्रवेशन, अनुवासन, अनुवचन, अनुवाचन, अन्वारोहण, प्रारम्भण, आरम्भण, आरोहण, अनुवेशन, अनुवादन, प्ररोहण। इत्यनुप्रवचनादिः।

(वा०) (क) छप्रकरणे विशिपूरिपतिरुहिप्रकृतेरनात्सपूर्वपदादुपसंख्यानम्। (ख) स्वर्गादिभ्यो यत्। (ग) पुण्याहवाचनादिभ्यो लुक्।

तदस्य, प्र-म्	११३ ऐकागारिकट् चौरे।	
तदस्य, प्र-म्	११४ आकालिकडाद्यन्तवचने। (१)	
	(नञ्स्नञाधिकारः)	
	११५ तेन तुल्यं क्रियाचेद्वतिः।	वतिः ११८
वतिः	११६ तत्र तस्येव।	
,,	११७ तदर्हम्।	
,,	११८ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे।	
	११९ तस्य भावस्त्वतलौ।	तस्यभावस्त्वतलौ १३६
	१२० आ च त्वात्।	
	१२१ न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुर-संगत-लवण-वट-युध-कत-रस-लसेभ्यः।	
तस्यभावः	१२२ पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा। (२)	इमनिच् १२४
त-वः, इ-च्	१२३ वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ्च। (३)	ष्यञ् १२४
,, , ,,	१२४ गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च। (४)	क-णि १३६

१—(वा०) आकालाट्ठँश्च।

२—(गणपा०) पृथु, मृदु, महत्, पटु, तनु, लघु, बहु, साधु, आशु (आसु), उरु (उरू का०), गुरु बहुल, खण्ड, दण्ड, चण्ड, अकिंचन, बाल, होड, पाक, वत्स, मन्द, स्वादु, ह्रस्व, दीर्घ, प्रिय, वृष, ऋजु, क्षिप्र, क्षुद्र, अणु, वेणु इति पृथ्वादिः।

३—(गणपा०) दृढ, वृढ, परिवृढ, भृश, कृश, वक्र (चक्र का०), शुक्र, चुक्र, आम्र, कृष्ट, (आकृष्ट का०), लवण, ताम्र, शीत, उष्ण, जड, बधिर, पण्डित, मधुर, मूर्ख, मूक, वेर्यातलात, (लाभ का०) मतिमनःशारदानाम्। समो मतिमनसोः। जवन, अम्ल, बाल, तरुण, मन्द स्थिर, बहुल, दीर्घ। इति दृढादिः।

४—(गणपा०) ब्राह्मण, बाडव, माणव, अर्हतो नुम् च। चोर, धूर्त, आराधय, विराधय, अपराधय, उपराधय, एकभाव, द्विभाव, त्रिभाव, अन्यभाव, अक्षेत्रज्ञ, संवादिन्, संवेशिन्, संभाषिन्, बहुभाषिन्, शीर्षघातिन्, (शीर्ष-

तस्य, भा-णोः १२५ स्तेनाद्यन्नलोपश्च ।
,, ,, १२६ सख्युर्यः । (१)
,, ,, १२७ कपि-ज्ञात्योर्ढक् ।
,, ,, १२८ पत्यन्त-पुरोहितादिभ्यो यक् । (२)

पातिन् का०), संघातिन, समस्थ, विषमस्थ, परमस्थ, मध्यमस्थ, अनीत कुशल, चपल, निपुण, पिशुन, कुतूहल, क्षेत्रज्ञ, निश्न, बालिश, अलस, पु रुष, कापुरुष, राजन्, गणपति, अधिपति, गडुल, दायाद, विशस्ति, वि विपात, निपात, सर्ववेदादिभ्यः स्वार्थे। चतुर्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च। शौं मूक, कपि, विशसि, पिशाच, विशाल, धनपति, नरपति, निव, निधान, वि स्वभाव, निघातिन, राजपुरुष, विशाय, विशात, विजात, नयात, सु दीन, विदग्ध, उचित, समग्र, शील, तत्पर, इदंपर, यथातथा, पुरस्, पुनः अभीक्ष्ण, तरतम, प्रकाम, यथाकाम, निश्कुल, स्वराज, महाराज, युवरा सम्राज, अविदूर, अपिशुन, अनृशंस, अयथातथ, अयथापुर, स्वधर्म, कूल, परिमण्डल, विश्वरूप, ऋत्विज, उदासीन, ईश्वर, प्रतिभू, सा मानुष, आस्तिक, नास्तिक, युगपद, पूर्वाधर, उत्तराधर, आकृतिगणः। ब्राह्मणादिः।

(वा०) ब्राह्मणादिषु चातुर्वर्ण्यादीनां उपसंख्यानम्। (ख) अर्हतो नुम् च

१—(वा०) दूतवणिग्भ्यांचेति वक्तव्यम्।

२—(गणपा०) पुरोहित, राजासे, ग्रामिक, (संग्रामिक का०), पि सुहित, बाल, मन्द (बालमन्द), खण्डिक, दण्डिक, वर्मिक (वर्मित का कर्मिक, धर्मिक, शिलिक, (शीलिक का०), सूतिक, मूलिक, तिलक (ति का०), अंजलिक, अंजनिक, (अंजतिका का०), ऋषिक (रूपिक), (पुत्रक का०), अविक, छत्रिक, पर्षिक, पथिक (पथिका का०), प्रतिक, सारथि (सारथिक का०), आस्तिक, सूचिक, संरक्ष, सूचक, रक्षसूचक का०), नास्तिक, अजानिक, शाक्वर, (शाक्वर का०), चूडिक, एषिक, मिलिक, स्तनिक, चूडितकि, कृषिक, पूलिक, पत्रिक, पक्षिक, जलिक, शर्मिक, तिष्विक, प्रचिक, प्रविक, परिक्षक, पूजनिक, स्वरिक, इति पुरोहितादिः।

तस्य, भा-णोः १२९ प्राणभृज्जाति-वयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्। (१)

" " १३० हायनान्त-युवादिभ्योऽण्। (२) अण् १३१

" " अण् १३१ इगन्ताच्च लघुपूर्वात्।

" " " १३२ योपधाद्गुरूपोत्तमाद्वुञ् (३)। वुञ् १३४

" " वुञ् १३३ द्वन्द्व-मनोज्ञादिभ्यश्च। (४)

" " " १३४ गोत्र-चरणाच्छ्लाघात्याकार-तदवेतेषु।

" " १३५ होत्राभ्यश्छः।

" " १३६ ब्रह्मणस्त्वः।

इति पंचमाध्यायस्य प्रथमः पादः

१—(गणपा०) उद्गातृ, उन्नेतृ, प्रतिहर्तृ, प्रशास्तृ, होतृ, पोतृ, हर्तृ, (कर्तृ का०), रथगणक, पत्तिगणक, (पक्षिगणक, पत्रिगणक, का०), सुष्ठु, दुष्ठु, अध्वर्यु, वधू, सुभगमंत्रे। इत्युद्गात्रादिः।

२—(गण०) युवन्, स्थविर, होतृ, यजमान, पुरुषासे (पुरुष असमासे) भ्रातृ (भातृ का०), कुतुक, (कतक का०), श्रमण (श्रणम), कटुक, कमण्डलु, कुस्त्री, सुस्त्री, दुःस्त्री, सुहृदय, दुर्हृदय, सुहृद, दुर्हृद, सुभ्रातृ, दुर्भ्रातृ, वृषल, परिव्राजक, सब्रह्मचारिन्, अनृशंस, हृदयासे, (हृदय असमासे) कुशल, चपल, निपुण, पिशुन, कुतूहल, क्षेत्रज्ञ, श्रोत्रियस्य यलोपश्च। ातृ, कृतक, कुचुक, कन्दुक, मिथुन, कुलली, महस्, कितव, पोत, इति युवादिः।

३—(वा०) सहायाद्वेति वक्तव्यम्।

४—(गण०) मनोज्ञ, प्रियरूप, अभिरूप, कल्याण, मेधाविन्, आढ्य, पुत्र, छान्दस, छात्र, श्रोत्रिय, चोर, धूर्त, विश्वदेव, (वैश्वदेव का०), वन्, कुपुत्र, ग्रामपुत्र, ग्रामकुलाल, ग्रामषण्ड (ग्रामड, ग्रामखण्ड का०), ामकुमार, सुकुमार, बहुल, अवश्यपुत्र, (अवश्य का०), अमुष्यपुत्र, अमुष्यकुल, सारपुत्र, शतपथ, कुशल, अहोपुरुष, इति मनोज्ञादिः।

अथ द्वितीयः पादः

	१ धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्।	भ-ने क्षेत्रे
भवने क्षेत्रे	२ व्रीहिशाल्योर्ढक्।	
,,	३ यव-यवक-षष्टिकाद्यत्।	यत् ४
,, यत्	४ विभाषा तिल-माषोमा-भङ्गाणुभ्यः।	
	५ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ।	
	६ यथामुख-संमुखस्य दर्शनःखः।	खः १५
खः	७ तत्सर्वादेः पथ्यङ्ग-कर्म-पत्र-पात्रं व्याप्नोति।	तद् १७
तद्, खः	८ आप्रपदं प्राप्नोति।	
,, ,,	९ अनुपद-सर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयति-नेयेषु।	
,, ,,	१० परोवर-परम्पर-पुत्रपौत्रमनुभवति।	
,, ,,	११ अवारपारात्यन्तानुकामं गामी। (१)	
खः	१२ समांसमां विजायते। (२)	विजायते
खः विजायते	१३ अद्यश्वीनावष्टब्धे।	
खः	१४ आगवीनः।	
खः	१५ अनुग्वलंगामी।	अलङ्गामी

१—(वा०) (क) विपरीताच्च। (ख) विगृहीतादपीष्यते।

२—(वा०) (क) पूर्वपदस्य यलोपवचनम्। (ख) अनुत्पत्तावुत्तर च वा वचनम्।

तद्, अलङ्गामी	१६ अध्वनो यत्खौ ।	यत्खौ १७
,, ,, यत्खौ	१७ अभ्यमित्राच्छ च ।	
	१८ गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे ।	खञ् २३
खञ्	१९ अश्वस्यैकाहगमः ।	
,,	२० शालीन-कौपीने अधृष्टाकार्ययोः ।	
,,	२१ व्रातेन जीवति	
,,	२२ साप्तपदीनं सख्यम् ।	
,,	२३ हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् ।	
,,	२४ तस्य पाकमूले पील्वादि-कर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ । (१)	तस्य मूलम् २५
तस्य, मूलम्	२५ पक्षात्तिः ।	
	२६ तेन वित्तश्चुञ्चुप्-चणपौ ।	
	२७ वि-नञ्भ्यां नानाञौ न सह ।	
	२८ वेः शालच्छङ्कटचौ ।	वेः २९
वेः	२९ संप्रोदश्च कटच् ।(२)	कटच् ३०
कटच्	३० अवात् कुटारच्च ।	अवात् ३१

१—(गणपा०) पीलु, कर्कन्धु, (कर्कन्धू) शमी, करीर, कुवल (बल), बदर, अश्वत्थ, खदिर, इति पील्वादिः।

कर्ण, अक्षि, नख, मुख, केश, पाद, गुल्फ, भ्रू, भृङ्ग (भ्रूभङ्ग), दन्त, ओष्ठ, पृष्ठ, मख, अङ्गुष्ठ, इति कर्णादिः।

२—(वा०) (क) कटच्प्रकरणेऽलाबूतिलोमाभ्यो रजस्युपसंख्यानम्। (ख) भङ्गायाश्च। (ग) गोष्ठादयः स्थानादिषु पशुनामादिभ्य उपसंख्यानम्। (घ) संघे कटज् वक्तव्यः। (ङ) विस्तारे पटज्वक्तव्यः। (च) द्वित्वे गोयुगच्। (छ) प्रकृत्यर्थस्य षट्त्वे षड्गवच्। (ज) विकारे स्नेहने तैलच् (झ) संभवने क्षेत्रे शाकटशब्दश्च प्रत्ययो वक्तव्यः (ञ) शाकिनशब्दश्च प्रत्ययो वक्तव्यः।

अवात्	३१ नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्-नाटञ्-भ्रटचः।	न-याः ३३, म् ३४
न-याः, सञ्ज्ञायाम्	३२ नेर्बिडज् बिरीसचौ।	नेः ३३
नेः, न-याः, स-म्	३३ इनच्-पिटच्-चिक-चिच। (१)	
सञ्ज्ञायाम्	३४ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः।	
	३५ कर्मणि घटोऽठच्।	
	३६ तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्। (२)	त-स्य ३८
तदस्य	३७ प्रमाणे द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रचः। (३)	प्र-णे, द्व-चः

१—(वा०) (क) इनच्पिटच्काः चिकचिचिकादेशाश्च वक्तव्याः (ख) क्लिन्नस्य चिल्पिल्लश्चास्य चक्षुषी। (ग) चुलादेशो वक्तव्यः।

२—(गणपा०) तारका, पुष्प, कर्णक, मंजरी, ऋजीष, क्षण, सू (सूचक का०), मूत्र, निष्क्रमण, पुरीष, उच्चार, प्रचार, विचार, कुड्म (कड्मल), कण्टक, मुसल, मुकुल, कुसुम, कुतूहल, स्तवक (स्तबक), किसल पल्लव, खण्ड, वेग, निद्रा, मुद्रा, बुभुक्षा, धेनुष्या, पिपासा, श्रद्धा, अभ्र, पुल अंगारक, वर्णक, द्रोह, दोह, सुख, दुःख, उत्कण्ठा, (उत्कण्ठ का०), भ व्याधि, वर्मन्, व्रण, गौरव, शास्त्र, तरंग, तिलक, चन्द्रक, (चन्द्र का० अन्धकार, गर्व, मुकुर, (कुमुर), हर्ष, उत्कर्ष, रण, कुवलय, गर्ध, क्षुध् (क्षु का०), सीमन्त, ज्वर, गर, रोग, रोमाञ्च, पण्डा, कज्जल, तृष्, कोर कल्लोल, स्थपुट, फल, कंचुक, भृंगार, अंकुर, शैवल, बकुल, श्वभ्र, आरा कलंक, कर्दम, कन्दल, मूर्छा, अंगार, हस्तक, (हस्त का०), प्रतिबिम्ब, वि तन्त्र (विघ्न, तन्त्र), प्रत्यय, दीक्षा, गर्ज, गर्भादप्राणिनि। तन्द्रा, लव कर, आन्दोल, गोर, राग। आकृतिगणः, इति तारकादिः।

३—(वा०) (क) प्रमाणे लो वक्तव्यः। (ख) द्विगोर्नित्यम्। (ग डट् स्तोमे वक्तव्यः (घ) शच्छनोर्डिनिर्वक्तव्यः। (ङ) विंशतेश्चेति वक्तव्य (च) प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्यायाश्चापि संशये मात्रज्वक्तव्यः। (छ) वत्वन्ता स्वार्थे द्वयसज्मात्रचौ बहुलम्।

स्य प्रमाणे द्व-चः	३८ पुरुषहस्तिभ्यामण् च ।	
स्य	३९ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् । (१)	वतुप् ४१
तुपः	४० किमिदंभ्यां वो घः ।	वो घः ४१
दस्य,वतुप्,वोघः	४१ किमः संख्यापरिमाणे डति च ।	
''	४२ संख्याया अवयवे तयप् ।	
	४३ द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा ।	तयस्या यच ४४
य-च्	४४ उभादुदात्तो नित्यम्	

(अथ मत्वर्थीयप्रत्यय—)

	४५ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः ।	तदस्मि-कम् ४६ डः ४६
दं-म्, डः	४६ शदन्तविंशतेश्च । (२)	
दस्य	४७ संख्याया गुणस्य निमाने मयट् ।	
	४८ तस्य पूरणे डट् ।	डट् ५३,त-णे ५८
टः	४९ नान्तादसंख्यादेर्मट् ।	ना-त् ५०
त्-त्, डटः, मट्	५० थट् च छन्दसि ।	
डटि	५१ षट्-कति-कतिपय-चतुरां थुक् । (३)	
''	५२ बहु-पूग-गण-संघस्य तिथुक् ।	
''	५३ वतोरिथुक् ।	

१—(वा०) वतुप्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्य उपसंख्यानम्।

२—(वा०) (क) शतग्रहणंऽन्तग्रहणं प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स तदादेरधिकार्यम्। (ख) संख्याग्रहणं च कर्तव्यम्।

३—(वा०) चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च।

तस्य पूरणे	५४ द्वेस्तीयः ।	तीयः ५
तीयः त-णे	५५ त्रेः सम्प्रसारणञ्च ।	
डटः	५६ विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ।	तमट् ५
” तमट्	५७ नित्यं शतादि-मासार्ध-मास-संवत्सराच्च ।	
” ”	५८ षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः ।	
	५९ मतौ छः सूक्तसाम्नोः ।	मतौ, छ
मतौ, छस्य	६० अध्यायानुवाकयोर्लुक् ।	अ-योः
मतौ अ-योः	६१ विमुक्तादिभ्योऽण् । (१)	
मतौ, अ-योः	६२ गोषदादिभ्यो वुन् । (२)	वुन् ६
वुन्	६३ तत्र कुशलः पथः ।	तत्र ६७, ६४
तत्र, कुशलः	६४ आकर्षादिभ्यः कन् । (३)*	कन् ६

१—(गणपा०) विमुक्त, देवासुर, रक्षोऽसुर, उपसद, सुवर्ण (सुपर्ण परिसारक (परिषादक का०), सदसत्, वसु, मरुत् (मरुत्वत् का०), प वसुमत्, महीयत्व (महीयल का०), सत्वत्, वर्हवत्, दशार्ण, दशार्ह, (दशार्हपयस् का०), हविर्धान, पतत्रिन्, पतत्रि का०), महित्री, अ सोमापूषन्, इडा, अग्नाविष्णु (अग्नाविष्णू का०), उर्वशी, वृत्रहन् (का०), मित्री, सोम, हेतु, इति विमुक्तादिः।

२—(गणपा०) गोषद् (गोषद का०), इषेत्वा (इषेत्व का०), मात देवस्यत्वा, देवीरापः, कृष्णोऽस्या खरेष्ठः, देवीं (दैवीं का०), धिय धिया (का०), रक्षोहण, युञ्जान, अञ्जान, प्रभूत, प्रतूर्त, कृशानु (कृशाकु का०), सहस्रशीर्षा, वातस्य ते, कृशाश्व, स्वाहाप्राण, प्रसुप्त, इति गोषदादिः।

३—(गणपा०) आकर्ष (आकष), त्सरु, पिशाच, (पिपासा का०), अशनिड, अश्मन्, निचय, (विचय का०), चय, विजय, जय, आचय, न (निपाद का०') द्वीप, ह्रद, ह्राद, ह्लाद, गद्गद्, शकुनि, अय, इत्याक

*'आकषादिभ्य' इति पा०।

,, कन् ६५ धन-हिरण्यात्कामे ।

,, ,, ६६ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते । प्रसिते ६७

,, प्र-ते ६७ उदराट्ठगाद्यूने ।

कन् ६८ सस्येन परिजातः ।

8216

,, ६९ अंशं हारी ।

,, ७० तन्त्रादचिरापहृते ।

,, ७१ ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् ।

,, ७२ शीतोष्णाभ्यां कारिणि ।

,, ७३ अधिकम् ।

कन् ७४ अनुकाभिकाभीकः कमिता ।

,, ७५ पार्श्वेनान्विच्छति । अन्विच्छति ७६

अ-ति ७६ अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक्-ठञौ ।

कन् ७७ तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा ।(१)

,, ७८ स एषां ग्रामणीः ।

,, ७९ शृंखलमस्य बन्धनं करभे ।

,, ८० उत्क उन्मनाः ।

,, ८१ कालप्रयोजनाद्रोगे ।

,, ८२ तदस्मिन्नन्नं प्राये संज्ञायाम् ।(२) तद-प्रायेसं-म् ८३

तद-म्, प्राये, स-म् ८३ कुल्माषादञ् ।

८४ श्रोत्रियँश्छन्दोऽधीते ।

८५ श्राद्धमनेन भुक्तमिनि-ठनौ । अनेन ८८

१—(वा०) तावतिथेन गृह्णातीति लुक् च।

२—(वा०) प्राये संज्ञायां वटकेभ्य इनिर्वक्तव्यः।

अनेन	८६ पूर्वादिनिः ।	पू-त् ८७ इनि ९१
अनेन पू-त् इनिः	८७ सपूर्वाच्च ।	
अनेन, इनिः	८८ इष्टादिभ्यश्च । (१)	
इनिः	८९ छन्दसि परिपन्थि-परिपरिणौ पर्यवस्थातरि ।	
,,	९० अनुपद्यन्वेष्टा ।	
,,	९१ साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ।	
	९२ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ।	
	९३ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ।	
	९४ तदस्यास्त्यस्मिन्नितिमतुप् । (२)	तद-न् मतुप् १४०
तद-न् मतुप्	९५ रसादिभ्यश्च । (३)	
मत्वर्थे	९६ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ।	लच्, अ- ९९

१—(गणपा०) इष्ट, पूर्त, उपासादित, (उपसादित का०), निगदि परिगदित, परिवादित, निकथित, निषादित, निपठित, संकलित, परिकलि संरक्षित, परिरक्षित, अर्चित, गणित, अवकीर्ण, आयुक्त, गृहीत, आम्ना श्रुत, (आम्नातश्रुत का०), अधीत (अवधान का०), आसेवित, अवधारि अवकल्पित, निराकृत, उपकृत, उपाकृत, अनुयुक्त, अनुगणित, अनुपठित, व्या कुलित, परिकथित, संकल्पित, विकलित, निपतित, पठित, पूजित, परिगणि उपगणित, परित, (!) अपवारित, उपनत, निगृहीत, अपचित। इतीष्टादिः।

२—(वा०) गुणवचनेभ्यो मतुपो लुग्वक्तव्यः।

३—(गणपा०) रस, रूप, वर्ण, गन्ध, स्पर्श, शब्द, स्नेह, भाव, गुण (गुणग्रहणं रसादीनां विशेषणम्) एकाचः (स्ववत का०), इति रसादिः।

मत्वर्थे, लच्, वा　९७ सिध्मादिभ्यश्च । (१)

मत्वर्थे, लच्　९८ वत्सांसाभ्यां कामबले ।

,, लच्, अ-म्　९९ फेनादिलच्च ।

मत्वर्थे　१०० लोमादि-पामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलचः । (२)

,,　१०१ प्रज्ञा-श्रद्धार्चाभ्यो णः । (३)

,,　१०२ तपःसहस्राभ्यां विनीनी ।　तपः-म् १०३

तपः-म्, मत्वर्थे　१०३ अण् च । (४)　अण् १०५

१—(गणपा०) सिध्म, गडु, मणि, नाभि, बीज (जीव का०), वीणा, कृष्ण, निष्पाव, पांसु, पार्श्व, परशु (पर्शू) हनु, सक्तु, मांस, पांसुधमन्योर्दीर्घश्च (पार्ष्णील, धमनील का०), वातदन्तबलललाटानामूङ्च (वात—ललाटगलानामूङ्च का०) वातूल, दन्तूल, बलूल, ललाटूल, गलूल, का०), जटाघटाकटाकालाः क्षेपे। पर्ण, उदक, प्रज्ञा, सक्थि, (सक्थि, सक्थि का०), कर्ण, स्नेह, शीत, श्याम, पिङ्ग, पित्त, पुष्क (शुष्क का०), पृथु, मृदु, मञ्जु, मण्ड, पत्र, चटु, कपि, गण्डु, (कण्डु का०) ग्रन्थि, श्री, कुश, धारा, वर्ष्मन्, पक्ष्मन्, श्लेष्मन्, पेश, निष्पाद, कुण्ड, क्षुद्रजन्तूपतापयोश्च (तापाच्चेष्यते-यूकालः, मक्षिकालः, उपतापाच्च—विर्चाचकालः, विपादिकालः, मूर्छालः का०), गण्ड संज्ञा। इति सिध्मादिः।

२—(गणपा०) लोमन्, रोमन्, बभ्रु, हरि, गिरि कर्क, कपि, मुनि, तरु, इति लोमादिः।

पामन्, वामन्, वेमन्, हेमन्, श्लेष्मन्, कद्रू (कद्रु) वलि, सामन्, ऊष्मन्, कृमि, अङ्गात् कल्याणे, शाकीपलालीदद्रूणां ह्रस्वत्वं च। विश्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः (विषुण), लक्ष्म्या अच्च (लक्ष्मणः) श्रेष्ठ, पलल। इति पामादिः।

पिच्छा (पिच्छ का०), उरस्, धुवक (क्षुवक का०), ध्रुवक (ध्रुवका का०), जटाघटाकालाः (कालात् का०) क्षेपे, वर्ण उदक, पंक, प्रज्ञा। इति पिच्छादिः।

३—(वा०) वृत्तेश्च।

४—(वा०) अण्प्रकरणे ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम्।

मत्व,र्थे अण्	१०४ सिकता-शर्कराभ्याञ्च ।	सि-म् १०५
,, सि-म्	१०५ देशे लुबिलचौ च ।	
मत्वर्थे	१०६ दन्त उन्नत उरच् ।	
,,	१०७ ऊष-सुषि-मुष्क-मधो रः । (१)	
,,	१०८ द्युद्रुभ्यां मः ।	
,,	१०९ केशाद्वोऽन्यतरस्याम् । (२)	वः ११०
,, वः	११० गाण्डयजगात्संज्ञायाम् ।	
,,	१११ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ।	
,,	११२ रजः-कृष्यासुति-परिषदो वलच् । (३)	वलच् ११३
,, वलच्	११३ दन्त-शिखात्संज्ञायाम् ।	सञ्ज्ञायाम्११
	११४ ज्योत्स्ना-तमिस्रा-शृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वल-गोमिन्-मलिन-मलीमसाः ।	
,,	११५ अत इनिठनौ ।	इ-नौ ११७
मत्वर्थे, इ-नौ	११६ व्रीह्यादिभ्यश्च । (४)	

१—(वा०) (क) रप्रकरणे खमुखकुञ्जेभ्य उपसंख्यानम् । (ख) नगान्च ।+

२—(वा०) (क) 'वप्रकरणे मणिहिरण्याभ्यामुपसंख्यानम्'* (ख) छन्दसीवनिपौच । (ग) मेधारथाभ्यामिरन्निरचौ वक्तव्यौ ।

३—(वा०) वलच्प्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।

४—(गणपा०) व्रीहि, माया, शाला, (शालि का०), शिखा, माला, मेखला, केका, अष्टका, पताका, चर्मन्, कर्मन्, वर्मन्, दंष्ट्रा, संज्ञा, वडवा, कुमारी, नौ, वीणा, बलाका, यवखद (यवखवनौ), शीर्षान्नञः । हंसा, इति व्रीह्यादिः ।

+ नगपांसुपाण्डुभ्यश्चेतिवक्तव्यम् । इति काशिका ।
कच्छ्रा ह्रस्वत्वंच इति काशिका ।

* वप्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यम् । इति पाठान्तरम् ।

प-र्थे, इ-नी ११७ तुन्दादिभ्य इलच् च । (१)
" ११८ एकगोपूर्वाट् ठञ् नित्यम् ठञ् ११६
" ठञ् ११६ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ।
" १२० रूपादाहत-प्रशंसयोर्यप् । (२)
" १२१ अस्माया-मेधा-स्रजो विनिः । विनिः १२२
" विनिः १२२ बहुलं छन्दसि । (३)
त्वर्थे १२३ ऊर्णाया युस् ।
" १२४ वाचो ग्मिनिः । वाचः १२५
" वाचः १२५ आलजाटचौ बहुभाषिणि । (४)
१२६ स्वामिन्नैश्वर्ये ।
" १२७ अर्शआदिभ्योऽच् । (५)
" १२८ द्वन्द्वोपताप-गर्ह्यात् प्राणिस्था-दिनिः । इनिः १३७

१—(गणपा०) तुन्द, उदर, पिचण्ड, यव, व्रीहि। स्वाङ्गाद्विवृद्धौ (ग ०), घट, इति तुन्दादिः ।

२—(वा०) यप्प्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) छन्दोविन्प्रकरणेऽष्ट्रामेखलाद्वयोभयरुजाहृदयानां दीर्घश्च। ख) मर्मणश्चेति वक्तव्यम् ।* (ग) सर्वत्रामयस्योपसंख्यानम् । (घ) शृङ्ग-दाभ्यामारकन्वक्तव्यः। (ङ) फलबर्हाभ्यामिनज् वक्तव्यः। (च) हृदयाच्चा-न्यतरस्याम्। (छ) शीतोष्णतृप्रेभ्यस्तन्न सहत इत्यालुज्वक्तव्यः। (ज) हिमाच्चेलुः। (झ) बलाच्चोलः। (ञ) वातात्समूहे च । (ट) तप् पर्वमरुद्भ्यां क्तव्यः।

४—(वा०) कुत्सित इति वक्तव्यम् ।

५—(गणपा०) अर्शस्, उरस्, तुन्द, चतुर, पलित, जटा, घटा, घाटा, अघ अभ्र का०), कर्दम, अम्ल (आम का०), लवण, स्वाङ्गाद्धीनात्, वर्णात् । कृतिगणः । इत्यर्शआदिः ।

---

* वार्तिकमिदं क्वचिन्न दृश्यते ।

मत्वर्थे इनिः १२९ वातातीसाराभ्यां कुक् च। (१)

,, ,, १३० वयसि पूरणात्।

,, ,, १३१ सुखादिभ्यश्च। (२)

१३२ धर्म-शील-वर्णान्ताच्च।

,, ,, १३३ हस्ताज्जातौ।

,, ,, १३४ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि।

मत्वर्थे, इनिः १३५ पुष्करादिभ्यो देशे। (३)

,, इनिः १३६ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम्। (४)

,, ,, १३७ संज्ञायां मन्माभ्याम्।

,, १३८ कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः।

,, १३९ तुन्दि-वलि-वटेर्भः।

,, १४० अहं-शुभमोर्युस्।

इति पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः।

१—(वा०) पिशाचाच्चेति वक्तव्यम्।

२—(गणपा०) सुख, दुःख, तृप्त, कृच्छ्र, आश्र (आस्त्र, आस्त्र का०), अलीक, करुण (करुणा का०), सोढ, प्रतीप, शील, हल, माला क्षेपे, कृपण, (प्रणय), दल, कक्ष, इति सुखादिः।

३—(वा०) (क) इनिप्रकरणे बलाद्बाहूरुपूर्वपदादुपसंख्यानम्। सर्वादिश्च। (ग) अर्थाच्चासन्निहिते। (घ) तदन्ताच्चेति वक्तव्यम्।

(गणपा०) पुष्कर, पद्म, उत्पल, तमाल, कुमुद, नड, कपित्थ, मृणाल, कर्दम, शालूक, विगर्ह, करीष, शिरीष, यवास, प्रवाह, (प्रवास हिरण्य, कैरव, कल्लोल, तट, तरंग, पङ्कज, सरोज, राजीव, नालीक, रुह, पुटक, अरविन्द, अम्भोज, अब्ज, कमल, पयस्, वयस्, इति पुष्करा

४—(गणपा०) बल, उत्साह, उद्भास, (उद्भाव) उद्वास, उद्वास, कुल, चूडा, सुल, कूल, आयाम, व्यायाम, उपयाम, आरोह, अवरोह, पुट, उद्दाम, शिखावल, वृगमूल, वंश, इति बलादिः।

अथ तृतीयः पादः

(अथ प्राग्दिशीयप्रत्यय—)

	१ प्राग्दिशो विभक्तिः ।	वि-क्तिः २६
प्राग्दिशः प्रत्ययाः	२ किं-सर्वनाम-बहुभ्योऽद्वयादिभ्यः । (१)	
प्रा-येषु	३ इदम इश् ।	इ-मः ४
,,	४ एतेतौ रथोः ।	
,,	५ एतदोऽन् ।*	
,,	६ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि ।	
किंस-भ्यः	७ पञ्चम्यास्तसिल् ।	त-ल् ६
तसिल्	८ तसेश्च ।	
,,	६ पर्यभिभ्यां च ।	
किंस-भ्यः	१० सप्तम्यास्त्रल् ।	स-म्याः २२
स-म्याः	११ इदमो हः ।	
,,	१२ किमोऽत् ।	किमः
,, किमः	१३ वा ह च च्छन्दसि ।	
तसिलादयः	१४ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ।	
सप्तम्याः	१५ सर्वैकान्य-किं-यत्तदः काले दा ।	काले २२
,, काले	१६ इदमोर्हिल् ।	इदः १८
	१७ अधुना ।	
इ-मः, स-, काले	१८ दानीं च ।	दानीम् १६

१—(वा०) बहुग्रहणे संख्याग्रहणम् ।

* 'एतदोऽश्, इति पाठान्तरम् ।

स-म्याः, काले, दानीम्	१९ तदो दा च ।	
स-म्याः, काले	२० तयोर्दार्हिलौ च च्छन्दसि ।	
स-म्याः, कि-भ्यः, काले	२१ अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् ।	
स-म्याः, काले	२२ सद्यः-परुत्-परार्यैषमः-परेद्यव्यद्य-पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः। (१)	
कि-भ्यः	२३ प्रकारवचने थाल् ।	प्र-न्ने २६
प्र-न्ने	२४ इदमस्थमुः ।	थमुः २५
,, , थमुः	२५ किमश्च ।	किमः २६
	(अथ प्रागिवीयप्रत्यय—)	
,, , किमः	२६ था हेतौ च च्छन्दसि ।	
	२७ दिक्शब्देभ्यः सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्व-स्तातिः ।	सर्वंसूत्रमनुवर्तते ३८
दि- षु, स-भ्यः	२८ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ।	अ-च् २९
अस्तातेरर्थे	२९ विभाषा परावराभ्याम् ।	
दि-भ्यः,अस्तास्तेः	३० अञ्चेर्लुक् ।	
	३१ उपर्युपरिष्टात् ।	
	३२ पश्चात् । (२)	

१—(वा०) द्युश्चोभयाद्वक्तव्यः।

२—(वा०) (क) दिक्पूर्वपदस्यापरस्य पश्चभावो वक्तव्यः आतिश्च प्रत्ययः। (ख) अर्धोत्तरपदस्य च समासे*। (ग) अर्धे च।†

---

*अर्धोत्तरपदस्य दिक्पूर्वपदस्य पश्चभावो वक्तव्यः। इति पाठः।

†विनापि पूर्वपदस्य पश्चभावो वक्तव्यः। इति पाठः।

अ-र्थे	३३ पश्च पश्चा च च्छन्दसि ।	
,,	३४ उत्तराधर-दक्षिणादातिः ।	उ-त् ३५
उ-त्, अ-र्थे	३५ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ।	अ-म्याः ३८
अपञ्चम्याः ,,	३६ दक्षिणादाच् ।	द-त् ३७, आच् ३८
,, ,,	३७ आहि च दूरे ।	आहि, दूरे ३८
,, ,,	३८ उत्तराच्च ।	
अ-र्थे	३९ पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् ।	पू-म् ४० पु-वः ४०
पू-म्, पु-वः	४० अस्ताति च ।	अ-ति ४१
अ-ति, अव्	४१ विभाषाऽवरस्य ।	
	४२ संख्याया विधार्थे धा ।	स-याः, धा ४३
सं-याः, धा	४३ अधिकरणविचाले च ।	
	४४ एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् ।	धः ४६, अ-म् ४६
धः, अ-म्	४५ द्वित्र्योश्च धमुञ् । (१)	द्वित्र्योः ४६
धः, द्वित्र्योः अ-म्	४६ एधाच् च ।	
	४७ याप्ये पाशप् ।	
	४८ पूरणाद्भागे तीयादन् ।	पू-त् ४९, भागे ५१ अन् ५०
पू-त्, भागे, अन्	४९ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ।	अच्छ-सि ५०
भागे, अच्छ-सि	५० षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च ।	ष-म् ५१
भागे	५१ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च ।	क-कौ ५२
	५२ एकादाकिनिच्चासहाये ।	
	५३ भूतपूर्वे चरट् ।	चरट् ५४

१—(वा०) धमुञन्तात्स्वार्थे डदर्शनम् ।

चरट्	५४ षष्ठ्या रूप्य च ।	
	५५ अतिशायने तमबिष्ठनौ ।	अ-न्ते ५७, नौ ५६
अ-न्ते, तमप्	५६ तिङश्च ।	तिङः
,, तिङः	५७ द्विवचन-विभज्योपपदे तरबीयसुनौ ।	
	५८ अजादी गुणवचनादेव ।	अजादी
अजादी	५९ तुश्छन्दसि ।	
अजाद्यो:	६० प्रशस्यस्य श्रः ।	प्रशस्यस्य
,, प्र-स्य	६१ ज्य च ।	ज्य ६२
,, ज्य	६२ वृद्धस्य च ।	
,,	६३ अन्तिक-बाढयोर्नेदसाधौ ।	
,,	६४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ।	
,,	६५ विन्मतोर्लुक् ।	
	६६ प्रशंसायां रूपप् ।	
	६७ ईषदसमाप्तौ कल्पब्-देश्य-देशीयरः ।	ई-प्तौ
ई-प्तौ	६८ विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात्तु ।	सुपः ६६
	६९ प्रकारवचने जातीयर् ।	
	७० प्रागिवात्कः ।	कः ६५
तिङश्च	७१ अव्यय-सर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः ।(१)	अकच्
	७२ कस्य च दः ।	
कः	७३ अज्ञाते ।	

१—(वा०) (क) अकच्प्रकरणे तूष्णीमः काम् प्रत्ययो वक्तव्यः। (ख)
को मलोपश्च।

कः	७४ कुत्सिते ।	कुत्सिते ७५
कु-ते	७५ संज्ञायां कन् ।	
सुपः, तिङः, कन्	७६ अनुकम्पायाम् ।	अ-म् ८२
कन्	७७ नीतौ च तद्युक्तात् ।	नीतौ ८१ त-त् ८०
अ-म्, नी-त्	७८ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज्वा ।	वह्वचः ठज्वा ८८ म-म्नः ८२
अ-म्, नी-त् व-चः, म-म्नः	७९ घनिलचौ च ।	घ-चौ ८०
,, ,, ,, घ-चौ	८० प्राचामुपादेरडज्वुचौ च ।	
म-म्नः, अ-म् नीतौ	८१ जातिनाम्नः कन् ।	कन् ८२
कन्, म-म्नः	८२ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ।	लोपः ८४
लोपः	८३ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ।(१)	ठा-दौ अचः ८४
लोपः, ठा-दौ, अचः	८४ शेवल-सुपरि-विशाल-वरुणार्य- मादीनां तृतीयात् । (२)	
कः	८५ अल्पे ।	
कः	८६ ह्रस्वे ।	ह्रस्वे ९०
ह्रस्वे	८७ संज्ञायां कन् ।	
,,	८८ कुटी-शमी-शुण्डाभ्यो रः ।	
,,	८९ कुत्वा डुपच् ।	

१—(वा०) (क) चतुर्थादच ऊर्ध्वस्य लोपो वक्तव्यः। (ख) अनजादौ विभाषा लोपो वक्तव्यः (ग) लोपः पूर्वपदस्य च ठाजादावनजादौ च वक्तव्यः। (घ) विनापि प्रत्ययेन पूर्वोत्तरपदयोर्विभाषा लोपो वक्तव्यः। (ङ) उवर्णाल्ल इलस्य च (च) द्वितीयादचो लोपे सन्ध्यक्षरद्वितीयत्वे तदादेर्लोपवचनम्। (छ) एकाक्षरपूर्वपदानामुत्तरपदलोपो वक्तव्यः।

२—(वा०) *'वरुणादीनाम' तृतीयादचो लोपः सचाकृतसन्धीनामिति वक्तव्यम्।

---

*शेवलादीनाम् इति पाठः।

ह्रस्वे	९० कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ।	ष्टरच् ९१
ष्टरच्	९१ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ।	
	९२ किं-यत्तदोर्निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ।	किं-दः, नि- एकस्य ९३ ड-च् ९४
किं-दः, नि-णे, एकस्य	९३ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् ।	डतमच् ९
डतरच्डतमचौ	९४ एकाच्च प्राचाम् ।	
	९५ अवक्षेपणे कन् ।	कन् १००

(अथ स्वार्थिकप्रत्यय—)

कन्	९६ इवे प्रतिकृतौ ।	इवे १११, तौ १००
,, इवे	९७ संज्ञायां च ।	सञ्ज्ञायाम्
स-म् कनः इवे प्र-तौ	९८ लुम्मनुष्ये ।	लुप् १००
,, कनोलुप् इवे	९९ जीविकार्थे चापण्ये ।	
,, ,,	१०० देवपथादिभ्यश्च । (१)	
इवे	१०१ वस्तेर्ढञ् ।	
,,	१०२ शिलाया ढः ।	
,,	१०३ शाखादिभ्यो यत्* (२)	यत् १०४
,,	१०४ द्रव्यं च भव्ये ।	

१—(गणपा०) देवपथ, हंसपथ, वारिपथ, रथपथ, स्थलपथ, करि अजपथ, राजपथ, शतपथ, शङ्कुपथ (शंकुपथ), सिन्धुपथ (सिहपथ का०), सिद्ध (सिहगति का०), उष्ट्रग्रीव (उष्ट्रग्रीवा का०), वामरज्जु (चामरज्जु का० हस्त, इन्द्र, दण्ड, पुष्प, मत्स्य, जलपथ, रज्जु। आकृतिगणः। इति देवपथादिः।

२—(गणपा०) शाखा, मुख, जघन, शृङ्ग, मेघ, अभ्र, चरण, स्क (स्कव), स्कन्द, उरस्, शिरस्, अग्र, शरण (शाण) इति शाखादिः।

* शाखादिभ्यो यः इति पाठान्तरम् ।

इवे १०५ कुशाग्राच्छः । छः १०६

इवे छः १०६ समासाच्च तद्विषयात् ।

" १०७ शर्करादिभ्योऽण् । (१)

" १०८ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् । (२) ठक् १०९

" ठक् १०९ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ।

" ११० कर्क-लोहितादीकक् ।

" १११ प्रत्न-पूर्व-विश्वेमात्थाल् छन्दसि ।

११२ पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् । ञ्यः ११३

ञ्यः ११३ व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ।

११४ आयुधजीविसंघाञ्ञ्यड्वाहीकेष्वब्राह्मण-राजन्यात् । आ-त् ११७

आ-त् ११५ वृकाट्टेण्यण् ।

" ११६ दामन्यादि-त्रिगर्त-षष्ठाच्छः । (३)

१—(गणपा०) शर्करा, कपालिका, कपाटिका, कनिष्ठिका (कपिष्ठिका, पिष्टिका, कनिष्ठिक), पुण्डरीक, शतपत्र, गोलोमन्, लोमन्, गोपुच्छ, नराची (नरालि का०), नकुल (नकुला का०), सिकता। इति शर्करादिः।

२—(गणपा०) अङ्गुलि (अङ्गुली), भरुज, बभ्रु, वल्गु, मण्डर, मण्डल, शष्कुली, (शष्कुल का०), हरि, कपि, मुनि, रुह, खल, उदश्वित्, गोणि, उरस्, कुलिश, शिखा। इत्यङ्गुल्यादिः।

३—(गणपा०) दामनि, औलपि, वंजवापि, औदकि, (औतकी, औतकि का०), औदङ्कि, आच्युतन्ति (अच्युतन्ति का०), आच्युतदन्ति (अच्युतदन्ति), शाकुन्तकि, आकिदन्ति, औडवि, काकदन्तकि (काकदन्ति का०), शात्रुंतपि, सार्वसेनि, विन्दु, वैन्दवि, तुलभ, मौंजायन, काकन्दि, सावित्रीपुत्र, काकरन्ति, देववापि, अपच्युतकी, कर्की पिण्ड। इति दामन्यादिः।

प्रा-त् ११७ पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ (१)

११८ अभिजिद्-विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् ।

११९ ञ्यादयस्तद्राजाः ।

इति पंचमाध्यायस्य तृतीयः पादः

अथ चतुर्थः पादः

(स्वार्थिकाः प्रत्ययाः प्रकृताः)

१ पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च । पा-स्य, सं-देः वुन् २

पा-स्य, सं-देः, वुन् २ दण्डव्यवसर्गयोश्च ।

३ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् । (२) कन् ६

कन् ४ अनत्यन्तगतौ क्तात् । क्तात् ५

१—(गणपा०) पर्शु, असुर, रक्षस्, वाह्लीक, वयस्, वसु, मरुत्, सत्वत्, दशार्ह, पिशाच, अशनि, कार्षापण। इति पर्श्वादिः।

यौधेय, कौशेय, शौक्रेय, शौभ्रेय, धार्तेय, धार्तेय (धौर्तेय, ज्यावाणेय (जावालेय का०), त्रिगर्त, भरत, उशीनर, क्रौशेय, वार्तेय। इति यौधेयादिः।

२—(वा०) कन्प्रकरणे चञ्चद्बृहतोरुपसंख्यानम्।

(गणपा०) स्थूल, अणु, (अण्ड) माष, (स्थूल अणु माषेषु), इषु, कृष्ण तिलेषु, यव व्रीहिषु, इक्षु तिल (का०), पाद्यकालावदाताः सुरायाम्, गोमूत्र आच्छादने, सुरा अहौ, जीर्ण शालिषु पत्रमूले समस्तव्यस्ते (का०), कुमारीपुत्र, कुमारीश्वशुर (कुमार श्वशुर का०), मणि। इति स्थूलादिः।

क्तात्, कन्	५ न सामिवचने ।	
कन्	६ बृहत्या आच्छादने ।	
	७ अषडक्षाशितंग्वलंकर्मालंपुरुषाध्युत्तरपदात्खः ।	खः ८
खः	८ विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम् ।	
	९ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ।	छः १०
छः	१० स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् ।	
	११ किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे ।	कि-त् आमु १५ अ-र्षे १५
किमे-त्, अ-र्षे आमु	१२ अमु च च्छन्दसि ।	
	१३ अनुगादिनष्ठक् ।	
	१४ णचः स्त्रियामञ् ।	
	१५ अणिनुणः ।	अण् १६
अण्	१६ विसारिणो मत्स्ये ।	
	१७ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ।	सं-याः १८, क्रि-ने २० कृ-च् २०
सं-याः, क्रि-ने	१८ द्वि-त्रि-चतुर्भ्यः सुच् ।	सुच् १९
क्रिया-ने, सुच्	१९ एकस्य सकृच्च ।	
क्रिया-ने, कृ-च्	२० विभाषा बहोर्धाविप्रकृष्टकाले ।	
	२१ तत्प्रकृतवचने मयट् ।	तत्, प्र-ने, म-ट् २५
तत्प्र-ने, मयट्	२२ समूहवच्च बहुषु ।	
	२३ अनन्तावसथेतिह-भेषजाञ्ञ्यः ।	
	२४ देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ।	ता-र्थ्ये २६, यत् २२

तादर्थ्ये, यत्	२५ पादार्घाभ्यां च।	
,,	२६ अतिथेर्ञ्यः।	
	२७ देवात्तल्।	
	२८ अवेः कः।	
	२९ यावादिभ्यः कन्। (१)	कन् ३३
कन्	३० लोहितान्मणौ। (२)	लो-त् ३२
लो-त्, कन्	३१ वर्णे चानित्ये।	अनित्ये ३
,, , कन्	३२ रक्ते।	रक्ते ३३
अ-त्ये, रक्ते, कन्	३३ कालाच्च।	
	३४ विनयादिभ्यष्ठक्। (३)	ठक् ३५
ठक्	३५ वाचो व्याहृतार्थायाम्।	व्या-म् ३६
व्या-म्	३६ तद्युक्तात्कर्मणोऽण् (४)	अण् ३८

१—(गणपा०) याव, मणि, अस्थि, तालु, जानु, सान्द्र, पीत, स्त (पीतस्तम्ब का०), ऋतावुष्णशीते, पशौ लूनविपाते (पशो लूनवियाते का० अणु (अण्ड) निपुणे, पुत्र कृत्रिमे, स्नात वेदसमाप्तौ, शून्य रिक्ते, दान कुत्सि तनु सूत्रे, ईयसश्च (श्रेयस्क का०), ज्ञात, अज्ञात, कुमारी क्रीडनकानि च, च इति यावादिः।

२—(वा०) (क) लोहिताल्लिङ्गबाधनं वा वक्तव्यम्। (ख) अक्षरसं छन्दस उपसंख्यानम्। (ग) नवस्य नू त्नप्तनखाश्च। (घ) नश्च पुराणे प्रात्

३—(गणपा०) विनय, समय, उपायो (उपायाद् का०) हस्व च (औपयिक), संप्रति, संगति, कथंचित्, अकस्मात्, समाचार, उपचा समयाचार, (समापचार), व्यवहार, संप्रदान, समुत्कर्ष, समूह, विशेष, अत्य अस्थि, कण्डु। इति विनयादिः।

४—(वा०) (क) अण्प्रकरणे कुलालवरुडनिपादकर्मारचण्डालामित्रेभ्य न्दस्युपसंख्यानम्। (ख) भागरूपनामभ्यो धेयः। (ग) मित्राच्छन्दसि। (अणमित्राच्च। (ङ) अग्नीध्रसाधारणादञ्। (च) अयवसमरुद्भ्यां छन्दसि (छ) नवसूरमर्तयविष्ठेभ्यो यत्। (ज) [illegible]

अण्	३७ ओषधेरजातौ ।	
अण्	३८ प्रज्ञादिभ्यश्च । (१)	
	३९ मृदस्तिकन् ।	मृदः ४०,
मृदः	४० सस्नौ प्रशंसायाम् ।	प्रशंसायाम् ४१
प्रशंसायाम्	४१ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च च्छन्दसि ।	
	४२ बह्वल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम् । (२)	शस् ४३, अ-म् ४९
शस्, अ-म्	४३ संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ।	
	४४ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः । (३)	प-म्याः ४५ तसिः ४९
पंचम्याः, वा, तसिः	४५ अपादाने चाहीयरुहोः ।	
वा, तसिः	४६ अतिग्रहाव्यथन-क्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ।	अ-रि, तृ-याः ४७
तृ-याः, अ-रि, तसिः वा	४७ हीयमान-पापयोगाच्च ।	
तसिः, वा	४८ षष्ठ्या व्याश्रये ।	षष्ठ्याः ४९
षष्ठ्याः. तसिर्वा	४९ रोगाच्चापनयने ।	

१—(गणपा०) प्रज्ञ, वणिज्, उशिज्, उष्णिज्, (उष्णिक्, उष्णिग् का०), प्रत्यक्ष, विद्वस्, विदन्, षोडन्, विद्या, मनस्, श्रोत्र शरीरे, जुह्वत्, कृष्ण मृगे, चिकीर्षत्, चोर, शत्रु, (शक का०), योध, चक्षुस् (यक्षस् का०), वसु (वस् का०), एनस् (एत् का०), मरुत्, कुंच (क्रुङ् का०), सत्वत् (सत्वन्तु, सत्वन्त), दशार्ह, वयस्, व्याकृत, असुर (आतुर का०), रक्षस्, पिशाच, अशनि, कर्षापण (कार्षापण का०), देवता, वन्धु, षोडश, धूर्त, राजा। इति प्रज्ञादिः।

२—(वा०) वह्वल्पार्थान्मङ्गलामङ्गलवचनम्।

३—(वा०) तसिप्रकरणे आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्।

	५० कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः । (१)	कृ-गे ५७, स-रि ५२, च्वि:५१
कृ-गे स-रि, च्वि।	५१ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतो-रहो-रजसां लोपश्च ।	
कृ-गे स-रि	५२ विभाषा साति कात्स्न्यें ।	वि-षा ५३, साति ५५
च्विविषये,साति:	५३ अभिविधौ संपदा च ।	संपदा ५५
कृ-भि:,संपदासाति	५४ तदधीनवचने ।	त-ने ५५
तदधी-ने,साति: कृ-गे संपदा	५५ देये त्रा च ।	त्रा ५६
त्रा, कृ-गे	५६ देव-मनुष्य-पुरुष-पुरु-मर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ।	
कृ-गे	५७ अव्यक्तानुकरणाद्द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् ।	डाच् ६७
डाच्	५८ कृञो द्वितीय-तृतीय-शम्ब-बीजात्कृषौ ।	कृञ· ६७ कृषौ ५९
कृञ:, कृषौ, डाच्	५९ संख्यायाश्च गुणान्तायाः ।	
कृञः डाच्	६० समयाच्च यापनायाम् ।	
,, ,,	६१ सपत्र-निष्पत्रादतिव्यथने ।	
,, ,,	६२ निष्कुलान्निष्कोषणे ।	
,, ,,	६३ सुख-प्रियादानुलोम्ये ।	
डाच्, कृञः	६४ दुःखात्प्रातिलोम्ये ।	
डाच्, कृञः	६५ शूलात्पाके ।	
,, ,,	६६ सत्यादशपथे ।	
,, ,,	६७ मद्रात्परिवापणे । (२)	

१—(वा०) च्विविधावभूततद्भावग्रहणम् ।

२—(वा०) भद्राच्चेति वक्तव्यम् ।

(समासान्तप्रत्यय—)

	६८ समासान्ताः ।*	स-न्ताः १६०
स-न्ताः	६९ न पूजनात् । (१)	न ७२
,, न	७० किमः क्षेपे ।	
,, ,,	७१ नञस्तत्पुरुषात् ।	नञः, त-त् ७२
नञः, त-त्, स-न्ताः न	७२ पथो विभाषा ।	
	७३ बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात् । (२)	

(सर्वसमासान्त—)

	७४ ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ।	
	७५ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः ।	अच् ८७
अच्	७६ अक्ष्णोऽदर्शनात् ।	
,,	७७ अचतुर-विचतुर-सुचतुर-स्त्रीपुंस-धेन्वनडुहर्क्साम-वाङ्मनसाक्षिभ्रुव-दारगवोर्वष्ठीव-पदष्ठीव-नक्तंदिव-रात्रिन्दिवाहर्दिव-सरजस-निःश्रेयस-पुरुषायुष-द्व्यायुष-त्र्यायुषर्ग्यजुष-जातोक्ष-महोक्ष-वृद्धोक्षोपशुन-गोष्ठश्वाः । (३)	
अच्	७८ ब्रह्म-हस्तिभ्यां वर्चसः ।	

---

* समासान्तपदस्याधिकारत्वादुत्तरत्र न प्रदर्शिता तदनुवृत्तिः ।

१—(वा०) (क) पूजायां स्वतिग्रहणं कर्तव्यम् (ख) प्राग्बहुव्रीहिग्रहणं च कर्तव्यम् ।

२—(वा०) डच्प्रकरणे संख्यायास्तत्पुरुषस्योपसंख्यानं निस्त्रिंशाद्यर्थम् ।

३—(वा०) चतुरोऽच्प्रकरणे त्र्युपाभ्यामुपसंख्यानम् ।

	७९ अव-समन्धेभ्यस्तमसः ।	
अच्	८० श्वसो-वसीयः श्रेयसः ।	
,,	८१ अन्ववतप्ताद्रहसः ।	
,,	८२ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ।	
,,	८३ अनुगवमायामे ।	
,,	८४ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ।	
,,	८५ उपसर्गादध्वनः ।	
	(तत्पुरुषसमासान्त—)	
,,	८६ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः ।	त-स्य १०५, स-देः ८८
तत्पुरुषात् अच्	८७ अहः-सर्वैकदेश-संख्यात-पुण्याच्च रात्रेः ।	
त-त्	८८ अह्नोऽह्न एतेभ्यः ।	अन्हः, अन्हः ९
त-स्य, अन्ह अन्हः	८९ न संख्यादेः समाहारे ।	
अन्हः, अन्हः	९० उत्तमैकाभ्याञ्च ।	
तत्पुरुषात्	९१ राजाहः-सखिभ्यष्टच् ।	टच् ११२
तत्पु-त्, टच्	९२ गोरतद्धितलुकि ।	
,, ,,	९३ अग्राख्यायामुरसः ।	
,, ,,	९४ अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः।	
,, ,,	९५ ग्रामकौटाभ्याञ्च तक्ष्णः ।	
,, ,,	९६ अतेः शुनः ।	शुनः ९७
शुनः, तत्पु-त्,,	९७ उपमानादप्राणिषु ।	उ-त् ९८
उ-म्, त-त्, टच्	९८ उत्तर-मृग-पूर्वाच्च सक्थ्नः ।	
टच्	९९ नावो द्विगोः ।	नावः १००, द्विगोः १०१

वः,त-त्,टच्	१०० अर्धाच्च ।	अर्धात् १०१
त्,त-त्,टच्	१०१ खार्याः प्राचाम् ।	
त्, टच्	१०२ द्वि-त्रिभ्यामञ्जलेः ।	
,,	१०३ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि । (१)	
,,	१०४ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ।	ब्रह्मणः १०५
,, ब्र-णः	१०५ कु-महद्भ्यामन्यतरस्याम् ।	
	(द्वन्द्वसमासान्तप्रत्यय—)	
त्	१०६ द्वन्द्वाच्चु-द-ष-हान्तात्समाहारे।	
	(अव्ययीभावसमासान्त—)	
,,	१०७ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः । (२)	अ-ये ११२
ये, टच्	१०८ अनश्च ।	अनः १०९
नः,अ-वे,टच्	१०९ नपुंसकादन्यतरस्याम् ।	अ-म् १११
वे, टच्	११० नदी-पौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः।	
,,	१११ झयः ।	
-,वे टच्	११२ गिरेश्च सेनकस्य ।	
	(बहुव्रीहिसमासान्तप्रत्यय—)	
	११३ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् ।	बहुव्रीहौ १६० षच् ११४
हौ, षच्	११४ अङ्गुलेर्दारुणि ।	
हौ	११५ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ।	

१—(वा०) अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि वा वचनम्।

२—(गणपा०) शरद्, विपाश्, अनस्, मनस्, उपानह्, अनडुह्, दिव, मवत्, हिरुक्, विद्, सद्, दिश्, दृश्, विश्, चतुर, त्यद्, तद्, यद्, कियत्, जराया रस् च। प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः। पथिन्, सदृश्, इति शरदादिः।

बहुव्रीहौ	११६ अप् पूरणी-प्रमाण्योः । (१)	अप् ११७
,, अप्	११७ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ।	
,,	११८ अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चा स्थूलात् । (२)	अच् १२१, ना-याः ११
ना-याः, ब-हौ, अच्	११९ उपसर्गाच्च । (३)	
अच् ब-हौ	१२० सुप्रात-सुश्व-सुदिव-शारिकुक्ष-चतुरश्रैणीपदाजपद-प्रोष्ठपदाः।	
ब-हौ, अच्	१२१ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ।	न-भ्यः १२
न-भ्यः बहुव्रीहौ	१२२ नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ।	असिच् १२
असिच् ब-हौ	१२३ बहुप्रजाश्छन्दसि ।	
,,	१२४ धर्मादनिच् केवलात् ।	अनिच् १२
अनिच् ,,	१२५ जम्भा सु-हरित-तृण-सोमेभ्यः।	
,, ,,	१२६ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ।	
बहुव्रीहौ	१२७ इच् कर्मव्यतिहारे ।	इच् १२८
इच्	१२८ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च । (४)	
ब-हौ	१२९ प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः ।	जा-नोः, ज्ञुः १

१—(वा०) (क) अपि प्रधानपूरणीग्रहणं कर्तव्यम् (ख) नेतुर्नक्ष उपसंख्यानम् (ग) छन्दसि च नेतुरुपसंख्यानम्। (घ) मासाद्भृतिप्रत्ययपूर्व-पदाट्ठञ्विधिः।

२—(वा०) (क) खुरखराभ्यां नस् वक्तव्यः। (ख) अप्रत्ययोऽपीष्यते।

३—(वा०) (क) वेर्ग्रो वक्तव्यः। (ख) ख्यश्च ।

४—(गणपा०) द्विदण्डि, द्विमुसलि, उभांजलि, उभयांजलि, उभावन्ति, उभयावन्ति, उभाहस्ति, उभयाहस्ति, उभाकर्णि, उभयाकर्णि, उभापाणि, उभयापाणि, उभाबाहु, उभयाबाहु, एकपदि, प्रोह्यपदि, आढ्यपदि (आढ्यपदि) सपदि, निकुच्यकर्णि, संहतपुच्छि, अन्तेवासि। इति द्विदण्ड्यादिः।

बहु-जा-नः, शुः	१३० ऊर्ध्वाद्विभाषा ।	
,,	१३१ ऊधसोऽनङ् । (१)	अ-ङ् १३३
,, अनङ्	१३२ धनुषश्च ।	धनुषः १३३
,, धनुषः, अ-ङ्	१३३ वा संज्ञायाम् ।	
,,	१३४ जायाया निङ् ।	
,,	१३५ गन्धस्येदुत्पूति-सु-सुरभिभ्यः । (२)	ग-स्य, इत् १३७
,, ग-स्य, इत्	१३६ अल्पाख्यायाम् ।	
,, ,, ,,	१३७ उपमानाच्च ।	उपमानात् १३८
उप-त्, बहु-हो	१३८ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः । (३)	
ब-हो, पा-स्य, लोपः	१३९ कुम्भपदीषु च । (४)	
,, ,, ,,	१४० संख्या-सुपूर्वस्य ।	स-स्य १४१
स-स्य	१४१ वयसि दन्तस्य दतृ ।	दन्त-तृ १४५

१—(वा०) ऊधसोऽनङि स्त्रीग्रहणम् ।

२—(वा०) गन्धस्येत्वे तदेकान्तग्रहणम् ।

३—(गणपा०) हस्तिन्, कुद्दाल, अश्व, कशिक, कुरुत, कटोल, कटोलक, गण्डोल, गण्डोलक, कण्डोल, कण्डोलक, अज, कपोत, जाल, गण्ड, महेला (महिला का०), दासी, गणिका, कुसूल, इति हस्त्यादिः ।

४—(गणपा०) कुम्भपदी, एकपदी, जालपदी, शलपदी, मुनिपदी, गुणपदी, शतपदी, सत्रपदी, गोधापदी, कलशीपदी, विपदी, तृणापदी, द्विपदी, त्रिपदी, षट्पदी, दासीपदी, शीतिपदी, विष्णुपदी, सुपदी, निष्पदी, आर्द्रपदी, कुणिपदी (कुणपदी का०), कृष्णापदी, शुचिपदी, द्रोणापदी (द्रोणीपदी), द्रुपदी, सूकरपदी, शकृत्पदी, अष्टापदी, स्थूणापदी, (स्थूलपदी का०), अपदी, सूचीपदी, मालापदी, गोपदी, घृतपदी, सूपपदी, पंचपदी, अर्वपदी, स्तनपदी, कलहंसपदी, विषपदी । इति कुम्भपद्यादिः ।

ब-हौ, दन्तस्य दत्	१४२ छन्दसि च ।	
बहुहौ, ,, ,,	१४३ स्त्रियां संज्ञायाम् ।	
,, ,, ,,	१४४ विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ।	विभाषा १४५
वा, ब-हौ, दस्य, दत्	१४५ अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-वराहेभ्यश्च ।	
बहुव्रीहौ	१४६ ककुदस्यावस्थायां लोपः ।	लोपः १५०
बहुव्रीहौ, लोपः	१४७ त्रिककुत्पर्वते ।	
,, ,,	१४८ उद्विभ्यां काकुदस्य ।	का-स्य १४९
,, ,, का-स्य,	१४९ पूर्णाद्विभाषा ।	
	१५० सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ।	
बहुव्रीहौ	१५१ उरःप्रभृतिभ्यः कप् । (१)	कप् १५९
,, कप्	१५२ इनः स्त्रियाम् ।	
,, ,,	१५३ नद्यृतश्च ।	
,, ,,	१५४ शेषाद्विभाषा ।	
,, ,,	१५५ न संज्ञायाम् ।	न १६०
,, ,, न	१५६ ईयसश्च ।	
,, ,, ,,	१५७ वन्दिते भ्रातुः ।	
,, ,, ,,	१५८ ऋतश्छन्दसि ।	
,, ,, ,,	१५९ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ।	
	१६० निष्प्रवाणिश्च ।	

इति पञ्चमाध्यायस्य चतुर्थः पादः।

पञ्चमाध्यायश्च समाप्तः।

१—(गणपा०) उरस्, सर्पिस्, उपानह, पुमान्, अनड्वान्, पयः, नौः, लक्ष्मीः, दधि, मधु, शालिः (शाली) अर्धान्नञः। इत्युरआदिः।

अथ षष्ठोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(अथ द्वित्व—)

	१ एकाचो द्वे प्रथमस्य ।	ए-चः, द्वे, प्र-स्य ११
एकाचः	२ अजादेर्द्वितीयस्य ।	अ-देः द्वि-स्य ११
अचः	३ नन्द्राः संयोगादयः । (१)	
	४ पूर्वोऽभ्यासः ।	
	५ उभे अभ्यस्तम् ।	अभ्यस्तम् ६
भ्यस्तम्	६ जक्षित्यादयः षट् ।	
	७ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ।	
-चः, अ-देः द्वि-स्य	८ लिटि धातोरनभ्यासस्य । (२)	धातोः, अ-स्य ११
-स्य धातोःद्वे	९ सन्यङोः ।	
" " "	१० श्लौ ।	
" " "	११ चङि ।	
	१२ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वाँश्च । (३)	

१—(वा०) (क) ईर्ष्यतेस्तृतीयस्य द्वे भवत इति वक्तव्यम् । (ख) कण्ड्वादीनां च (ग) वा नामधातूनां तृतीयस्य द्वे भवत इति वक्तव्यम् । (घ) यथेष्टं वा नामधातुषु ।

२—(वा०) द्विर्वचनप्रकरणे छन्दसि वेति वक्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) द्विर्वचनप्रकरणे कृञादीनां के । (ख) चरिचलिपतिवदीनां द्वित्वमच्याक्चाभ्यासस्य । (ग) हन्तेर्घश्च । (घ) पाटेर्णिलुक् च दीर्घत्वाभ्यासस्योक्च ।

(अथ सम्प्रसारण—)

	१३ ष्यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ।	ष्यङः १४ स-म् ३१
ष्यङः स-म्	१४ बन्धुनि बहुव्रीहौ । (१)	
स-म्	१५ वचि-स्वपि-यजादीनां किति ।	व-म् १७ किति १६
व-म्, स-म्, किति	१६ ग्रहि-ज्या-वयि-व्यधि-वष्टि-विचति-वृश्चति-पृच्छति-भृज्जतीनां ङिति च ।	ग्र-नाम् १७
स-म्	१७ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ।	
,,	१८ स्वापेश्चङि ।	
,,	१९ स्वपि-स्यमि-व्येञां यङि ।	यङि २१
,, यङि	२० न वशः ।	
यङि	२१ चायः की ।	
	२२ स्फायः स्फी निष्ठायाम् ।	नि-म् २८
नि-म्, स-म्	२३ स्त्यः प्रपूर्वस्य ।	
,, ,,	२४ द्रवमूर्ति-स्पर्शयोः श्यः ।	श्यः २६
श्यः, नि-म्, स-म्	२५ प्रतेश्च ।	
,, ,, ,,	२६ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ।	विभाषा २
विभाषा	२७ शृतं पाके ।	
नि-म्, वि-षा	२८ प्यायः पी ।	प्यायः पी २
यायः पी	२९ लिड्यङोश्च ।	लिङ्यङोः ३
लि-ङोः, स-म्	३० विभाषा श्वेः ।	वि-षा, श्वेः ३
वि-षा, श्वेः स-म्	३१ णौ च संश्चङोः ।	णौ स-ङोः ३

१—(वा०) मातच्मातृकमातृषु ष्यङ् प्रसार्यो विभाषया ।

णौ, स-ङोः	३२ ह्वः सम्प्रसारणम् ।	ह्वः ३४, स-म् ४४
ह्वः, स-म्	३३ अभ्यस्तस्य च ।	
ह्वः, स-म्	३४ बहुलं छन्दसि ।	ब-म् ३५, छसि ३६
बहु-म् छ-सि	३५ चायः की ।	
,,	३६ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषे-तित्याज-श्राताः श्रितमाशीरा शीर्ताः ।	
	३७ न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् । (१)	न ४४
न, स-म्	३८ लिटि वयो यः ।	लिटि ४०
लिटि	३९ वश्चास्यान्यतरस्यां किति ।	
लिटि, न, स-म्	४० वेञः ।	वेञः ४१
,, ,, ,, वेञः	४१ ल्यपि च ।	ल्यपि ४४
ल्यपि, न, स-म्	४२ ज्यश्च ।	
,, ,, ,,	४३ व्यश्च ।	व्यः ४४
ल्यपि, व्यश्च, न, स-म्	४४ विभाषा परेः ।	
	(आत्वविधि—)	
धातोः	४५ आदेच उपदेशेऽशिति ।	आत् एचः ५७ उ-शे ६५
आत्	४६ न व्यो लिटि ।	
आत्-एचः	४७ स्फुरति-स्फुलत्योर्घञि ।	
,, ,,	४८ क्रीङ्-जीनां णौ ।	णौ ४९

१—(वा०) (क) रयेर्मतौ बहुलम् । (ख) ऋचि त्रेरुत्तरपदादिलोपश्छन्दसि । (ग) कक्ष्यायाः संज्ञायाम् ।

णौ आत्, एचः	४९ सिध्यतेरपारलौकिके ।	
आदेचः, उपदेशे	५० मीनाति-मिनोति-दीङां ल्यपि च। (१)	ल्यपि ५१
ल्यपि, आदेचः उपदेशे	५१ विभाषा लीयतेः।	विभाषा ५६
विभाषा, आदेचः	५२ खिदेश्छन्दसि।	
,, ,,	५३ अपगुरो णमुलि।	
,, ,,	५४ चिस्फुरोर्णौ ।	णौ ५७
,, ,, णौ	५५ प्रजने वीयतेः।	
,, ,, ,,	५६ विभेतेर्हेतुभये।	हे-ये ५७
णौ, हे-ये, आत्	५७ नित्यं स्मयतेः।	
	५८ सृजि-दृशोर्झल्यमकिति।	झलि, अम्, अकिति ५९
उपदेशे, झल्यम किति	५९ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्।	
	६० शीर्षश्छन्दसि।	शीर्षन् ६१
शीर्षन्	६१ ये च तद्धिते। (२)	
विभाषा	६२ पद्दन्नो-मास्-हृन्निशसन्-यूषन्-दोषन्-यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु। (३)	

१—(वा०) निमीमिलियां खलचोः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(वा०) (क) वा केशेषु। (ख) अचि शीर्षः।* (ग) छन्दसि च।

३—(वा०) (क) पदादिषु मांसपृत्स्नूनामुपसंख्यानम्। (ख) नस् नासिकाया यत्तस्क्षुद्रेषु। (ग) अवर्णनगरयोरिति वक्तव्यम्।

---

*यद्यपीदं वार्तिकं काशिकादिषु सूत्रत्वेन गृहीतं दृश्यते तथापि महाभाष्ये वार्तिकेषूपलम्भादस्माभिर्वार्तिकपाठे संगृहीतम्।

उपदेशे	६३ धात्वादेः षः सः । (१)	धात्वादेः ६४
,,	६४ णो नः ।	
	६५ लोपो व्योर्वलि ।	लोपः ६६
लोपः	६६ वेरपृक्तस्य ।	
,, हल्	६७ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ।	हल् ६८
,, ,,	६८ एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः ।	
,,	६९ शेश्छन्दसि बहुलम् ।	

(तुग्विधि—)

	७० ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ।	ह्र-स्य ७२, तुक् ७५
	७१ संहितायाम् ।	स-म् १५४
स-म्, तुक्	७२ छे च ।	छे ७५
,, ,, छे	७३ आङ्माङोश्च ।	
,, ,, ,,	७४ दीर्घात् ।	दी-त् ७५
,, ,, ,,	७५ पदान्ताद्वा । (२)	
सं-म्	७६ इको यणचि ।	अचि १२१
सं-म् अचि	७७ एचोऽयवायावः ।	एचः ७९
एचः	७८ वान्तो यि प्रत्यये । (३)	वान्तः ७९ यि, प्र-ये ८२
एचः, वान्तः, यिप्रत्यये	७९ धातोस्तन्निमित्तस्यैव ।	धातोः ८३
अप्, यि,-प्र-ये	८० क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ।	
,, ,,	८१ क्रय्यस्तदर्थे ।	

१—(वा०) सादेशे सुब्धातुष्ठिवुष्वस्कतीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(वा०) दीर्घात्पदान्ताद्वा विश्वजनादीनां छन्दसि।

३—(वा०) (क) गोर्यूतौ छन्दसि; (ख) अध्वपरिमाणे च।

,, ,,	**८२ भय्यप्रवय्ये च च्छन्दसि। (१)**	
	(एकादेश—)	
एकः, पू-योः	**८३ एकः पूर्वपरयोः।**	एकः,पू-योः ११०
एकादेशः	**८४ अन्तादिवच्च।**	
एकादेशः	**८५ षत्वतुकोरसिद्धः। (२)**	
	(एकादेशे गुण—)	
अचि	**८६ आद्गुणः।**	आत् ९५
	(एकादेशे वृद्धि—)	
आत्	**८७ वृद्धिरेचि।**	वृद्धिः ९१, एचि ८८
आत्, वृद्धिरेचि	**८८ एत्येधत्यूठ्सु। (३)**	
अचि, वृद्धिः,	**८९ आटश्च।**	
आत्, वृद्धिः	**९० उपसर्गादृति धातौ।**	उ-त्, धातौ ९३ ऋति ९१
आत्, उप-त्, ऋति, धातौ	**९१ वा सुप्यापिशलेः।**	
आत्	**९२ औतोऽम्शसोः।**	
	(एकादेशे पररूप—)	
आत्,उ-त्,धातौ	**९३ एङि पररूपम्। (४)**	पररूपम् ९८
आत्, पर-म्	**९४ ओमाङोश्च।**	

१—(वा०) भय्यादिप्रकरणे हृदय्या उपसंख्यानम्।

२—(वा०) पदान्तपदाद्योरेकादेशोऽसिद्ध इति वक्तव्यम्।

३—(वा०) (क) अक्षादूहिन्याम्। (ख) स्वादीरेरिणोः। (ग) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु। (घ) ऋते च तृतीयासमासे। (ङ) प्रवत्सतरकम्बलवसनानामृणे। (च) ऋणदशाभ्यां च।

४—(वा०) (क) एवे चानियोगे। (ख) शकन्ध्वादिषु च। (ग) ओत्वोष्ठयोः समासे वा। (घ) एमन्नादिषु छन्दसि पररूपं वक्तव्यम्। (ङ) सीमन्तः केशवेशेषु।

आत् पर-म्	९५ उस्यपदान्तात् ।	अ-त् ९६
अ-त्, पर-म्	९६ अतो गुणे ।	
पर-म्	९७ अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ ।(१)	अ-स्य, अत, इतौ ९८
अव्यक्तानुकस्यात इतौ	९८ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा । (२)	
	(एकादेशे दीर्घ—)	
अचि	९९ अकः सवर्णे दीर्घः । (३)	अकः १०५ दीर्घः १०४
अकः, दीर्घः	१०० प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।	पू-र्णः १०४
	१०१ तस्माच्छसो नः पुंसि ।	
पूर्वसवर्णदीर्घः	१०२ नादिचि ।	न, इचि १०४
इचि, पू-र्घः, न	१०३ दीर्घाज्जसि च ।	दी-त्, जसि १०४
दी-त्, जसि, इचि, पू-र्णदीर्घः	१०४ वा छन्दसि ।	
	(एकादेशे पूर्वरूप—)	
अकः	१०५ अमि पूर्वः ।	पूर्वः १०८
अचि पूर्वः	१०६ सम्प्रसारणाच्च ।	
पूर्वः	१०७ एङः पदान्तादति ।	एङः, अति १२०
एङः, अति, पूर्वः	१०८ ङसिङसोश्च ।	ङ-सोः ११०
	(एकादेशे उकारादेश—)	
ङसिङसोरति	१०९ ऋत उत् ।	उत् ११२

१—(वा०) इतावनेकाज्ग्रहणं श्रदर्थम् ।

२—(वा०) नित्यमाम्रेडिते डाचि ।*

३—(वा०) (क) सवर्णदीर्घत्वे ऋति ऋ वा वचनम् । (ख) लृति लृ वा वचनम् ।

---

*यद्यपि इदं वार्तिकं काशिकादिषु सूत्रत्वेन गृहीतं दृश्यते तथापि भाष्ये वार्तिकेषूपलम्भादस्माभिर्वार्तिकत्वेन संगृहीतम् ।

ङसिङसोरत,उत्	११० ख्यत्यात्परस्य ।	
	(रोरुत्वविधि—)	
अति, उत्	१११ अतो रोरप्लुतादप्लुते ।	अतः, रोः ११२
अतो रोः, उत्	११२ हशि च ।	
	(प्रकृतिभाव—)	
एङः, अति	११३ प्रकृत्यान्तःपादमव्यपरे । +	प्रकृत्या १२८
,, ,, प्र-त्या	११४ अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च ।	
एङः, अति, प्र-त्या	११५ यजुष्युरः ।	यजुषि ११९
यजुषि, अति, प्रकृत्या	११६ आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे अम्बे अम्बालेऽम्बिके पूर्वे ।	
,, ,, ,,	११७ अङ्ग इत्यादौ च ।	
,, ,, ,,	११८ अनुदात्ते च कुधपरे ।	अनुदात्ते ११९
यजुषि,अ-त्ते,अति,एङ्,प्रकृत्या	११९ अवपथासि च ।	
एङ्, अति, प्र-त्या	१२० सर्वत्र विभाषा गोः ।	गोः १२२
अचि, गोः	१२१ अवङ् स्फोटायनस्य ।	अवङ् १२२
गोः, अवङ्	१२२ इन्द्रे च । (१)	
प्रकृत्या	१२३ प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम् ।	अचि १२६
अचि	१२४ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ।	
अचि प्र-त्या	१२५ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च । (२)	शा-स्य, ह्रस्वः १२६

+—'नान्तपादमव्यपरे' इति पा०।

१ काशिकादिषु केषुचित्पुस्तकेषु अत्र नित्यमित्यधिकम्।

२—(वा०) (क) सिन्नित्यसमासयोः शाकलप्रतिषेधो वक्तव्यः। (ख) ईषा अक्षादिषु प्रकृतिभावमात्रं वक्तव्यम्।

शा-स्य, ह्रस्वः प्र-त्या	१२६ ऋत्यकः ।	
	(अप्लुतवत्——)	
	१२७ अप्लुतवदुपस्थिते ।	अप्लुतवत् १२८
प्र-त्	१२८ ई ३ चाक्रवर्मणस्य ।	
	१२९ दिव उत् ।	
	(सुलोप——)	
	१३० एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ।	सुलोपः १३२, हलि १३१
सु-पः, हलि	१३१ स्यश्छन्दसि बहुलम् ।	
	१३२ सोऽचिलोपे चेत्पादपूरणम् ।	
	(सुट्——)	
	१३३ सुट् कात्पूर्वः ।+	सुट् १५४
सुट्	१३४ संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे ।	सं-भ्यः १३५, करोतौ १३६
सं-भ्यः, क-तौ	१३५ समवाये च ।	
करोतौ	१३६ उपात् प्रतियत्न-वैकृत-वाक्याध्याहारेषु ।	उपात् १३८
उपात्, सुट्	१३७ किरतौ लवने ।	किरतौ १३९
उ-त्, सुट्, किरतौ	१३८ हिंसायां प्रतेश्च ।	
सुट्, किरतौ	१३९ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने । (१)	

+ 'सुट् कात्पूर्वः, इति सूत्रं भाष्ये खण्डितम् ।
अत्र 'अडभ्यासव्यवायेऽपि' इति सूत्रमुपलभ्यते परमेतद्विकृतवार्तिकम् । भाष्ये 'अड्व्यवाय उपसंख्यानम् ।' 'अभ्यासव्यवाये च' इति वार्तिकयोरुपलभ्यते । अस्माभिर्भाष्यानुसारं वार्तिकपाठे संगृहीतम् ।

१—(वा०) किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ।

सुट् १४० कुस्तुम्बुरूणि जातौ ।
,, १४१ अपरस्पराः क्रियासातत्ये । (१)
,, १४२ गोष्पदं सेवितासेवित-प्रमाणेषु ।
,, १४३ आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ।
,, १४४ आश्चर्यमनित्ये ।
,, १४५ वर्चस्केऽवस्करः ।
,, १४६ अपस्करो रथाङ्गम् ।
,, १४७ विष्किरः शकुनौ* वा । (२)
,, १४८ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ।
,, १४९ प्रतिष्कशश्च कशेः ।
,, १५० प्रस्कण्व-हरिश्चन्द्रावृषी ।
,, १५१ मस्कर-मस्करिणौ वेणु-परिव्राजकयोः ।
१५२ कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ।
१५३ कारस्करो वृक्षः । (३)
१५४ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् । (४)

१—(वा०) (क) समो हिततततयोर्वा लोपः। (ख) सम्तुमुनोः कामे। (ग) मनसि च। (घ) अवश्यमः कृत्ये।

* काशिकादिषु 'विष्किरः शकुनिर्विकिरो वा' इति सूत्रपाठः।

२—(वा०) विष्किरः शकुनौ विकिरो वा।

३—(वा०) केचिदिदं सूत्रं नाधीयते पारस्करप्रभृतिष्वेव 'कारस्करो वृक्ष' इति पठन्ति।

४—(गण०) पारस्करो देशः, कारस्करो वृक्षः, रथस्या नदी, किष्कुः प्रमाणम्, किष्किन्धा गुहा, तद्वृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च (तस्करः चौरः। वृहस्पतिः देवता।) प्रात्तुम्पतौ गवि कर्तरि (प्रस्तुम्पति गौः) आकृतिगणः। इति पारस्करादिः।

(अथ स्वरविधि—)

	१५५ अनुदात्तं पदमेकवर्जम् । (१)	
	(अन्तोदात्त—)	
	१५६ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ।	अन्तः, १८२ उदात्तः २१६
अन्तोदात्तः	१५७ उञ्छादीनां च । (२)	
"	१५८ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ।	
अन्तोदात्तः	१५९ धातोः ।	
"	१६० चितः ।	चितः १६१
चितः, अ-त्तः	१६१ तद्धितस्य ।	तद्धितस्य १६२
त-स्य, अ-त्तः	१६२ कितः ।	
अन्तोदात्तः	१६३ तिसृभ्यो जसः ।	
अन्तोदात्तः	१६४ चतुरः शसि ।	
उदात्तः	१६५ सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ।	ए-चः, तृ-दिः, १६६ वि-क्तिः १८१
ए-चः, तृ-दिः, वि-क्तिः उ-त्तः	१६६ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ।	अ-त् १७५
वि-क्तिः, उदात्तः	१६७ अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ।	अ-म् १७२
अ-म्, उदात्तः	१६८ ऊडिदंपदाद्यप् पुम्रैद्युभ्यः ।	

१—(वा०) (क) विभक्तिस्वरान्नञ्स्वरो बलीयानिति वक्तव्यम्। (ख) विभक्तिनिमित्तस्वराच्च नञ्स्वरो बलीयानिति वक्तव्यम्।

२—(गण०) उञ्छ, म्लेच्छ, जञ्ज, जल्प (नल्प), जप, वध (व्यध का०), युग कालविशेषे रथाद्युपकरणे च। गरो दूष्ये, वेदवेगवेष्टबन्धाः (चेष्ट वेष्ट का०), करणे, स्तुयुद्रुवश्छन्दसि (परिष्टुत्, संयत्, परिद्रुत), वर्तनिः स्तोत्रे, श्वभ्रे दरः, साम्बतापौ भावगर्हायाम्, उत्तमशश्वत्तमौ सर्वत्र, भक्षमन्थभोगमन्थाः (भक्षमन्थभोगदेहाः का०)। इति उञ्छादिः।

अ-म् उ-त्तः	१६९ अष्टनो दीर्घात् ।	
,, ,,	१७० शतुरनुमो नद्यजादी । (१)	नद्यजादी १७२
न-दी, अ-म्, वि-क्तिः उ-त्तः	१७१ उदात्तयणो हल्पूर्वात् । (२)	उ-णः, ह-त् १७२
ह-त्, उ-णः, न-दी, अ-म्, उ-त्तः	१७२ नोङ्धात्वोः ।	
उदात्तः	१७३ ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् । (३)	मतुप् १७४
मतुप्, उ-त्तः	१७४ नामन्यतरस्याम् ।	
नाम्, उ-त्तः	१७५ ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ।	
उदात्तः	१७६ षट-त्रि-चतुर्भ्यो हलादिः ।	ष-र्भ्यः १७८
ष-र्भ्यः, उ-त्तः	१७७ झल्युपोत्तमम् ।	झलि, उ-म् १७८
ष-र्भ्यः, झलि, उ-म्, उ-त्तः	१७८ विभाषा भाषायाम् ।	
उ-त्तः	१७९ न गो-श्वन्-साववर्ण-राडङ्-क्रुङ्-कृद्भ्यः ।	न १८०
न, उ-त्तः	१८० दिवो झल् ।	झल् १८१
झल्, न, उ-त्तः	१८१ नृ चान्यतरस्याम् ।	
	१८२ तित्स्वरितम् ।	
	१८३ तास्यनुदात्तेन्ङिदुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङोः ।	ल-म् १८६
	(आद्युदात्त—)	
उ-त्तः	१८४ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् । (४)	आदिः, अ-म् १८५

१—(वा०) नद्यजाद्युदात्तत्वे बृहन्महतोरुपसंख्यानम् ।

२—(वा०) उदात्तयणि हल्ग्रहणं नकारान्तार्थम् ।

३—(वा०) (क) मतुबुदात्तत्वे रेग्रहणम् । (ख) त्रेश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

४—(वा०) सिच आद्युदात्तत्वेऽनिटः पित उपसंख्यानम् ।

ल-के, आदिः, अ-म्, उ-त्तः	१८५ स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि ।	अच्यनिटि १८६
ल-के, अ-टि, आदिः, उ-त्तः	१८६ अभ्यस्तानामादिः ।	अ-म् १८७ आदिः १८८
ल-के, अ-म्, आदिः, उ-त्तः	१८७ अनुदात्ते च ।	
आदिरुदात्तः	१८८ सर्वस्य सुपि । (१)	
अ-म्, ल-के, उ-त्तः	१८९ भी-ह्री-भृ-हु-मद-जन-धन-दरिद्रा-जागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति ।	प्र-त् पूर्वम् १९०
प्र-त्, पूर्वम्, उ-म्	१९० लिति ।	
उ-त्तः	१९१ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ।	आदिः १९३
अ-म्, आ-त्तः	१९२ अचः कर्तृयकि ।	अ-म् १९२
आ-त्तः	१९३ थलि च सेटीडन्तो वा ।	
उदात्तः	१९४ ञ्नित्यादिर्नित्यम् ।	आदिः २१३
आद्युत्तम्	१९५ आमन्त्रितस्य च ।	
,,	१९६ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ।	
,,	१९७ अन्तश्च तवै युगपत् ।	
,,	१९८ क्षयो निवासे ।	
,,	१९९ जयः करणम् ।	
,,	२०० वृषादीनां च । (२)	
,,	२०१ संज्ञायामुपमानम् ।	सं-म् २०२

१—(वा०) सर्वस्वरोऽनच्कस्येति वक्तव्यम् ।

२—(गणपा०) वृष, जन, ज्वर, ग्रह, हय, गय, नय, ताय, तय, चय, अम, वेद, सूद, अंश, गुहा, शमरणौ संज्ञायां संमतौ भावकर्मणोः। मन्त्र, शान्ति, काम, याम, आरा, धारा, कारा, वह, कल्प, पाद, पय, वव, आकृतिगणः। तेन अविहितलक्षणमाद्युदात्तत्वं वृषादिषु ज्ञेयम्। इति वृषादिः।

सं-म्, आ-त्तः	२०२ निष्ठा च द्व्यजनात् ।	
आ-त्तः	२०३ शुष्क-धृष्टौ ।	
आ-त्तः	२०४ आशितः कर्ता ।	
आ-त्तः	२०५ रिक्ते विभाषा ।	वि-षा २०६
वि-षा, आ-त्तः	२०६ जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ।	जु-ते २०७
जु-ते, आ-त्ते	२०७ नित्यं मन्त्रे ।	
आ-त्तम्	२०८ युष्मदस्मदोर्ङसि ।	यु-दोः २०९
यु-दोः, आ-म्	२०९ ङयि च ।	
द्व्यच्, आ-त्तः	२१० यतोऽनावः ।	
आ-त्तम्	२११ ईद्-वंद्-वृ-शंस-दुहां ण्यतः ।	
आ-त्तम्	२१२ विभाषा वेण्विन्धानयोः ।	वि-षा २१३
वि-षा, आ-त्तम्	२१३ त्याग-राग-हास-कुह-श्वठ-क्रथानाम् ।+	
उ-त्तम्	२१४ उपोत्तमं रिति ।	उ-म् २१५
उपो-मम्, उ-त्तम्	२१५ चङ्यन्यतरस्याम् ।	
उ-त्तः	२१६ मतोः पूर्वमात् संज्ञायां स्त्रियाम् ।	सं-म्, स्त्रि-म् २१८
	(अन्तोदात्त—)	
सं-म्, स्त्रि-म् उ-त्तः	२१७ अन्तोऽवत्याः ।	अन्तः २२०
स्त्रियां सं-म्, अन्तोदत्तः	२१८ ईवत्याः ।	
अन्तः, उ-त्तः	२१९ चौ । (१)	
अन्तः, उ-त्तः	२२० समासस्य ।	

इति षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः ।

+ 'ऋथानाम्, कुथानाम्' इति पाठान्तरे।

१—(वा०) चोरतद्धित इति वक्तव्यम्।

अथ द्वितीयः पादः

(पूर्वपदप्रकृतिस्वर—)

१ बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् । प्र-त्या, पू-म् ६३

कृत्या, पू-म् २ तत्पुरुषे तुल्यार्थ-तृतीया-सप्तम्युपमानाव्यय-द्वितीयाकृत्याः।(१) त-षे २४

,, ,, त-षे ३ वर्णो वर्ण्येष्वनेते ।

,, ,, ,, ४ गाध-लवणयोः प्रमाणे ।

,, ,, ,, ५ दायाद्यं दायादे ।

,, ,, ,, ६ प्रतिबन्धि चिर-कृच्छ्रयोः ।

,, ,, ,, ७ पदेऽपदेशे ।

,, ,, ,, ८ निवाते वातत्राणे ।

,, ,, ,, ९ शारदेऽनार्तवे ।

,, ,, ,, १० अध्वर्यु-कषाययोर्जातौ ।

,, ,, ,, ११ सदृश-प्रतिरूपयोः सादृश्ये ।

,, ,, ,, १२ द्विगौ प्रमाणे ।

,, ,, ,, १३ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ।

,, ,, ,, १४ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके।

,, ,, ,, १५ सुख-प्रिययोर्हिते । सु-योः १६

,, ,, ,, सु-योः १६ प्रीतौ च ।

त-षे, पू-म्, प्रकृत्या १७ स्वं स्वामिनि ।

,, ,, ,, १८ पत्यावैश्वर्ये । पत्यौ, ऐश्वर्ये २०

पत्यावै-र्ये, त-षे, पू-म् प्रकृत्या १९ न भू-वाक्-चिद्-दिधिषु ।

१—(वा०) अव्यये नञ्कुनिपातानाम् ।

त-षे, पू-म् प्र-त्या प-र्ये	२० वा भुवनम् ।	
त-षे, पू-म्, प्र-त्या	२१ आशंका-बाध-नेदीयस्सु संभावने ।	
,, ,, ,,	२२ पूर्वे भूतपूर्वे ।	
,, ,, ,,	२३ सविध-सनीड-समर्याद-सवेश-सदेशेषु सामीप्ये ।	
पूर्वपदम्, प्रकृत्या तत्पुरुषे	२४ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु । (१)	
पू-म्, प्र-त्या	२५ श्र-ज्यावम-कन्-पापवत्सु भावे कर्मधारये ।	क-ये २८
कर्म-ये पू-म्, प्र-त्या	२६ कुमारश्च ।	कुमारः २८
क-ये, कु-रः उ-त्तः	२७ आदिः प्रत्येनसि ।	आदिः २८
क-ये कुमारः, आ-त्तः	२८ पूगेष्वन्यतरस्याम् ।	
पूर्व-म्, प्रकृत्या	२९ इगन्त-काल-कपाल-भगाल-शरावेषु द्विगौ ।	इ-षु ३० द्विगौ ३१
इ-षु, द्विगौ, पू-म्, प्र-त्या	३० बह्वन्यतरस्याम् ।	अ-म् ३१
द्विगौ, पूर्व-म्, अ-म् प्रकृत्या	३१ दिष्टि-वितस्त्योश्च ।	
पू-म् प्रकृत्या	३२ सप्तमी सिद्ध-शुष्क-पक्व-बन्धेष्वकालात् ।	
पू-म् प्रकृत्या	३३ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु ।	

१—(गणपा०) विस्पष्ट, विचित्र, विचित्त, व्यक्त, संपन्न, पटु (कटु का०), पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, इति विस्पष्टादिः ।

पू-म् प्र-त्या	३४ राजन्य-बहुवचन-द्वन्द्वेऽन्धक-वृष्णिषु ।	द्वन्द्वे ३७
द्वन्द्वे, पू-म् प्र-त्या	३५ संख्या ।	
,, ,, ,,	३६ आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी ।	
,, ,, ,,	३७ कार्तकौजपादयश्च । (१)	
पू-म्, प्र-त्या	३८ महान् व्रीह्यपराह्ण-गृष्टीश्वास-जाबाल-भार-भारत-हैलिहिल-रौरव-प्रवृद्धेषु ।	महान् ३९
पू-म्, प्रकृत्या	३९ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ।	
,, ,,	४० उष्ट्रः सादि-वाम्योः ।	
,, ,,	४१ गौः साद-सादि-सारथिषु ।	
,, ,,	४२ कुरु-गार्हपत-रिक्तगुर्वसूत जरत्यश्लीलदृढरूपा पारेवडवा तैतिलकद्रूः पण्यकम्बलो दासी-भाराणां च । (२)	
पू-म् प्र-त्या	४३ चतुर्थी तदर्थे ।	चतुर्थी ४५

१—(गणपा०) कार्तकौजपौ, सावर्णिमाण्डूकेयौ (सावर्णिमाण्डूकेयौ), अवन्त्यश्मकाः (आ०काः, का०), पैलश्यापर्णेयाः, कपिश्यापर्णेयाः, शैतिकाक्षपाञ्चालेयाः, कटुकवाधूलेयाः (कटुकवार्चलेयाः), शाकलशुनकाः (शाकलसणकाः) शाकलशणकाः, शणकबाभ्रवाः (सणकबाभ्रवाः का०), आर्चाभिमौद्गलाः, कुन्तिसुराष्ट्राः, चिन्तिसुराष्ट्राः, तण्डवतण्डाः, अविमत्तकामविद्धाः, बाभ्रवशालङ्कायनाः, बाभ्रवदानच्युताः, कठकालापाः, कठकौथुमाः, कौथुमलौकाक्षाः, स्त्रीकुमारम्, मौदपैप्पलादाः, वत्सजरन्तः (वत्सजरत् का०), सौश्रुतपार्थवाः, जरामृत्यू, याज्यानुवाक्ये, शुनकधात्रेयाः, गर्गवत्साः। इति कार्तकौजपादिः।

२—(गणपा०) दासीभारः, देवहूतिः, देवभीतिः, देवलातिः, वसुनीतिः, (वसूनीतिः), ओषधिः, चन्द्रमाः, देवजूतिः, देवसूतिः, देवनीतिः, आकृतिगणः। इति दासीभारादिः।

च-र्थी,पू-म्,प्र-त्या	५४ अर्थे ।	
,, ,, ,,	४५ क्ते च ।	क्ते ४९
क्ते, पू-म्, प्र-त्या	४६ कर्मधारयेऽनिष्ठा ।	
,, ,, ,,	४७ अहीने द्वितीया । (१)	
,, ,, ,,	४८ तृतीया कर्मणि ।	कर्मणि ४९
क्ते, क-णि, पू-म्-प्र-त्या	४९ गतिरनन्तरः ।	गतिः ५२ अ-रः ५१
ग-रः, प्र-त्या	५० तादौ च निति कृत्यतौ ।	
ग-रः, प्र-त्या उदात्तः	५१ तवै चान्तश्च युगपत् ।	
गतिः, प्रकृत्या	५२ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ।	अ-तौ ५३ व-ये ५३
अ-ये, प्र-त्या	५३ न्यधी च ।	
प्रकृत्या पू-म्	५४ ईषदन्यतरस्याम् ।	अ-म् ६३
पूर्व-म्, प्र-त्या, अ-म्	५५ हिरण्य-परिमाणं धने ।	
,, ,, ,,	५६ प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ।	
अ-म्,पू-म्,प्र-त्या	५७ कतर-कतमौ कर्मधारये ।	क-ये ५९
क-ये,अ-म्,प्र-त्या	५८ आर्यो ब्राह्मण-कुमारयोः ।	ब्रा-योः ५९
,, ,, ,, ब्रा-योः	५९ राजा च ।	राजा ६०
राजा, अ-म् प्र-त्या	६० षष्ठी प्रत्येनसि ।	
पू-म्,प्र-त्या,अ-म्	६१ क्ते नित्यार्थे ।	
,, ,, ,,	६२ ग्रामः शिल्पिनि ।	शिल्पिनि ६३
पू-म्, प्र-त्या, अ-म्, शि-नि	६३ राजा च प्रशंसायाम् ।	

१—(वा०) अहीने द्वितीयाऽनुपसर्ग इति वक्तव्यम्।

(पूर्वपदाद्युदात्त—)

	६४ आदिरुदात्तः ।	आदिरुदात्तः ६१
पू-म्, आ-त्तः	६५ सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे ।	
,, ,,	६६ युक्ते च ।	
,, ,,	६७ विभाषाऽध्यक्षे ।	विभाषा ६८
,, ,, वि-षा	६८ पापं च शिल्पिनि ।	
पू-म्, प्र-त्या	६९ गोत्रान्तेवासि-माणव-ब्राह्मणेषु क्षेपे ।	
,, ,,	७० अंगानि मैरेये ।	
,, ,,	७१ भक्ताख्यास्तदर्थेषु ।	
,, ,,	७२ गो-बिडाल-सिंह-सैन्धवेषूपमाने।	
,, ,,	७३ अके जीविकार्थे ।	अके ७४
,, ,, अके	७४ प्राचां क्रीडायाम् ।	
,, ,,	७५ अणि नियुक्ते ।	अणि ७७
,, ,, अणि	७६ शिल्पिनि चाकृञः ।	अकृञः ७७
,, ,, अ-ञः	७७ संज्ञायां च ।	
,, ,,	७८ गो-तन्ति-यवं पाले ।	
,, ,,	७९ णिनि ।	णिनि ८०
,, ,, णिनि	८० उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव ।	
आद्युदात्ताः	८१ युक्तारोह्यादयश्च । (१)	

१—(गणपा०) युक्तारोही, आगतरोही, आगतयोधी, आगतवञ्ची, आगतनन्वी, (आगतनर्दी का०), आगतप्रहारी, आगतमत्स्यः (आ-मत्स्या का०), क्षीरहोता, भगिनीभर्ता, ग्रामगोधुक्, अश्वत्रिरात्रः, गर्गत्रिरात्रः, व्युष्टित्रिरात्रः, गणपादः (शणपादः का०), एकशितिपात्, पात्रेसंमितावयश्च (पात्रेसंमितावयश्च) समपादः। इति युक्तारोह्यादिः।

पू-म्, आ-त्तम् ८२ दीर्घ-काश-तुष-भ्राष्ट्र-वटं जे । जे ८३

,, ,, जे ८३ अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ।

,, ,, ८४ ग्रामेऽनिवसन्तः ।

,, ,, ८५ घोषादिषु च । (१)

,, ,, ८६ छात्र्यादयः शालायाम् । (२)

पू-म्, आ-त्तम् ८७ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् । (३) प्रस्थे ८८

,, ,, प्रस्थे ८८ मालादीनां च । (४)

,, ,, ८९ अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम् ।

,, ,, ९० अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् । अर्मे ९१

,, ,, अर्मे ९१ न भूताधिक-संजीव-मद्राश्म-कज्जलम् । (५)

(पूर्वपदान्तोदात्त—)

९२ अन्तः । अन्तः ११०

पू-म्, अन्तो-म् ९३ सर्वं गुणकार्त्स्न्ये ।

,, ,, ९४ संज्ञायां गिरि-निकाययोः ।

१—(गणपा०) घोष, कट, (घट) वल्लभ (पल्वल का०), ह्रद, बदरी (बदर का०), पिंगल, (पिगली), पिशङ्ग, माला, रक्षा (रक्षः का०), शाला, (शालः का०), कूट (कृट्), शाल्मली, अश्वत्थ, तृण, शिल्पी, मुनि, प्रेक्षा (प्रेक्षाक्, पुंसा का०), इति घाषोदिः।

२—(गणपा०) छात्रि, पेलि (ऐलि का०), भाण्डि, व्याडि, आखण्डि, आटि, गामि, (गौमि का०), इति छात्र्यादिः।

३—(गणपा०) कर्की (र्कक), मघ्नी, (मघ्नी, मघी का०), मकरी, कर्कन्धु (कर्कन्धू का०), शमी, करीर, (करीरि का०), कन्दुक (कटुक का०), कवल (कुवल, कुरल, का०), बदरी (बदर का०), इति कर्क्यादिः।

४—(गणपा०) माला, शाला, शोणा, (शोण), द्राक्षा, ध्राक्षा, क्षामा, काञ्ची, एक, काम, क्षौमा। इति मालादिः।

५—(वा०) आद्युदात्तप्रकरणे दिवोदासादीनां छन्दस्युपसंख्यानम्।

म् अ-म्	९५ कुमार्यां वयसि ।	
,,	९६ उदकेऽकेवले ।	
,,	९७ द्विगौ क्रतौ ।	
,,	९८ सभायां नपुंसके ।	
,,	९९ पुरे प्राचाम् ।	पुरे १०१
,, पुरे	१०० अरिष्ट-गौड-पूर्वे च ।	
म् अ-त्तम्	१०१ न हास्तिन-फलक-मार्देयाः ।	
,,	१०२ कुसूल-कूप-कुम्भ-शालं बिले ।	
,,	१०३ दिक्छब्दा ग्राम-जनपदाख्यान-चानराटेषु ।	दिक्-ब्दाः १०५
ब्दाः, अ-त्ताः	१०४ आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि।	
,,	१०५ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ।	
म्, अ-म्	१०६ बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ।	ब-ही १२०, सं-म् १०८
ही, सं-म्, म्, अ-म्	१०७ उदराश्वेषुषु ।	उ-षु १०८
ही, स-म्, षु, अ-म्	१०८ क्षेपे ।	
ही, पू-म्, अ-म्	१०९ नदी बन्धुनि ।	
,, ,,	११० निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ।	
	(उत्तरपदाद्युदात्त—)	
	१११ उत्तरपदादिः ।	उत्तरपदादिः १९९
ही, उत्तरपद- , माद्युदात्तम्	११२ कर्णो वर्ण-लक्षणात् ।	कर्णः ११३
ही, कर्णः, म्, मा-म्	११३ संज्ञौपम्ययोश्च ।	सं-योः ११५
,, स-यो, त्तर-म्	११४ कण्ठ-पृष्ठ-ग्रीवा-जङ्घं च ।	
योः, उत्तर- माद्युदात्तम्	११५ शृङ्गमवस्थायां च ।	

ब-ह्रौ, आद्युदात्तम्	११६ नञो जर-मर-मित्र-मृताः ।	
,, ,,	११७ सोर्मनसी अलोमोषसी ।	सोः १२०
,, सोः	११८ क्रत्वादयश्च । (१)	
सोः, उ-म्, बह्रौ-	११९ आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि ।	छ-सि १२०
सोः, बहु-ह्रौ, छ-सि, आ-म्	१२० वीर-वीर्यौ च ।	
उत्तरपदानि, आद्यु-नि	१२१ कूल-तीर-तूल-मूल-शालाक्ष-सममव्ययीभावे ।	
,, ,,	१२२ कंस-मन्थ-शूर्प-पाय्य-काण्डं द्विगौ ।	
उत्तरपदम्, आ-म	१२३ तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ।	त-षे १३७, न-के १२५
त-षे, न-के, आम्-	१२४ कन्था च ।	कन्था १२५
त-के कन्था, आ-म्	१२५ आदिश्चिहणादीनाम् । (२)	
त-षे, आ-म्	१२६ चेल-खेट-कटुक-काण्डं गर्हायाम् ।	
,, ,,	१२७ चीरमुपमानम् ।	
,, ,,	१२८ पलल-सूप-शाकं मिश्रे ।	
,, ,,	१२९ कूल-सूद-स्थल-कर्षाः संज्ञायाम् ।	
,, ,,	१३० अकर्मधारये राज्यम् ।	अ-ये १३१
,, ,, अ-ये	१३१ वर्ग्यादयश्च । (३)	

१—(गणपा०) क्रतु, दृशीक, प्रतीक, प्रपूर्ति, (प्रतूर्ति), हव्य, भग, इति क्रत्वादिः ।

२—(गणपा०) चिहण, मडर, (मदुर, मन्दर), मदुमर, (मडुर का०), बैतुल, पटत्क, बैडालिकर्णक (बैडालिकर्ण का०), बैडालिकर्णि (बैतालिकर्णि का०), कुक्कुट, चिक्कण (चित्कण) इति चिहणादिः ।

३—(गणपा०) दिगादिषु वर्गादयस्त एव कृतयदन्ता वर्ग्यादयः । इति वर्ग्यादिः ।

त-षे, आ-त्तः	१३२ पुत्रः पुम्भ्यः ।	पुत्रः १३३
पुत्रः, आ-त्तः, त-षे	१३३ नाचार्य-राजर्त्विक-संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ।	
त-षे, उत्तरदाद्युत्तम्	१३४ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः । (१)	अ-ष्ठ्याः १३५
अप्रा-ष्ठ्याः ,,	१३५ षट् च काण्डादीनि ।	
त-षे, उत्तरत्तम्	१३६ कुण्डं वनम् ।	

(उत्तरपदप्रकृतिस्वर—)

त-षे-उ-म्	१३७ प्रकृत्या भगालम् ।	प्र-त्या १४२
प्रकृत्या	१३८ शितेर्नित्याबह्वज् बहुव्रीहावभसत् ।	
त-षे,उ-म्,प्र-त्या	१३९ गति-कारकोपपदात् कृत् ।	
प्रकृत्या	१४० उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ।(२)	उभे, यु-त् १४२
उभे,यु-त् प्रकृत्या	१४१ देवताद्वन्द्वे च ।	दे-द्वे १४२
,, ,, दे-द्वे	१४२ नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवी-रुद्र-पूष-मन्थिषु ।	

(उत्तरपदान्तोदात्त—)

	१४३ अन्तः ।	अन्तः १९९
गति-दात्, अन्तोदात्तः	१४४ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ।	
अन्तोदात्तः	१४५ सूपमानात् क्तः ।	क्तः १४९

१—(गणपा०) चूर्ण, करिब, करिप, शाकिन, शाकट, द्राक्षा, तूस्त, कुन्दुम (कुन्दम का०), दलप, चमसी, चक्कन, (चकन, चक्यन का०), चौल। इति चूर्णादिः।

२—(गणपा०) वनस्पति, बृहस्पति, शचीपति, तनूनपात्, नराशंस, शुनःशेप, (शुनःशेफ), शण्डामर्कौ, तृष्णावरूत्री, लम्बाविश्ववयसौ), बम्बाविश्ववयसौ), मर्मृत्युः। इति वनस्पत्यादिः।

बतिका-त्, क्तः, अ-त्तः	१४६ संज्ञायामनाचितादीनाम्। (१)	स-म् १४८
क्तः, अन्तो-त्तः	१४७ प्रवृद्धादीनां च। (२)	
सं-म्, क्तः, अन्तो-त्तः	१४८ कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि।	का-त १५१
क्तः, अन्तो-त्तः	१४९ इत्थंभूतेन कृतमिति च।	
का-त्, अन्तो-त्तः	१५० अनो भाव-कर्मवचनः।	
,, ,,	१५१ मन्-क्तिन्-व्याख्यान-शयनासन-स्थान-याजकादि-क्रीताः।	
उत्तरप-त्तः	१५२ सप्तम्याः पुण्यम्।	
,,	१५३ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः।	तृ-याः १५४
तृ-याः, अत्तः	१५४ मिश्रं चानुपसर्गसन्धौ।	
उत्तर-त्तः	१५५ नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः।	नञः १६१, गु-धे, तद्धिताः १५६
नञः, गु-धे, अत्तः त-ताः	१५६ ययतोश्चातदर्थे।	
नञः, अन्तो-त्तौ	१५७ अच्कावशक्तौ।	अच्कौ १५८
नञः, अच्कौ, अ-त्तौ	१५८ आक्रोशे च।	आ-शे १५९
नञः, आ-शे, अ-त्तः	१५९ संज्ञायाम्।	
नञः, अ-त्तः	१६० कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च। (३)	

१—(गणपा०) आचित, पर्याचित, आस्थापित, परिगृहीत, निरुक्त (निरक्त), प्रतिपन्न, अपश्लिष्ट, अश्लिष्ट, उपहित (उपहत), उपस्थित, संहितागवि (संहिताशब्दो यदा गोरन्यस्य संज्ञा तदान्तोदात्तो न भवति। यदा तु गोः संज्ञा तदान्तोदात्त एव)। इत्याचितादिः।

२—(गणपा०) प्रविद्धं यानम्, प्रवृद्धो वृषलः, प्रयुता सूष्णवः (प्रयुक्ताः सक्तवः का०), आकर्षेऽवहितः, अवहितो भोगेषु, खट्वारूढः, कविशस्तः। आकृतिगणः, इति प्रवृद्धादिः।

३—(गणपा०) चारु, साधु, यौधकि (यौधिक का०), अनङ्गमेजय,

नञः, अन्तो-त्तः	१६१ विभाषा तृन्नन्न-तीक्ष्ण-शुचिषु।	
अन्तो-त्तः	१६२ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथम-पूरणयोः क्रियागणने ।	बहु-ही १७७
बहु-ही,अन्तो-त्तः	१६३ संख्यायाः स्तनः ।	सं-याः, स्तनः १६४
ब-ही अन्तो, सं-याः, स्तनः	१६४ विभाषा छन्दसि ।	
बहु-ही,अन्तो-त्तः	१६५ संज्ञायां मित्राजिनयोः । (१)	
,, ,,	१६६ व्यवायिनोऽन्तरम् ।	
,, ,,	१६७ मुखं स्वाङ्गम् ।	मुखम्, स्वांगम् १६९
मुखं, स्वा-म्, बहु-ही अ-त्तः	१६८ नाव्यय-दिक्छब्द-गो-महत्-स्थूल-मुष्टि-पृथु-वत्सेभ्यः ।	
मुखं, स्वा-म्, बहु-ही, अ-त्तम्	१६९ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ।	
बहु-ही, अन्तो-त्तम्	१७० जाति-काल-सुखादिभ्योऽनाच्छादनात् क्तोऽकृत-मित-प्रतिपन्नाः । (२)	जा-भ्यः १७१
जा-भ्यः, बहु-ही अ-त्तम्	१७१ वा जाते ।	
बहु-ही, अन्तो-त्तम्	१७२ नञ्सुभ्याम् ।	न-भ्याम् १७४
न-म्,अन्तो-म्, ब-ही	१७३ कपि पूर्वम् ।	कपि १७४

वदान्य, अकस्मात्, वर्तमानवर्धमानत्वरमाणध्रियमाणक्रीयमाणरोचमानशोभमानाः संज्ञायाम्। विकारसदृशे व्यस्ते समस्ते (अविकार, असदृश, अविकारसदृश), गृहपति, गृहपतिक, राजान्होश्छन्दसि। इति चार्वादिः।

१—(वा०) ऋषिप्रतिषेधो मित्रे।

२—(गणपा०) सुख, दुःख, तृप्त, (तृप्र, तीव्र), कृच्छ्र, अस्र, आस्र, अलीक, प्रतीप, करुण, कृपण, सोढ, गहन। इति सुखादिः।

न-म् अ-म्, बहु-ह्रौ, कपि	१७४ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात् पूर्वम् ।	
	१७५ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ।	बहोः १७६
बहोः, ब-ह्रौ, अम्	१७६ न गुणादयोऽवयवाः । (१)	
बहु-ह्रौ, अन्तो-म्	१७७ उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ।	उ-त् १९६
उप-त्, अन्तो-म	१७८ वनं समासे ।	वनम् १७९
वनम्, अन्तो-म्	१७९ अन्तः ।	
उप-त्, ,,	१८० अन्तश्च ।	अन्तः १८१
अन्तः, अन्तो-म	१८१ न नि-विभ्याम् ।	
अन्तोदात्तम्	१८२ परेरभितो भावि मण्डलम् ।	
,,	१८३ प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ।	
,,	१८४ निरुदकादीनि च । (२)	
,,	१८५ अभेर्मुखम् ।	मुखम् १८६
मुखम्, अन्तो-म्	१८६ अपाच्च ।	अपात् १८७
अपात्, अन्तो-म्	१८७ स्फिग-पूत-वीणाञ्जोऽध्वकुक्षि-सीरनाम नाम च ।	
अन्तो-म्	१८८ अधेरुपरिस्थम् ।	
,,	१८९ अनोरप्रधान-कनीयसी ।	अनोः १९०
अनोः, अन्तो-म्	१९० पुरुषश्चान्वादिष्टः ।	
अन्तोदात्तम्	१९१ अतेरकृत्पदे । (३)	

१—(गणपा०) गुण, अक्षर, अध्याय, युक्त, छन्दोमान, आकृतिगणः। इति गुणादिः।

२—(गणपा०) निरुदक, निरुपल, (निरुलप का०), निर्मक्षिक, निर्मशक, निष्कालक, निष्कालिक, निष्पेष, दुस्तरीप, निस्तरीप, निस्तरीक, निरजिन, उदजिन, उपाजिन, परेर्हस्तपादकेशकर्षाः। आकृतिगणः। इति निरुदकादिः।

३—(वा०) अतेर्धातुलोप इति वक्तव्यम्।

अन्तोदात्तम्	१९२ नेरनिधाने ।	
,,	१९३ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे । (१)	त-षे १९६
त-षे, अन्तो-म्	१९४ उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः । (२)	
त-षे , अन्तो-म्	१९५ सोरवक्षेपणे ।	
त-षे, अन्तो-म्	१९६ विभाषोत्पुच्छे ।	वि-षा १९८
अन्तो-म्, विभाषा	१९७ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ।	
,, ,,	१९८ सक्थं चाक्रान्तात् ।	
उदात्तः	१९९ परादिश्छन्दसि बहुलम् । (३)	

इति षष्ठाध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः ।

(उत्तरपदाधिकारे अलुक्—)

	१ अलुगुत्तरपदे ।	अ-क्- २३, उ-दे १३८
अ-क्, उ-दे	२ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः । (४)	
,, ,,	३ ओजःसहोम्भस्तमसस्तृतीयायाः । (५)	तृतीया याः ५

१—(गणपा०) अंशु, जन, राजन्, उष्ट्र, खेटक, (रोटक का०), अजिर, आर्द्रा, श्रवण, कृत्तिका, अर्ध, पुर, (आर्धपुर, आर्धपुरः) इत्यंश्वादिः।

२—(गणपा०) गौर, तैष (नैष का०), तैल, लेट, लोट, जिह्वा, कृष्ण (कृष्णा का०), कन्या, गुध (गुड का०), कल्प, पाद। इति गौरादिः।

३—(वा०) (क) अन्तोदात्तप्रकरणे त्रिचक्रादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् ।

४—(वा०) पञ्चमीप्रकरणे ब्राह्मणाच्छंसिन उपसंख्यानम्।

५—(वा०) (क) अञ्जस उपसंख्यानम् (ख) पुंसानुजो जनुषान्ध विकृताक्ष इति वक्तव्यम् ।

अ-क्,उ-दे तृ-याः	४ मनसः संज्ञायाम् ।	मनसः ५
म-सः, तृ-याः, अ-क्	५ आज्ञायिनि च । (१)	
अलुक्, उ-दे	६ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः ।	वै-म्, च-र्थ्याः ७
अ-क्,उ-दे,वै-म्, च-र्थ्याः	७ परस्य च ।	
अ-क्, उ-दे	८ हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् । (२)	ह- त् १२, स- म्याः १९
ह-त्, स-म्याः, अ-क्	९ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ।	
स-म्याः, अ-क्, उ-दे	१० मध्याद्गुरौ । (३)	
,, ,, ,,	११ अमूर्ध-मस्तकात् स्वाङ्गादकामे ।	
ह-त्, स-म्याः, अ-क्, उ-दे	१२ बन्धे च विभाषा ।	
स-म्याः, अ-क्	१३ तत्पुरुषे कृति बहुलम् ।	
,, ,,	१४ प्रावृट्-शरत्-काल-दिवां जे ।	जे १५
,, ,, जे	१५ विभाषा वर्ष-क्षर-शर-वरात् ।	विभाषा १७
स-म्याः,वि-षा, अ-क्	१६ घ-काल-तनेषु कालनाम्नः ।	
स-म्याः,वि-षा, अ-क्	१७ शय-वास-वासिष्वकालात् ।	
सप्तम्याः,अ-क्	१८ नेन्सिद्ध-वध्नातिषु च ।	
स-म्या,अ-क्,न	१९ स्थे च भाषायाम् ।	न १९

१—(वा०) आत्मनश्च पूरणे इत्युपसंख्यानम्।*
२—(वा०) हृद्द्युभ्यां ङेः।
३—(वा०) गुरावन्ताच्चेति वक्तव्यम्।

* इदं वार्तिकं काशिकायां सूत्रत्वेन गृहीतम्। भाष्ये वार्तिकत्वेन स्पष्टमुपलम्भादस्माभिर्वार्तिकपाठे संगृहीतम्। कौमुद्यां 'आत्मनश्च' इत्येवांशः सूत्रत्वेन परिगृहीतः सोपि चिन्त्यः।

अ-क्, उ-पदे	२० षष्ठ्या आक्रोशे । (१)	षष्ठ्याः २३ आ-शे २१
षष्ठ्याः, अ-क् आ-शे	२१ पुत्रेऽन्यतरस्याम् ।	
षष्ठ्याः, अ-क्	२२ ऋतो विद्या-योनि-संबन्धेभ्यः ।	ऋतः २३, वि-भ्यः २४
ऋतः, वि-भ्यः, षष्ठ्याः, अ-क्	२३ विभाषा स्वसृ-पत्योः ।	

(उत्तरपद-विकार—)*

ऋताम्, वि-न्धिनाम्	२४ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ।	आनङ् २५
आनङ्, उ-दे	२५ देवताद्वन्द्वे च । (२)	दे-न्द्वे ३०
दे-न्द्वे, उ-दे	२६ ईदग्नेः सोमवरुणयोः ।	अग्नेः २७
,, अग्नेः	२७ इद्वृद्धौ । (३)	
दे-न्द्वे, उ-पदे	२८ दिवो द्यावा ।	दिवः, द्यावा २९
,, दिवः द्यावा	२९ दिवसश्च पृथिव्याम् ।	
दे-न्द्वे	३० उषासोषसः ।	
	३१ मातर-पितरावुदीचाम् ।	
	३२ पितरा-मातरा च च्छन्दसि ।	

(पुंवद्भाव—)

	३३ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी-प्रियादिषु ।	स्त्रियाः, पुंवत्, अनूङ् ४१, भाषित-त् ४२

१—(वा०) (क) षष्ठीप्रकरणे वाग्दिक्पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषूपसंख्यानम्। (ख) आमुष्यायणामुष्यपुत्रिकेत्युसंख्यानम्। (ग) देवानां प्रिय इति च। (घ) शेपपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः संज्ञायाम्। दिवश्च दासे।

*उत्तरपदे परतः पूर्वपदस्य ये विकारास्तेऽस्मिन् पादे निर्दिश्यन्ते

२—(वा०) उभयत्र वायोः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

३—(वा०) इद्वृद्धौ विष्णोः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

भा-त्, अ-ङ्, स्त्रियाः, पुंवत्	३४ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः । (१)	
,, ,, ,, ,,	३५ क्यङ्मानिनोश्च ।	
स्त्रियाः, पुंवत्	३६ न कोपधायाः । (२)	न ४०
स्त्रियाः, पु-त्	३७ संज्ञा-पूरण्योश्च ।	
,, न, पुंवत्	३८ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे ।	
,, ,, ,,	३९ स्वाङ्गाच्चेतः । (३)	
,, ,, ,,	४० जातेश्च ।	
भा-त्, अनूङ्	४१ पुंवत्कर्मधारय-जातीय-देशीयेषु । (४)	
भा-त्	४२ घ-रूप-कल्प-चेलड्-ब्रुव-गोत्र-मत-हतेषु ङ्योऽने-काचो ह्रस्वः ।	घकाल नेषु ४४, ह्रस्वः ४४
घादिषु, ह्रस्वः	४३ नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ।	नद्याः, अ-म् ४४
नद्याः, घा-षु, वा, ह्रस्वः	४४ उगितश्च ।	
	४५ आन्महतः समानाधिकरण-जातीययोः । (५)	आत् ४८

१—(वा०) (क) शसि वह्वल्पार्थस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः। (ख) त्वतलोर्गुणवचनस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः। (ग) भस्याढे तद्धिते पुंवद्भावो वक्तव्यः। (घ) ठक्छसोश्च पुंवद्भावो वक्तव्यः।

२—(वा०) कोपधप्रतिषेधे तद्धितवुग्रहणम्।

३—(वा०) स्वाङ्गाच्चेतोऽमानिनि।

४—(वा०) (क) कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु पुंव द्वचनम्। (ख) पुंवद्भावाद् ह्रस्वत्वं खिद्धादिकेषु।

५—(वा०) (क) महदात्वे घासकरविशिष्टेषूपसंख्यानम्। पुंवद्वचनं च—

ात्	४६ द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः । (१)	द्व्य-नः, सं-म्, अ- त्योः ४८
ं-म्, अ-त्योः	४७ त्रेस्त्रयः ।	त्रयः ४८
,, ,,	४८ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ।	
	४९ हृदयस्य हृल्लेख-यदण्-लासेषु ।	हृ-स्य, हृत् ५०
हृदयस्य, हृत्	५० वा शोक-ष्यञ्-रोगेषु ।	
	५१ पादस्य पदाज्याति-गोपहतेषु ।	पादस्य ५५
पादस्य	५२ पद्यत्यतदर्थे । (२)	पद् ५५
पादस्य, पद्	५३ हिम-काषि-हतिषु च ।	
,, ,,	५४ ऋचः शे ।	
,, ,,	५५ वा घोष-मिश्र-शब्देषु । (३)	
उत्तरपदे	५६ उदकस्योदः संज्ञायाम् । (४)	उदकस्योदः ५९
उदकस्य, उदः	५७ पेषं-वास-वाहन-धिषु च ।	
,, ,,	५८ एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ।	अन्य-म् ६०
,, ,, अ-म्	५९ मन्थौदन-सक्तु-विन्दु-वज्र-भार-हार-वीवध-गाहेषु च ।	

नानाधिकरणार्थम्। (ख) अष्टनः कपाले हविष्युपसंख्यानम्। (ग) गवि च युक्तेऽष्टन उपसंख्यानम्।

१—(वा०) प्राक् शतादिति वक्तव्यम्।

२—(वा०) पद्भावे इके चरतावुपसंख्यानम्।

३—(वा०) निष्के चेति वक्तव्यम्।

४—(वा०) संज्ञायामुत्तरपदस्य चेति वक्तव्यम्।

उ-पदे	६० इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य । (१)	ह्रस्वः ६५
,, ह्रस्वः	६१ एकतद्धिते च ।	
ह्रस्वः	६२ ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ।	ङ्यापोः,व-म् ६३
ङ्यापोः, व-म्, ह्रस्वः	६३ त्वे च ।	
ह्रस्वः	६४ इष्टकेषीका-मालानां चित-तूल-भारिषु ।	
,,	६५ खित्यनव्ययस्य ।	खिति ६८, अनव्ययस्य ६६
खिति, उ-पदे	६६ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ।	मुम् ७१
,, ,, मुम्	६७ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ।	
	६८ वाचंयम-पुरन्दरौ च ।	
मुम्	६९ कारे सत्यागदस्य । (२)	
,,	७० श्येन-तिलस्य पाते ञे ।	
,,	७१ रात्रेः कृति विभाषा ।	
उत्तरपदे	७२ नलोपो नञः । (३)	नञः ७६
नञः, उ-दे	७३ तस्मान्नुडचि ।	

१—(वा०) (क) भ्रुकुंसादीनामकारो भवतीति वक्तव्यम्। (ख) इयङुवङव्ययप्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(वा०) (क) अस्तुसत्यागदस्य कारे। (ख) भक्षस्य च्छन्दसि। (ग) धेनोर्भव्यायाम्। (घ) लोकस्य पृणे। (ङ) इत्येऽनभ्यासस्य। (च) भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे। (च) गिलेऽगिलस्य। (छ) गिलगिले च। उष्णभद्रयोः करणे। (ज) सूतोग्रराजभोजकुलमेरुभ्यो दुहितुः पुत्रड्वा।

३—(वा०) नञो नलोपोऽवक्षेपे तिङ्युपसंख्यानम्।

नञ्	७४ नभ्राण्-नपात्-नवेदा-नासत्या-नमुचि-नकुल-नख-नपुंसक-नक्षत्र-नक्र-नाकेषु प्रकृत्या ।	प्रकृत्या ७६
नञ्, प्रकृत्या	७५ एकादिश्चैकस्य चादुक् ।	
,, ,,	७६ नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ।	
	७७ सहस्य सः संज्ञायाम् ।	सहस्य ८२, सः ८८
सहस्य, सः	७८ ग्रन्थान्ताधिके च ।	
,, ,,	७९ द्वितीये चानुपाख्ये ।	
,, ,,	८० अव्ययीभावे चाकाले ।	
,, ,,	८१ वोपसर्जनस्य ।	
सहः	८२ प्रकृत्याशिषि ।* (१)	
सः	८३ समानस्य छन्दस्यमूर्ध-प्रभृत्युदर्केषु ।	समानस्य ८८
समानस्य, सः	८४ ज्योतिर्जनपद-रात्रि-नाभि-नाम-गोत्र-रूप-स्थान-वर्ण-वयोवचन-बन्धुषु ।	
,, ,,	८५ चरणे ब्रह्मचारिणि ।	
,, ,,	८६ तीर्थे ये ।	ये ८७
ये, स-स्य, सः	८७ विभाषोदरे ।	

---

*टेरद्रयञ्चतो वप्रत्यय इति पाठः।

१—(वा०) प्रकृत्याशिष्यगवादिषु ।†

---

†प्रकृत्याशिष्यगोवत्सहलेषु इति पाठः।

समानस्य, सः	८८ दृग्-दृश-वतुषु । (१)	दृ-षु ९०
दृग्-षु	८९ इदं-किमोरीश्-की ।	
,,	९० आ सर्वनाम्नः । (२)	स-म्नः ९१
सर्वनाम्नः	९१ विश्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतावप्रत्यये*। (३)	अ-ये ९४
अ-तौ, व-ये	९२ समः समि ।	
,, ,,	९३ तिरसस्तिर्यलोपे ।	
,, ,,	९४ सहस्य सध्रिः ।	सहस्य ९५
सहस्य	९५ सध-मादस्थयोश्छन्दसि ।	
	९६ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् । (४)	अपः ९७
अपः	९७ ऊदनोर्देशे ।	
	९८ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोति-कारक-राग-च्छेषु ।	अष- स्य, दुक् ९९
अ-स्य, दुक्	९९ अर्थे विभाषा ।	
उ-पदे	१०० कोः कत्तत्पुरुषेऽचि । (५)	कोः १०७, कत् १०२

१—(वा०) (क) दृक्षे चेति वक्तव्यम् । (ख) दृशेः क्सप्रत्ययोऽपि तत्रैव वक्तव्यः।
२—(वा०) दृग्दृशवतुषु दृक्षेचेति वक्तव्यम् ।
*टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यय इति पाठः ।
३—(वा०) छन्दसि स्त्रियां बहुलमिति वक्तव्यम् ।
४—(वा०) ईत्वमनवर्णादिति वक्तव्यम् ।
५—(वा०) कद्भावे त्रावुपसंख्यानम् ।

कोः, कत्	१०१ रथ-वदयोश्च ।	
,, ,,	१०२ तृणे च जातौ ।	
कोः	१०३ काप थ्यक्षयोः ।	का १०७
कोः, का	१०४ ईषदर्थे ।	
,, ,,	१०५ विभाषा पुरुषे ।	वि-षा १०७
कोः, का, वि, षा	१०६ कवं चोष्णे ।	कवम् १०७
कोः, कवम्, का वि-षा	१०७ पथि च छन्दसि ।	
	१०८ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ।(१)	
	१०९ संख्या-विसाय-पूर्वस्याह्नस्या-ह्नन्यतरस्यां ङौ ।	
	(उत्तरपद-दीर्घ—)	
	११० ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।	ढ्रलोपे १११, पू-र्वस्य, १३९, दीर्घः।६।४।१८
ढ्रलोपे	१११ सहि-वहोरोदवर्णस्य ।	
	११२ साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे ।	
	११३ संहितायाम् ।	
दीर्घः	११४ कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्ट-पञ्च-मणि-भिन्न-छिन्न-च्छिद्र-स्रुव-स्वस्तिकस्य ।	
दीर्घः, सं-म्	११५ नहि-वृति वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु क्वौ ।	

१—(वा०) (क) दिक्शब्देभ्यस्तीरस्य तारभावो वा। (ख) वाचो वादे डत्वं वलभावश्चोत्तरपदस्येञि। (ग) षष उत्वं दतृदशसूत्तरपदादेःष्टुत्वं च। (घ) धासु वा। (ङ) दुरो दाशनाशदभध्येषु। (च) स्वरो रोहतौ छन्दसि।

—

दीर्घः	११६ वनगिर्योः संज्ञायां कोटर-किंशुलुकादीनाम् । (१)	सञ्ज्ञायाम् ११९
,,	११७ वले ।	
दीर्घः, सं-म्	११८ मतौ बह्वचोऽनजरादीनाम् ।(२)	मतौ ११९
,, ,, मतौ	११९ शरादीनां च । (३)	
दीर्घः	१२० इको वहेऽपीलोः । (४)	
,,	१२१ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् । (५)	उ-स्य १२३
,, उप-स्य	१२२ इकः काशे ।	इकः १२३
इकः,उ-स्य,दीर्घः	१२३ दस्ति ।	
दीर्घः	१२४ अष्टनः संज्ञायाम् ।	अष्टनः १२५
,, अ-नः	१२५ छन्दसि च ।	
दीर्घः	१२६ चितेः कपि ।	
,,	१२७ विश्वस्य वसु राटोः ।	विश्वस्य १२९
,, विश्वस्य	१२८ नरे संज्ञायाम् ।	

१—(गणपा०) किंशुलुक (किंशुलक का०), शाल्व (साल्वक), नड, (नभ्र), अंजन, भंजन, लोहित, कुक्कुट। इति किंशुलकादिः।

कोटर, मिश्रक, सिध्रक, पुरग, (पुरक का०), शारिक (सारिक का०), इति कोटरादिः।

२—(गणपा०) अजिर, खदिर, पुलिन, हंस (हंसक), कारण्डव, (कारण्ड, हंसकारण्डव), चक्रवाक। इत्यजिरादिः।

३—(गणपा०) शर, वंश, धूम, अहि, कपि, मणि, मुनि, शुचि, हनु। इति शरादिः।

४—(वा०) अपील्वादीमिति वक्तव्यम्।

५—(वा०) (क) सादकारयोः कृत्रिमे। (ख) अमनुष्यादिष्विति वक्तव्यम्। (ग) प्रतिवेशादीनां विभाषा।

दीर्घः विश्वस्य	१२९ मित्रे चर्षौ ।	मन्त्रे १३१
"	१३० मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय-विश्वदेव्यस्य मतौ ।	
मन्त्रे, दीर्घः	१३१ ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ।	
दीर्घः	१३२ ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् ।	ऋचि १३५
दीर्घः, ऋचि	१३३ इकः सुञि ।	
दीर्घः, ऋचि	१३४ द्व्यचोऽतस्तिङः ।	
" "	१३५ निपातस्य च ।	
"	१३६ अन्येषामपि दृश्यते ।	
"	१३७ चौ ।	
"	१३८ सम्प्रसारणस्य ।	सम्प्र-स्य। ६।४।२

इति षष्ठाध्यायस्य तृतीयः पादः ।

अथ चतुर्थः पादः

(अथाङ्गाधिकारः—तत्र प्रत्ययविकाराः—)*

	१ अङ्गस्य ।	अ-स्य।७।४।९६
अ-स्य, दीर्घः	२ हलः ।	
दीर्घः	३ नामि ।	नामि ७
दीर्घः, नामि	४ न तिसृचतसृ ।	ति-सृ १५
तृ सृ, दीर्घः नामि	५ छन्दस्युभयथा ।	उ-धा० ६

---

*प्रत्यये परतो विधीयमाना विकाराः प्रत्ययविकाराः।

नामि, उ-था, दीर्घः	६ नृ च ।	
,, दीर्घः	७ नोपधायाः ।	नो-याः १८
नामि, दीर्घः, नो-याः	८ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ।	स-ने ११ अ-द्धौ १४
नो-याः, दीर्घः स-ने	९ वा षपूर्वस्य निगमे ।	
उपधा,- दीर्घः स-ने	१० सान्तमहतः संयोगस्य ।	
उ-याः, स-ने, अ-द्धौ दीर्घः	११ अप्-तृन्-तृच्-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तृणाम् ।	
उ-याः, दीर्घः	१२ इन्-हन्-पूषार्यम्णां शौ ।	इ-णाम् १३
इ-णाम्, उ-याः, दीर्घः, अ-द्धौ	१३ सौ च ।	सौ १४
उ-याः, दी-, साव-द्धौ	१४ अत्वसन्तस्य चाधातोः ।	
उ-याः, दीर्घः	१५ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ।	क्विझलोः, क्-ति २१
दीर्घः, झलि	१६ अज्झन-गमां सनि । (१)	सनि १७
झलि, सनि, दीर्घः	१७ तनोतेर्विभाषा ।	वि-षा १८
झलि, वि-षा, दीर्घः	१८ क्रमश्च क्त्वि ।	
क्विझलोः,क्-ति	१९ च्छ्वोः शूडनुनासिके च ।	च्छ्वोः २१, शूठ्, अ-के २०
च्छ्वोः, क्वि-लोः, क्-ति शूठ्	२० ज्वर-त्वर-स्रिव्यवि-मवामुपधायाश्च ।	

१—(वा०) गमेर्दीर्घत्व इङ्ग्रहणम् ।

क्वि-लोः, क्	२१ शाल्लोपः ।	
	२२ असिद्धवदत्राभात् । (१)	
	२३ श्नान्नलोपः ।	न-लोपः ३३
नलोपः	२४ अनिदितां हल उपधायाःक्ङिति । (२)	उ-याः ३४
उ-याः, नलोपः	२५ दंश-सञ्ज-स्वञ्जां शपि ।	शपि २६
,, ,, शपि	२६ रञ्जेश्च ।	रञ्जेः २७
जेरु-याः, न-पः	२७ घञि-च भावकरणयोः ।	घञि २६
घञि	२८ स्यदो जवे ।	
घञि	२९ अवोदैधौद्म-प्रश्रथ-हिमश्रथाः ।	
नलोपः	३० नाञ्चेः पूजायाम् ।	न ३३
,, न	३१ क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ।	क्त्वि ३२
क्त्वि, न, न-पः	३२ जान्तनशां विभाषा ।	विभाषा ३३
वि-षा, न, न-पः	३३ भञ्जेश्च चिणि ।	
उ-याः, क्ङिति	३४ शास इदङ्हलोः । (३)	शासः ३५
शासः	३५ शा हौ ।	हौ ३६
हौ	३६ हन्तेर्जः ।	

१—(वा०) (क) अनिदितां नलोपे लङ्गिकम्प्योरुपतापशरीरविकारयोरुपसंख्यानम् । (ख) रञ्जर्णौ मृगरमणे ।

२—(वा०) रुग्युटावुवङ्यणोः सिद्धौ वक्तव्यौ ।

३—(वा०) शास इत्वे आशासः क्वौ *

---

*क्वौ च शास इत्वं भवतीति वक्तव्यम् । इति पा० ।

	३७ अनुदात्तोपदेश-वनति-तनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ।	अनुदा-म् ३९, अनुना-पः ४०
अ-नाम्, अ-पः	३८ वा ल्यपि ।	
अ-नाम्, अ-पः	३९ न क्तिचि दीर्घश्च ।	
अ-पः	४० गमः क्वौ । (१)	
	४१ विड्वनोरनुनासिकस्यात् ।	आत् ४५
झलि,क्-ति,आत्	४२ जन-सन-खनां सञ्झलोः ।	ज-नाम् ४३
ज-म्,आत्,क्-ति	४३ ये विभाषा ।	विभाषा ४४
वि-षा, आत्	४४ तनोतेर्यकि ।	
आत्	४५ सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ।	
	४६ आर्धधातुके ।	आर्धधातुके ६८
	४७ भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्।	
आ-के	४८ अतो लोपः ।	लोपः ५४
लोपः, आ-के	४९ यस्य हलः ।	हलः ५०
हलः,लोपः,आ-के	५० क्यस्य विभाषा ।	
आ-के, णेः, लोपः	५१ णेरनिटि ।	णेः ५७
णेर्लोपः	५२ निष्ठायां सेटि ।	
	५३ जनिता मन्त्रे ।	
	५४ शमिता यज्ञे ।	

१—(वा०) (क) गमादीनामिति वक्तव्यम्। (ख) ऊङ् च।

णेः	**५५ अयामन्ताल्वाय्येत्विष्णुषु ।**	अय् ५७
णेः, अय्	**५६ ल्यपि लघुपूर्वात् ।**	ल्यपि ५९
णेरय्, ल्यपि	**५७ विभाषाऽऽपः ।**	
ल्यपि	**५८ यु-प्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ।**	दीर्घः ६१
,, दीर्घः	**५९ क्षियः ।**	क्षियः ६१
क्षियोदीर्घः	**६० निष्ठायामण्यदर्थे ।**	नि-म्, अ-र्थे ६१
क्षियः, दीर्घः, नि-म् अ-र्थे	**६१ वाऽऽक्रोशदैन्ययोः ।**	
	६२ स्य-सिच्-सीयुट्-तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झन-ग्रह-दृशां वा चिण्वदिट् च ।	
	६३ दीङो युडचि क्ङिति ।	अचि ६४, क्-ति ६८
क्-ति, आ-के	**६४ आतो लोप इटि च ।**	आतः ६५
आतः	**६५ ईद्यति ।**	ईत् ६६
ईत, क्ङिति	**६६ घु-मा-स्था-गा-पा-जहातिसां हलि ।**	घु-साम् ६९
घु-साम्	**६७ एर्लिङि ।**	एर्लिङि ६८
एः,आतः,लिङि	**६८ वाऽन्यस्य संयोगादेः ।**	
	६९ न ल्यपि ।	ल्यपि ७०
ल्यपि	**७० मयतेरिदन्यतरस्याम् ।**	
अङ्गस्य	**७१ लुङ् लङ् लृङ्क्ष्वडुदात्तः ।**	लु-क्षु अट् ७५, उदात्तः ७२
लु-क्षु, उ-त्तः	**७२ आडजादीनाम् ।**	आट् ७५
आट् अट्	**७३ छन्दस्यपि दृश्यते ।**	
लु-क्षु, अडाटौ	**७४ न माङ्योगे ।**	

अडाटौ	**७५ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ।**	व-म्, छ-सि ७६
छन्दसि	**७६ इरयो रे ।**	
	७७ अचि श्नु-धातु-भ्रुवां य्वोरियङ्-वङौ । (१)	अचि १००, य्वोः ७२, इ-ङौ ८०
य्वोः, अचि, इ-ङौ	**७८ अभ्यासस्यासवर्णे ।**	
अचि, इ-ङ्	**७९ स्त्रियाः ।**	स्त्रियाः ८०
स्त्रियाः, इ-ङ्	**८० वाम्शसोः ।**	
अचि	**८१ इणो यण् ।**	यण् ८७
धातोः, अचि, यण्	**८२ एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ।**	अनेकाचः, अ-स्य ८७
ने-चः, अ-स्य	**८३ ओः सुपि ।**	सुपि ८४
अचि,सुपि,यण्	**८४ वर्षाभ्वश्च ।** (२)	
यण्	**८५ न भू-सुधियोः ।**	न, भू-योः ८६
भू-योः	**८६ छन्दस्युभयथा ।**	
अ-चः, अ-स्य, अचि, यण्	**८७ हु-श्नुवोः सार्वधातुके ।**	
अचि	**८८ भुवो वुग् लुङ्लिटोः ।**	
अचि	**८९ ऊदुपधाया गोहः ।**	ऊत् ९१, उ-याः ९४
ऊत्, उ-याः	**९० दोषो णौ ।**	दोषः ९१ णौ ९४

१—(वा०) इयङ्वङ्प्रकरणे तन्वादीनां छन्दसि बहुलमुपसंख्यानम्।

२—(वा०) (क) पुनर्भ्वश्चेति वक्तव्यम्। (ख) वर्षाहृन्कारपुनःपूर्वस्य भुव इति वक्तव्यम्।

ऊत् उ-याः दोषः	९१ वा चित्तविरागे ।	
उ-याः, णौ	९२ मितां ह्रस्वः ।	मिताम् ९३
णौ, मिताम्, उ-याः	९३ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् ।	
णौ,उ-याः,ह्रस्वः	९४ खचि ह्रस्वः ।	ह्रस्वः ९७
उ-याः, ह्रस्वः	९५ ह्लादो निष्ठायाम् ।	
उ-याः, ह्रस्वः	९६ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य । (१)	छादेः ९७
छादेरु-या ह्रस्वः	९७ इस्-मन्-त्रन्-क्विषु च ।	
उ-याः, अचि	९८ गम-हन-जन-खन-घसां लोपः क्ङित्यनङि ।	लोपः १००, क्-ति १२६
उ-याः, लोपः, अचि, क्ङिति	९९ तनि-पत्योश्छन्दसि ।	छन्दसि १००
छ-सि, उ-याः, लोपः,अचि,क्-ति	१०० घसि-भसोर्हलि च ।	हलि १०१
	१०१ हु-झल्भ्योर्हेर्धिः ।	हेर्धिः १०३
हेर्धिः	१०२ श्रु-शृ-णु-पृ-कृ-वृभ्यश्छन्दसि ।	छ-सि १०३
हेर्धिः छ-सि	१०३ अङितश्च ।	
	१०४ चिणो लुक् ।	लुक् १०६
लुक्	१०५ अतो हेः ।	हेः १०६
हेर्लुक्	१०६ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् । (२)	उतः,प्र-त्११०, अ-त् १०७
उतः, प्रत्ययस्य, अ-स्य	१०७ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः ।	लोपः १०९, म्वोः १०८

१—(वा०) अद्विप्रभृत्युपसर्गस्येति वक्तव्यम्।

२—(वा०) उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्।

उतः, प्र-स्य म्वोः, लोपः	१०८ नित्यं करोतेः ।	नि-म् १०९ क-ते ११०
उतः क-तेः, नि-म्, लोपः	१०९ ये च ।	
क्ङिति, करोतेः, उतः	११० अत उत् सार्वधातुके ।	सा- के ११९
सा-के, क्-ति	१११ श्नसोरल्लोपः ।	अ-ल्लोपः ११२
लोपः, सा-के, क्-ति	११२ श्नाभ्यस्तयोरातः ।	श्ना-योः ११३ आतः ११४
श्ना-योरातः, सा-के, क्-ति	११३ ई हल्यघोः ।	हलि ११६
हलि, सा-के क्-ति आतः	११४ इद्दरिद्रस्य । (१)	इत् ११६
,, ,, ,, इत्	११५ भियोऽन्यतरस्याम् ।	अ-म् ११७
,, ,, ,, ,, वा	११६ जहातेश्च ।	जहा-तेः ११८
ज-तेः ईत्, अ-म्	११७ आ च हौ ।	
,, क्-ति सा-के	११८ लोपो यि ।	
	११९ ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ।	एत् अ-पः १२६
एत्, अ-पः	१२० अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि । (२)	अतः,लिटि१२६, ए-ध्ये,अ-देः १२१
अत, ए-ध्ये, अ-दे-एत्, अ-पः	१२१ थलि च सेटि ।	थलि, सेटि १२६
अत एत्, अ-पः, क्-ति, लिटि, सेटि, थलि	१२२ तॄ-फल-भज-त्रपश्च ।	

१—(वा०) (क) दरिद्रातेरार्धधातुके लोपो वक्तव्यः। (ख) सिद्धश्च प्रत्ययविधौ भवतीति वक्तव्यम्। (ग) अद्यतन्यां वेति वक्तव्यम्।

२—(वा०) (क) दम्भएत्वं नलोपस्यासिद्धत्वात्

सेटि, थलि+.	१२३ राधो हिंसायाम् ।	
,,	१२४ वा जॄ-भ्रमु-त्रसाम् ।	वा १२५
,, वा	१२५ फणां च सप्तानाम् ।	
,,	१२६ न शस-दद-वादि गुणानाम् ।	
	१२७ अर्वणस्त्रसावनञः ।	तृ १२८
तृ	१२८ मघवा बहुलम् ।	
	१२९ भस्य ।	भस्य १७५
भस्य	१३० पादः पत् ।	
,,	१३१ वसोः सम्प्रसारणम् ।	सम्प्रसरणम् १३३
,, स-म्	१३२ वाह ऊठ् । (१)	
,, ,,	१३३ श्व-युव-मघोनामतद्धिते ।	
भस्य	१३४ अल्लोपोऽनः ।	अ-पः १४५ अनः १३७
भस्य, अल्लोपः	१३५ षपूर्व-हन्-धृतराज्ञामणि ।	
अनः, अ-पः	१३६ विभाषा ङि-श्योः ।	
,, ,,	१३७ न संयोगाद्वमन्तात् ।	
भस्य, अ-पः	१३८ अचः ।	अचः १३९
भस्य,अचः,अ-पः	१३९ उद ईत् ।	
भस्य, लोपः	१४० आतो धातोः ।	
भस्य,आतः,लोपः	१४१ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ।	
भस्य, लोपः	१४२ ति विंशतेर्डिति ।	डिटि १४३

+—१२६ सूत्रपर्यन्तं चिन्हेन उपरितनसर्वपदानुवृत्तिर्बोध्या।

१—(प०) असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे।

भस्य,लोपः,डिटि	१४३ टेः ।	टेः १४५
भस्य, टेः लोपः	१४४ नस्तद्धिते । (१)	तद्धिते १४९
टिलोपः	१४५ अन्हष्टखोरेव ।	
भस्य, त-ते	१४६ ओर्गुणः ।	ओः १४७
ओः, भस्य, त-ते	१४७ ढे लोपोऽकद्र्वाः ।	लोपः १५५
भस्य, लोपः त-ते	१४८ यस्येति च । (२)	ईति १५०
भस्य, लोपः, ईति, त-ते,	१४९ सूर्य-तिष्यागस्त्य-मत्स्यानां य उपधायाः । (३)	यः १५२, उ-याः १५०
भस्य, लोपः, ईति	१५० हलस्तद्धितस्य ।	हलः १५२
हलः, यलोपः	१५१ आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति ।	आ-स्य, १५२, त- ते १५३
हलः, आ-स्य, यलोपः	१५२ क्य-च्व्योश्च ।	
भस्य, त-ते	१५३ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् । (४)	
लोपः	१५४ तुरिष्ठेमेयस्सु ।	इ-स्सु १६३

१—(वा०) (क) नान्तस्य टिलोपे सब्रह्मचारिपीठसर्पिकलापि कुथुमितैतिलिजाजलिलाङ्गलिशिलालिशिखण्डिसूकरसद्मसुपर्वणामुपसंख्यानम् । (ख) अश्मनो विकारे (ग) चर्मणः कोशे (घ) शुनः संकोचे । (ङ) अव्ययानां च सायंप्रतिकाद्यर्थम् ।

२—(वा०) (क) यस्येत्यादौः श्यां प्रतिषेधो वक्तव्यः । (ख) इयङुवङ्भ्यां लोपो भवति विप्रतिषेधेन ।

३—(वा०) (क) सूर्यमत्स्ययोङर्चाम् । (ख) सूर्यागस्त्ययोश्छे च । (ग) तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि (घ) अन्तिकस्य तसि कादिलोप आद्युदात्तत्वं च (ङ) तमे तादेश्च । (च)

४—(गणपा०) नडादिगणे (४।२।९१) द्रष्टव्याः । छविधानार्थं ये नडादयस्ते यदा छसंनियोगे कृतकुगागमास्तदा बिल्वकादयः) ।

भस्य,लोपः,इ-सु	१५५ टेः। (१)	
लोपः, इ-सु	१५६ स्थूल-दूर-युव-ह्रस्व-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः।	
इ-सु	१५७ प्रिय-स्थिर-स्फिरोरु-बहुल-गुरु-वृद्ध-तृप्र-दीर्घ-वृन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फवर्बंहि-गर्वर्षि-त्रब्-द्राघि-वृन्दाः।	
इष्ठेमेय साम्	१५८ बहोर्लोपो भू च बहोः।	वहोः भू वहोः १५९
वहोः, भूः	१५९ इष्ठस्य यिट् च।	
इ-सु	१६० ज्यादादीयसः।	
इ-सु	१६१ र ऋतो हलादेर्लघोः।	र, ऋतः १६२
र, ऋतः, इ-सु	१६२ विभाषर्जोश्छन्दसि।	
भ, इ-सु	१६३ प्रकृत्यैकाच्। (२)	प्रकृत्या १७०
प्रकृत्या	१६४ इनण्यनपत्ये।	इन् १६६, अणि १७१
इन् प्र-त्या अणि	१६५ गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनश्च।	
इन्,प्र-त्या,अणि	१६६ संयोगादिश्च।	
अणि, प्र-त्या	१६७ अन्।	अन् १७०
अन्, प्र-त्या	१६८ ये चाऽभावकर्मणोः।	
प्र-त्या	१६९ आत्माध्वानौ खे।	

१—(वा०) (क) णाविष्ठवत्प्रातिपदिकस्य कार्यं भवतीति वक्तव्यम्। पुंवद्भावरभावटिलोपयणादिपरार्थम्। भारद्वाजीयानांमते—पु—यणादिपरप्रादिविन्मतोर्लुक् कन्विध्यर्थमिति।

२—(वा०) प्रकृत्याऽके राजन्यमनुष्ययुवानः।

अन्, प्र-त्या अणि　१७० न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः । (१)

अणि　१७१ ब्राह्मोऽजातौ ।

१७२ कार्मस्ताच्छील्ये ।

१७३ औक्षमनपत्ये ।

१७४ दाण्डिनायन-हास्तिनायनाथर्वणिक-जैह्माशिनेय-वासिनायनि-भ्रौणहत्य-धैवत्य-सारवैक्ष्वाक-मैत्रेय-हिरण्मयानि ।

१७५ ऋत्व्य-वास्त्व्य-वास्त्व-माध्वी-हिरण्ययानि च्छन्दसि ।

इति षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः ।

षष्ठाध्यायः समाप्तः ।

अथ सप्तमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(अङ्गाधिकारे प्रात्ययिकविकार—)*

१ युवोरनाकौ ।

२ आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ।　प्र-नाम् ५

प्र-त्ययादेः　३ झोऽन्तः ।　झः ७

१—(वा०) मपूर्वात् प्रतिषेधे वा हितनाम्न इति वक्तव्यम् ।

* प्रत्ययस्थाने ये विकाराः ते प्रात्ययिकविकाराः । अत्र विकारपदेन आगमोऽपि परिगृहीतः ।

अ-देः, भस्य	४ अदभ्यस्तात् ।	अत् ७
,, भस्य	५ आत्मनेपदेष्वनतः ।	
भस्य, अतः	६ शीङो रुट् ।	रुट् ८
भस्य, अतः रुट्	७ वेत्तेर्विभाषा ।	
रुट्	८ बहुलं छन्दसि ।	
	९ अतो भिस ऐस् ।	अतः १७, भिस ऐस् ११
अतोभिसऐस्	१० बहुलं छन्दसि ।	
भिस, ऐस्	११ नेदमदसोरकोः ।	
अतः	१२ टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः ।	
अतः	१३ ङेर्यः ।	ङेः १४
अतः, ङेः	१४ सर्वनाम्नः स्मै ।	स-म्नः १७
अतः, स-म्नः	१५ ङसि-ङ्योः स्मात्स्मिनौ ।	ङ-ङ्योः, स्मा- नौ १६
स-म्नः, ङङ्योः स्मा-नौ	१६ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ।	
अतः, सर्वनाम्नः	१७ जसः शी ।	शी १९
शी	१८ औङ आपः ।	औङः १९
औङः शी	१९ नपुंसकाच्च ।	न-त् २०
नपुंसकात्	२० जश्शसोः शिः ।	जश्शसोः २२
जश्शसोः	२१ अष्टाभ्य औश् ।	
,,	२२ षड्भ्यो लुक् ।	लुक् २३
लुक्	२३ स्वमोर्नपुंसकात् ।	स्वमोः २६, न-त्, २४
न-त्, स्वमोः	२४ अतोऽम् ।	
स्वमोः	२५ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ।	अद्ड् २६
,, अद्ड्	२६ नेतराच्छन्दसि ।	

	२७ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ।	युष्मद-म् ३३
युष्मदस्मद्भ्याम्	२८ ङेप्रथमयोरम् ।	
यु-म्	२९ शसो न ।	
,,	३० भ्यसोऽभ्यम् ।	भ्यसः ३१
,, भ्यसः	३१ पञ्चम्या अत् ।	प-म्याः, अत् ३२
,, प-म्याः, अत्	३२ एकवचनस्य च ।	
यु-म्	३३ साम आकम् ।	
	३४ आत औ णलः ।	
	३५ तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम् ।	अ-म् ३६
अ-म्	३६ विदेः शतुर्वसुः ।	
	३७ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ।	स-से, अ-र्वे,, क्त्वः ल्यप् ३८
	३८ क्त्वापि छन्दसि ।	छ-सि ५०
छन्दसि	३९ सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे-या-डा-ड्या-याजालः । (१)	
,,	४० अमो मश् ।	
,,	४१ लोपस्त आत्मनेपदेषु ।	
,,	४२ ध्वमो ध्वात् ।	
,,	४३ यजध्वैनमिति च ।	
,,	४४ तस्य तात् ।	तस्य ४५

१—(वा०) (क) इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम् । (ख) आङ्याजयाराञ्चोपसंख्यानम।

छन्दसि तस्य	४५ तप्-तनप्-तन-थनाश्च ।	
"	४६ इदन्तो मसि ।	
"	४७ क्त्वो यक् ।	क्त्वः ४९
"	४८ इष्ट्वीनमिति च ।	
"	४९ स्नात्व्यादयश्च ।	
"	५० आज्जसेरसुक् ।	आत् ५२, भ-क् ५१
असुक्	५१ अश्व-क्षीर-वृष-लवणानामात्म प्रीतौ क्यचि । (१)	
आत्	५२ आमि सर्वनाम्नः सुट् ।	आमि ५७
आमि	५३ त्रेस्त्रयः ।*	
आमः	५४ ह्रस्व-नद्यापो नुट् ।	नुट् ५७
आमो नुट्	५५ षट्-चतुर्भ्यश्च ।	
"	५६ श्री-ग्रामण्योश्छन्दसि ।	
"	५७ गोः पादान्ते ।	
	(नुम्प्रकरणम्)	
	५८ इदितो नुम् धातोः ।	नुम् ८३
नुम्	५९ शे मुचादीनाम् । (२)	

१—(वा०) (क) अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायाम्। (ख) क्षीरलवणयोर्लालसायाम्। (ग) सर्वप्रातिपदिकेभ्यो लालसायामसुग्वक्तव्यः दध्यस्यति मध्वस्यतीत्येवमर्थम्। (घ) सुग्वक्तव्यः दधिस्यति मधुस्यतीत्येवमर्थम्।

*प्रत्ययविकारप्रकरणेऽपि अनुवृत्तिलोलुपेन प्रातिपदिकादेशं विदधता आचार्येणैव क्रमभङ्गो विहितः।

२—(वा०) शे तृम्फादीनामिति वक्तव्यम्।

नुम्	६० मस्जि-नशोर्झलि ।	
,,	६१ रधि-जभोरचि ।	अचि ६४
,,	६२ नेट्यलिटि रधेः ।	
अचि, नुम्	६३ रभेरशब्लिटोः ।	अ-टोः ६४
अचि, नुम्, अटो।	६४ लभेश्च ।	लभेः ६९
लभेः, नुम्	६५ आङो यि ।	यि-६६
,, ,, यि	६६ उपात्प्रशंसायाम् ।	
,, ,,	६७ उपसर्गात् खल्घञोः ।	उ-त्, ख-ञोः ६८
उ-त्, लभेः, नुम्, खल्घञोः	६८ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ।	
लभेर्नुम्	६९ विभाषा चिण् णमुलो ।	
नुम्	७० उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।	स-ने ७२
,, स-ने	७१ युजेरसमासे ।	
स-ने, नुम्	७२ नपुंसकस्य झलचः । (१)	नपुंसकस्य ७७
न-स्य, नुम्	७३ इकोऽचि विभक्तौ ।	इकः ७४, वि-क्तौ ७५
इक् विभक्तौ	७४ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य ।*	तृ-षु ७५
तृ-षु विभक्तौ	७५ अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ।§	अ-म् ७७, अ-ङ् ७६, उ-त्तः ७६
अ-म्, अनङ्	७६ छन्दस्यपि दृश्यते ।	छन्दसि ७७
छ-सि, अ-म्, उ-त्तः	७७ ई च द्विवचने ।	

१—(वा०) वर्ह्जि प्रतिषेधो वक्तव्यः।

*पुंवत्वातिदेशस्य नुम्निषेधफलकतया न क्रमभङ्गः।

§अनङीत्वयोर्नुमोऽपवादत्वेन विधानात् न प्रक्रमभङ्गः।

नुम्	७८ नाभ्यस्ताच्छतुः ।	ना-त् ७९, शतुः ८१
अ-त्, शतुः, नुम्	७९ वा नपुंसकस्य ।	वा ८०
शतुः, वा, नुम्	८० आच्छीनद्योर्नुम् ।	शीनद्योः ८१
शतुः, नुम्	८१ शप्-श्यनोर्नित्यम् ।	
नुम्	८२ सावनडुहः ।	सौ ८५
,, सौ	८३ दृक्-स्ववः-स्वतवसां छन्दसि ।	
सौ	८४ दिव औत् ।	
,,	८५ पथि-मथ्यृभुक्षामात् ।	पथिय-म् ८८
प-म्	८६ इतोऽत् सर्वनामस्थाने ।	स-ने ९८
प-मथोः, स-ने	८७ थो न्थः ।	
प-म्	८८ भस्य टेर्लोपः ।	
स-ने	८९ पुंसोऽसुङ् ।	
स-नम्	९० गोतो णित् ।	णित् ९२
णित्	९१ णलुत्तमो वा ।	
स-नम्, णित्	९२ सख्युरसंबुद्धौ ।	सख्युः ९३, अ-संबुद्धौ ९५
सख्युः, अ-द्धौ	९३ अनङ् सौ ।	अ-ङ, सौ ९४
अ-द्धौ, सौअ-ङ्	९४ ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च ।	
अ-द्धौ, स-ने	९५ तृज्वत् क्रोष्टुः ।	तृ-त्, क्रोष्टुः ९७
क्रोष्टुः, तृ-त्	९६ स्त्रियां च ।	
,, ,,	९७ विभाषा तृतीयादिष्वचि ।	

स-ने	९८ चतुरनडुहोरामुदात्तः । (१)	चतुर-होः ९९
चतु-होः	९९ अम् संबुद्धौ ।	
	१०० ॠत इद्धातोः	ॠतः धातोः १०३, इत्, १०१,
ॠतः,इत्,धातोः	१०१ उपधायाश्च ।	
,, धातोः	१०२ उदोष्ठ्यपूर्वस्य । (२)	उत् १०३
,, उत्, धातोः	१०३ बहुलं छन्दसि ।	

इति सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः ।

अथ द्वितीयः पादः

(सिचि वृद्धि—)

	१ सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ।	
सिचि,वृद्धिः,प-षु	२ अतो ल्ल्रान्तस्य ।	सिचि वृद्धिः प-षु ७
वृद्धिः,प-दे,सिचि	३ वद्-व्रज-हलन्तस्याचः ।	हलन्तस्य ४
ह-स्य,वृद्धिः,सिचि	४ नेटि ।	नेटि ७
इटि, सिचि, वृद्धिः, न, प-दे	५ ह्म्यन्त-क्षण-श्वस-जागृ-णि-श्व्येदिताम् ।	
इटि,सिचि,पदे वृद्धिः,	६ ऊर्णोतेर्विभाषा ।	वि-षा ७
वृद्धिर्वा, इटि सिचि पदे	७ अतो हलादेर्लघोः ।	

१—(वा०) आमनडुहः स्त्रियां वेति वक्तव्यम्।

२—(वा०) इत्वोत्वाभ्यां गुणवृद्धी भवतो विप्रतिषेधेन।

(इणनिषेध—)

	८ नेड्वशि कृति ।	न इट् ३४, कृति ९
इट्, न, कृति	९ ति-तु-त्र-त-थ-सि-सु-सर-कसेषु च । (१)	
इट्, न	१० एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ।	
नेट्	११ श्र्युकः किति ।	उकः १२
उकः, नेट्	१२ सनि ग्रह-गुहोश्च ।	
नेट्	१३ कृ-सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवो लिटि । (२)	
,,	१४ श्वीदितो निष्ठायाम् ।	नि-म् ३४
,, निम्-	१५ यस्य विभाषा ।	
,, ,,	१६ आदितश्च ।	आदितः १७
आ-तः, निम्, इट्	१७ विभाषा भावादिकर्मणोः ।	
नेट्	१८ क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्त-लग्न-म्लिष्ट-विरिब्ध-फाण्ट-बाढानि मन्थ-मनस्तमः-सक्ताविस्पष्ट-स्वरानायास-भृशेषु ।	
नेट् नि-म्	१९ धृषि-शसी वैयात्ये ।	
,, ,,	२० दृढः स्थूलबलयोः ।	
,, ,,	२१ प्रभौ परिवृढः ।	
,, नि-म्	२२ कृच्छ्र-गहनयोः कषः ।	
,, ,,	२३ घुषिरविशब्दने ।	

१—(वा०) तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) कृञोऽसुट इति वक्तव्यम् ।

नेट् नि-म्	२४ अर्दे: सं-नि-विभ्यः।	अर्दे: २५
अर्दे ,, ,,	२५ अभेश्चाविदूर्ये।	
	२६ णेरध्ययने वृत्तम्।	णेः २७
णेः, नेट्, नि-म्	२७ वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-छन्न-ज्ञप्ताः।	वा २९
वा, नि-म्, इट्	२८ रुष्यम-त्वर-संघुषास्वनाम्।	
,, ,, ,,	२९ हृषेर्लोमसु। (१)	
,, ,, ,,	३० अपचितश्च। (२)	
निष्ठायाम्	३१ हु ह्वरेश्छन्दसि।	छन्दसि ३४
छ-सि	३२ अपरिह्वृताश्च।	
,,	३३ सोमे ह्वरितः।	
,,	३४ ग्रसित-स्कमित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ-तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्रीरुज्ज्वलिति-क्षरिति-क्षमिति-वमित्यमितीति च।	
	(इड्विधि—)	
	३५ आर्धधातुकस्येड्वलादेः।	
आ-स्य, इट्, व-देः	३६ स्नु-क्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते। (३)	
इटः	३७ ग्रहोऽलिटि दीर्घः।	अलिटि ३८, दीर्घः ४०

१—(वा०) विस्मितप्रतिघातयोश्चेति वक्तव्यम्।

२—(वा०) क्तिनि नित्यमिति वक्तव्यम्।

३—(वा०) क्रमेः कर्तर्यात्मनेपदविषयात् कृति प्रतिषेधो वक्तव्यः।

टो दीर्घः	३८ वॄतो वा।	वृतः ४२
तः, इटो दीर्घः	३९ न लिङि।	न ४०
, ,, ,, न	४० सिचि च परस्मैपदेषु।	
,	४१ इट् सनि वा।	वा ४३
इड् वा	४२ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु।	लि-चोः ४३
-चोः, आ-षु , वा	४३ ऋतश्च संयोगादेः।	
ादेरा-स्य, ् वा	४४ स्वरति-सूति-सूयति-धूञूदितो वा।	वा ५१
,,	४५ रधादिभ्यश्च।	
, ,,	४६ निरः कुषः।	निरः कुषः ४७
रःकुःष	४७ इण्निष्ठायाम्।	
के, इट्, वा	४८ तीष-सह-लुभ-रुष-रिषः। (१)	
् वा	४९ सनीवन्तर्ध-भ्रस्ज-दम्भु-श्रि-स्वृ यूर्णु-भर-ज्ञपि सनाम्। (२)	क्त्वा-योः ५४
	५० क्लिशः क्त्वा-निष्ठयोः।	
-योः,इड् वा	५१ पूङश्च।	
इट्	५२ वसति-क्षुधोरिट्।	
इट्	५३ अञ्चेः पूजायाम्।	
इट्	५४ लुभो विमोहने।	
	५५ जॄ-व्रश्च्योः क्त्वि।	क्त्वि ५६
स, इट्	५६ उदितो वा।	वा ५७

१—'तीषु' इति पाठान्तरम्।

२—इषेस्तकारे श्यन्प्रत्ययात्प्रतिषेधः।

वा, इट्	५७ सेऽसिचि कृत-चृत-च्छृद-तृद-नृतः ।	से ६०
से, आ-के	५८ गमेरिट् परस्मैपदेषु ।	परस्मैपदेषु ६
,, ,, प-दे, इट्	५९ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ।	न ६५
,, ,, ,, ,, न	६० तासि च क्लृपः ।	तासि ६३
नेट्	६१ अचस्तास्वत् थल्यनिटोनित्यम् ।	थलि ६६, अनिटः,नि-
ता-त्, थल्य-टः इड्, न	६२ उपदेशेऽत्वतः ।	
,, ,,	६३ ऋतो भारद्वाजस्य ।	
	६४ बभूथाततन्थ-जगृभ्म-ववर्थेति निगमे ।	
थलि, इड्, न	६५ विभाषा सृजि-दृशोः ।	
थलि	६६ इडत्यर्ति-व्ययतीनाम् ।	
इट्	६७ वस्वेकाजाद्घसाम् ।	वसु ६९
वसौ, इट्	६८ विभाषा गम-हन-विद-विशाम् ।	
वसौ इट्	६९ सनिं ससनिवांसम् ।	
इट्	७० ऋद्धनोः स्ये ।	
इट्	७१ अञ्जेः सिचि ।	सिचि ७३
,, सिचि	७२ स्तु-सु-धूञ्भ्यः परस्मैपदेषु ।	प-षु ७३
इट्, प-षु, सिचि	७३ यम-रम-नमातां सक् च ।	
,,	७४ स्मि-पूङ्-रञ्ज्वशां सनि ।	सनि ७५
,, सनि	७५ किरश्च पञ्चभ्यः ।	
वलादेः, इट्	७६ रुदादिभ्यः सार्वधातुके ।	सा-के ८१
सा-स्य ,,	७७ ईशः से ।	से ७८

, सा-स्य, इट्	७८ ईड-जनोर्ध्वे च ।	
के	७९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ।	
,	८० अतो येयः ।	अतः ८२, इयः ८१
:, सा-स्य, इय्	८१ आतो ङितः ।	
:	८२ आने मुक् ।	आने ८३
	८३ ईदासः ।	
	८४ अष्टन आ विभक्तौ ।	आ ८९, वि-क्तौ ११३
, वि-क्तौ	८५ रायो हलि ।	
	(युष्मदस्मदोरादेश--)	
,,	८६ युष्मदस्मदोरनादेशे ।	यु-दोः ९८, अ-शे ८९
ोः, आ	८७ द्वितीयायां च ।	
,,	८८ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ।	
-शे, वि- यु-दोः	८९ योऽचि ।	
ः, विभक्तौ	९० शेषे लोपः ।	
	९१ मपर्यन्तस्य ।	म-स्य ९८
ः, म-स्य	९२ युवावौ द्विवचने ।	
,,	९३ यूय-वयौ जसि ।	
,,	९४ त्वाहौ सौ ।	
,,	९५ तुभ्य-मह्यौ ङयि ।	
,,	९६ तव-ममौ ङसि ।	
,,	९७ त्व-मावेकवचने ।	त्वमौ, ए-ने ९८
,, ए-ने	९८ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ।	

वि-क्तौ	९९ त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ। (१)	तिसृ १००
ति-सृ, वि-क्तौ	१०० अचि र ऋतः।	अचि १०१
अचि, वि-क्तौ	१०१ जराया जरसन्यतरस्याम्।	
वि-क्तौ	१०२ त्यदादीनामः। (२)	
,,	१०३ किमः कः।	किमः १०५
किमः	१०४ कु तिहोः।	
,,	१०५ क्वाति।	
	१०६ तदोः सः सावनन्त्ययोः।	सौ १०८
सौ	१०७ अदस औ सुलोपश्च। (३)	
	(इदमो विकार—)	
,,	१०८ इदमो मः।	दमः ११३, मः १०९
इ-मः, मः, वि-क्तौ	१०९ दश्च।	
इदमः मस्य,	११० यः सौ।	सौ १११
,, सौ	१११ इदोऽय् पुंसि।	इदः ११३
,, इदः, वि-क्तौ	११२ अनाप्यकः।	
,, ,, ,,	११३ हलि लोपः।	
	(वृद्धि—)	
	११४ मृजेर्वृद्धिः।	वृद्धिः ७।३।

१—(वा०) (क) तिसृभावे संज्ञायां कन्युपसंख्यानम्। (ख) चतसय
युदात्तनिपातनं च।

२—(वा०) त्यदादीनां द्विपर्यन्तानामकारवचनम्।

३—(वा०) सावौत्वप्रतिषेधः साकच्काद्वा सादुत्वं च।

वृद्धिः	११५ अचो ञ्णिति ।	अचः ७।३।३१ ञ्णिति ७।३।३५
,, ञ्णिति	११६ अत उपधायाः ।	
ञ्णिति, वृद्धिः	११७ तद्धितेष्वचामादेः ।	तद्धितेषु, अ-देः ७।३।३१
त-ते,अ-देः,वृद्धिः	११८ किति च ।	

इति सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः

(वृद्धिप्रकरणं प्रस्तुतम्--)

ञ्णित्ति, किति त-ते	१ देविका-शिंशपा-दित्यवाड्-दीर्घसत्र-श्रेयसामात् । (१)	
,, ,,	२ केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेरियः ।	
वृद्धिः	३ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ।	न ५,य्वा-म्, पूर्वौ,ता-म्- ऐच ४
,, नय्वा-म् ऐच्	४ द्वारादीनां च । (२)	
वृद्धिर्न, य्वा-च्	५ न्यग्रोधस्य च केवलस्य ।	
,, ,,	६ न कर्मव्यतिहारे ।	न ६
,, ,,	७ स्वागतादीनां च । (३)	

१—(वा०) वहीनरस्यैद्वचनम् ।

२—(गणपा०) द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यल्कश, स्वस्ति, स्वर् (स्वर का०) स्फ्यकृत, स्वादुमृदु, श्वस्, श्वन्, स्व । इति द्वारादिः ।

३—(गणपा०) स्वागत, स्वध्वर, स्वङ्ग, व्यङ्ग, व्यड, व्यवहार, स्वपति । इति स्वागतादिः ।

वृद्धिर्न, य्वा-च्	८ श्वादेरिञि । (१)	श्वादेः ९
श्वादेः ,, ,,	९ पदान्तस्यान्यतरस्याम् ।	
	१० उत्तरपदस्य ।	उ-स्य ३१
उ-स्य, ञ्णिति, किति, त-ते	११ अवयवादृतोः ।	
उ-स्य ,,	१२ सु-सर्वार्धाज्जनपदस्य ।	ज-स्य १३
ज-स्य वृद्धिः ,,	१३ दिशोऽमद्राणाम् ।	दिशः १४
दिशः ,, ,,	१४ प्राचां ग्राम-नगराणाम् ।	
वृद्धिः ,,	१५ संख्यायाः संवत्सर-संख्यस्य च ।	संख्यायाः १७
स-याः ,,	१६ वर्षस्याभविष्यति ।	
,, ,,	१७ परिमाणान्तस्यासंज्ञाशाणयोः ।	
ञ्णिति, कि-ति, त-ते, उ-स्य, अ चा-वृ०	१८ जे प्रोष्ठपदानाम् ।	
ञ्णिति, कि-ति, त-ते उ-स्य वृ०	१९ हृद्भग-सिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ।	पूर्वपदस्य २५
वृद्धिः पू-स्य	२० अनुशतिकादीनां च । (२)	
,, ,,	२१ देवताद्वन्द्वे च ।	देवताद्वन्द्वे २१
वृद्धिः	२२ नेन्द्रस्य परस्य ।	न २३
वृद्धिर्न	२३ दीर्घाच्च वरुणस्य ।	
पू-स्य, उ-स्य, वृ, ञ्णिति, त-ते,	२४ प्राचां नगरान्ते ।	

१—(वा०) इकारादिग्रहणं कर्तव्यं श्वागणिकाद्यर्थम् ।

२—(गणपा०) **अनुशतिक, अनुडोह, अनुसंवरण, (अनुसंचरण), अनुसंवत्सर, अंगारवेणु, असिहत्य (अस्यहत्य), अस्यहेति, वध्योग, पुष्करसद्, अनुहरत्, कुरुकत, कुरुपंचाल, उदकशुद्ध, इहलोक, परलोक, सर्वलोक, सर्वपुरुष, सर्वभूमि, प्रयोग, परस्त्री, राजपुरुषात् ष्यञि, सूत्रनड। आकृतिगणः। लेन-अभिगम, अधिभूत, अधिदेव, चतुर्विद्या, मुखशयन, (का०), शतकुम्भ, परबर। इत्यनुशतिकादिः।**

,,	२५ जंगल-धेनु-वलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् ।	
,,	२६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ।	अ-त्, प-स्य २७ पू- स्य ३१, वा ३०
त्, प-स्य, पू- य, वा, ञ्णिति ते	२७ नातः परस्य ।	
ञ्ण-त-ते, उ- य, पूर्वस्य वा	२८ प्रवाहणस्य ढे ।	प्रवाहणस्य २९
,, *	२९ तत्प्रत्ययस्य च ।	
,,	३० नञः शुचीश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-निपुणानाम् ।	नञः ३१
ञः, वृद्धिः ञ्णिति, त-ते	३१ यथातथ-यथापुरयोः पर्यायेण ।	
ञ्णिति	३२ हनस्तोऽचिण्णलोः ।	
,,	३३ आतो युक् चिण्-कृतोः ।	चि-तोः ३५
,, चि-तोः, द्धिः	३४ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः ।	न ३५
द्धिर्न ,, ,,	३५ जनि-वध्योश्च ।	

(णौ आगमविकार—)

ङ्गस्य	३६ अर्ति-ह्री-व्ली-री-क्नूयी-क्ष्माय्यातां पुग्णौ ।	णौ ४३
ौ	३७ शा-छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पां युक् । (१)	
	३८ वो विधूनने जुक् ।	

---

* अत्र ',,' चिन्हेन पूर्वनिर्दिष्ट सर्वपदानुवृत्तिर्बोध्या । एवमुत्तरत्र

१—(वा०) (क) पातेर्लुग्वचनम् । (ख) धूञ्प्रीञोर्नुग् वचनम्

णौ	३९ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने ।	
,,	४० भियो हेतुभये षुक् ।	
,,	४१ स्फायो वः ।	
,,	४२ शदेरगतौ तः ।	
,,	४३ रुहः पोऽन्यतरस्याम् ।	
	(इकारादेश——)	
	४४ प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः । (१)	अतः ४९, इत् ४८
अतः इत्	४५ न-यासयोः । (२)	
अत, इत्, न	४६ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः । (३)	उदीचाम् ४८ आतः स्थाने ४९
आतः, अतः, इत्, न, उदीचाम्	४७ भस्त्रैषा-जा-ज्ञा-द्वा-स्वा नञ्पूर्वाणामपि ।	
आतः, अतः, इत्, न, उ-म्	४८ अभाषितपुंस्काच्च ।	अभ्यासात् ४९
अ-त्,आतः,अतः	४९ आदाचार्याणाम् ।	
	५० ठस्येकः ।	ठस्य ५१

१—(वा०) (क) मामकनरकयोरुपसंख्यानम प्रप्रययस्थत्वात् । (ख) त्यक्त्यपोश्च प्रतिषिद्धित्वात् ।

२—(वा०) (क) यत्तदोः प्रतिषेधे त्यकन उपसंख्यानम् । (ख) पावकादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् । (ग) आशिषि च । (घ) उत्तरपद लोपे च । (ङ) क्षिपकादीनां च । (च) तारका ज्योतिषि । (छ) वर्णका तान्तवे । (ज) वर्तका शकुनौ प्राचाम् । (झ) अष्टका पितृदैवत्ये । (ञ) वा सूतकापुत्रकावृन्दारकाणाम् ।

३—(वा०) यकपूर्वत्वे धात्वन्तप्रतिषेधः ।

ठस्य	५१ इसुसुक्तान्तात्कः। (१)	
	(कुत्वविधि--)	
	५२ चजोः कु घिण्ण्यतोः।	चजोः कु ६९,
कु	५३ न्यङ्क्वादीनां च। (२)	
	५४ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु।	हः,५५ हन्तेः५६
हन्ते, हः, कु	५५ अभ्यासाच्च।	अ-त् ५८
अ-त्, हः, कु	५६ हेरचङि।	
अ-त्, कु	५७ सन्‌-लिटोर्जेः।	स-टोः ५८
अ-त्, कु, सटोः	५८ विभाषा चेः।	
चजोः, कु	५९ न क्वादेः।	न ६९
,, ,, न	६० अजि-व्रज्योश्च।	
कु, न	६१ भुज-न्युब्जौ पाण्युपतापयोः।	
,, ,,	६२ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे।	
,, ,,	६३ वञ्चेर्गतौ।	
,, ,,	६४ ओक उचः के।	
,, ,, चजोः	६५ ण्य आवश्यके।	ण्ये ६९
,, ,, ण्ये	६६ यज-याच-रुच-प्रवचर्चश्च। (३)	
,, ,, ,,	६७ वचोऽशब्दसंज्ञायाम्।	
,, ,, ,,	६८ प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्यार्थे।	

१—(वा०) दाप उपसंख्यानम्।

२—(गणपा०) न्यङ्कु, मद्गु, भृगु, दूरेपाक, फलेपाक, क्षणेपाक, दूरेपाका, फलेपाका, दूरेपाकु, फलेपाकु, तक्र (तत्र), वक्र (चक्र), व्यतिषङ्ग, अनुषङ्ग, अवसर्ग, उपसर्ग, श्वपाक, मांसपाक (मासपाक), मूलपाक, कपोतपाक, उलूकपाक, संज्ञायां मेघनिदाघावदाघार्घाः। न्यग्रोध, वीरुध। इति न्यङ्क्वादिः।

३—(वा०) ण्यप्रतिषेधे त्यजेरुपसंख्यानम्।

,, ,, ,,	६९ भोज्यं भक्ष्ये ।	
	७० घोर्लोपो लेटि वा ।	लोपः ७२
लोपः	७१ ओतः श्यनि ।	
,,	७२ क्सस्याचि ।	क्सस्य ७३
क्सस्य	७३ लुग्वा दुह-दिह-लिह-गुहामात्मनेपदे दन्त्ये ।	
	७४ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ।	दीर्घः ७६
दीर्घः	७५ ष्ठिवु-क्लमु-चमां शिति ।	शिति ८२
दीर्घः, शिति	७६ क्रमः परस्मैपदेषु ।	
शिति	७७ इष-गमि-यमां छः ।*	
शिति	७८ पा-घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश्यर्ति-शद-सदां पिब-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-पश्यर्च्छ-धौ-शीय-सीदाः ।	
,,	७९ ज्ञा-जनोर्जा ।	
,,	८० प्वादीनां ह्रस्वः ।	ह्रस्वः ८१
,, ह्रस्वः	८१ मीनातेर्निगमे ।	
,,	८२ मिदेर्गुणः ।	गुणः ८८
गुणः	८३ जुसि च ।	
,,	८४ सार्वधातुकार्धधातुकयोः ।	सार्व-कयोः ८६

---

* 'इषु' इत्यस्य स्थाने 'इष' इति अनार्षः पाठ 'इषेश्छत्वमहलि' इति वार्तिकानुरोधात् इति कैयटः।

गुणः	८५ जाग्रोऽवि-चिण्-णल्-ङित्सु ।	
,, सा-र्योः	८६ पुगन्त-लघूपधस्य च ।	पुगन्त-स्य ८७
ल-स्य, गुणः	८७ नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके । (१)	न ८८, पिति ९४सा-के१०१
सा-के, गुणः, न	८८ भू-सुवोस्तिङि ।	
सा-के, पिति	८९ उतो वृद्धिर्लुकि हलि ।	वृद्धिः ९० हलि १००
वृद्धिः, हलि, पिति, सा-के	९० ऊर्णोतेर्विभाषा ।	ऊर्णो तेः ९१
ऊ-तेः ह-के	९१ गुणोऽपृक्ते ।	
हलि,पिति,सा-के	९२ तृणह इम् ।	
हलादेः, पितः, सा-स्य	९३ ब्रुव ईट् ।	ईट् ९८
ह-देः, पितः, सा-स्य, ईट्	९४ यङो वा ।	वा ९५
ह-देः, वा, ईट्	९५ तु-रु-स्तु-शम्यमः। सार्वधातुके।	
सा-स्य, ईट्	९६ अस्ति-सिचोऽपृक्ते ।	अ-चोः ९७, अ-क्ते १००
अ-चोः,सास्य-ईट्	९७ बहुलं छन्दसि ।	
हलि, सा-के, अ-क्ते , ईट्	९८ रुदश्च पञ्चभ्यः ।	रुदः, प-भ्यः ९९
रु-भ्यः, अ-के-ईट्	९९ अड् गार्ग्य-गालवयोः ।	अट् १००
अ-के	१०० अदः सर्वेषाम् ।	अतः १०४, दीर्घः,यञि १०२
सा-के	१०१ अतो दीर्घो यञि।	
अतः दीर्घः यञि	१०२ सुपि च ।	सुपि १०३

१—(वा०) बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्।

अतः, सुपि	१०३ बहुवचने झल्येत् ।	एत् १०६
अतः, एत्	१०४ ओसि च ।	ओसि १०५
ओसि, एत्	१०५ आङि चापः ।	आपः १०६
आपः, एत्	१०६ सम्बुद्धौ च ।	स-द्धौ १०८
स-द्धौ	१०७ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः । (१)	
,,	१०८ ह्रस्वस्य गुणः ।	ह्र-स्य १०९, गुणः १११
गुणः, ह्र-स्य	१०९ जसि च । (२)	
गुणः	११० ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः ।	
,,	१११ घेर्ङिति ।	ङिति ११५
ङितः	११२ आण् नद्याः ।	
,,	११३ याडापः ।	आपः ११४
आपः, ङितः	११४ सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च ।	स्याट् ११५
ङितः, स्याट्	११५ विभाषा द्वितीया-तृतीयाभ्याम् ।	
	११६ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ।	ङेः ११९, आम् ११७
ङेराम्	११७ इदुद्भ्याम् ।	इ-म् ११८
इ-म्, ङेः	११८ औत् ।	औत् ११९
ङेः, औत्	११९ अच्च घेः ।	घेः १२०
घेः	१२० आङो नाऽस्त्रियाम् ।	

इति सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः।

१—(वा०) (क) डलकवतीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः। (ख) छन्दसि वेति वक्तव्यम्। (ग) तलो ह्रस्वो वा ङिसंबुद्ध्योरिति वक्तव्यम् (घ) मातॄणां मातच् पुत्रार्थमर्हते।

२—(वा०) जसादिषु छन्दसि वा वचनं प्राङ्णौ चङ्युपधायाः।

अथ चतुर्थः पादः

(णौ ह्रस्वविधि--)

	१ उणौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ।(१)	णो, चङि, उ- याः ८, ह्रस्वः ३
ो, चङ्युप- ा:, ह्रस्वः	२ नाग्लोपि-शास्वृदिताम् ।	
,,	३ भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव- मील-पीडामन्यतरस्याम् । (२)	
ो, चङ्यु-याः	४ लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य ।	
,,	५ तिष्ठतेरित् ।	इत् ६
,, इत्	६ जिघ्रतेर्वा	वा ७
ो, च-याः	७ उर्ऋत् ।	उः, ऋत् ८
ो, च-याः, उर्ऋत्	८ नित्यं छन्दसि ।	
	९ दयतेर्दिगि लिटि ।	लिटि १२
लिटि	१० ऋतश्च संयोगादेर्गुणः (३)	गुणः ११
,, गुणः	११ ऋच्छत्यॄताम् ।	
लिटि	१२ शॄ-द्दृ-प्रां ह्रस्वो वा ।	ह्रस्वः १५
ह्रस्वः	१३ केऽणः ।	अणः १४
अणो ह्रस्वः	१४ न कपि ।	न, कपि १५
कपि, ह्रस्वः, न	१५ आपोऽन्यतरस्याम् ।	

१—(वा०) उपधाह्रस्वत्वे णेर्णिच्युपसंख्यानम् ।
२—(वा०) काण्यादीनाञ्चेति वक्तव्यम् ।
३—(वा०) संयोगादेर्गुणविधाने संयोगोपधग्रहणं कृञर्थम् ।

	१६ ऋ-दृशोऽङि गुणः ।	अङि २०
अङि	१७ अस्यतेस्थुक् ।	
,,	१८ श्वयतेरः ।	
,,	१९ पतः पुम् ।	
,,	२० वच उम् ।	
	२१ शीङः सार्वधातुके गुणः ।	शीङः २२
शीङः	२२ अयङ् यि क्ङिति ।	यि, क्ङिति २५
यि क्ङिति	२३ उपसर्गाद् ह्रस्व ऊहतेः ।	उपसर्गात् २४
उ-त्, यि-ति, ह्रस्वः	२४ एतेर्लिङि	
यि, क्ङिति	२५ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ।	अ-योः २९, दीर्घः २६
दीर्घः	२६ च्वौ च ।	च्वौ २७
अ-योः, च्वौ	२७ रीङ् ऋतः ।	ऋतः ३०
ऋतः, अ-योः	२८ रिङ् श-यग्-लिङ्क्षु ।	श-क्षु २९
,, यकि, लिङि	२९ गुणोऽर्ति-संयोगाद्योः ।	गुणः, अ-द्योः ३०
अ-द्यो, गुणः	३० यङि च (१)	यङि ३१
यङि	३१ ई घ्राध्मोः ।	ई ३३
ई	३२ अस्य च्वौ ।	अस्य ३५
अस्य, ई	३३ क्यचि च ।	क्यचि ३९
	३४ अशनायोदन्य-धनाया-बुभुक्षा-पिपासा-गर्धेषु ।	
क्यचि	३५ न च्छन्दस्यपुत्रस्य । (२)	छन्दसि ३९

१—(वा०) यङ्प्रकरणे हन्तेर्हिंसायां घ्नीभावो वक्तव्यः।

२—(वा०) अपुत्रादीनामिति वक्तव्यम्।

	३६ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति रिषण्यति ।	
ऋचि, छ-सि	३७ अश्वाघस्यात् ।	आत् ३८
,, आत्	३८ देव-सुम्नयोर्यजुषि काठके ।	
,,	३९ कव्यध्वर-पृतनस्यर्चि लोपः ।	
	४० द्यति-स्यति-मा-स्थामित्ति किति ।	इत् ४१, तिकिति ४७
त्, तिकिति	४१ शाछोरन्यतरस्याम् ।	
,,	४२ दधातेर्हिः ।	हिः ४४
ः	४३ जहातेश्च क्त्वि ।	जहातेः, क्त्व ४४
हातेः,हिः,क्त्व	४४ विभाषा छन्दसि ।	छन्दसि ४५
	४५ सुधित-वसुधित-नेमधित-धिष्व-धिषीय च ।	
किति	४६ दो दद्घोः ।	दः, घोः ४७
,घोः,तिकिति	४७ अच उपसर्गात्तः ।	तः ४९
	४८ अपो भि ।	
	४९ सः स्यार्धधातुके ।	सः ५२, सि ५७
, सि	५० तासस्त्योर्लोपः ।	ता-स्त्योः ५२, लोपः ५३
, ता-स्त्योः, पः	५१ रि च ।	
-स्त्योः, सः	५२ ह एति ।	
पः	५३ यीवर्णयोर्दीधी-वेव्योः ।	
स	५४ सनि मी-मा-घु-रभ-लभ-शक-पत-पदामच इस् । (१)	सनि ५७, अचः ५६

१—(वा०) ह्रस्वं सनि राधो हिंसायाम् ।

सि, सनि, अचः	५५ आप्-ज्ञप्यृधामीत् ।	ईत् ५६
,, ,, ईत्	५६ दम्भ इच्च ।	
सि, सनि	५७ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ।	
	(अभ्यासविकार—)	
	५८ अत्र लोपोऽभ्यासस्य ।	अभ्या-स्य ६७
अभ्यासस्य	५९ ह्रस्वः ।	
,,	६० हलादिः शेषः ।	शेषः ६१
अ-स्य, शेषः	६१ शर्पूर्वाः खयः । (१)	
,,	६२ कुहोश्चुः ।	चुः ६४
,, चुः	६३ न कवतेर्यङि ।	न, यङि ६४
यङि,अ-स्यचुर्न	६४ कृषेश्छन्दसि ।	छन्दसि ६५
	६५ दाधर्ति-दर्धर्ति-दर्धर्षि-बोभूतु-तेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्-संसनिष्यदत्-करिक्रतत्-कनिक्रदद्-भरिभ्रद्दविध्वतो-दविद्युतत्-तरित्रतः सरीसृपतं-वरीवृजन्-मर्मज्या-गनीगन्तीति च ।	
अभ्यासस्य	६६ उरत् ।	
,,	६७ द्युति-स्वाप्योः सम्प्रसारणम् ।	स-म् ६८
,, स-म्	६८ व्यथो लिटि ।	लिटि ७४
,, लिटि	६९ दीर्घ इणः किति ।	दीर्घः ७०
,, दीर्घः लिटि	७० अत आदेः ।	
	७१ तस्मानुड् द्विहलः ।	त-त्, नु ट् ७२

१—(वा०) शर्पूर्वशेषे खर्पूर्वग्रहणम् ।

स्मात्, नुट्	७२ अश्नोतेश्च ।	
स्य	७३ भवतेरः ।	अः ७४
	७४ ससूवेति निगमे ।	
स्य	७५ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ ।	त्र-म् ७६, श्लौ ७८
म्, श्लौ	७६ भृञामित् ।	इत् ८१
, स्य इत्, श्लौ	७७ अर्ति-पिपर्त्योश्च ।	
,, ,,	७८ बहुलं छन्दसि ।	
त्	७९ सन्यतः ।	सनि ८१
सनि	८० ओः पुयण्ज्यपरे ।	ओः पु परे ८१
ः अवर्णपरे, णि, इत्	८१ स्रवति-शृणोति- द्रवति-प्रवति-प्लवति-च्यवतीनां वा ।	
सस्य	८२ गुणो यङ्लुकोः ।	यङ्लुकोः ९०
य-कोः	८३ दीर्घोऽकितः ।	
,,	८४ नीग्वञ्चु-स्रंसु-ध्वंसु-भ्रंशु - कस-पत-पद-स्कन्दाम् ।	
,,	८५ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य। (१)	नुक् ८७
,, नुक्	८६ जप-जभ-दह-दश - भञ्ज-पशां च ।	
,, ,,	८७ चर-फलोश्च ।	चरफलोः ८९
र-लोः, अ-त् कोः	८८ उत्परस्यातः ।	उत्, अतः ८९
,,	८९ ति च ।	
स्य, य-कोः	९० रीगृदुपधस्य च ।	ऋ- स्य ९१, रीक् ९२,

१—(वा०) पदान्तवच्चेति वक्तव्यम् ।

ऋ-स्य, अ-स्य रीक्	९१ रुग्रिकौ च लुकि ।	रुग्रिकौ,लुकि९२
अ-स्य, रु-कौ, रीक्, लुकि	९२ ऋतश्च ।	
	९३ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ।	ल-नि, ९४ च-रे, अ-पे ९७
ल-णौ, च-परे	९४ दीर्घो लघोः ।	
अ-स्य, चङ्-परे, णौ	९५ अत्-स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तॄ-स्पशाम् ।	अत् ९७
,, ,, अत्	९६ विभाषा वेष्टि-चेष्ट्योः ।	
,, ,, ,,	९७ ई च गणः ।	

इति सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ।

सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ।

अथ अष्टमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

(आष्टमिकद्वित्व—)

	१ सर्वस्य द्वे ।	स-स्य द्वे २२
	२ तस्य परमाम्रेडितम् ।	आम्रेतम् ३
आम्रेडिम्	३ अनुदात्तं च ।	
द्वे	४ नित्य-वीप्सयोः ।	
,,	५ परेर्वर्जने ।(१)	
,,	६ प्रसमुपोदः पादपूरणे ।	

१—(वा०) परेर्वर्जने वेति वक्तव्यम्।

” ७ उपर्यध्यधसः सामीप्ये ।

” ८ वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूया-सम्मति-कोप-कुत्सन-भर्त्सनेषु ।

द्वे ९ एकं बहुव्रीहिवत् । ब-वत् १०

” ब-वत् १० आबाधे च ।

११ कर्मधारयवदुत्तरेषु । कर्म-वत् १४

-वत्, द्वे १२ प्रकारे गुणवचनस्य । (१)

द्वे १३ अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोरन्यतरस्याम् ।

१४ यथास्वे यथायथम् ।

१५ द्वन्द्वं रहस्य-मर्यादावचन-व्युत्क्रमण-यज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु ।

(पदविकार—)

१६ पदस्य । पदस्य ८।३।५४

१७ पदात् । पदात् ६६

१८ अनुदात्तं सर्वमपादादौ । (२) अ-दादौ ७४

त्, पदस्य, तम् १९ आमन्त्रितस्य च ।

१—(वा०) (क) आनुपूर्व्ये द्वे भवत इति वक्तव्यम् (ख) स्वार्थे-ार्यमाणेऽनेकस्मिन्। (ग) चापले द्वे भवत इति वक्तव्यम्। (घ) क्रिया-भिहारे द्वे भवतः। (ङ) आभीक्ष्ण्ये द्वे भवतः। (च) डाचि द्वे भवतः।) पूर्वप्रथमयोरर्थातिशयविवक्षायाम्। (ज) डतरडतमयोः समसंप्रधारणायां ीनिगदे भावे द्वे भवतः। (झ) कर्मव्यतिहारे सर्वनाम्नो द्वे भवत इति वक्त-्। (ञ) स्त्रीनपुंसकयोरुत्तरपदस्य वाम्भावो वक्तव्यः।

२—(वा०) समानवाक्ये निघातयुष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः।

प-त्,प-स्य,अ-म्	२० युष्मदस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ।	यु-दोः २६, षः योः २२
यु-दोः, ष-योः	२१ बहुवचनस्य वस्नसौ ।	
,, ,,	२२ तेमयावेकवचनस्य ।	ए-नस्य २३
,, ए-स्य	२३ त्वामौ द्वितीयायाः ।	
,, वान्नावादयः	२४ न च-वा-हाहैवयुक्ते ।	न २६
,, ,,	२५ पश्यार्थैश्चानालोचने ।	
,, ,,	२६ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा।(१)	
	(अनुदात्तविधि—)	
पदात्,अ-त्तानि	२७ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः । (२)	
पदात्, प-स्य, अ-म्	२८ तिङतिङः ।	तिङ् ६६
तिङ्, अ-म्	२९ न लुट् ।	न ६६
, ,, न	३० निपातैर्यद्यदि-हन्त-कुविन्नेच्चेच्चण्-कच्चिद्यत्रयुक्तम् ।	
,, ,, ,,	३१ नह प्रत्यारम्भे ।	
,, ,, ,,	३२ सत्यं प्रश्ने ।	
,, ,, ,,	३३ अङ्गाप्रातिलोम्ये ।	अप्राति-म्ये ३४
,, ,, ,, अ-नुदात्तम्	३४ हि च ।	हि ३५

१—(वा०) (क) युष्मदस्मदोरन्यतरस्यामनन्वादेश इति वक्तव्यम्। (ख) सर्व एव वान्नावादयोऽनन्वादेशे विभाषा वक्तव्याः।

२—(गणपा०) गोत्र, ब्रुव, प्रवचन, प्रहसन, प्रकथन, प्रत्ययन, प्रपंच, प्राय, न्याय, प्रचक्षण, विचक्षण, अवचक्षण, स्वाध्याय, भूयिष्ठ, वा नाम (नाम वा का०), प्रवशन, प्रयजन, इति गोत्रादिः।

हि, तिङ्, अ- म्, न	३५ छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् ।	
ति-ङ्, अ-म्, न	३६ यावद्यथाभ्याम् ।	यावद्य म् ३८
ा-म्, तिङ्, अ-म् न	३७ पूजायां नानन्तरम् ।	पू-म्, न ३८
,, पू-म् अ-म्	३८ उपसर्गव्यपेतं च ।	
त-ङ्, अ-म्, न	३९ तु-पश्य-पश्यताहैः पूजायाम् ।	पूजाया म् ४०
,, ,, ,, पू-म्	४० अहो च ।	अहो ४१
हो, ति-ङ्, -म्, न	४१ शेषे विभाषा ।	विभाषा ४२
-षा, ति, अ, न	४२ पुरा च परीप्सायाम् ।	
ङ्, अ-म्, न	४३ न न्वित्यनुज्ञैषणायाम् ।	
,, ,, ,,	४४ किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ।	सर्वं सूत्रमनुवर्तते ४५
-म्, ति, अ, न	४५ लोपे विभाषा ।	
ङ्, अ-म्, न	४६ एहि मन्ये प्रहासे लृट् ।	
,, ,,	४७ जात्वपूर्वम् ।	अपूर्वम् ४९
म्, तिङ्, अ-न	४८ किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ।	
ङ्, अ-म्, न	४९ आहो उताहो चानन्तरम् ।	आ-हो ५०
,, ,,	५० शेषे विभाषा ।	
,, ,,	५१ गत्यर्थलोटा लृण्न चेत्कारकं सर्वान्यत् ।	ग-टा, न-म्-स-त् ५३
टा, न-म्, त्, ति, अ, न	५२ लोट् च ।	लोट् ५४
,,	५३ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ।	वि-म, सो-म्, अ-म् ५४
-म्, अ-म् ट् ति, अ, न	५४ हन्त च ।	
म्, न	५५ आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ।	

तिङ्, अ-म्, न	५६ यद्धि-तुपरं छन्दसि ।	
,, ,, ,,	५७ चन-चिदिव-गोत्रादि-तद्धिता-म्रेडितेष्वगतेः । (१)	अगतेः ५८
अ-ते, तिङ्,अ, न	५८ चादिषु च ।	
तिङ्, अ-म्, न	५९ च-वायोगे प्रथमा ।	प्र-थमा ६५
प्र-मा, तिङ् अ, न	६० हेति क्षियायाम् ।	क्षि-म् ६८
प्र-मा, ति-ऽ, अ-म् न	६१ अहेति विनियोगे च ।	
,,	६२ चाहलोप एवेत्यवधारणम् ।	
,,	६३ चादिलोपे विभाषा ।	विभाषा ६५
,,	६४ वै वावेति च च्छन्दसि ।	छन्दसि ६५
छ-सि, वि-षा अ, न	६५ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ।	
तिङ्, अ-म्, न	६६ यद्वृत्तान्नित्यम् । (२)	
	६७ पूजनात्पूजितमनुदात्तम् । (३)	पू-त्, पू-म् ६८
पू-त्,पू-म,अ-म्	६८ सगतिरपि तिङ् ।	सगतिरपि तिङ् ६९
सग-पि,तिङ्अ-म्	६९ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ । (४)	
अनुदात्तः	७० गतिर्गतौ ।	गतिः ७१
गतिः, अ-त्तः	७१ तिङि चोदात्तवति ।	
	(अविद्यमानवत्व--)	
	७२ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ।	आम-वत् ७४

१—गोत्रादयः ८।१।२७ सूत्रस्थितगणे द्रष्टव्याः।

२—(वा०) वा याथाकाम्ये।

३ अत्र सूत्रे काशिकादिषु 'काष्ठादिभ्यः' इत्यधिकम्, तत्कैश्चित्प्रक्षिप्तमिति कैयटः, भाष्यविरोधात्।

४—(वा०) (क) क्रियाकुत्सन इति वक्तव्यम्। (ख) पूतिश्च चानुबन्धो भवतीति वक्तव्यम्। (ग) विभाषितं चापि वह्वर्थमनुदात्तं भवतीति वक्तव्यम्।

आ-म्, पूर्वम् अ-वत्	**७३ नामन्त्रिते समानाधिकरणे । (१)**	आ-ते, स-णे ७४
आ-ते, स-णे आ-म्, पूर्वम् अ-वत्	**७४ सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने । (२)**	

इत्यष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः ।

अथ द्वितीयः पादः

(असिद्धत्व—)

	१ पूर्वत्रासिद्धम् ।	पू-म् । ८।४।६८
असिद्धः	**२ नलोपः सुप्-स्वर-संज्ञा-तुग्विधिषु कृति ।**	
,,	**३ न मु ने ।**	

(स्वरविधि—)

	४ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य ।	अ-स्य ६
अनुदात्तस्य	**५ एकादेश उदात्तेनोदात्तः ।**	ए-दे, उ-न ६
अ-स्य, उ-न, ए-शः	**६ स्वरितो वानुदात्ते पदादौ । (३)**	

१—काशिकादिषु 'सामान्यवचनम्' इत्यधिकम् ।

२—काशिकादिषु 'सामान्यवचनं' इति नास्ति अन्ते च 'बहुवचनम्' इत्यस्ति । भाष्यकैयटपर्यालोचनयात्वस्मद्धृत पाठ एव पाणिनीयः ।

३—(वा०) (क) एकादेशस्वरोन्तरङ्गः सिद्धो वक्तव्यः । (ख) संयोगान्तलोपो रोरुत्वे सिद्धः । (ग) सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वक्तव्यः । (घ) निष्ठादेशः षत्वस्वरप्रत्ययेड्विधिषु सिद्धो वक्तव्यः (ङ) प्लुतिस्तुग्विधौ छे सिद्धो वक्तव्यः । (च) श्चुत्वं धुटि सिद्धं वक्तव्यम् । (छ) अभ्यासजश्त्वचर्त्व-

	(नलोप—)	
	७ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । (१)	न-पः, प्रा-स्य ८
प्रा-स्य, -न-पः	८ न ङि-संबुद्ध्योः । (२)	
	(मतुब्वत्व—)	
	९ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः । (३)	मतोः १६ वः १५
मतोर्वः	१० झयः ।	
,,	११ संज्ञायाम् ।	सञ्ज्ञायाम् १३
,,	१२ आसन्दीवदष्ठीवत्-चक्रीवत्-कक्षीवद्-रुमण्वत्-चर्मण्वती । (४)	
,,	१३ उदन्वानुदधौ च ।	
,,	१४ राजन्वान्सौराज्ये ।	

मेत्वतुकोः सिद्धे वक्तव्ये। (ज) द्विर्वचने परसवर्णत्वं सिद्धं वक्तव्यम्। (झ) पदाधिकारश्चेल्लत्वढत्वघत्वनत्वरुत्वषत्वणत्वानुनासिक छत्वानि सिद्धानि वक्तव्यानि।*

१—(वा०) अन्हो नलोपप्रतिषेधो वक्तव्यः।

२—(वा०) (क) नङिसंबद्ध्योरनुत्तरपदे।† (ख) वा नपुंसकानामिति वक्तव्यम्।

३—(गणपा०) यव, दल्मि, ऊर्मि, (उर्मि), भूमि, कृमि, क्रुंचा, वशा, द्राक्षा, ध्राक्षा, ध्रजि, ध्वजि, निजि, सिजि, (सिंजि का०), खंजि, हरित्, ककुद् मरुत्, गरुत्, इक्षु, द्रु, मधु, द्रुम, भण्ड, धूम, वृक्षा, वेशा, वजि, शंजि। आकृतिगणः। इति यवादिः।

४—'न सम्प्रसारणे' इति सूत्रभाष्ये 'कक्षायाः संज्ञायां मतौ सम्प्रसारणं वक्तव्यम्।' इत्यारब्धम्। तेनात्र सूत्रे कक्षीवच्छब्दपाठोऽनार्ष इत्याहुः।

---

*काशिकायामिमानि वार्तिकानि 'न मु ने' इति सूत्रे पठितानि।

†वार्तिकमिदं भाष्ये प्रत्याख्यातम्

,,	१५ छन्दसीरः।	छन्दसि १७
छ-सि, मतोः	१६ अनो नुट्।	नुट् १७
,, नुट्	१७ नाद् घस्य। (१)	
	(लत्वविधि—)	
	१८ कृपो रो लः। (२)	रः, लः २२
रः, लः	१९ उपसर्गस्यायतौ।	
रो लः	२० ग्रो यङि।	ग्रः २१
ग्रः, रो लः	२१ अचि विभाषा।	विभाषा २२
वि-षा, रो लः	२२ परेश्च घाङ्कयोः। (३)	
	(लोपविधि—)	
	२३ संयोगान्तस्य लोपः।	संयो- स्य २४ लोपः २९
सं-स्य, लोपः	२४ रात्सस्य।	सस्य २८
लोपः सस्य	२५ धि च।	
सस्य, लोपः	२६ झलो झलि।	झलि ३७
सस्य,लोपःझलि,	२७ ह्रस्वादङ्गात्।	
सस्य, लोपः	२८ इट ईटि।	
लोपः, झलि	२९ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च। (४)	अन्ते ३७
	(झलि पदान्ते च विकार—)	
झलि, पदान्ते	३० चोः कुः।	

१—(वा०) (क) भूरिदाव्नस्तुड् वक्तव्यः। (ख) ईद्रथिनः।

२—(वा०) (क) बालमूललघ्वलमङ्गुलीनां वा लो रमापद्यत इति वक्तव्यम्। (ख) कपिलकादीनां संज्ञाछन्दसोर्वा लो रमापद्यत इति वक्तव्यम्। (ग) कृपणादीनां प्रतिषेधः।

३—(वा०) योगे चेति वक्तव्यम्।

४—(वा०) हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम्।

,, ,,	३१ हो ढः ।	
,, ,,	३२ दादेर्धातोर्घः । (१)	
,, ,,	३३ वा द्रुह-मुह-ष्णुह-ष्णिहाम् ।	
,, ,,	३४ नहो धः ।	
,, ,,	३५ आहस्थः ।	
,, ,,	३६ व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-च्छशां षः ।	
,, ,,	३७ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ।	स्ध्वोः ३८ बशो भष् ३८
बशोभष्, स्ध्वोः	३८ दधस्तथोश्च ।	
	३९ झलां जशोऽन्ते ।	
	४० झषस्तथोर्धोऽधः ।	
	४१ षढोः कः सि ।	
	(निष्ठाविकार—)	
	४२ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ।	नि-तः ६१ नः ६१
निष्ठातो नः	४३ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ।	
,, ,,	४४ ल्वादिभ्यः । (२)	
,, ,,	४५ ओदितश्च ।	
,, ,,	४६ क्षियो दीर्घात् ।	
,, ,,	४७ श्योऽस्पर्शे ।	

१—(वा०) हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) ॠकारल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्भवतीति वक्तव्यम् । (ख) दुग्वोर्दीर्घश्चेति वक्तव्यम् । (ग) पूञो विनाश इति वक्तव्यम् । (घ) सिनोतेर्ग्रासकर्मकर्तृकस्येति वक्तव्यम् ।

,, ,,	४८ अञ्चोऽनपादाने ।	
,, ,,	४९ दिवोऽविजिगीषायाम् ।	
,, ,,	५० निर्वाणोऽवाते ।	
,,	५१ शुषः कः ।	
,,	५२ पचो वः ।	
,,	५३ क्षायो मः ।	मः ५४
,, मः	५४ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ।	
	५५ अनुपसर्गात् फुल्ल-क्षीब-कृशोल्लाघाः । (१)	
निष्ठातो नः	५६ नुद-विदोन्द-त्रा-घ्रा-ह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ।	
,, ,,	५७ न ध्या-ख्या-पॄ-मूर्छि-मदाम् ।	न ६१
न, नि-त., नः	५८ वित्तो भोग-प्रत्यययोः ।	
,, ,, ,,	५९ भित्तं शकलम् ।	
,, ,, ,,	६० ऋणमाधमर्ण्ये ।	
,, ,, ,,	६१ नसत्त-निपत्तानुत्त-प्रतूर्त-सूर्त-गूर्तानि छन्दसि ।	
	(कुत्वविधि—)	
पदान्ते	६२ क्विन्प्रत्ययस्य कुः ।	कुः ६३
,, कुः	६३ नशेर्वा ।	
,,	६४ मो नो धातोः ।	मो नः धातोः ६५
मोनोधातोः	६५ म्वोश्च ।	
	(रुत्वविधि—)	
पदान्तस्य	६६ ससजुषो रुः ।	रुः ७०

१—(वा०) उत्फल्लसंफल्लयोरुपसंख्यानम् ।

रुः	६७ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च ।	
पदान्ते रुः,	६८ अहन् । (१)	अहन् ६९
अहन्	६९ रोऽसुपि ।	रः ७१
रुः, रः	७० अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि । (२)	उ-था, छ-सि ७१
छ-सि, उ-था	७१ भुवश्च महाव्याहृतेः ।	
पदान्ते	७२ वसु-स्रंस्वनडुहां दः ।	दः ७५
दः, सस्य,पदस्य	७३ तिप्यनस्तेः ।	
सस्य, पदस्य	७४ सिपि धातो रुर्वा ।	सिपि रुर्वा ७५, धातोः ७७
सिपि धातोरुर्वा	७५ दश्च ।	
	७६ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ।	र्वोः, दीर्घः, इकः ७९ उ-या ७८
र्वो-याः, दीर्घ, इकः	७७ हलि च ।	हलि ७८
,, ,, ,, हलि	७८ उपधायां च ।	
र्वोः, दीर्घः	७९ न भ-कुर्छुराम् ।	
	८० अदसोऽसेर्दादुदो मः ।	अ-सः, दात्, दः,मः ८१
अ-सः, दात्, दः, मः	८१ एत ईद्बहुवचने ।	
	(प्लुतोदात्त—)	
	८२ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ।	वाक्यस्य टेः ९९
वा-टेः प्लुतउ-त्तः	८३ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे । (३)	

१—(वा०) सविधावन्हो रूपरात्रिरथन्तरेपूपसंख्यानम् ।

२—(वा०) छन्दसि भाषायां च प्रचेतसो राजन्युपसंख्यानम् ।

३—(वा०) (क) असूयकसूयकेषु । (ख) भोराजन्यविशांवेति वक्तव्यम् ।

,, ,, ,,	८४ दूराद्धूते च।	दू-त् हूते ८६
,, ,, ,,	८५ हैहेप्रयोगे हैहयोः।	
प्लुतः, उ-त्तः	८६ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्।	
,, ,,	८७ ओमभ्यादाने।	
प्लुतोदात्तः	८८ ये यज्ञकर्मणि।	यज्ञक-णि ९२
य-णि, प्ल-त्तः	८९ प्रणवष्टेः।	टेः ९०
,, टेः ,,	९० याज्यान्तः।	
,, ,,	९१ ब्रूहि-प्रेष्य-श्रौषड्-वौषड्-वहानामादेः।	आदेः ९२
,, ,,	९२ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च।	
प्लु-त्तः	९३ विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः।	वि-षा ९४
वि-षा, वा-स्य टेः प्लु-त्तः	९४ निगृह्यानुयोगे च।	
प्लु-त्तम्	९५ आम्रेडितं भर्त्सने। (१)	भर्त्सने ९६
,, भर्त्सने	९६ अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्।	
टेः, प्लुतो-त्तम्	९७ विचार्यमाणानाम्।	वि-म् ९८
वि-नाम्, प्लु-तः	९८ पूर्वं तु भाषायाम्।	
वा-स्य, टेः, प्लु-म्	९९ प्रतिश्रवणे च।	
वाक्यस्य टेः, प्लुतानु-त्तम्	१०० अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः।	प्र-म् १०२
वा-स्य टेः, प्लु- तानु-दात्तम्	१०१ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने।	
,, ,,	१०२ उपरि स्विदासीदिति च।	

१—(वा०) भर्त्सने पर्यायेणेति वक्तव्यम्।

टेः, प्लुतः	१०३ स्वरितमाम्रेडितेऽसूया-संमति-कोप-कुत्सनेषु । (१)	स्व-म् १०५
प्लुतस्वरितम्	१०४ क्षियाशीः प्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम् ।	
टेः, प्लुतस्व-म्	१०५ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ।	
	१०६ प्लुतावैच इदुतौ ।	
	१०७ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ । (२)	
	१०८ तयोर्य्वावचि संहितायाम् ।	संम् ८-४-६७

इति अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

अथ तृतीयः पादः

(रुविधि—)

	१ मतोवसो रु संबुद्धौ छन्दसि । (३)	रु १२
रोः	२ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ।	अ-कः, पूर्वस्य ३
रोः पूर्वस्य, अ-कः	३ आतोऽटि नित्यम् ।	
रोः पू-स्य	४ अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः ।	
रु, सं-म्	५ समः सुटि ।	
रु	६ पुमः खय्यम्परे ।	अम्परे ८

१—(वा०) असूयादिषु वावचनं कर्तव्यम् ।

२—(वा०) (क) प्रश्नान्ताभिपूजितविचार्यमाणप्रत्यभिवादया ज्यान्तेष्विति वक्तव्यम् । (ख) आमन्त्रिते छन्दस्युपसंख्यानम् ।

३—(वा०) (क) मतुवसो रादेशे वन उपसंख्यानम् । (ख) विभाषा भवद्भगवदघवतामोच्चावस्य ।

म्परे, रु	७ नश्छव्यप्रशान् ।	नः १२, छवि ८
-रे, छवि, न रु	८ उभयथर्क्षु ।	
:, रु	९ दीर्घादटि समानपादे ।	
:, रु	१० नॄन्पे ।	
:, रु	११ स्वतवान्पायौ ।	
:, रु	१२ कानाम्रेडिते । (१)	
	१३ ढो ढे लोपः ।	लोपः १४
लोपः	१४ रो रि ।	रः १७
:	१५ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ।	वि-यः १६
:, वि-यः	१६ रोः सुपि ।	र, रोः १७
:, रः	१७ भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि ।	भो- स्य २१ अशि २०
शि, भो-स्य	१८ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ।	व्योः २१
शि,अ-स्य,व्योः	१९ लोपः शाकल्यस्य ।	लोपः २२
,, यस्य, लोपः	२० ओतो गार्ग्यस्य ।	
-स्य,व्यो-लोपः	२१ उञि च पदे ।	
-स्य,यस्य,लोप	२२ हलि सर्वेषाम् ।	हलि २३
दस्य	२३ मोऽनुस्वारः ।	मो-रः २४
न., म-र.	२४ नश्चापदान्तस्य झलि ।	
म-य	२५ मो राजि समः क्वौ ।	मः २६
पस्य, म.	२६ हे मपरे वा । (२)	हे २७ वा ३१

१—(वा०) सपुकानां सत्वम् ।

२—(वा०) यवलपरे यवला वा ।

हे, मस्य, वा,	२७ नपरे नः ।	
वा	२८ ङ्णोः कुक्टुक् शरि ।	शरि ३०
शरि, वा	२९ डः सि धुट् ।	सि, धुट् ३०
शरि, सि, धुड्वा	३० नश्च ।	नः ३१
नः, वा	३१ शि तुक् ।	
	३२ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् ।	अचि ३३
अचि	३३ मय उञो वो वा ।	
	(विसर्गसत्व—)	
खरि	३४ विसर्जनीयस्य सः ।	वि-स्य ५४
खरि, वि-स्य	३५ शर्परे विसर्जनीयः ।	वि-यः ३६
वि-स्य, वि-यः	३६ वा शरि । (१)	
,,	३७ कुप्वो ᳵक ᳶपौ च ।	कुप्वोः ५४
कुप्वोः, वि-स्य	३८ सोऽपदादौ । (२)	सः,५४,अ-दौ ३
अ-दौ, कुप्वोः वि-स्य	३९ इणः षः ।	षः ४८
कुप्वोः,वि-स्य,सः	४० नमस्पुरसोर्गत्योः ।	
कुप्वोः,वि-स्य सः	४१ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य । (३)	
,, ,, ,,	४२ तिरसोऽन्यतरस्याम् ।	अ-म् ४४
,, ,, षोना	४३ द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोर्थे ।	
कुप्वोः, वि-स्य, वा, षः	४४ इसुसोः सामर्थ्ये ।	इसुसोः ४५
कुप्वोः, इ-सोः, वि-स्य षः	४५ नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य ।	अनु-स्य ४७

१—(वा०) वाशर्प्रकरणे खर्परे लोपो वक्तव्यः।

२—(वा०) (क) सोऽपदादावनव्ययस्य। (ख) रोः काम्ये नियमार्थम्

३—(वा०) पुम्मुहुसोः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

से, अ-स्य, स्य, सः	४६ अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-कर्णीष्वनव्ययस्य ।	समासे ५४, अ-स्य ४७
से ,, ,, ,, , षः	४७ अधः-शिरसी पदे ।	
	४८ कस्कादिषु च । (१)	
वोः सः	४६ छन्दसि वाप्राम्रेडितयोः ।	छन्दसि ५४
सि, वि-स्य,	५० कः करत्-करति-कृधि-कृतेष्वनदितेः ।	
सि प-म्याः, स्य, सः	५१ पञ्चम्याः परावध्यर्थे ।	पञ्चम्याः ५२
,, ,, ,,	५२ पातौ च बहुलम् ।	
सि वि-स्य,सः	५३ षष्ठ्याः पति-पुत्र-पृष्ठ-पार-पद-पयस्पोषेषु ।	षष्ठ्याः, प-षु ५४
प-षु,षष्ठ्याः स्य, सः	५४ इडाया वा ।	

(षत्वविधि––)

य	५५ अपदान्तस्य मूर्धन्यः ।	अ-स्य, मू-न्यः ११६
य, मू-न्यः	५६ सहेः साडः सः ।	
	५७ इण्कोः ।	इण्कोः ११६
	५८ नुम्-विसर्जनीय-शर्व्यवायेऽपि ।	नु-पि ११६
कोः, मू-न्यः	५६ आदेश-प्रत्यययोः ।	
,,	६० शासि-वसि-घसीनां च ।	
ः ,,	६१ स्तौति-ण्योरेव षण्यभ्यासात् ।	षणि, अ-त् ६२

१––(गणपा०) कस्कः, कौतस्कुतः, भ्रातुष्पुत्रः, शुनस्कर्णः, सद्यस्कालः, यस्क्रः, साद्यस्क्रः, कांस्कान्, सर्पिष्कुण्डिका, धनुष्कपालम्, वर्हिष्पलम्, र्हिष्पूलम् का०), यजुष्पात्रम्, अयस्कान्तः, तमस्काण्डः, अयस्काण्डः, मेदस्पि-ः, भास्करः, अहस्करः, आकृतिगणः। इति कस्कादिः।

षणि, अ-सात् मू-न्यः	६२ सः स्विदि-स्वदि-सहीनां च ।	
मू-न्यः, सस्य	६३ प्राक् सितादड्व्यवायेऽपि ।	अड्-ऽपि ७०
,, ,,	६४ स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य ।	अ-स्य ६५
इणः,सस्य मू-न्यः	६५ उपसर्गात् सुनोति-सुवति-स्यति-स्तौति-स्तोभति-स्था-से-नय-सेध-सिच-सञ्ज-स्वञ्जाम् ।	उ-त् ७७
उ-त्,इणः,मू-न्यः	६६ सदिरप्रतेः ।	
,, ,, ,,	६७ स्तम्भेः ।	स्तम्भेः ६८
स्तम्भेः, मू-न्यः	६८ अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः ।	अवात् ६९
अवात्, ,,	६९ वेश्च स्वनो भोजने ।	
,,	७० परि-नि-विभ्यः सेव-सित-सय-सिवु-सह-सुट्-स्तु-स्वञ्जाम् ।	प-भ्यः ७१
प-भ्यः ,,	७१ सिवादीनां वाड्व्यवायेऽपि ।	वा ७६
वा ,,	७२ अनु-विपर्यभि-निभ्यः स्यन्द-तेरप्राणिषु ।	
,, ,,	७३ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ।	स्कन्देः ७५
स्कन्देः,वा,मू-न्यः	७४ परेश्च ।	
स्कन्देः	७५ परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ।	
वा, मू-न्यः	७६ स्फुरति-स्फुलत्योर्निर्निविभ्यः ।	
सस्य, मू-न्यः	७७ वेः स्कम्नातेर्नित्यम् ।	
,,	७८ इणः षीध्वं-लुङ्-लिटां धोऽङ्गात् ।	इणः,षी-म्, धोऽ-त् ७९
इणः,षी-म्,धो-त्	७९ विभाषेटः ।	
सस्य मू-न्यः	८० समासेऽङ्गुलेः सङ्गः ।	समासे ८५
स-से, सस्यमू-न्यः	८१ भीरोः स्थानम् ।	
स-से, सस्यमू-न्य	८२ अग्नेः स्तुत-स्तोम-सोमाः ।	

,, ,, ,,	८३ ज्योतिरायुषः स्तोमः ।	
,, ,, ,,	८४ मातृ-पितृभ्यां स्वसा ।	स्वसा ८५
,, स्वसुः, ,,	८५ मातुः पितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ।	अ-म् ८६
अ-म्,सस्य,मू-न्यः	८६ अभि-निसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम् ।	
सस्य, मू-न्यः	८७ उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः ।	
,, ,,	८८ सु-वि-निर्दुर्भ्यः सुपि-सूति-समाः ।	
,, ,,	८९ नि-नदीभ्यां स्नातेः कौशले ।	
	९० सूत्रं प्रतिष्णातम् ।	
	९१ कपिष्ठलो गोत्रे ।	
	९२ प्रष्ठोऽग्रगामिनि ।	
	९३ वृक्षासनयोर्विष्टरः ।	विष्टरः ९४
विष्टरः	९४ छन्दोनाम्नि च ।	
सस्य, मू-न्यः	९५ गवि-युधिभ्यां स्थिरः ।	
,, ,,	९६ वि-कु-शमि-परिभ्यः स्थलम् ।	
सस्य, मू-न्यः	९७ अम्बाम्ब-गो-भूमि-सव्यापद्वि-त्रि-कु-शेकु-शङ्क्वङ्गु-मञ्जि-पुञ्जि-परमे-बर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः ।	
अपदान्तस्यसस्य, मू-न्यः	९८ सुषामादिषु च । (१)	

१—(गणपा०) सुषामा, निःषामा, दुःषामा, सुषेधः, निषेधः, (निःषेधः), दुःषेधः, सुषंधिः, निःषंधिः, (निषन्धिः), दुःषंधि, सुष्ठु, दुष्ठु, गौरिषक्थः संज्ञायाम्, प्रतिष्णिका, जलाषाहम् (जलाषाढम्), नौषेचनम् (नौ-

सस्य, मू-न्यः	९९ ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ।	तादौ १०२
,, ,,	१०० निसस्तपतावनासेवने ।	
तादौ, सस्य, मू-न्यः	१०१ युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तःपादम् । (१)	यु-क्षुषु १०२
तादौ,यु-क्षु, मू-न्यः	१०२ यजुष्येकेषाम् ।	ए-म् १०४
इण्कोः, स- मू-	१०३ स्तुत-स्तोमयोश्छन्दसि ।	छन्दसि १०७
छ-सि, ,, ,,	१०४ पूर्वपदात् ।	पू-त् ११७
,, ,, ,,	१०५ सुञः ।	
पू-त्, इण्कोः, सस्य मू-न्यः	१०६ सनोतेरनः ।	
सस्य, मू-न्यः	१०७ सहेः पृतनर्ताभ्याञ्च ।	
पू-त्, इण्कोः, सस्य मू-न्यः	१०८ न रपर-सृपि-सृजि-स्पृशि-स्पृहि-सवनादीनाम् ।	न ११७
न ,, ,, ,,	१०९ सात्पदाद्योः ।	
न, मू-न्यः	११० सिचो यङि ।	
,, ,,	१११ सेधतेर्गतौ ।	
,, ,,	११२ प्रतिस्तब्ध-निस्तब्धौ च ।	
पू-त्, इण्कोः, न, मू-न्यः	११३ सोढः ।	
,, ,, , ,,	११४ स्तम्भु-सिवु-सहां चङि । (२)	
पू-त्, इण्कोः, न, मू-न्यः	११५ सुनोतेः स्यसनोः ।	

षेवनम्), दुन्दुभिषेवणम्, (दुन्दुभिषेचनम्, दुन्दुभिषेवनम् का०), एति संज्ञायामगात्, हरिषेणः, नक्षत्राद्वा रोहिणीषेणः, आकृतिगणः इति सुषामादिः।

'सुषामादिषु' च अतः परं 'एति संज्ञायामगात्, नक्षत्राद्वा' इति सूत्रद्वयमुपलभ्यते। अनयोः सूत्रत्वमप्रामाणिकमेनयोर्गणे समुपलम्भात्। हरदत्तादयोऽप्यत्रानुकूलाः।

१—(वा०) ह्रस्वात्तादौ तिङि प्रतिषेधः।

२—(वा०) स्तम्भुसिवुसहां चङि उपसर्गादिति वक्तव्यम्।

,, ,, ,,	११६ सदेः परस्य लिटि ।	
सस्य, न, मू-न्य	११७ निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ।	

इत्यष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः ।

अथ चतुर्थः पादः

(णत्वविधि—)

	१ रषाभ्यां नो णः समानपदे । (१)	र-म्, नो णः ३९
र-म्, नोणः	२ अट्-कु-प्वाङ्-नुम्व्यवायेऽपि ।	
,, ,,	३ पूर्वपदात्संज्ञायामगः ।	पू-त् १३, स-म् ४
स-म्, नोणः पू-त्	४ वनं पुरगा-मिश्रका-सिध्रका-शारिका-कोटराग्रेभ्यः ।	वनम् ६
वनम्, नोणः पू-त्	५ प्रनिरन्तः शरेक्षु-प्लक्षाम्र-कार्ष्य-खदिर-पीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि ।	
र-म्, नोणः	६ विभाषौषधि-वनस्पतिभ्याम् ।* (२)	
,, ,,	७ अह्नोऽदन्तात् ।	
,, ,,	८ वाहनमाहितात् ।	
,, ,,	९ पानं देशे ।	पानम् १०

१—(वा०) रषनभ्यां णत्व ऋकारग्रहणम् ।

* 'विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः' इति पाठान्तरम् ।

२—(वा०) (क) द्व्यक्षरत्र्यक्षरेभ्य इति वक्तव्यम् । (ख) इरिकादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

र-म्, पानम्, नोणः	१० वा भावकरणयोः । (१)	वा ११
र-म्, नोणः, वा	११ प्रातिपदिकान्त-नुम्-विभक्तिषु च । (२)	प्रा-षु १३
र-म् प्रा-षु, नो वा पू-त्	१२ एकाजुत्तरपदे णः ।	
,, ,, ,,	१३ कुमति च ।	
र-म्, नोणः	१४ उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य ।	उ-त् २३
उ-त्, र-म्, नोणः	१५ हिनु मीना ।	
,, ,, ,,	१६ आनि लोट् ।	
,, ,, ,,	१७ नेर्गद-नद-पत-पद-घु-मा-स्यति-हन्ति-याति-वाति-द्राति-प्साति-वपति-वहति-शाम्यति-चिनोति-देग्धिषु च ।	नेः १८
उ-त्, र-म्, नेः णः	१८ शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे ।	
उ-त्, र-म् नोणः	१९ अनितेः ।	अनितेः २१
,, ,, अ-तेः नोणः	२० अन्तः ।	
उ-त्, र-म्, नोणः	२१ उभौ साभ्यासस्य ।	
,, ,, ,,	२२ हन्तेरत्पूर्वस्य ।	हन्तेर-स्य २३
,, ,, ह-स्य. नोणः	२३ वमोर्वा ।	
हन्तेरत्पूस्य नोणः	२४ अन्तरदेशे ।	अन्तरदेशे २५

१—(वा०) वाप्रकरणे गिरिनद्यादीनामुपसंख्यानम् ।

२—(वा०) युवादीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

अ-शे, नोणः	२५ अयनं च।	
नोणः	२६ छन्दस्यृदवग्रहात्।	छन्दसि २७
छ-सि, नोणः	२७ नश्च धातुस्थोरु-षुभ्यः।	नः २८
नः, नोणः	२८ उपसर्गादनोत्परः। (१)	उ-त् ३४
उ-त्, र-म्, नोणः	२९ कृत्यचः। (२)	कृति ३४, अचः ३१
,, ,, कृति, नोणः, अचः	३० णेर्विभाषा।	वि-षा ३०
अचः, कृति, वि-षा, नोणः	३१ हलश्चेजुपधात्।	हलः ३१
हलः, कृति, नोणः	३२ इजादेः सनुमः।	
उ-त्, र-म्, नोणः	३३ वा निंस-निक्ष-निन्दाम्।	
उ-त्, र-म्, कृति, नोणः	३४ न भा-भू-पू-कमि-गमि-प्यायि-वेपाम्। (३)	न ३९
नोणः, न्	३५ षात्पदान्तात्।	
,, ,,	३६ नशेः षान्तस्य।	
,, ,,	३७ पदान्तस्य	
,, ,,	३८ पदव्यवायेऽपि	
,, ,,	३९ क्षुभ्नादिषु च। (४)	

१—काशिकादिषु एतत्सूत्रं 'उपसर्गाद्बहुलम्' इति पठ्यते। भाष्यसम्मतस्त्वस्मद्धृत पाठ एव।

२—कृत्स्थस्य णत्वे निर्विण्णस्योपसंख्यानम्।

३—(वा०) (क) ण्यन्तानां भादीनामुपसंख्यानं कर्तव्यम्। (ख) भादिषु पूञ्ग्रहणम्।

४—(गणपा०) क्षुभ्ना (क्षुभ्नाति), नृनमन्, नन्दिन्, नन्दन, नगर, एतान्युत्तरपदानि संज्ञायाम् प्रयोजयन्ति। हरिनन्दी, हरिनन्दनः, गिरिनगरम्, नृतिर्यङि प्रयोजयति, नरीनृत्यते। नर्तन, गहन, नन्दन, निवेश, निवास, अग्नि, अनूप, एतान्युत्तरपदानि प्रयोजयन्ति। परिनर्तन, परिगहन, परिनन्दन, शर-

(सन्धिप्र—)

	४० स्तोः श्चुना श्चुः ।	स्तोः ४२
स्तोः	४१ ष्टुना ष्टुः ।	ष्टुः ४४
स्तोः, ष्टुः	४२ न पदान्ताट्टोरनाम् । (१)	न ४४
स्तोः ष्टुर्न	४३ तोः षि ।	तोः ४४
,, ,,	४४ शात् ।	
	४५ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा । (२)	यरः ४७
यरः	४६ अचो रहाभ्यां द्वे ।	अचः ४७ द्वे ५२
अचः, द्वे	४७ अनचि च ।	
द्वे	४८ नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य । (३)	न ५२
न, द्वे	४९ शरोऽचि ।	
न, द्वे	५० त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ।	
,, ,,	५१ सर्वत्र शाकल्यस्य ।	
,, ,,	५२ दीर्घादाचार्याणाम् ।	

निवेष, शरनिवास, शराग्नि, दर्भानूप, आचार्यादणत्वं च, आचार्यभोगीनः (आचार्यानीका०), आकृतिगणोऽयम् ।

पाठान्तरम्—क्षुभ्ना, तृप्नु, नृनमन्, नरनगर, नन्दन, यङ्नृती, गिरिनदी, गृहनमन, निवेश, निवास, अग्नि, अनूप, आचार्यभोगीन, चतुर्हायन, हरिकादीनि, वनोत्तरपदानि संज्ञायाम् । इरिका, तिमिर, समीर, कुवेर, हरि, कर्मार, आकृतिगणः । इति क्षुभ्नादिः ।

१—(वा०) अनाम्नवतिनगरीणामिति वक्तव्यम् ।

२—(वा०) यरोऽनुनासिके प्रत्यये भाषायां नित्यवचनम् ।

(वा०) (क) द्विर्वचने यणो मयः (ख) शरः खयो द्वे भवत इति वक्तव्यम् (ग) अवसाने च द्वे भवत इति वक्तव्यम् ।

३—(वा०) (क) तत्परे चेति वक्तव्यम् । (ख) वा हतजग्धयोः । (ग) चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेः

	५३ झलां जश् झशि ।	झलाम् ५६
झ-म्, जश्	५४ अभ्यासे चर्च ।	चर् ५६
झ-म्, चर्	५५ खरि च ।	
झलाम्, चर्	५६ वावसाने ।	वा, अ-ने ५७
अ-ने, वा	५७ अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ।	
	५८ अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।	अ-स्य, ययि, प-र्णः ५९
ययि,अ-स्य,प-र्णः	५९ वा पदान्तस्य ।	
परसवर्णः	६० तोर्लि ।	
सवर्णः	६१ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ।(१)	पू-स्य ६२
पू-र्णः	६२ झयो होन्यतरस्याम् ।	झयः ६३ अ-म् ६५
झयः, वा	६३ शश्छोऽटि । (२)	
वा	६४ हलो यमां यमि लोपः ।	हलः लोपः ६५
हलः, वा, लोपः	६५ झरो झरि सवर्णे ।	
	६६ उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः ।	अ-स्य ६७
अनुदात्तस्य	६७ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्य-काश्यप-गालवानाम् ।'	
	६८ अ अ ।	

8216

इत्यष्टमाध्याये चतुर्थः पादः ।

समाप्तोऽष्टमाध्यायः ।

इत्यष्टाध्यायीसूत्रपाठः समाप्तः ।

पं० विश्वनाथ स्मृति संग्रह

१—(वा०) उदः पूर्वत्वे स्कन्देश्छन्दस्युपसंख्यानम् ।

२—(वा०) छत्वममीति वक्तव्यम् ।

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Access on
Class on 15/5/13
Cat on
Tag etc. Sharma 24.11.03
Checked
Any Other

R410,NAN-A
8216H

PAYMENT PROCESSED
Vide Bill No 646 Dated 19/11/74
Arts Book Binder